विष्णुधर्मः

Text based on the edition by Reinhold Grünendahl
Visnudharmah – Precepts for the worship of Visnu
Wiesbaden: Harrassowitz, 3 volumes, 1983-1989
Converted from REE-encoding to Devanagari

This Devanagari-file is searchable. To search for shlokas, simply enter the appropriate number in find-box of Acrobat Reader. To search for other occurrences of a sanskrit word, simply klick on it and copy and paste it into the find-box. Select case-sensitive search.

नारायणं नमस्कृत्य [Maṅgala1]
नरं चैव नरोत्तमम् [Maṅgala1]
देवीं सरस्वतीं चैव [Maṅgala1]
ततो जयमुदीरयेत् [Maṅgala1]
द्वैपायनौष्ठपुटनिःसृतमप्रमेयं [Maṅgala2]
पुण्यं पवित्रमथ पापहरं शुभं च [Maṅgala2]
यो भारतं समधिगच्छति वाच्यमानं [Maṅgala2]
किं तस्य पुष्करजलैरभिषेचनेन [Maṅgala2]
नमो व्यासाय गुरवे [Maṅgala2 old]
सर्वज्ञाय महर्षये [Maṅgala2 old]
पाराशर्याय शान्ताय [Maṅgala2 old]
नमो नारायणाय ते [Maṅgala2 old]

कृताभिषेकं तनयम् [001.001]
राज्ञः पारीक्षितस्य ह [001.001]
द्रष्टुमभ्याययुः प्रीत्या [001.001]
शौनकाद्या महर्षयः [001.001]
तानागतान्स राजर्षिः [001.002]
पाद्यार्घ्यादिभिरर्चितान् [001.002]
सुखोपविष्टान्विश्रान्तान् [001.002]
कृतसंप्रश्नसत्कथान् [001.002]
तत्कथाभिः कृताह्लादः [001.003]
प्रणिपत्य कृताञ्जलिः [001.003]
शतानीको ऽथ पप्रच्छ [001.003]
नारायणकथां पराम् [001.003]
यमाश्रित्य जगन्नाथम् [001.004]
मम पूर्वपितामहाः [001.004]
विपक्षापहृतं राज्यम् [001.004]
अवापुः पुरुषोत्तमाः [001.004]
द्रौणिब्रह्मास्त्रनिर्दग्धो [001.005]
मम येन पितामहः [001.005]
परीक्षित्प्राणसंयोगं [001.005]
देवदेवेन लम्भितः [001.005]
तस्य देवस्य माहात्म्यं [001.006]
देवर्षिसिद्धमनुजैः [001.006]
श्रुतं सुबहुशो मया [001.006]
स्तुतस्याशेषजन्मनः [001.006]
कः स्तोतुमीशस्तमजं [001.007]
यस्यैतत्सचराचरम् [001.007]
अव्ययस्याप्रमेयस्य [001.007]
ब्रह्माण्डमुदरे शयम् [001.007]
रुद्रः क्रोधोद्भवो यस्य [001.008]
प्रसादाच्च पितामहः [001.008]
तस्य देवस्य कः शक्तः [001.008]
प्रवक्तुं वा विभूतयः [001.008]
सो ऽहमिच्छामि देवस्य [001.009]
तस्य सर्वात्मनः प्रभोः [001.009]
श्रोतुमाराधनं येन [001.009]
निस्तरेयं भवार्णवम् [001.009]
केनोपायेन मन्त्रैर्वा [001.010]
रहस्यैः परिचर्यया [001.010]
दानैर्व्रतोपवासैर्वा [001.010]
जप्यैर्होमैरथापि वा [001.010]
आराधितः समस्तानां [001.011]
क्लेशानां हानिदो हरिः [001.011]
शक्यः समाराधयितुं [001.011]
तन्नः शंसत सत्तमाः [001.011]
विद्यानामपि सा विद्या [001.012]
श्रुतानामपि तच्छ्रुतम् [001.012]
रहस्यानां रहस्यं तद् [001.012]
येन विष्णुः प्रसीदति [001.012]
मन्त्राणां परमो मन्त्रो [001.013]
व्रतानां तन्महाव्रतम् [001.013]
उपोषितं हि तच्छ्रेष्ठं [001.013]

येन तुष्यति केशवः [001.013]
सा जिह्वा या हरिं स्तौति [001.014]
तच्चित्तं यत्तदर्पणम् [001.014]
तावेव केवलौ श्लाघ्यौ [001.014]
यौ तत्पूजाकरौ करौ [001.014]
सुजन्म देहमत्यन्तं [001.015]
तदेवाशेषजन्मसु [001.015]
यदेव पुलकोद्भासि [001.015]
विष्णोर्नामाभिकीर्तनात् [001.015]
सा हानिस्तन्महच्छिद्रं [001.016]
सा चान्धजडमूकता [001.016]
यन्मुहूर्तं क्षणं वापि [001.016]
वासुदेवो न चिन्त्यते [001.016]
नूनं तत्कण्ठशालूकम् [001.017]
अथवा प्रतिजिह्विका [001.017]
रोगो वान्यो न सा जिह्वा [001.017]
या न वक्ति हरेर्गुणान् [001.017]
सन्त्यनेका बिलास्तद्वच् [001.018]
श्रोत्रमप्यल्पमेधसाम् [001.018]
दत्त्वावधानं यच्छब्दे [001.018]
विनैव हरिसंस्तुतिम् [001.018]
धर्मार्थकामसंप्राप्तौ [001.019]
पुरुषाणां विचेष्टितम् [001.019]
जन्मन्यविफला सैका [001.019]
या गोविन्दाश्रया क्रिया [001.019]
दुर्गसंसारकान्तारम् [001.020]
अपारमभिधावताम् [001.020]
एकः कृष्णनमस्कारो [001.020]
मुक्तितीरस्य देशिकः [001.020]
सर्वरत्नमयो मेरुः [001.021]
सर्वाश्चर्यमयं नभः [001.021]
सर्वतीर्थमयी गङ्गा [001.021]
सर्वदेवमयो हरिः [001.021]
एवमादिगुणो भोगः [001.022]
कृष्णस्याद्भुतकर्मणः [001.022]
श्रुतो मे बहुशो सिद्धैः [001.022]
गीयमानस्तथापरैः [001.022]
सो ऽहमिच्छामि तं देवं [001.023]
सर्वलोकपरायणम् [001.023]
नारायणमशेषस्य [001.023]
जगतो ह्यवस्थितम् [001.023]
आराधयितुमीशानम् [001.024]
अनन्तममितौजसम् [001.024]
शंकरं जगतः प्राणं [001.024]
स्मृतमात्राघहारिणम् [001.024]
तन्ममाद्य मुनिश्रेष्ठाः [001.025]
प्रसादयितुमिच्छतः [001.025]
उपदेशप्रदानेन [001.025]
प्रसादं कर्तुमर्हत [001.025]
तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा [001.026]
भक्तिमुद्वहतो हरेः [001.026]
परितोषं परं जग्मुर् [001.026]
मुनयः सर्व एव ते [001.026]
सर्वे च ते मुनिश्रेष्ठा [001.027]
भृगुश्रेष्ठं च शौनकम् [001.027]
यथार्थं भगवंस्तस्मै [001.027]
कथ्यतामित्यचोदयन् [001.027]
सर्वज्ञाननिधिः स्फीतस् [001.028]
त्वमत्र भृगुनन्दन [001.028]
त्रैलोक्यसर्वसंदेह- [001.028]
तमोदीपस्तपोधन [001.028]
एवमुक्तो मुनिवरैः [001.029]
प्रीत्या तस्य च भूपतेः [001.029]
भक्त्या च देवदेवस्य [001.029]
प्रवणीकृतमानसः [001.029]
कृत्वोत्तरीयपर्यङ्कं [001.030]
शिथिलं भगवानथ [001.030]
प्रत्युवाच महाभागः [001.030]
शौनकस्तं महीपतिम् [001.030]
यत्पृच्छसि महीपाल [001.031]
कृष्णस्याराधनं प्रति [001.031]
व्रतोपवासजप्यादि [001.031]
तदिहैकमनाः शृणु [001.031]
अनादिमत्परं ब्रह्म [001.032]
सर्वहेयविवर्जितम् [001.032]
व्यापि यत्सर्वभूतेषु [001.032]
स्थितं सदसतः परम् [001.032]
प्रधानपुंसोरजयोर् [001.033]
यतः क्षोभः प्रवर्तते [001.033]
नित्ययोर्व्यापिनोश्चैव [001.033]
जगदादौ महात्मनोः [001.033]
तत्क्षोभकत्वाद्ब्रह्माण्ड- [001.034]
सृष्टिहेतुर्निरञ्जनः [001.034]
अहेतुरपि सर्वात्मनः [001.034]

जायते परमेश्वरः [001.034]
प्रधानपुरुषत्वं च [001.035]
तथैवेश्वरलीलया [001.035]
समुपैति ततश्चैव [001.035]
ब्रह्मत्वं छन्दतः प्रभुः [001.035]
ततः स्थितौ पालयिता [001.036]
विष्णुत्वं जगतः क्षये [001.036]
रुद्रत्वं च जगन्नाथः [001.036]
स्वेच्छया कुरुते ऽव्ययः [001.036]
तदेकमक्षरं धाम [001.037]
परं सदसतोर्महत् [001.037]
भेदाभेदस्वरूपस्थं [001.037]
प्रणिपत्य परं पदम् [001.037]
प्रवक्ष्यामि यथा पूर्वं [001.038]
मत्पित्रा कथितं मम [001.038]
तस्यापि किल तत्पित्रा [001.038]
तस्मै चाह किलोशनाः [001.038]
तेनापि भृगुमाराध्य [001.039]
प्राप्तमाराधनं हरेः [001.039]
सकाशाद्ब्रह्मणः प्राप्तं [001.039]
भृगुणापि महात्मना [001.039]
मरीचिमिश्रैश्च पुरा [001.040]
परमेतन्महर्षिभिः [001.040]
प्राप्तं सकाशाद्देवस्य [001.040]
ब्रह्मणो व्यक्तजन्मनः [001.040]
योगं ब्रह्मा परं प्राह [001.041]
महर्षीणां यदा प्रभुः [001.041]
समस्तवृत्तिसंरोधात् [001.041]
कैवल्यप्रतिपादकम् [001.041]
तदा जगत्पतिर्ब्रह्मा [001.042]
प्रणिपत्य महर्षिभिः [001.042]
सर्वैः किलोक्तो भगवान् [001.042]
आत्मयोनिः प्रजाहितम् [001.042]
यो योगो भवता प्रोक्तो [001.043]
मनोवृत्तिनिरोधजः [001.043]
प्राप्तुं शक्यः स त्वनेकैः [001.043]
जन्मभिर्जगतः पते [001.043]
विषया दुर्जया नृणाम् [001.044]
इन्द्रियाकर्षणाः प्रभो [001.044]
वृत्तयश्चेतसश्चापि [001.044]
चपला चातिदुर्धराः [001.044]
रागादयः कथं जेतुं [001.045]
शक्या वर्षशतैरपि [001.045]
न योगयोग्यं हि मनो [001.045]
भवत्येभिरनिर्जितैः [001.045]
अल्पायुषश्च पुरुषा [001.046]
ब्रह्मन्कृतयुगे ऽप्यमी [001.046]
त्रेतायां द्वापरे चैव [001.046]
किमु प्राप्ते कलौ युगे [001.046]
भगवंस्त्वमुपायज्ञः [001.047]
प्रसन्नो वक्तुमर्हसि [001.047]
अनायासेन येनेमम् [001.047]
उत्तरेम भवार्णवम् [001.047]
दुःखाम्बुमग्नाः पुरुषाः [001.048]
प्राप्य ब्रह्म महाप्लवम् [001.048]
उत्तरेयुर्भवाम्भोधिं [001.048]
तथा त्वमनुचिन्तय [001.048]
एवमुक्तस्तदा ब्रह्मा [001.049]
क्रियायोगं महात्मनाम् [001.049]
तेषामृषीणामाचष्ट [001.049]
नराणां हितकाम्यया [001.049]
आराधयत विश्वेशम् [001.050]
नारायणमतन्द्रिताः [001.050]
बाह्यालम्बनसापेक्षास् [001.050]
तमजं जगतः पतिम् [001.050]
इज्यापूजानमस्कार- [001.051]
शुश्रूषाभिरहर्निशम् [001.051]
व्रतोपवासैर्विविधैर् [001.051]
ब्राह्मणानां च तर्पणैः [001.051]
तैस्तैश्चाभिमतैः कामैर् [001.052]
ये च चेतसि तुष्टिदाः [001.052]
अपरिच्छेद्यमाहात्म्यम् [001.052]
आराधयत केशवम् [001.052]
तन्निष्ठास्तद्गतधियस् [001.053]
तत्कर्माणस्तदाश्रयाः [001.053]
तद्दृष्टयस्तन्मनसः [001.053]
सर्वस्मिन्स इति स्थितः [001.053]
समस्तान्यथ कर्माणि [001.054]
तत्र सर्वात्मनात्मनि [001.054]
संन्यस्यध्वं स वः कर्ता [001.054]
समस्तावरणक्षयम् [001.054]
एतत्तदक्षरं ब्रह्म [001.055]
प्रधानपुरुषावुभौ [001.055]
यतो यस्मिन्यथा चोभौ [001.055]

सर्वव्यापिन्यवस्थितौ [001.055]
परः पराणां परमः [001.056]
स एकः पुरुषोत्तमः [001.056]
यस्याभिन्नमिदं सर्वम् [001.056]
यच्चेङ्गं यच्च नेङ्गति [001.056]
तमाराध्य जगन्नाथं [001.057]
मोक्षकारणमव्यक्तम् [001.057]
अचिन्त्यमपरिग्रहम् [001.057]
क्रियायोगेन मुच्यते [001.057]
इति ते ब्रह्मणः श्रुत्वा [001.058]
रहस्यमृषिसत्तमाः [001.058]
नराणामुपकाराय [001.058]
योगशास्त्राणि चक्रिरे [001.058]
क्रियायोगपराणीह [001.058]
मुक्तिकार्याण्यनेकशः [001.058]
आराध्यते जगन्नाथो [001.059]
यदनुष्ठानतत्परैः [001.059]
परमात्मा हृषीकेशः [001.059]
सर्वेशः सर्वभावनः [001.059]
तानि ते नृपशार्दूल [001.060]
सर्वपापहराण्यहम् [001.060]
वक्ष्यामि श्रूयतामन्यद् [001.060]
रहस्यमिदमुत्तमम् [001.060]
संसारार्णवमग्नानां [001.061]
विषयाक्रान्तचेतसाम् [001.061]
उत्तारमिच्छतां तस्माद् [001.061]
भृशं यत्नान्तरैरपि [001.061]
विष्णुपोतं विना नान्यत् [001.061]
किंचिदस्ति परायणम् [001.061]
उत्तिष्ठंश्चिन्तय हरिं [001.062]
व्रजंश्चिन्तय केशवम् [001.062]
भुञ्जंश्चिन्तय गोविन्दम् [001.062]
स्वपंश्चिन्तय माधवम् [001.062]
एवमेकाग्रचित्तस्त्वं [001.063]
संश्रितो मधुसूदनम् [001.063]
जन्ममृत्युजराग्राहं [001.063]
संसाराम्भस्तरिष्यसि [001.063]
अनन्तमीड्यं पुरुषं पुराणं [001.064]
जगद्विधातारमजं जनित्र्यम् [001.064]
समाश्रिता ये हरिमीशितारं [001.064]
तेषां भवो नास्ति हि मुक्तिभाजाम् [001.064]
श्रूयतां कुरुशार्दूल [002.001]
संवादो ऽयमनुत्तमः [002.001]
अम्बरीषस्य राजर्षेः [002.001]
सह देवेन चक्रिणा [002.001]
अम्बरीषो महीपालः [002.002]
पालयन्नेव मेदिनीम् [002.002]
उद्विग्न एव द्वन्द्वान्तम् [002.002]
अभीप्सुः पुरुषर्षभः [002.002]
देवदेवात्स गोविन्दाद् [002.003]
अभीप्सुर्द्वन्द्वसंक्षयम् [002.003]
तपस्तेपे निराहारो [002.003]
गृणन्ब्रह्म सनातनम् [002.003]
तस्य कालेन महता [002.004]
भक्तिमुद्वहतः पराम् [002.004]
तुतोष भगवान्विष्णुः [002.004]
सर्वलोकपतिः प्रभुः [002.004]
स रूपमैन्द्रमास्थाय [002.005]
तमुवाच महीपतिम् [002.005]
मेघगम्भीरनिर्घोषो [002.005]
वारणेन्द्रगतिस्तदा [002.005]
राजर्षे वद यत्कार्यं [002.006]
तव चेतस्यवस्थितम् [002.006]
वरदो ऽहमनुप्राप्तो [002.006]
वरं वरय सुव्रत [002.006]
एवमुक्तस्ततो राजा [002.007]
विलोक्य च पुरंदरं [002.007]
प्रत्युवाचार्घ्यमुद्यम्य [002.007]
स्वागतं ते ऽस्त्विति प्रभो [002.007]
नाहमाराधयामि त्वां [002.008]
तव बद्धो ऽयमञ्जलिः [002.008]
वरार्थिनां त्वं वरदः [002.008]
प्रयच्छाभिमतान्वरान् [002.008]
वरार्थाय त्वयान्यैश्च [002.009]
क्रियते नृपते तपः [002.009]
स किमर्थं त्वमस्मत्तो [002.009]
न गृह्णास्यभिवांछितम् [002.009]
न वरार्थमयं यत्नस् [002.010]
त्वत्तो देवपते मम [002.010]
विष्णोराराधनार्थाय [002.010]
विद्धि मां त्वं कृतोद्यमम् [002.010]
अहं हि सर्वदेवानां [002.011]
त्रैलोक्यस्य तथेश्वरः [002.011]
पालयन्ति ममैवाज्ञाम् [002.011]

आदित्याद्याः सदा सुराः [002.011]
आदित्या वसवो रुद्रा [002.012]
नासत्यौ मरुतां गणाः [002.012]
प्रजानां पतयः साध्या [002.012]
विश्वेदेवा महर्षयः [002.012]
कुर्वन्त्येते ममैवाज्ञां [002.013]
सिद्धगन्धर्वपन्नगाः [002.013]
मत्तो हि को ऽन्यो वरदः [002.013]
प्रतिगृह्णीष्व वाञ्छितम् [002.013]
त्वमिन्द्रः सत्यमेवैतद् [002.014]
देवस्त्रिभुवनेश्वरः [002.014]
त्वयापि प्राप्तमैश्वर्यं [002.014]
यतस्तं तोषयाम्यहम् [002.014]
त्रैलोक्यं तव देवेश [002.015,*(1)]
वशे यस्य महात्मनः [002.015,*(1)]
सप्तोदरे शया लोकास् [002.015]
तमीशं तोषयाम्यहम् [002.015]
यस्य त्वममरैः सर्वैः [002.016]
समवेताः सुरेश्वर [002.016]
देहप्राप्तो ऽन्तरस्थो वै [002.016]
तं नमामि जनार्दनम् [002.016]
निमेषो ब्रह्मणो रात्रिर् [002.017]
उन्मेषो यस्य वासरः [002.017]
तमीड्यमीशमजरं [002.017]
प्रणतो ऽस्मि जनार्दनम् [002.017]
यो हर्ता जगतो देवः [002.018]
कर्ता पालायिता च यः [002.018]
त्रयस्यास्य च यो योनिस् [002.018]
तं विष्णुं तोषयाम्यहम् [002.018]
हिरण्यकशिपुः पूर्वं [002.019]
हिरण्याक्षश्च ते रिपुः [002.019]
तवानुकम्पया येन [002.019]
हतौ दैत्यौ नतो ऽस्मि तम् [002.019]
बलिनापहृतं शक्र [002.020]
दत्तं येन पुरा तव [002.020]
त्रैलोक्यराज्यं तं बद्ध्वा [002.020]
तं नमामि जनार्दनम् [002.020]
प्रसीद शक्र गच्छ त्वम् [002.021]
अहमप्यत्र संस्थितः [002.021]
तपस्तप्स्ये जगन्नाथं [002.021]
द्रष्टुं नारायणं हरिम् [002.021]
एवमुक्तस्ततस्तेन [002.022]
शक्ररूपी जनार्दनः [002.022]
पुनरप्याह तं कोपात् [002.022]
पार्थिवं तपसि स्थितम् [002.022]
यदि मद्वचनादद्य [002.023]
न भवांस्त्यक्ष्यते तपः [002.023]
वज्रं ते प्रहरिष्यामि [002.023]
बुध्यस्वैतद्यदीच्छसि [002.023]
नाप्यल्पमपराधं ते [002.024]
करोमि त्रिदशेश्वर [002.024]
तथापि वधयोग्यं मां [002.024]
मन्यसे चेत्क्षिपायुधम् [002.024]
श्रूयते किल गोविन्दे [002.025]
भक्तिमुद्वहतां नृणाम् [002.025]
संसारार्णवभीतानां [002.025]
त्रिदशाः परिपन्थिनः [002.025]
तापसो ऽहं क्व निःसङ्गः [002.026]
क्व च कोपस्तवेदृशः [002.026]
विज्ञातमेतद्गोविन्द- [002.026]
भक्तिविघ्नोपपादितम् [002.026]
भवन्ति बहवो विघ्ना [002.027]
नरे श्रेयःपरायणे [002.027]
गोविन्दभक्त्यभ्यधिकं [002.027]
श्रेयश्चान्यन्न विद्यते [002.027]
स त्वं प्रहर वा मा वा [002.028]
मयि वज्रं पुरंदर [002.028]
नाहमुत्सृज्य गोविन्दम् [002.028]
अन्यमाराधयामि भोः [002.028]
न चापि वज्रं वज्री वा [002.029]
त्वं च नान्ये सुरासुराः [002.029]
शक्ता निहन्तुमीशाने [002.029]
हृदयस्थे जनार्दने [002.029]
किं च नो बहुनोक्तेन [002.030]
नाहं वक्ष्याम्यतः परं [002.030]
यथेप्सितं कुरुष्व त्वं [002.030]
करिष्ये ऽहमभीप्सितम् [002.030]
एवमुक्त्वा सुरपतिं [002.031]
पार्थिवः स पुनस्तपः [002.031]
चचार मौनमास्थाय [002.031]
तेनातुष्यत केशवः [002.031]
संदर्शयामास ततः [002.032]
स्वं वपुः कैटभार्दनः [002.032]
चतुर्भुजमुदाराङ्गं [002.032]

शङ्खचक्रगदाधरम् [002.032]
किरीटस्रग्धरं स्पष्टं [002.033]
नीलोत्पलदलच्छविम् [002.033]
ऐरावतश्च गरुडस् [002.033]
तत्क्षणात्समदृश्यत [002.033]
स च राजवरो देवं [002.034]
पीतवाससमच्युतम् [002.034]
विलोक्य भक्तिशिरसा [002.034]
सहसैव महीं ययौ [002.034]
प्रत्युवाच च भूपालः [002.035]
प्रणिपत्य कृताञ्जलिः [002.035]
रोमाञ्चिततनुः स्तोत्रम् [002.035]
पद्मनाभं ततो ऽस्तुवत् [002.035]
आदिदेव जयाजेय [002.036]
जय सर्गादिकारक [002.036]
जयास्पष्टप्रकाशाण्ड [002.036]
बृहन्मूर्ते जयाक्षर [002.036]
जय सर्वगताचिन्त्य [002.037]
जय जन्मजरापह [002.037]
जय व्यापिञ्जयाभेद [002.037]
सर्वभूतेष्ववस्थित [002.037]
जय यज्ञपते नाथ [002.038]
हव्यकव्याशनाव्यय [002.038]
जय विज्ञातसिद्धान्त [002.038]
मायामोहक केशव [002.038]
लोकस्थित्यर्थमनघ [002.039]
वराह जय भूधर [002.039]
नृसिंह जय देवारि- [002.039]
वक्षःस्थलविदारण [002.039]
देवानामरिभीतानाम् [002.040]
आर्तिनाशन वामन [002.040]
जय क्रान्तसमस्तोर्वी- [002.040]
नभःस्वर्लोकभावन [002.040]
जितं ते जगतामीश [002.*(2)]
जितं ते सर्व सर्वद [002.*(2)]
जितं ते सर्वभूतेश [002.041]
योगिध्येय नमो ऽस्तु ते [002.041]
नमो ऽस्त्वव्यपदेश्याय [002.042]
नमः सूक्ष्मस्वरूपिणे [002.042]
नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यं [002.042]
विश्वमूर्ते नमो ऽस्तु ते [002.042]
ब्रह्माद्यैश्चिन्त्यते रूपं [002.043]
यत्तत्सदसतः परं [002.043]
विशेषैरविशेष्याय [002.043]
तस्मै तुभ्यं नमो नमः [002.043]
पुरुषाख्यं ततो रूपं [002.044]
निर्गुणं गुणभोक्तृ च [002.044]
प्रकृतेः परतः सूक्ष्मं [002.044]
तन्नमस्यामि ते हरे [002.044]
अव्यक्तादिविशेषान्तम् [002.045]
अतिसूक्ष्मतमं महत् [002.045]
प्राकृतं तव तद्रूपं [002.045]
तस्मै देव नमाम्यहम् [002.045]
रूपैर्नानाविधैर्यश्च [002.046]
तद्रूपान्तरगोचरम् [002.046]
लीलया व्यवहारस्ते [002.046]
तस्मै देवात्मने नमः [002.046]
प्रसीद विष्णो गोविन्द [002.047]
शङ्खचक्रगदाधर [002.047]
धराधरारविन्दाक्ष [002.047]
वासुदेव महेश्वर [002.047]
इत्थं स्तुतो जगन्नाथः [002.048]
प्रोक्तवानिति केशवः [002.048]
अम्बरीषं पृथिवीशं [002.048]
जगत्संनादयन्गिरा [002.048]
अम्बरीष प्रसन्नो ऽस्मि [002.049]
भक्त्या स्तोत्रेण चानघ [002.049]
वरं वृणीष्व धर्मज्ञ [002.049]
यत्ते मनसि वर्तते [002.049]
एष एव वरः श्लाघ्यो [002.050]
यद्दृष्टो ऽसि जगत्पते [002.050]
त्वद्दर्शनमपुण्यानां [002.050]
स्वप्नेष्वपि हि दुर्लभम् [002.050]
बाल्यात्प्रभृति या देव [002.051]
त्वयि भक्तिर्ममाच्युत [002.051]
वेत्ति तां भगवानेव [002.051]
हृदिस्थः सर्वदेहिनाम् [002.051]
त्वत्प्रसादान्ममेशान [002.052]
राज्यमव्याहतं भुवि [002.052]
कोशदण्डौ तथातीव [002.052]
शरीरारोग्यमुत्तमम् [002.052]
स्त्रियो ऽन्नपानसामर्थ्या [002.053]
हानिः स्वल्पापि नास्ति मे [002.053]
बलं नागसहस्रस्य [002.053]

धारयाम्यरिसूदन [002.053]
संततिर्निर्भृता भृत्या [002.054]
सानुरागाश्च मे जनाः [002.054]
धर्महानिश्च देवेश [002.054]
न हि मे पालने भुवः [002.054]
यद्यदिच्छाम्यहं तत्तत् [002.055]
सर्वमस्ति जगत्पते [002.055]
एतेनैवानुमानेन [002.055]
प्रसन्नो भगवानिति [002.055]
ज्ञातं मया हि गोविन्दे [002.056]
नाप्रसन्ने विभूतयः [002.056]
एवं सर्वसुखाह्लाद- [002.056]
मध्यस्थो ऽपि च केशव [002.056]
पुनरावृत्तिदुःखानां [002.057]
त्रासादुद्विग्नमानसः [002.057]
मयि प्रसादाभिमुखं [002.057]
मनस्ते यदि केशव [002.057]
तन्मामगाधे संसारे [002.057]
मग्नमुद्धर्तुमर्हसि [002.057]
सुखानि तानि नैवान्ते [002.058]
येषां दुःखं न तत्सुखम् [002.058]
यदन्ते दुःखमागामि [002.058]
किंपाकस्यैव भक्षणम् [002.058]
स प्रसादं कुरु गुरो [002.059]
जगताम्त्वं जनार्दन [002.059]
ज्ञानदानेन येनेमां [002.059]
वागुरान्निस्तरेमहि [002.059]
इत्युक्तस्तस्य गोविन्दः [002.060]
कथयामास योगवित् [002.060]
योगं निर्बीजमत्यन्त- [002.060]
दुःखसंयोगभेषजम् [002.060]
उपदिष्टे ततो योगे [002.061]
प्रणिपत्याच्युतं नृपः [002.061]
पुनः प्राह महाबाहुर् [002.061]
विनयावनतः स्थितः [002.061]
देवदेव त्वया योगो [002.062]
यः प्रोक्तो मधुसूदन [002.062]
नैष प्राप्यो मया नान्यैर् [002.062]
मानवैरजितेन्द्रियैः [002.062]
विषया दुर्जयाः पुंभिर् [002.063]
इन्द्रियाकर्षिणः सदा [002.063]
इन्द्रियाणां जयं तेषु [002.063]
कः शक्तानां करिष्यति [002.063]
अहं ममेति चाख्याति [002.064]
दुर्जयं चञ्चलं मनः [002.064]
रागादयः कथं जेतुं [002.064]
शक्या जन्मान्तरैरपि [002.064]
सो ऽहमिच्छामि देवेश [002.065]
त्वत्प्रसादादनिर्जितैः [002.065]
रागादिभिरमर्त्यत्वं [002.065]
प्राप्तुं प्रक्षीणकल्मषः [002.065]
यद्येवं मुक्तिकामस्त्वं [002.066]
नरनाथ शृणुष्व तत् [002.066]
क्रियायोगं समस्तानां [002.066]
क्लेशानां हानिकारकम् [002.066]
मन्मना भव मद्भक्तो [002.067]
मद्याजी मां नमस्कुरु [002.067]
मामेवैष्यसि युक्त्वैवम् [002.067]
आत्मानं मत्परायणः [002.067]
मद्भावना मद्यजना [002.068]
मद्भक्ता मत्परायणाः [002.068]
मम पूजापराश्चैव [002.068]
मयि यान्ति लयं नराः [002.068]
सर्वभूतेषु मां पश्य [002.069]
समवस्थितमीश्वरम् [002.069]
कर्तासि केन वैरत्वं [002.069]
एवं दोषान्प्रहास्यसि [002.069]
जङ्गमाजङ्गमे ज्ञाते [002.070]
मय्यात्मनि तथा तव [002.070]
रागलोभादिनाशेन [002.070]
भवित्री कृतकृत्यता [002.070]
भक्त्यातिप्रवणस्यापि [002.071]
चञ्चलत्वान्मनो यदि [002.071]
मय्यनासादवद्रूप [002.071]
कुरु मद्रूपिणीं तनुम् [002.071]
सुवर्णरजताद्यैस्त्वं [002.072]
शैलमृद्दारुलेखजाम् [002.072]
पूजामर्हैर्विविधैः [002.072]
संपूजय च पार्थिव [002.072]
तस्यां चित्तं समावेश्य [002.073]
त्याजयान्यान्व्यपाश्रयान् [002.073]
पूजिता सैव ते भक्त्या [002.073]
ध्याता चैवोपकारिणी [002.073]
गच्छंस्तिष्ठन्स्वपन्भुञ्जंस् [002.074]

तामेवाग्रे च पृष्ठतः [002.074]
उपर्यधस्तथा पार्श्वे [002.074]
चिन्तयान्तस्तथात्मनः [002.074]
स्नानैस्तीर्थोदकैर्हृद्यैः [002.075]
पुष्पगन्धानुलेपनैः [002.075]
वासोभिर्भूषणैर्भक्ष्यैर् [002.075]
गीतवाद्यैर्मनोहरैः [002.075]
यच्च यच्च नृपेष्टं ते [002.076]
किंचिद्भोज्यादि तेन ताम् [002.076]
भक्तिनम्रो नरश्रेष्ठ [002.076]
प्रीणयार्चां कृतां मम [002.076]
रागेणाकृष्यते चेतो [002.077]
गन्धर्वाभिमुखं यदि [002.077]
मयि बुद्धिं समावेश्य [002.077]
गायेथा मम तां कथाम् [002.077]
कथायां रमते चेतो [002.078]
यदि तत्भावना मम [002.078]
श्रोतव्या प्रीतियुक्तेन [002.078]
अवतारेषु या कथा [002.078]
एवं मय्यर्पितमनाश् [002.079]
चेतसो ये व्यपाश्रयाः [002.079]
हेयास्तानखिलान्भूप [002.079]
परित्यक्ष्यस्यभीर्भव [002.079]
अक्षीणरागदोषो ऽपि [002.080]
मत्क्रिया परमः परम् [002.080]
पदमाप्स्यसि मा भैस्त्वं [002.080]
मय्यर्पितमना भव [002.080]
मयि संन्यस्य सर्वं त्वम् [002.081]
आत्मानं यत्तवास्ति च [002.081]
मदर्थं कुरु कर्माणि [002.081]
मा च धर्मव्यतिक्रमम् [002.081]
राज्यं कुरु नरश्रेष्ठ [002.082]
निवेद्य पृथिवीं मम [002.082]
तद्व्याघातपरा ये च [002.082]
जहि तानवनीपते [002.082]
एतेनैवोपदेशेन [002.083]
व्याख्यातमखिलं तव [002.083]
क्रियायोगं समास्थाय [002.083]
मय्यर्पितमना भव [002.083]
मद्धिताय जगन्नाथ [002.084]
क्रियायोगाश्रितं मम [002.084]
विस्तरेणेदमाख्याहि [002.084]
प्रसन्नस्त्वं हि दुःखहा [002.084]
त्वामृतेन हि नो वक्तुं [002.085]
समर्थो ऽन्यो जगद्गुरो [002.085]
गुह्यमेतत्पवित्रं च [002.085]
तदाचक्ष्य प्रसीद मे [002.085]
आख्यास्यत्येतदखिलं [002.086]
वसिष्ठस्ते पुरोहितः [002.086]
मत्प्रसादादविकलं [002.086]
स च वेत्स्यत्यशेषतः [002.086]
इत्युक्त्वान्तर्दधे देवः [002.087]
सर्वलोकेश्वरो हरिः [002.087]
स च राजा वनाद्भूयो [002.087]
निजमभ्यागमत्पुरम् [002.087]
राज्यस्थस्तु महीपालः [003.001]
प्रणिपत्य पुरोहितम् [003.001]
वसिष्ठं परिपप्रच्छ [003.001]
विष्णोराराधनं प्रति [003.001]
देवदेवेन भगवन्न् [003.002]
आदिष्टो ऽसि महात्मना [003.002]
क्रियायोगाश्रितं सर्वं [003.002]
व्याख्यास्यति भवान्किल [003.002]
स त्वां पृच्छाम्यहं सर्वं [003.003]
क्रियायोगेन केशवम् [003.003]
संतोषयितुमीशानं [003.003]
यथा शक्ष्यामि तद्वद [003.003]
देवप्रसादादखिला [003.004]
ममापि स्मृतिरागता [003.004]
ज्ञानमेतदशेषं ते [003.004]
कथयामि निबोध तत् [003.004]
भक्तिमानभवद्दैत्यो [003.005]
हिरण्यकशिपोः सुतः [003.005]
नारायणे महाप्रज्ञः [003.005]
सर्वलोकपरायणे [003.005]
स पप्रच्छ भृगुश्रेष्ठं [003.005]
शुक्रमात्मपुरोहितम् [003.005]
भगवन्नृसिंहरूपस्य [003.006]
विष्णोस्तातं जिघांसतः [003.006]
दृष्टं देहे मया सर्वं [003.006]
त्रैलोक्यं भूर्भुवादिकम् [003.006]
ब्रह्मा प्रजापतिश्चेन्द्रो [003.007]
रुद्रैः पशुपतिः सह [003.007]
वसवो ऽष्टौ तथादित्या [003.007]

द्वादशाहःक्षपा मही [003.007]
दिशो नभस्तारकौघं [003.008]
नक्षत्रग्रहसंकुलम् [003.008]
अश्विनौ मरुतः साध्या [003.008]
विश्वेदेवास्तथ र्षयः [003.008]
वर्षाचलास्तथा नद्यः [003.009]
सप्त सप्त कुलाचलाः [003.009]
समुद्राः सप्त ऋतवः [003.009]
कान्ताराणि वनानि च [003.009]
नगरग्रामतरुभिः [003.009]
समावेतं च भूतलम् [003.009]
एतच्चान्यच्च यत्किंचिद् [003.010]
देवर्षिपितृमानवम् [003.010]
सतिर्यगूर्ध्वपातालं [003.010]
तस्य दृष्टं तनौ मया [003.010]
सो ऽहं तमजरं देवं [003.011]
दुष्टदैत्यनिवर्हणम् [003.011]
आराधयितुमिच्छामि [003.011]
भगवंस्त्वदनुज्ञया [003.011]
अनुग्राह्यो ऽस्मि यदि ते [003.012]
ममायं भक्तिमानिति [003.012]
तन्ममोपदिशाद्य त्वं [003.012]
महदाराधनं हरेः [003.012]
अनुग्राह्यो ऽसि देवस्य [003.013]
नूनमव्यक्तजन्मनः [003.013]
आराधनाय दैत्येन्द्र [003.013]
यत्ते तत्प्रवणं मनः [003.013]
यदि देवपतिं विष्णुम् [003.014]
आराधयितुमिच्छसि [003.014]
भगवन्तमनाद्यन्तं [003.014]
भव भागवतो ऽसुर [003.014]
न ह्यभागवतैर्विष्णुर् [003.015]
ज्ञातुं स्तोतुं च तत्त्वतः [003.015]
द्रष्टुं वा शक्यते मर्त्यैः [003.015]
प्रवेष्टुं कुत एव हि [003.015]
जन्मभिर्बहुभिः पूता [003.016]
नरास्तद्गतचेतसः [003.016]
भवन्ति वै भागवतास् [003.016]
ते विष्णुं प्रविशन्ति च [003.016]
अनेकजन्मसंसार- [003.017]
चिते पापसमुच्चये [003.017]
नाक्षीणे जायते पुंसां [003.017]
गोविन्दाभिमुखी मतिः [003.017]
प्रद्वेषं याति गोविन्दे [003.018]
द्विजान्वेदांश्च निन्दति [003.018]
यो नरस्तं विजानीयाद् [003.018]
असुरांशसमुद्भवम् [003.018]
पाषण्डेषु रतिः पुंसां [003.019]
हेतुवादानुकूलता [003.019]
जायते विष्णुमायाम्भः- [003.019]
पतितानां दुरात्मनाम् [003.019]
यदा पापक्षयः पुंसां [003.020]
तदा वेदद्विजातिषु [003.020]
विष्णौ च यज्ञपुरुषे [003.020]
श्रद्धा भवति ते यथा [003.020]
यदा स्वल्पावशेषस्तु [003.021]
नराणां पापसंचयः [003.021]
भवन्ति ते भागवतास् [003.021]
तदा दैत्यपते नराः [003.021]
भ्राम्यतामत्र संसारे [003.022]
नराणां कर्मदुर्गमे [003.022]
हस्तावलम्बदो ह्येको [003.022]
भक्तिप्रीतो जनार्दनः [003.022]
स त्वं भागवतो भूत्वा [003.023]
सर्वपापहरं हरिम् [003.023]
आराधय परं भक्त्या [003.023]
प्रीतिमेष्यति केशवः [003.023]
किंलक्षणा भागवता [003.024]
भवन्ति पुरुषा गुरो [003.024]
यच्च भागवतैः कार्यं [003.024]
तन्मे कथय भार्गव [003.024]
कर्मणा मनसा वाचा [003.025]
प्राणिनां यो न हिंसकः [003.025]
भावभक्तश्च गोविन्दे [003.025]
दैत्य भागवतो हि सः [003.025]
यो ब्राह्मणांश्च वेदांश्च [003.026]
नित्यमेन्वानुमंस्यति [003.026]
न च द्रोग्धा परं वादे [003.026]
दैत्य भागवतो हि सः [003.026]
सर्वान्देवान्हरिं वेत्ति [003.027]
सर्वलोकांश्च केशवम् [003.027]
तेभ्यश्च नान्यमात्मानं [003.027]
दैत्य भागवतो हि सः [003.027]
देवं मनुष्यमन्यं वा [003.028]

पशुपक्षिपिपीलिकान् [003.028]
तरुपाषाणकष्ठादि [003.028]
भूम्यम्भोगगनं दिशः [003.028]
आत्मानं वापि देवेशान् [003.029]
नातिरिक्तं जनार्दनात् [003.029]
यो भजेत विजानीष्व [003.029]
तं वै भागवतं नरम् [003.029]
सर्वं भगवतो भावो [003.030]
यद्भूतं भवसंस्थितम् [003.030]
इति यो वै विजानाति [003.030]
स तु भागवतो नरः [003.030]
भवभीतिं हरत्येष [003.031]
भक्तिभावेन भावितः [003.031]
भगवानिति भावो यः [003.031]
स तु भागवतो नरः [003.031]
भावं न कुरुते यस्तु [003.032]
सर्वभूतेषु पापकम् [003.032]
कर्मणा मनसा वाचा [003.032]
स तु भागवतो नरः [003.032]
बाह्यार्थनिरपेक्षो यो [003.033]
भक्तो भगवतः क्रियाम् [003.033]
भावेन निष्पादयति [003.033]
ज्ञेयो भागवतस्तु सः [003.033]
नारयो यस्य न स्निग्धा [003.034]
न चोदासी न वृत्तयः [003.034]
पश्यतः सर्वमेवेदं [003.034]
विष्णुं भागवतो हि सः [003.034]
सुतप्तेनेह तपसा [003.035]
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः [003.035]
तां गतिं न नरा यान्ति [003.035]
यां वै भागवता गताः [003.035]
योगच्युतैर्भागवतैर् [003.036]
देवराजः शतक्रतुः [003.036]
अर्वाङ्निरीक्ष्यते यज्ञी [003.036]
किमु ये योगपारगाः [003.036]
यज्ञनिष्पत्तये वेदा [003.037]
यज्ञो यज्ञपतेः कृते [003.037]
तत्तोषणाय भावेन [003.037]
तस्माद्भागवतो भव [003.037]
येन सर्वात्मना विष्णौ [003.038]
भक्त्या भावो निवेशितः [003.038]
दैत्येश्वर कृतार्थत्वाच् [003.038]
श्लाघ्यो भागवतो हि सः [003.038]
अपि नः स कुले धन्यो [003.039]
जायते कुलपावनः [003.039]
भगवान्भक्तिभावेन [003.039]
येन विष्णुरुपासितः [003.039]
यः कारयति देवार्चा [003.040]
हृदयालम्बनं हरेः [003.040]
स नरो विष्णुसालोक्यम् [003.040]
उपैति धूतकल्मषः [003.040]
यश्च देवालयं भक्त्या [003.041]
विष्णोः कारयति स्वयम् [003.041]
स सप्तपुरुषांल्लोकान् [003.041]
विष्णोर्नयति मानवः [003.041]
यावन्त्यब्दानि देवार्चा [003.042]
हरेस्तिष्ठति मन्दिरे [003.042]
तावद्वर्षसहस्राणि [003.042]
विष्णुलोके स मोदते [003.042]
देवार्चा लक्षणोपेता [003.043]
तद्गृहं सततं दिवि [003.043]
निष्कामं च मनो यस्य [003.043]
स यात्यक्षरसात्म्यताम् [003.043]
पुष्पाण्यतिसुगन्धीनि [003.044]
मनोज्ञानि च यः पुमान् [003.044]
प्रयच्छति हृषीकेशे [003.044]
तद्भावगतमानसः [003.044]
धूपांश्च विविधांस्तांस्तान् [003.045]
गन्धाढ्यं चानुलेपनम् [003.045]
दीपावल्युपहारांश्च [003.045]
यच्चाभीष्टमथात्मनः [003.045]
नरः सो ऽनुदिनं यज्ञं [003.046]
करोत्याराधनं हरेः [003.046]
यज्ञेशो भगवान्विष्णुर् [003.046]
मखैरपि हि तोष्यते [003.046]
बहूपकरणा यज्ञा [003.047]
नानासंभारविस्तराः [003.047]
प्राप्यन्ते ते धनयुतैर् [003.047]
मनुष्यैर्नाल्पसंचयैः [003.047]
भक्त्या च पुरुषैः पूजा [003.048]
कृता दूर्वाङ्कुरैरपि [003.048]
हरेर्ददाति हि फलं [003.048]
सर्वयज्ञैः सुदुर्लभम् [003.048]
यानि पुष्पाणि हृद्यानि [003.049]

धूपगन्धानुलेपनम् [003.049]
दयितं भूषणं यच्च [003.049]
ये च कौशेयवाससी [003.049]
यानि चाभ्यवहाराणि [003.050]
भक्ष्याणि च फलानि च [003.050]
प्रयच्छ तानि गोविन्दे [003.050]
भवेथाश्चैव तन्मनाः [003.050]
आद्यन्तं यज्ञपुरुषं [003.051]
यथाशक्त्या प्रसादय [003.051]
आराध्य याति तं देवं [003.051]
तस्मिन्नेव नरो लयम् [003.051]
पुण्यैस्तीर्थोदकैर्गन्धैर् [003.052]
मधुना सर्पिषा तथा [003.052]
क्षीरेण स्नापयेदीशम् [003.052]
अच्युतं जगतः पतिम् [003.052]
दधिक्षीरह्रदान्पुण्यांस् [003.053]
ततो लोकान्मधुच्युतः [003.053]
प्रयास्यस्यसुरश्रेष्ठ [003.053]
निर्वृतिं चापि शाश्वतीम् [003.053]
स्तोत्रैर्गीतैस्तथा वाद्यैर् [003.054]
ब्राह्मणानां च तर्पणैः [003.054]
मनसश्चैकतायोगाद् [003.054]
आराधय जनार्दनम् [003.054]
आराध्य तं विदेहानां [003.055]
पुरुषाः सप्तसप्ततिः [003.055]
हैहयाः पञ्चपञ्चाशद् [003.055]
अमृतत्वमुपागताः [003.055]
स त्वमेभिः प्रकारैस्तम् [003.056]
उपवासैश्च केशवम् [003.056]
तोषयाद्यो हि तुष्टो ऽसौ [003.056]
विष्णुर्द्वन्द्वप्रशान्तिदः [003.056]
उपवासैर्हृषीकेशः [004.001]
कथं तुष्यति भार्गव [004.001]
परिहारांस्तथाचक्ष्व [004.001]
ये त्याज्याश्चोपवासिनाम् [004.001]
यद्यत्कार्यं यथा चैव [004.002]
केशवाराधने नरैः [004.002]
तत्सर्वं विस्तराद्ब्रह्मन् [004.002]
यथावद्वक्तुमर्हसि [004.002]
स्मृतः संपूजितो धूप- [004.003]
पुष्पाद्यैर्दयितैर्हरिः [004.003]
भोगिनामुपकाराय [004.003]
किं पुनश्चोपवासिनाम् [004.003]
उपावृत्तस्तु पापेभ्यो [004.004]
यस्तु वासो गुणैः सह [004.004]
उपवासः स विज्ञेयः [004.004]
सर्वभोगविवर्जितः [004.004]
एकरात्रं द्विरात्रं वा [004.005]
त्रिरात्रमथवापरम् [004.005]
उपवासी हरिं यस्तु [004.005]
भक्त्या ध्यायति मानवः [004.005]
तन्नामजापी तत्कर्म- [004.006]
रतिस्तद्गतमानसः [004.006]
निष्कामो दैत्य स ब्रह्म [004.006]
परमाप्नोत्यसंशयम् [004.006]
यं च काममभिध्यायन् [004.007]
केशवार्पितमानसः [004.007]
उपोष्यति तमाप्नोति [004.007]
प्रसन्ने गरुडध्वजे [004.007]
कथ्यते च पुरा विप्रः [004.008]
पुलस्त्यो ब्रह्मवादिना [004.008]
दाल्भ्येन पृष्टो ऽकथयद् [004.008]
यथैतदरिसूदन [004.008]
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः [004.009]
शूद्रैः स्त्रीभिस्तथा मुने [004.009]
संसारगर्तपङ्कस्थैः [004.009]
सुगतिः प्राप्यते कथम् [004.009]
अनाराध्य जगन्नाथं [004.010]
सर्वधातारमच्युतम् [004.010]
निर्व्यलीकेन चित्तेन [004.010]
कः प्रयास्यति सद्गतिम् [004.010]
विषयग्राहि वै यस्य [004.011]
न चित्तं केशवार्पितम् [004.011]
स कथं पापपङ्काङ्की [004.011]
नरो यास्यति सद्गतिम् [004.011]
यदि संसारदुःखार्तः [004.012]
सुगतिं गन्तुमिच्छसि [004.012]
तदाराधय सर्वेशं [004.012]
जगद्धातारमच्युतम् [004.012]
पुष्पैः सुगन्धैर्हृद्यैश्च [004.013]
धूपैः सागरुचन्दनैः [004.013]
वासोभिर्भूषणैर्भक्ष्यैर् [004.013]
उपवासपरायणः [004.013]
यदि संसारनिर्वेदाद् [004.014]

अभिवाञ्छसि सद्गतिम् [004.014]
तदाराधय गोविन्दं [004.014]
यच्चेष्टं तव चेतसि [004.014]
पुष्पाणि यदि ते न स्युः [004.015]
शस्तं पादपपल्लवैः [004.015]
दूर्वाङ्कुरैरपि ब्रह्मंस् [004.015]
तदभावे ऽर्चयाच्युतम् [004.015]
सुगन्धिपुष्पदीपाद्यैर् [004.*(3)]
यः कुर्यात्केशवालये [004.*(3)]
सर्वतीर्थफलं तस्य [004.*(3)]
संभवेत्केशवार्चया [004.*(3)]
सबाह्याभ्यन्तरं यस्तु [004.*(3)]
मार्जयेदच्युतालयम् [004.*(3)]
सबाह्याभ्यन्तरं तस्य [004.*(3)]
कायो निष्कल्मषो भवेत् [004.*(3)]
पुष्पपत्राम्बुभिर्धूपैर् [004.016]
यथाविभवमच्युतः [004.016]
पूजितस्तुष्टिमतुलां [004.016]
भक्त्यायात्येकचेतसाम् [004.016]
यः सदायतने विष्णोः [004.017]
कुरुते मार्जनक्रियाम् [004.017]
स पांसुभूमेर्देहाच्च [004.017]
सर्वपापं व्यपोहति [004.017]
यावन्त्यः पांसुकणिका [004.018]
मार्ज्यन्ते केशवालये [004.018]
दिनानि दिवि तावन्ति [004.018]
तिष्ठत्यस्तमलो नरः [004.018]
अहन्यहनि यत्पापं [004.019]
कुरुते द्विजसत्तम [004.019]
गोचर्ममात्रं संमार्ज्य [004.019]
हन्ति तत्केशवालये [004.019]
यश्चोपलेपनं कुर्याद् [004.020]
विष्णोरायतने नरः [004.020]
सो ऽपि लोकं समासाद्य [004.020]
मोदते च शतक्रतोः [004.020]
मृदा धातुविकारैर्वा [004.021]
वर्णकैर्गोमयेन वा [004.021]
उपलेपनकृद्याति [004.021]
विमानं मणिचित्रितम् [004.021]
उदकाभ्युक्षणं विष्णोर् [004.022]
यः करोति तथा गृहे [004.022]
सो ऽपि गच्छति यत्रास्ते [004.022]
भगवान्यादसां पतिः [004.022]
पुष्पप्रकरमत्यर्थं [004.023]
सुगन्धं केशवालये [004.023]
उपलिप्ते नरो दत्त्वा [004.023]
न दुर्गतिमवाप्नुयात् [004.023]
विमानमतिविद्योति [004.024]
सर्वरत्नमयं दिवि [004.024]
समाप्नोति नरो दत्त्वा [004.024]
दीपकं केशवालये [004.024]
यस्तु संवत्सरं पूर्णं [004.025]
तिलपात्रप्रदो नरः [004.025]
ध्वजं तु विष्णवे दद्यात् [004.025]
सममेतत्फलं द्विज [004.025]
विधुन्वन्हन्ति वातेन [004.026]
दातुरज्ञानतः कृतम् [004.026]
पापं केतुर्गृहे विष्णोर् [004.026]
दिवारात्रमसंशयम् [004.026]
गीतवाद्यादिभिर्देवं [004.027]
य उपास्ते जनार्दनम् [004.027]
गान्धर्वैर्गीतनृत्यैः स [004.027]
विमानस्थो निषेव्यते [004.027]
जातिस्मरत्वं मेधां च [004.028]
तथैवोपरमे स्मृतिम् [004.028]
प्राप्नोति विष्ण्वायतने [004.028]
पुण्याख्यानकथाकरः [004.028]
उपोषितः पूजितो वा [004.*(4)]
दृष्टो वा नमितो ऽपि वा [004.*(4)]
प्रदम्भ हरते पापं [004.*(4)]
को न सेवेद्धरिं ततः [004.*(4)]
वेदवादक्रियायज्ञ- [004.*(4)]
स्नानतीर्थफलं परम् [004.*(4)]
अष्टाङ्गप्रणिपातेन [004.*(4)]
प्रणिपत्य हरिं लभेत् [004.*(4)]
प्रगम्य हृदा शिरसा [004.*(4)]
पादपद्मे महीतले [004.*(4)]
निष्कल्मषो भवेत्सद्यो [004.*(4)]
न नाटी पादपांसुना [004.*(4)]
एकस्य कृष्णस्य क्राजतः प्रणामो [004.*(4)]
दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः [004.*(4)]
दशाश्वमेधैः पुनरेति जन्म [004.*(4)]
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय [004.*(4)]
एवं देवेश्वरो भक्त्या [004.029]

येन विष्णुरुपासितः [004.029]
स प्राप्नोति गतिं श्लाघ्यां [004.029]
यां यामिच्छति चेतसा [004.029]
देवत्वं मनुजैः कैश्चिद् [004.030]
गन्धर्वत्वं तथापरैः [004.030]
विद्याधरत्वमपरैर् [004.030]
आराध्याप्तं जनार्दनम् [004.030]
शक्रः क्रतुशतेनेशम् [004.031]
आराध्य गरुडध्वजम् [004.031]
देवेन्द्रत्वं गतस्तस्मान् [004.031]
नान्यः पूज्यतमः क्वचित् [004.031]
देवेभ्यो ऽपि हि पूज्यस्तु [004.032]
स्वगुरुर्ब्रह्मचारिणः [004.032]
तस्यापि यज्ञपुरुषो [004.032]
विष्णुः पूज्यो द्विजोत्तम [004.032]
स्त्रियश्च भर्तारमृते [004.033]
पूज्यमन्यन्न दैवतम् [004.033]
भर्तुर्गृहस्थस्य सतः [004.033]
पूज्यो यज्ञपतिर्हरिः [004.033]
वैखानसानामाराध्यस् [004.034]
तपोभिर्मधुसूदनः [004.034]
ध्येयः परिव्राजकानां [004.034]
वासुदेवो महात्मनाम् [004.034]
एवं सर्वाश्रमाणां हि [004.035]
वासुदेवः परायणम् [004.035]
सर्वेषां चैव वर्णानां [004.035]
तमाराध्याप्नुयाद्गतिम् [004.035]
शृणुष्व गदतः काम्याम् [004.036]
उपवासांस्तथापरान् [004.036]
तत्तमाश्रित्य यान्कामान् [004.036]
कुर्वीतिप्सितमात्मनः [004.036]
एकादश्यां शुक्लपक्षे [004.037]
फाल्गुने मासि यो नरः [004.037]
जपेत्कृष्णेति देवस्य [004.037]
नाम भक्त्या पुनःपुनः [004.037]
देवार्चने चाष्टशतं [004.038]
कृत्वैतत्तु जपेच्छुचिः [004.038]
प्रातः प्रस्थानकाले च [004.038]
उत्थाने स्खलिते क्षुते [004.038]
पाषण्डपतितांश्चैव [004.039]
तथैवान्त्यावसायिनः [004.039]
नालपेत तथा कृष्णम् [004.039]
अर्चयेच्छ्रद्धयान्वितः [004.039]
इदं चोदाहरेत्कृष्णे [004.039]
मनः संधाय तत्परः [004.039]
कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वम् [004.040]
अगतीनां गतिर्भव [004.040]
संसारान्तर्निमग्नानां [004.040]
प्रसीद मधुसूदन [004.040]
एवं प्रसाद्योपावासं [004.041]
कृत्वा नियतमानसः [004.041]
पूर्वाह्न एव चान्येद्युर् [004.041]
गव्यं संप्रास्य वै सकृत् [004.041]
स्नातो ऽर्चयित्वा कृष्णेति [004.041]
पुनर्नाम प्रकीर्तयेत् [004.041]
वारिधारात्रयं चैव [004.042]
विक्षिपेद्देवपादयोः [004.042]
चैत्रवैशाखयोश्चैव [004.042]
तद्वज्ज्येष्ठे तु पूजयेत् [004.042]
मर्त्यलोके गतिं श्रेष्ठां [004.043]
दाल्भ्य प्राप्नोति वै नरः [004.043]
उत्क्रान्तिकाले कृष्णस्य [004.043]
स्मरणं च तथाप्नुते [004.043]
आषाढे श्रावणे चैव [004.044]
मासे भाद्रपदे तथा [004.044]
तथैवाश्वयुजे देवम् [004.044]
अनेन विधिना नरः [004.044]
उपोष्य संपूज्य तथा [004.045]
केशवेति च कीर्तयेत् [004.045]
गोमूत्रप्राशनात्पूर्वं [004.045]
स्वर्गलोकगतिं व्रजेत् [004.045]
आराधितस्य जगताम् [004.046]
ईश्वरस्याव्यायात्मनः [004.046]
उत्क्रान्तिकाले स्मरणं [004.046]
केशवस्य तथाप्नुयात् [004.046]
क्षीरस्य प्राशनं यस्तु [004.047]
विधिं चेमं यथोदितम् [004.047]
कार्त्तिकादि यथान्यायं [004.047]
कुर्यान्मासचतुष्टयम् [004.047]
तेनैव विधिना ब्रह्मन् [004.048]
विष्णोर्नाम प्रकीर्तयेत् [004.048]
स याति विष्णुसालोक्यं [004.048]
विष्णुं स्मरति च क्षये [004.048]
प्रतिमासं द्विजातिभ्यो [004.049]

दद्याद्दानं यथेच्छया [004.049]
चातुर्मास्ये च संपूर्णे [004.049]
पुण्यं श्रवणकीर्तनम् [004.049]
कथां वा वासुदेवस्य [004.050]
तद्गीतीर्वापि कारयेत् [004.050]
एवमेतां गतिं श्रेष्ठां [004.050]
देवनामानुकीर्तनात् [004.050]
कथितं पारणं यत्ते [004.051]
कार्ष्णं मासचतुष्टयम् [004.051]
आधिपत्यं तथा भोगांस् [004.051]
तेन प्राप्नोति मानुषान् [004.051]
द्वितीयेन तथा भोगान् [004.052]
ऐन्द्रान्प्राप्नोति मानवः [004.052]
विष्णोर्लोकं तृतीयेन [004.052]
पारणेन तथाप्नुयात् [004.052]
एवमेतत्समाख्यातं [004.053]
गतिप्रापकमुत्तमम् [004.053]
विधानं द्विजशार्दूल [004.053]
कृष्णतुष्टिप्रदं नृणाम् [004.053]
सुगतिद्वादशीमेतां [004.054]
श्रद्दधानस्तु यो नरः [004.054]
उपोष्य च तथा नारी [004.054]
प्राप्नोति त्रिविधां गतिम् [004.054]
एषा धन्या पापहरा [004.055]
तिथिर्नित्यमुपासिता [004.055]
आराधनाय शिष्टैषा [004.055]
देवदेवस्य चक्रिणः [004.055]
पञ्चदश्यां च शुक्लस्य [005.001]
फाल्गुनस्यैव सत्तम [005.001]
पाषण्डपतितांश्चैव [005.001]
तथैवान्त्यावसायिनः [005.001]
नास्तिकान्भिन्नवृत्तींश्च [005.002]
पापिनश्चाप्यनालपन् [005.002]
नारायणे गतमनाः [005.002]
पुरुषो नियतेन्द्रियः [005.002]
तिष्ठन्व्रजन्प्रस्खलिते [005.003]
क्षुते वापि जनार्दनम् [005.003]
कीर्तयेत्तत्क्रियाकाले [005.003]
सप्तकृत्वः प्रकीर्तयेत् [005.003]
लक्ष्म्या समन्वितं देवम् [005.004]
अर्चयेच्च जनार्दनम् [005.004]
संध्याव्युपरमे चेन्दु- [005.004]
स्वरूपं हरिमीश्वरम् [005.004]
रात्रिं च लक्ष्मीं संचिन्त्य [005.005]
सम्यगर्घ्येन पूजयेत् [005.005]
नक्तं च भुञ्जीत नरस् [005.005]
तैलक्षारविवर्जितम् [005.005]
तथैव चैत्रवैशाख- [005.006]
ज्येष्ठेषु मुनिसत्तम [005.006]
अर्चयीत यथाप्रोक्तं [005.006]
प्राप्ते प्राप्ते तु तद्दिने [005.006]
निष्पादितं भवेदेकम् [005.007]
पारणं दाल्भ्य भक्तितः [005.007]
द्वितीयं चापि वक्ष्यामि [005.007]
पारणं द्विजसत्तम [005.007]
आषाढे श्रावणे मासि [005.008]
प्राप्ते भाद्रपदे तथा [005.008]
तथैवाश्वयुजे ऽभ्यर्च्य [005.008]
श्रीधरं च श्रिया सह [005.008]
सम्यक्चन्द्रमसे दत्त्वा [005.009]
भुञ्जीतार्घ्यं यथाविधि [005.009]
द्वितीयमेतदाख्यातं [005.009]
तृतीयं पारणं शृणु [005.009]
कार्त्तिकादिषु मासेषु [005.010]
तथैवाभ्यर्च्य केशवम् [005.010]
भूत्या समन्वितं दद्याच् [005.010]
शशाङ्कायार्हनं निशि [005.010]
भुञ्जीत च तथा प्रोक्तं [005.011]
तृतीयमिति पारणम् [005.011]
प्रतिपूजासु दद्याच्च [005.011]
ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणाम् [005.011]
प्रतिमासं च वक्ष्यामि [005.012]
प्राशनं कायशोधनम् [005.012]
चतुरः प्रथमान्मासान् [005.012]
पञ्चगव्यमुदाहृतम् [005.012]
कुशोदकं तथैवान्यद् [005.013]
उक्तं मासचतुष्टयम् [005.013]
सूर्यांशुतप्तं तद्वच्च [005.013]
जलं मासचतुष्टयम् [005.013]
गीतवाद्यादिकं पाठ्यं [005.014]
तथा कृष्णस्य वा कथान् [005.014]
कारयीत च देवस्य [005.014]
पारणे पारणे गते [005.014]
एवं संपूज्य विधिवत् [005.015]

सपत्नीकं जनार्दनम् [005.015]
नाप्नोतीष्टवियोगादीन् [005.015]
पुमान्योषिदथापि वा [005.015]
जनार्दनं सलक्ष्मीकम् [005.016]
अर्चयेत्प्रथमं ततः [005.016]
सश्रीकं श्रीधरं भक्त्या [005.016]
तृतीये भूतिकेशवौ [005.016]
यावन्त्येतद्विधानेन [005.017]
पारणेनार्चति प्रभुम् [005.017]
तावन्ति जन्मान्यसुखं [005.017]
नाप्नोतीष्टवियोगजम् [005.017]
देवस्य च प्रसादेन [005.018,*(6)]
मरणे प्राप्य तत्स्मृतिम् [005.018,*(6)]
कुले सतां स्फीतधने [005.018]
भोगभुज्जायते नरः [005.018]
नारिं प्राप्नोति न व्याधिं [005.*(5)]
नरकं च न पश्यति [005.*(5)]
दुर्गमं यममार्गं च [005.*(5)]
नेक्षते द्विजसत्तम [005.*(5)]
श्रोतुमिच्छाम्यहं तात [005.019]
यममार्गं सुदुर्गमम् [005.019]
यथा सुखेन संयान्ति [005.019]
मानवास्तद्वदस्व मे [005.019]
प्रतिमासं तु नामानि [005.020]
कृष्णस्यैतानि द्वादश [005.020]
कृतोपवासः सुस्नातः [005.020]
पूजयित्वा जनार्दनम् [005.020]
उच्चारयन्नरो ऽभ्येति [005.020]
सुसुखेनैव तत्पथम् [005.020]
ततो विप्राय वै दद्याद् [005.021]
उदकुम्भं सदक्षिणं [005.021]
उपानद्वस्त्रयुग्मं च [005.021]
छत्त्रं कनकमेव च [005.021]
यद्वै मासगतं नाम [005.022]
तत्प्रीतिश्चापि संवदेत् [005.022]
संवत्सरान्ते ऽप्यथवा [005.022]
प्रतिमासं द्विजान्बुधः [005.022]
वाचयेदुदकुम्भाद्यैर् [005.022]
दानैः सर्वाननुक्रमात् [005.022]
केशवं मार्गशीर्षे तु [005.023]
पौषे नारायणं तथा [005.023]
माधवं माघमासे तु [005.023]
गोविन्दं फाल्गुने तथा [005.023]
विष्णुं चैत्रे ऽथ वैशाखे [005.024]
तथैव मधुसूदनम् [005.024]
ज्येष्ठे त्रिविक्रमं देवम् [005.024]
आषाढे वामनं तथा [005.024]
श्रावणे श्रीधरं चैव [005.025]
हृषीकेशेति चापरम् [005.025]
नाम भाद्रपदे मासि [005.025]
गीयते पुण्यकाङ्क्षिभिः [005.025]
पद्मनाभं चाश्वयुजे [005.026]
दामोदरमतः परम् [005.026]
कार्त्तिके देवदेवेशं [005.026]
स्तुवंस्तरति दुर्गतिम् [005.026]
इह वै स्वस्थतां प्राप्य [005.027]
मरणे स्मरणं ततः [005.027]
याम्यक्लेशमसंप्राप्य [005.027]
स्वर्गलोके महीयते [005.027]
ततो मानुष्यमासाद्य [005.028]
निरातङ्को गतज्वरः [005.028]
धनधान्यवति स्फीते [005.028]
जन्म साधुकुले ऽर्हति [005.028]
उपवासव्रतानीह [006.001]
केशवाराधनं प्रति [006.001]
ममाचक्ष्व महाभाग [006.001]
परं कौतूहलं हि मे [006.001]
कामान्यान्यान्नरो भक्तो [006.002]
मनसेच्छति केशवात् [006.002]
व्रतोपवासनात्प्रीतस् [006.002]
तांस्तान्विष्णुः प्रयच्छति [006.002]
रत्नपर्वतमारुह्य [006.003]
यथा रत्नं महामुने [006.003]
सत्त्वानुरूपमदत्ते [006.003]
तथा कृत्स्नान्मनोरथान् [006.003]
मार्गशीर्षं तु यो मासम् [006.004]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [006.004]
कुर्वन्वै विष्णुशुश्रूषां [006.004]
स देशे जायते शुभे [006.004]
पौषमासं तथा दाल्भ्य [006.005]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [006.005]
शुश्रूषणपरः शौरेर् [006.005]
न रोगी स च जायते [006.005]
माघमासं द्विजश्रेष्ठ [006.006]

एकभक्तेन यः क्षपेत् [006.006]
विष्णुशुश्रूषणपरः [006.006]
स कुले जायते सताम् [006.006]
क्षपयेदेकभक्तेन [006.007]
शुश्रूषुर्यश्च फाल्गुनम् [006.007]
सौभाग्यं स्वजनानां स [006.007]
सर्वेषामेति सोन्नतिम् [006.007]
चैत्रं विष्णुपरो मासम् [006.008]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [006.008]
सुवर्णमणिमुक्ताढ्यं [006.008]
स गार्हस्थ्यमवाप्नुयात् [006.008]
यः क्षपेदेकभक्तेन [006.009]
वैशाखं पूजयन्हरिम् [006.009]
नरो वा यदि वा नारी [006.009]
ज्ञातीनां श्रेष्ठतां व्रजेत् [006.009]
कृष्णार्पितमना ज्येष्ठम् [006.010]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [006.010]
ऐश्वर्यमतुलं श्रेष्ठं [006.010]
पुमान्स्त्री वाभिजायते [006.010]
आषाढमेकभक्तेन [006.011]
यो नयेद्विष्णुतन्मनाः [006.011]
बहुधान्यो बहुधनो [006.011]
बहुपुत्रश्च जायते [006.011]
क्षपयेदेकभक्तेन [006.012]
श्रावणं विष्णुतत्परः [006.012]
धनधान्यहिरण्याढ्ये [006.012]
कुले स ज्ञातिवर्धनः [006.012]
एकाहारो भाद्रपदं [006.013]
यश्च कृष्णपरायणः [006.013]
धनाढ्यं स्फीतमचलम् [006.013]
ऐश्वर्यं प्रतिपद्यते [006.013]
नयंश्चाश्वयुजं विष्णुं [006.014]
पूजयेदेकभोजनः [006.014]
धनवान्वाहनाढ्यश्च [006.014]
बहुपुत्रश्च जायते [006.014]
कार्त्तिके चैकदा भुङ्क्ते [006.015]
यश्च विष्णुपरो नरः [006.015]
शूरश्च कृतविद्यश्च [006.015]
बहुपुत्रश्च जायते [006.015]
यस्तु संवत्सरं पूर्णम् [006.016]
एकभक्तो भवेन्नरः [006.016]
अहिंसः सर्वभूतेषु [006.016]
वासुदेवपरायणः [006.016]
नमो ऽस्तु वासुदेवायेत्य् [006.017]
अहश्चाष्टशतं जपेत् [006.017]
अतिरात्रस्य यज्ञस्य [006.017]
ततः फलमवाप्नुयात् [006.017]
दश वर्षसहस्राणि [006.018]
स्वर्गलोके महीयते [006.018]
तत्क्षयादिह चागत्य [006.018]
माहात्म्यं प्रतिपद्यते [006.018]
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः [006.019]
स्त्री शूद्रो वा यथोदितान् [006.019]
उपवासानिमान्कुर्वन् [006.019]
फलान्येतान्यवाप्नुयात् [006.019]
जगत्पतिं जगद्योनिं [006.020]
जगन्निष्ठं जगद्गुरुम् [006.020]
जयं शरणमभ्येत्य [006.020]
न जनैः शोच्यते जनः [006.020]
यस्य नाम्नि स्मृते मर्त्यः [006.021]
समुत्क्रान्तेरनन्तरम् [006.021]
प्राप्नोति शाश्वतं स्थानं [006.021]
ततः पूज्यतरो हि सः [006.021]
नादिर्न मध्यं नैवान्तो [006.022]
यस्य देवस्य विद्यते [006.022]
अनादित्वादमध्यत्वाद् [006.022]
अनन्तत्वाच्च सो ऽव्ययः [006.022]
परापरं सुकृतवतां परां गतिं [006.023]
स्वयंभुवं प्रभवनिधानमव्ययम् [006.023]
सनातनं यदमृतमच्युतं ध्रुवं [006.023]
प्रविश्य तं हरिममरत्वमश्नुते [006.023]
शृणु दाल्भ्य परं काम्यं [007.001]
व्रतं संततिदं नृणाम् [007.001]
यमुपोष्य न विच्छेदः [007.001]
पितृपिण्डस्य जायते [007.001]
कृष्णाष्टम्यां चैत्रमासे [007.002]
स्नातो नियतमानसः [007.002]
कृष्णमभ्यर्च्य पूजां च [007.002]
देवक्याः कुरुते तु यः [007.002]
निराहारो जपन्नाम [007.003]
कृष्णस्य जगतः पतेः [007.003]
उपविष्टो जपस्नान- [007.003]
क्षुतप्रस्खलितादिषु [007.003]
पूजायां चापि कृष्णस्य [007.004]

सप्त वारान्प्रकीर्तयेत् [007.004]
पाषण्डिनो विकर्मस्थान् [007.004]
नालपेच्चैव नास्तिकान् [007.004]
प्रभाते तु पुनः स्नातो [007.005]
दत्त्वा विप्राय दक्षिणाम् [007.005]
भुञ्जीत कृतपूजस्तु [007.005]
कृष्णस्यैव जगत्पतेः [007.005]
वैशाखज्येष्ठयोश्चैव [007.006]
पारणं हि त्रिमासिकम् [007.006]
उपोष्य देवदेवेशं [007.006]
घृतेन स्नापयेद्धरिम् [007.006]
आषाढे श्रावणे चैव [007.007]
मासे भाद्रपदे तथा [007.007]
उपोषिते द्वितीयं वै [007.007]
पारणं पूर्ववत्तु तत् [007.007]
तथैवाश्वयुजं चादिं [007.008]
कृत्वा मासत्रयं बुधः [007.008]
उपोष्य स्नापयेद्देवं [007.008]
हविषा पारणे गते [007.008]
पौषे माघे फाल्गुने च [007.009]
नरस्तद्वदुपोषितः [007.009]
चतुर्थे पारणे पूर्णे [007.009]
घृतेन स्नापयेद्धरिम् [007.009]
एवं कृतोपवासस्य [007.010]
पुरुषस्य तथा स्त्रियः [007.010]
न संततेः परिच्छेदः [007.010]
कदाचिदभिजायते [007.010]
कृष्णाष्टमीमिमां यस्तु [007.011]
नरो योषिदथापि वा [007.011]
उपोष्यतीह साह्लादं [007.011]
नृलोके प्राप्य निर्वृत्तिम् [007.011]
पुत्रपौत्रसमृद्धिं च [007.012]
मृतः स्वर्गे महीयते [007.012]
इत्येतत्कथितं दाल्भ्य [007.012]
मया कृष्णाष्टमीव्रतम् [007.012]
प्रावृट्काले तु नियमाञ् [007.013]
शृणु काम्यानिमान्मम [007.013]
प्रावृट्काले यदा शेते [007.014]
वासुदेवः पयोनिधौ [007.014]
भोगिभोगे निजां मायां [007.014]
योगनिद्रां च मानयन् [007.014]
विशिष्टा न प्रवर्तन्ते [007.015]
तदा यज्ञादिकाः क्रियाः [007.015]
देवानां सा भवेद्रात्रिर् [007.015]
दक्षिणायनसंज्ञिता [007.015]
यदा स्वपिति गोविन्दो [007.016]
यस्तु मासं चतुष्टयम् [007.016]
अधःशायी ब्रह्मचारी [007.016]
केशवार्पितमानसः [007.016]
नमो नमो ऽस्तु कृष्णाय [007.017]
केशवाय नमो नमः [007.017]
नमो ऽस्तु नरसिंहाय [007.017]
विष्णवे च नमो नमः [007.017]
इति प्रातस्तथा सायं [007.018]
जपेद्देवक्रियापरः [007.018]
शमयत्यतिदुष्पारं [007.018]
दुरितं जन्मसंचितम् [007.018]
मधु मांसं च यो मासाञ् [007.019]
चतुरस्तान्निरस्यति [007.019]
देवक्रियारतिर्विष्णोर् [007.019]
अनुस्मरणतत्परः [007.019]
सो ऽपि स्वर्गं समभ्येति [007.020]
च्युतस्तस्मात्तु जायते [007.020]
अरोगी धनधान्याढ्यः [007.020]
कुलसंततिमान्नरः [007.020]
समस्तमन्दिराणां च [007.021]
यः सुप्ते मधुसूदने [007.021]
निर्वृत्तिं कुरुते सो ऽपि [007.021]
देवो वैमानिको भवेत् [007.021]
अनेनैव विधानेन [007.022]
नरो विष्णुक्रियापरः [007.022]
एकाहारो भवेद्यस्तु [007.022]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [007.022]
सुप्ते च सर्वलोकेशे [007.023]
नक्तभोजी भवेत्तु यः [007.023]
सर्वपापविनिर्मुक्तः [007.023]
स्वर्गलोके ऽमरो भवेत् [007.023]
शस्तं त्वनन्तरं पुंसां [007.024]
ततश्चैवेकभोजनम् [007.024]
नक्तभोजनतुल्यं तु [007.024]
नोपवासफलं क्वचित् [007.024]
तैलाभङ्गं च यो मासांश् [007.025]
चतुरस्तान्निरस्यति [007.025]
सो ऽप्यङ्गलावण्यगुणम् [007.025]

आरोग्यं च नरो लभेत् [007.025]
यस्त्वेतानि समस्तानि [007.026]
मासानेतान्नरश्चरेत् [007.026]
स विष्णुलोकमासाद्य [007.026]
विष्णोरनुचरो भवेत् [007.026]
चतुर्भिः पारणं मासैर् [007.027]
निष्पाद्यं हरितत्परैः [007.027]
ब्राह्मणान्भोजयेद्दद्यात् [007.027]
ततस्तेभ्यश्च दक्षिणाम् [007.027]
पूजयेच्च जगन्नाथं [007.028]
सर्वपापहरं हरिम् [007.028]
प्रीयस्व देव गोविन्देत्य् [007.028]
एवं चैव प्रसादयेत् [007.028]
इति दाल्भ्य समाख्यातं [007.029]
चातुर्मास्ये हि यद्व्रतम् [007.029]
देवदेवस्य सुप्तस्य [007.029]
द्वादशीं शृणु चापराम् [007.029]
यस्यामनन्तस्मरणाद् [007.029]
अनन्तफलभाग्भवेत् [007.029]
मासि प्रोष्ठपदे शुक्ले [008.001]
द्वादश्यां जलशायिनम् [008.001]
प्रणम्यानन्तमभ्यर्च्य [008.001]
पुष्पधूपादिभिः शुचिः [008.001]
पाषण्डादिभिरालापम् [008.002]
अकुर्वन्नियतात्मवान् [008.002]
विप्राय दक्षिणां दत्त्वा [008.002]
नक्तं भुङ्क्ते तु यो नरः [008.002]
तिष्ठन्व्रजन्स्वपंश्चैव [008.003]
क्षुतप्रस्खलितादिषु [008.003]
अनन्तनामस्मरणं [008.003]
कुर्वन्नुच्चारणं तथा [008.003]
अनेनैव विधानेन [008.004]
मासान्द्वादश वै क्रमात् [008.004]
उपोष्य पारणे पूर्णे [008.004]
समभ्यर्च्य जगद्गुरुम् [008.004]
गीतवाद्येन हृद्येन [008.004]
प्रीणयन्व्युष्टिमश्नुते [008.004]
अनन्तं गीतवाद्येन [008.005]
यतः फलमुदाहृतम् [008.005]
तेनानन्तं समभ्यर्च्य [008.005]
तदेव लभते फलम् [008.005]
एवं यः पुरुषः कुर्याद् [008.006]
अनन्ताराधनं शुचिः [008.006]
नारी वा स्वर्गमभ्येत्य [008.006]
सो ऽनन्तफलमश्नुते [008.006]
एवं दाल्भ्य हृषीकेशो [008.007]
नरैर्भक्त्या यथाविधि [008.007]
फलं ददात्यसुलभं [008.007]
सलिलेनापि पूजितः [008.007]
न विष्णुर्वित्तदानेन [008.008]
पुष्पैर्वा न फलैस्तथा [008.008]
आराध्यते सुशुद्धेन [008.008]
हृदयेनैव केवलम् [008.008]
रागाद्यपेतं हृदयं [008.009]
वाग्दुष्टा नानृतादिना [008.009]
हिंसादिरहितः कायः [008.009]
केशवाराधनत्रयम् [008.009]
रागादिदूषिते चित्ते [008.010]
नास्पदी मधुसूदनः [008.010]
करोति न रतिं हंसः [008.010]
कदाचित्कर्दमाम्भसि [008.010]
न योग्या केशवस्तुत्यै [008.011]
वाग्दुष्टा चानृतादिना [008.011]
तमसो नाशनायालं [008.011]
नेन्दोर्लेखा घनावृता [008.011]
हिंसादिदूषितः कायः [008.012]
केशवाराधने कुतः [008.012]
जनचित्तप्रसादाय [008.012]
न नभस्तिमिरावृतम् [008.012]
तस्माच्छुद्धस्व भावेन [008.013]
सत्यभावेन च द्विज [008.013]
अहिंसकेन गोविन्दो [008.013]
निसर्गादेव तोषितः [008.013]
सर्वस्वमपि कृष्णाय [008.014]
यो दद्यात्कुटिलाशयः [008.014]
स नैवाराधयत्येनं [008.014]
सद्भावेनार्चयाच्युतम् [008.014]
रागाद्यपेतं हृदयं [008.015]
कुरु त्वं केशवार्पितम् [008.015]
ततः प्राप्स्यसि दुःप्राप्यम् [008.015]
अयत्नेनैव केशवम् [008.015]
भगवन्कथितः सम्यक् [008.016]
काम्यो ऽयं केशवं प्रति [008.016]
आराधनविधिः सर्वो [008.016]

भूयः पृच्छामि तद्वद [008.016]
कुले जन्म तथारोग्यं [008.017]
धनर्द्धिश्चेह दुर्लभा [008.017]
त्रितयं प्राप्यते येन [008.017]
तन्मे वद महामुने [008.017]
मातामहं काण्वमुदारवीर्यं [008.018]
महर्षिमभ्यर्च्य कुलप्रसूतिम् [008.018]
पप्रच्छ पुंसामथ योषितां च [008.018]
दुष्वन्तपुत्रो भरतः प्रणम्य [008.018]
यथावदाचष्ट ततो महात्मा [008.019]
स राजवर्याय यथा कुलेषु [008.019]
प्रयान्ति सूतिं पुरुषाः स्त्रियश्च [008.019]
यथा च सम्यक्सुखिनो भवन्ति [008.019]
पौषे सिते द्वादशमे ऽह्नि सार्के [008.020]
तथार्क्षयोगे जगतः प्रसूतिम् [008.020]
संपूज्य विष्णुं विधिनोपवासी [008.020]
स्रग्गन्धधूपान्नवरोपहारैः [008.020]
गृह्णीत मासं प्रतिमासपूजाम् [008.021]
दानादियुक्तं व्रतमब्दमेकम् [008.021]
दद्याच्च दानं द्विजपुङ्गवेभ्यस् [008.021]
तदुच्यमानं विनिबोध भूप [008.021]
घृतं तिलान्व्रीहियवं हिरण्यं [008.022]
यवान्नमम्भःकरकान्नपानम् [008.022]
छत्त्रं पयो ऽन्नं गुडफाणिताढ्यं [008.022]
स्रक्चन्दनं वस्त्रमनुक्रमेण [008.022]
मासे च मासे विधिनोदितेन [008.023]
तस्यां तिथौ लोकगुरुं प्रपूज्य [008.023]
अश्नीत यान्यात्मविशुद्धिहेतोः [008.023]
संप्राशनानीह निबोध तानि [008.023]
गोमूत्रमम्भो घृतमामशाकं [008.024]
दूर्वा दधि व्रीहियवांस्तिलांश्च [008.024]
सूर्यांशुतप्तं जलमम्बु दार्भं [008.024]
क्षीरं च मासक्रमशोपयुञ्ज्यात् [008.024]
कुले प्रधाने धनधान्यपूर्णे [008.025]
विवेकवत्यस्तसमस्तदुःखे [008.025]
प्राप्नोति जन्माविकलेन्द्रियश्च [008.025]
भवत्यरोगो मतिमान्सुखी च [008.025]
तस्मात्त्वमप्येतदमोघविद्यो [008.026]
नारायणाराधनमप्रमत्तः [008.026]
कुरुष्व विष्णुं भगवन्तमीशम् [008.026]
आराध्य कामानखिलानुपैति [008.026]
यदा च शुक्लद्वादश्यां [009.001]
नक्षत्रं श्रवणं भवेत् [009.001]
तदा सा तु महापुण्या [009.001]
द्वादशी विजया स्मृता [009.001]
तस्यां स्नातः सर्वतीर्थैः [009.002]
स्नातो भवति मानवः [009.002]
संपूज्य वर्षपूजायाः [009.002]
सकलं फलमश्नुते [009.002]
एकं जप्त्वा सहस्रस्य [009.003]
जप्तस्याप्नोति यत्फलम् [009.003]
दानं सहस्रगुणितं [009.003]
तथा वै विप्र भोजनम् [009.003]
यत्क्षेममपि वै तस्यां [009.*(7)]
सहस्रं श्रावणे तु तत् [009.*(7)]
अन्यस्यामेव तिथ्यां [009.*(7)]
शुभायां श्रावणं यदा [009.*(7)]
होमस्तथोपवासश्च [009.003]
सहस्राख्यफलप्रदः [009.003]
रोहिण्याश्च यदा कृष्ण- [010.001]
पक्षे ऽष्टम्यां द्विजोत्तम [010.001]
जयन्ती नाम सा प्रोक्ता [010.001]
सर्वपापहरा तिथिः [010.001]
यद्बाल्ये यच्च कौमारे [010.002]
यौवने वार्द्धिके च यत् [010.002]
सप्तजन्मकृतं पापं [010.002]
स्वल्पं वा यदि वा बहु [010.002]
तत्क्षालयति गोविन्दं [010.003]
तस्यामभ्यर्च्य भक्तितः [010.003]
होमजप्यादिदानानां [010.003]
फलं च शतसंमितम् [010.003]
संप्राप्नोति न संदेहो [010.004]
यच्चान्यन्मनसेच्छति [010.004]
उपवासश्च तत्रोक्तो [010.004]
महापातकनाशनः [010.004]
एकदश्यां शुक्लपक्षे [011.001]
यदा र्क्षं वै पुनर्वसुः [011.001]
नाम्ना सातिजयाख्याता [011.001]
तिथीनामुत्तमा तिथिः [011.001]
यो ददाति तिलप्रस्थं [011.002]
तृष्कालं वत्सरं नरः [011.002]
उपवासं च तस्यां यः [011.002]
करोत्येतत्समं स्मृतम् [011.002]
तस्यां जगत्पतिर्देवः [011.003]

सर्वः सर्वेश्वरो हरिः [011.003]
प्रत्यक्षतां प्रयात्यल्पं [011.003]
तदानन्तफलं स्मृतम् [011.003]
सगरेण ककुत्स्थेन [011.004]
दुंधुमारेण गाधिना [011.004]
तस्यामाराधितः कृष्णो [011.004]
दत्तवान्निखिलां भुवम् [011.004]
अयने चोत्तरे प्राप्ते [012.001]
यः स्नापयति केशवम् [012.001]
घृतप्रस्थेन पापं सः [012.001]
सकलं वै व्यपोहति [012.001]
कपिलां विप्रमुख्याय [012.002]
ददात्यनुदिनं हि यः [012.002]
घृतस्नानं च देवस्य [012.002]
तस्मिन्काले समं हि तत् [012.002]
स्नाप्यमानं च पश्यति [012.003]
ये घृतेनोत्तरायणे [012.003]
ते यान्ति विष्णुसालोक्यं [012.003,013.*(8)]
सर्वपापविवर्जिताः [012.003,013.*(8)]
मैत्रेयी ब्राह्मणी पूर्वं [013.001]
याज्ञवल्क्यमपृच्छत [013.001]
प्रणिपत्य महाभागं [013.001]
योगेश्वरमकल्मषम् [013.001]
पापप्रशमनायालं [013.002]
यत्पुण्यस्योपवृंहकम् [013.002]
मनोरथप्रदं यच्च [013.002]
तद्व्रतं कथ्यतां मम [013.002]
कानि दानानि शस्तानि [013.003]
स्नानानि च यतव्रत [013.003]
प्रशस्तास्तिथयः काश्च [013.003]
प्राशनानि च शंस मे [013.003]
सर्वदानानि शस्तानि [013.004]
यान्युद्दिश्य जनार्दनम् [013.004]
दीयन्ते विप्रमुख्येभ्यः [013.004]
श्रद्धापूतेन चेतसा [013.004]
ता एव तिथयः शस्ता [013.005]
यास्वभ्यर्च्य जनार्दनम् [013.005]
क्रियन्ते श्रधया सम्यग् [013.005]
उपवासव्रताः सदा [013.005]
प्राप्यते विविधैर्यज्ञैर् [013.006]
यत्फलं साध्वसाधुभिः [013.006]
उपवासैस्तदाप्नोति [013.006]
समभ्यर्च्य जनार्दनम् [013.006]
मनोरथानां संप्राप्ति- [013.007]
कारकं पापनाशनम् [013.007]
श्रूयतां मम धर्मज्ञे [013.007]
व्रतानामुत्तमं व्रतम् [013.007]
यत्कृत्वा न जडो नान्धो [013.008]
बधिरो न च दुःखितः [013.008]
न चैवेष्टवियोगार्तिं [013.008]
कश्चित्प्राप्नोति मानवः [013.008]
न चाप्रियो ऽस्य लोकस्य [013.009]
न दरिद्रो न दुर्गतिः [013.009]
सप्त जन्मानि भवति [013.009]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [013.009]
विष्णुव्रतमिदं ख्यातं [013.010]
भाषितं विष्णुना स्वयम् [013.010]
पौषशुक्लद्वितीयादि [013.011]
कृत्वा दिनचतुष्टयम् [013.011]
षण्मासपारणप्रायं [013.011]
गृह्णीयात्परमं व्रतम् [013.011]
पूर्वं सिद्धार्थकैः स्नानं [013.012]
ततः कृष्णतिलैः स्मृतम् [013.012]
वचया च तृतीये ऽह्नि [013.012]
सर्वौषध्या ततः परम् [013.012]
नाम्ना कृष्णाच्युताख्येन [013.013]
तथानन्तेन पूजयेत् [013.013]
तथैव च चतुर्थे ऽह्नि [013.013]
हृषीकेशेन केशवम् [013.013]
देवमभ्यर्च्य पुष्पैश्च [013.013]
पत्त्रैर्धूपानुलेपनैः [013.013]
उद्गच्छतश्च बालेन्दोर् [013.014]
दद्यादर्घ्यं समाहितः [013.014]
पुष्पैः पत्त्रैः फलैश्चैव [013.014]
सर्वधान्यैश्च भक्तितः [013.014]
दिनक्रमेण चैतानि [013.015]
चन्द्रनामानि कीर्तयेत् [013.015]
शशिचन्द्रशशाङ्केन्दु- [013.015]
संज्ञानि ब्रह्मवादिनि [013.015]
नक्तं भुञ्जीत मतिमान् [013.016]
यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः [013.016]
अस्तंगते न भुञ्जीत [013.016]
व्रतभङ्गभयाच्छुभे [013.016]
एवं सर्वेषु मासेषु [013.017]

ज्येष्ठान्तेषु यशस्विनि [013.017]
कर्तव्यं वै व्रतश्रेष्ठं [013.017]
द्वितीयादिचतुर्दिनम् [013.017]
विप्राय दक्षिणां दद्यात् [013.018]
पञ्चम्यां च स्वशक्तितः [013.018]
एवं समापयेन्मासैः [013.018]
षड्भिः प्रथमपारणम् [013.018]
पारणन्ते च देवस्य [013.019]
प्रीणनं भक्तितः शुभे [013.019]
यथाशक्त्या तु कर्तव्यं [013.019]
वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् [013.019]
आषाढादिद्वितीयं तु [013.020]
षण्मासेन तपोधने [013.020]
पारणं वै समाख्यातं [013.020]
व्रतस्यास्य शुभप्रदम् [013.020]
व्रतमेतद्दिलीपेन [013.021]
दुष्वन्तेन ययातिना [013.021]
तथान्यैः पृथिवीपालैर् [013.021]
उपवासविधानतः [013.021]
चरितं मुनिमुख्यैश्च [013.021]
ऋचीकच्यवनादिभिः [013.021]
सुरम्भया सुकैकेय्या [013.022]
शाण्डिल्या धूम्रपिङ्गया [013.022]
सुदेष्णयाथवा रिण्या [013.022]
मतिमत्या कृताशया [013.022]
सावित्र्या पौर्णमास्या च [013.023]
वैरिण्या च सुभद्रया [013.023]
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् [013.023]
इति स्त्रीभिरनुष्ठितम् [013.023]
उर्वश्या रम्भया चैव [013.024]
सौरभेय्या तथा व्रतम् [013.024]
वराप्सरोभिर्धर्मज्ञे [013.024]
चरितं धर्मवांछया [013.024]
प्रथमे पादपूजा स्याद् [013.025]
द्वितीये नाभिपूजनम् [013.025]
तृतीये वक्षसः पूजा [013.025]
चतुर्थे शिरसो हरेः [013.025]
एतच्चीर्त्वा समस्तेभ्यः [013.026]
पापेभ्यः श्रद्धयान्वितः [013.026]
मुच्यते सकलांश्चैव [013.026]
संप्राप्नोति मनोरथान् [013.026]
व्रतानामुत्तमं ह्येतत् [013.027]
स्वयं देवेन भाषितम् [013.027]
पापप्रशमनं शस्तं [013.027]
मनोरथफलप्रदम् [013.027]
यं च काममभिध्यायन् [013.028]
क्रियते नियतव्रतैः [013.028]
व्रतमेतन्महाभागे [013.028]
तं तु पूरयते नृणाम् [013.028]
मनोरथान्पूरयति [013.029]
सर्वपापं व्यपोहति [013.029]
अव्याहतेन्द्रियत्वं च [013.029]
सप्त जन्मानि यच्छति [013.029]
माघे स्नातस्य यत्पुण्यं [013.030]
प्रयागे पापनाशनम् [013.030]
सकलं तदवाप्नोति [013.030]
श्रुत्वा विष्णुव्रतं त्विदम् [013.030]
साक्षाद्भगवता प्रोक्तं [013.*(9)]
परमं पापनाशनम् [013.*(9)]
शुक्लपक्षे तु पौषस्य [014.001]
संप्राप्तिद्वादशीं शृणु [014.001]
यामुपोष्य समाप्नोति [014.001]
सर्वानेव मनोरथान् [014.001]
पाषण्डादिभिरालापम् [014.002]
अकुर्वन्विष्णुतत्परः [014.002]
पूजयेत्प्रणतो देवम् [014.002]
एकाग्रमतिरच्युतम् [014.002]
पौषादिपारणं मासैः [014.003]
षड्भिर्ज्येष्ठान्तकं स्मृतम् [014.003]
प्रथमे पुण्डरीकाक्षं [014.003]
नाम देवस्य गीयते [014.003]
द्वितीये माधवाख्यं तु [014.004]
विश्वरूपं तु फाल्गुने [014.004]
पुरुषोत्तमाख्यं च ततः [014.004]
पञ्चमे चाच्युतेति च [014.004]
षष्ठे जयेति देवस्य [014.005]
गुह्यं नाम प्रकीर्त्यते [014.005]
पूर्वेषु षट्सु मासेषु [014.005]
स्नानप्राशनयोस्तिलाः [014.005]
आषाढादिषु मासेषु [014.006]
पञ्चगव्यमुदाहृतम् [014.006]
स्नाने च प्राशने चैव [014.006]
प्रशस्तं पापनाशनम् [014.006]
प्रतिमासं च देवस्य [014.007]

कृत्वा पूजां यथाविधि [014.007]
विप्राय दक्षिणां दद्याच् [014.007]
श्रद्दधानः स्वशक्तितः [014.007]
पारणान्ते च देवस्य [014.008]
प्रीणनं भक्तिपूर्वकम् [014.008]
कुर्वीत शक्त्या गोविन्दे [014.008]
सद्भावाभ्यर्चनो यतः [014.008]
नक्तं भुञ्जीत च ततस् [014.009]
तैलक्षारविवर्जितं [014.009]
एकादश्यामुषित्वैवं [014.009]
द्वादश्यामथवा दिने [014.009]
एतामुषित्वा धर्मज्ञे [014.010]
प्रीणनं देवतत्परः [014.010]
सर्वकामानवाप्नोति [014.010]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [014.010]
यतः सर्वमवाप्नोति [014.011]
यद्यदिच्छति चेतसा [014.011]
ततो लोकेषु विख्याता [014.011]
संप्राप्तिद्वादशीति वै [014.011]
कृताभिलषिता ह्येषा [014.012]
प्रारब्धा धर्मतत्परैः [014.012]
पूरयत्यखिलान्कामान् [014.012]
संश्रुता च दिने दिने [014.012]
तस्मिन्नेव दिने पुण्ये [015.001]
गोविन्दद्वादशीं शृणु [015.001]
यस्यां सम्यगनुष्ठानात् [015.001]
प्राप्नोत्यभिमतं फलम् [015.001]
पौषमासे सिते पक्षे [015.002]
द्वादश्यां समुपोषितः [015.002]
संयक्संपूज्य गोविन्दं [015.002]
नाम्ना देवमधोक्षजम् [015.002]
पुष्पधूपोपहाराद्यैर् [015.002]
उपवासैः समाहितः [015.002]
गोविन्देति जपन्नाम [015.003]
पुनस्तद्गतमानसः [015.003]
विप्राय दक्षिणां दद्याद् [015.003]
यथाशक्ति तपोधने [015.003]
स्वपन्विबुद्धः स्खलितो [015.004]
गोविन्देति च कीर्तयेत् [015.004]
पाषण्डादिविकर्मस्थैर् [015.004]
आलापं च विवर्जयेत् [015.004]
गोमूत्रं गोमयं वापि [015.005]
दधि क्षीरमथापि वा [015.005]
गोदेहतः समुत्पन्नं [015.005]
संप्राश्नीतात्मशुद्धये [015.005]
द्वितीये ऽह्नि पुनः स्नातस् [015.006]
तथैवाभ्यर्च्य तं प्रभुम् [015.006]
तेनैव नाम्ना संस्तूय [015.006]
दत्त्वा विप्राय दक्षिणाम् [015.006]
ततो भुञ्जीत गोदेह- [015.006]
संभूतेन समन्वितम् [015.006]
एवमेवाखिलान्मासान् [015.007]
उपोष्य प्रयतः शुचिः [015.007]
दद्याद्गवाह्निकं भक्त्या [015.007]
प्रतिमासं स्वशक्तितः [015.007]
पारिते च पुनर्वर्षे [015.008]
यथाशक्ति गवाह्निकम् [015.008]
दत्त्वा परगवे भूयः [015.008]
शृणु यत्फलमश्नुते [015.008]
सुवर्णशृङ्गाः पञ्च गाः [015.009]
षष्ठं च वृषभं नरः [015.009]
प्रतिमासं द्विजाग्रेभ्यो [015.009]
यद्दत्त्वा फलमश्नुते [015.009]
तदाप्नोत्यखिलं सम्यग् [015.010]
व्रतमेतदुपोषितः [015.010]
तं च लोकमवाप्नोति [015.010]
गोविन्दो यत्र तिष्ठति [015.010]
गोविन्दद्वादशीमेताम् [015.011]
उपोष्य दिवि तारकाः [015.011]
विद्योतमाना दृश्यन्ते [015.011]
लोकैरद्यापि शोभने [015.011]
उपवासव्रतानां तु [016.001]
वैकल्यं यन्महामुने [016.001]
दानकर्मकृतं तस्य [016.001]
विपाको वद यादृशः [016.001]
यज्ञानामुपवासानां [016.002]
व्रतानां च यतव्रते [016.002]
वैकल्यात्फलवैकल्यं [016.002]
यादृशं तच्छृणुष्व मे [016.002]
उपवासादिना राज्यं [016.003]
संप्राप्यं ते तथा वसु [016.003]
भ्रष्टैश्वर्या निर्धनाश्च [016.003]
भवन्ति पुरुषाः पुनः [016.003]
रूपं तथोत्तमं प्राप्य [016.004]

व्रतवैकल्यदोषतः [016.004]
काणाः कुण्ठाश्च भूयस्ते [016.004]
भवन्त्यन्धाश्च मानवाः [016.004]
उपवासान्नरः पत्नीं [016.005]
नारी प्राप्य तथा पतिम् [016.005]
वियोगं व्रतवैकल्याद् [016.005]
उभयं तदवाप्नुते [016.005]
ये द्रव्ये सत्यदातारस् [016.006]
तथान्येनाहिताग्नयः [016.006]
कुले च सति दुःशीला [016.006]
दौष्कुलाः शीलिनश्च ये [016.006]
वस्त्रानुलेपनैर्हीना [016.007]
भूषणैश्चातिरूपिणः [016.007]
विरूपरूपाश्च तथा [016.007]
प्रसाधनगुणान्विताः [016.007]
ते सर्वे व्रतवैकल्यात् [016.008]
फलवैकल्यमागताः [016.008]
गुणिनो ऽपि हि दोषेण [016.008]
संयुक्ताः संभवन्ति ते [016.008]
तस्मान्न व्रतवैकल्यं [016.009]
यज्ञवैकल्यमेव वा [016.009]
उपवासे च कर्तव्यं [016.009]
वैकल्याद्विकलं फलम् [016.009]
कथंचिद्यदि वैकल्यम् [016.010]
उपवासादिके भवेत् [016.010]
किं तत्र वद कर्तव्यम् [016.010]
अच्छिद्रं येन जायते [016.010]
अखण्डद्वादशीमेताम् [016.011]
अशेषेष्वेव कर्मसु [016.011]
वैकल्यप्रशमायालं [016.011]
शृणुष्व गदतो मम [016.011]
मार्गशीर्षे सिते पक्षे [016.012]
द्वादश्यां नियतः शुचिः [016.012]
कृतोपवासो देवेशं [016.012]
समभ्यर्च्य जनार्दनम् [016.012]
पञ्चगव्यजलस्नातः [016.013]
पञ्चगव्यकृताशनः [016.013]
यवव्रीहिभृतं पात्रं [016.013]
दद्याद्विप्राय भक्तितः [016.013]
इदं चोच्चारयेद्भक्त्या [016.013]
देवस्य पुरतो हरेः [016.013]
सप्त जन्मानि यत्किंचिद् [016.014]
मया खण्डव्रतं कृतम् [016.014]
भगवंस्त्वत्प्रसादेन [016.014]
तदखण्डमिहास्तु मे [016.014]
यथाखण्डं जगत्सर्वम् [016.015]
त्वमेव पुरुषोत्तम [016.015]
तथाखिलान्यखण्डानि [016.015]
व्रतानि मम सन्तु वै [016.015]
एवमेवानुमासं वै [016.016]
चातुर्मास्यविधिः स्मृतः [016.016]
चतुर्भिरेव मासैस्तु [016.017]
पारणं प्रथमं स्मृतम् [016.017]
प्रीणनं च हरेः कुर्यात् [016.017]
पारिते पारणे ततः [016.017]
चैत्रादिषु च मासेषु [016.018]
चतुर्ष्वन्यं तु पारणम् [016.018]
तत्रापि सक्तुपात्राणि [016.018]
दद्याच्छुद्धासमन्वितः [016.018]
श्रावणादिषु मासेषु [016.019]
कार्त्तिकान्तेषु पारणम् [016.019]
यत्नात्तु घृतपात्राणि [016.019]
दद्याद्विप्राय भक्तितः [016.019]
एवं सम्यग्यथान्यायम् [016.020]
अखण्डद्वादशीं नरः [016.020]
यदुपोष्यत्यखण्डं स [016.020]
व्रतस्य फलमश्नुते [016.020]
सप्त जन्मसु वैकल्यम् [016.021]
यद्व्रतस्य क्वचित्कृतम् [016.021]
करोत्यविकलं सर्वम् [016.021]
अखण्डद्वादशीव्रतम् [016.021]
तस्मादेषातियत्नेन [016.022]
नरैः स्त्रीभिश्च सुव्रते [016.022]
अखण्डद्वादशी सम्यग् [016.022]
उपोष्या फलकांक्षिभिः [016.022]
एवं पुरा याज्ञवल्क्यः [017.001]
पृष्टः पत्न्या महामुनिः [017.001]
आचष्ट पुण्यफलदम् [017.001]
उपवासविधिं परम् [017.001]
तथा त्वमपि विप्रर्षे [017.002]
केशवाराधने रतः [017.002]
व्रतोपवासपरमो [017.002]
भवेथा नान्यमानसः [017.002]
पुनश्चैतन्महाभाग [017.003]

श्रूयतां गदतो मम [017.003]
प्रोक्तं नरेण देवानां [017.003]
तिथिमाहात्म्यमुत्तमम् [017.003]
विजयातिजया चैव [017.004]
जयन्ती पापनाशनी [017.004]
तथोत्तरायणं शस्तं [017.004]
सर्वदा केशवार्चने [017.004]
यदन्यकाले वर्षेण [017.005]
केशवाल्लभ्यते फलम् [017.005]
सकृद्देवार्चिते कृष्णे [017.005]
तदेतास्वपि लभ्यते [017.005]
विजयातिजया चैव [017.006]
जयन्ती पापनाशनी [017.006]
तथोत्तरायणं चैव [017.006]
यच्छस्तं केशवार्चने [017.006]
तत्सर्वं कथयेहाद्य [017.007]
तिथिमाहात्म्यमुत्तमम् [017.007]
यत्र संपूजितः कृष्णः [017.007]
सर्वपापं व्यपोहति [017.007]
एकादश्यां सिते पक्षे [017.008]
पुष्यर्क्षं यत्र सत्तम [017.008]
तिथौ भवति सा प्रोक्ता [017.008]
विष्णुना पापनाशनी [017.008]
तस्यां संपूज्य गोविन्दं [017.009]
जगतामीश्वरेश्वरम् [017.009]
सप्तजन्मकृतात्पापान् [017.009]
मुच्यते नात्र संशयः [017.009]
यश्चोपवासं कुरुते [017.010]
तस्यां स्नातो द्विजोत्तम [017.010]
सर्वपापविनिर्मुक्तो [017.010]
विष्णुलोके महीयते [017.010]
दानं यद्दीयते किंचित् [017.011]
समुद्दिश्य जनार्दनम् [017.011]
होमो वा क्रियते तस्याम् [017.011]
अक्षयं लभते फलम् [017.011]
एका ऋग्देवपुरतो [017.012]
जप्ता श्रद्धावता तथा [017.012]
ऋग्वेदस्य समस्तस्य [017.012]
जपता यच्छते फलम् [017.012]
सामवेदफलं साम [017.013]
यजुर्वेदफलं यजुः [017.013]
जप्तमेकं मुनिश्रेष्ठ [017.013]
ददात्यत्र न संशयः [017.013]
तारका दिवि राजन्ते [017.014]
द्योतमाना द्विजोत्तम [017.014]
समभ्यर्च्य तिथावस्यां [017.014]
देवदेवं जनार्दनम् [017.014]
यतः पापमशेषं वै [017.015]
नाशयत्यत्र केशवः [017.015]
पुष्यर्क्षैकादशी ब्रह्मंस् [017.015]
तेनोक्ता पापनाशनी [017.015]
तथान्यदपि धर्मज्ञ [018.001]
श्रूयतां गदतो मम [018.001]
पदद्वयं जगद्धातुर् [018.001]
देवदेवस्य शार्ङ्गिणः [018.001]
संवत्सरः पादपीठं [018.002]
तत्र न्यस्तं पदद्वयम् [018.002]
वासुदेवेन विप्रेन्द्र [018.002]
भूतानां हितकाम्यया [018.002]
वाममस्य पदं ब्रह्मन् [018.003]
उत्तरायणसंज्ञितम् [018.003]
देवाद्यैः सकलैर्वन्द्यं [018.003]
दक्षिणं दक्षिणायनम् [018.003]
तस्मिन्यः प्रयतः सम्यग् [018.004]
देवदेवस्य मानवः [018.004]
करोत्याराधनं तस्य [018.004]
तोषमायाति केशवः [018.004]
कथमाराधनं तस्य [018.005]
देवदेवस्य शार्ङ्गिणः [018.005]
क्रियते मुनिशार्दूल [018.005]
तन्ममाख्यातुमर्हसि [018.005]
उत्तरे त्वयने दाल्भ्य [018.006]
स्नातो नियतमानसः [018.006]
घृतक्षीरादिना देवं [018.006]
स्नापयेद्धरणीधरम् [018.006]
चारुवस्त्रोपहारैश्च [018.007]
पुष्पधूपानुलेपनैः [018.007]
समभ्यर्च्य ततः सम्यग् [018.007]
ब्राह्मणानां च तर्पणैः [018.007]
पदद्वयव्रतं सम्यग् [018.007]
गृह्णीयाद्विष्णुतत्परः [018.007]
स्नातो नारायणं वक्ष्ये [018.008]
भुञ्जन्नारायणं तथा [018.008]
भुङ्क्त्वा नारायणं चाहं [018.008]

गच्छन्नारायणं ततः [018.008]
स्वपन्विबुद्धः प्रणमन् [018.009]
होमं कुर्वंस्तथार्चनम् [018.009]
नारायणस्यानुदिनं [018.009]
करिष्ये नामकीर्तनम् [018.009]
यावदद्यदिनात्प्राप्तं [018.010]
क्रमशो दक्षिणायनम् [018.010]
स्खलिते ऽहं क्षुते चैव [018.010]
वेदनार्तो ऽथवा सदा [018.010]
तावन्नारायणं वक्ष्ये [018.010]
सर्वमेवोत्तरायणम् [018.010]
यावज्जीववधं किंचिद् [018.011]
ज्ञानतो ऽज्ञानतो ऽपि वा [018.011]
करिष्ये ऽहं तथा चैव [018.011]
कीर्तयिष्यामि तं प्रभुम् [018.011]
यदा तदानृतं किंचिद् [018.012]
अथ वक्ष्यामि दुर्वचः [018.012]
अज्ञानादथवा ज्ञानात् [018.012]
कीर्तयिष्यामि तं प्रभुम् [018.012]
षण्मासमेष मे जापो [018.013]
नारायणमयः परः [018.013]
तं स्मरन्मरणे याति [018.013]
यां गतिं सास्तु मे गतिः [018.013]
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर् [018.014]
यद्यकस्माद्भवेन्मम [018.014]
तन्मया वासुदेवाय [018.014]
स्वयमात्मा निवेदितः [018.014]
परमार्थमयं ब्रह्म [018.015]
वासुदेवमयं परम् [018.015]
यमन्ते संस्मरन्याति [018.015]
स मे विष्णुः परा गतिः [018.015]
यदा प्रातस्तदा सायं [018.016]
मध्याह्ने वा म्रिये ह्यहम् [018.016]
षण्मासाभ्यन्तरे न्यासः [018.016]
कृतो व्रतमयो मया [018.016]
तथा कुरु जगन्नाथ [018.017]
सर्वलोकपरायण [018.017]
नारायण यथा नान्यं [018.017]
त्वत्तो यामि मृते गतिम् [018.017]
एवमुच्चार्य षण्मास- [018.018]
पारणं प्रवरं व्रतम् [018.018]
तावन्निष्पादयेद्यावत् [018.018]
संप्राप्तं दक्षिणायनम् [018.018]
ततश्च प्रीणनं कुर्याद् [018.019]
यथाशक्त्या जगद्गुरोः [018.019]
भोजयेद्ब्राह्मणान्सम्यग् [018.019]
दद्यात्तेभ्यश्च दक्षिणाम् [018.019]
एवं व्रतमिदं दाल्भ्य [018.020]
यः पारयति मानवः [018.020]
नारी वा सर्वपापेभ्यः [018.020]
षण्मासाद्विप्र मुच्यते [018.020]
षण्मासाभ्यन्तरे चास्य [018.021]
मरणं यदि जायते [018.021]
प्राप्नोत्यनशनस्योक्तं [018.021]
यत्फलं तदसंशयम् [018.021]
पदद्वयं च कृष्णस्य [018.022]
सम्यक्तेन तथार्चितम् [018.022]
हरेर्नाम जपन्भक्त्या [018.*(10)]
स पुरा न जनेश्वर [18*(10)]
भगवानुज्जगौ विष्णुः [018.022]
पुरा गार्ग्याय पृच्छते [018.022]
फाल्गुनामलपक्षस्य [019.001]
एकादश्यामुपोषितः [019.001]
नरो वा यदि वा नारी [019.001]
समभ्यर्च्य जगद्गुरुम् [019.001]
हरेर्नाम जपेद्भक्त्या [019.002]
सप्त वारान्नरेश्वर [019.002]
उत्तिष्ठन्प्रस्वपंश्चैव [019.002]
हरिमेवानुकीर्तयेत् [019.002]
ततो ऽन्यदिवसे प्राप्ते [019.003]
द्वादश्यां प्रयतो हरिम् [019.003]
स्नात्वा सम्यक्तमभ्यर्च्य [019.003]
दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् [019.003]
हरिमुद्दिश्य चैवाग्नौ [019.004]
घृतहोमकृतक्रियः [019.004]
प्रणिपत्य जगन्नाथम् [019.004]
इति वाणीमुदीरयेत् [019.004]
पातालसंस्था वसुधा [019.005]
यं प्रसाद्य मनोरथान् [019.005]
अवाप वासुदेवो ऽसौ [019.005]
प्रददातु मनोरथान् [019.005]
यमभ्यर्च्यादितिः प्राप्ता [019.006]
सकलांश्च मनोरथान् [019.006]
पुत्रांश्चैवेप्सितान्देवः [019.006]

प्रददातु मनोरथान् [019.006]
भ्रष्टराज्यश्च देवेन्द्रो [019.007]
यमभ्यर्च्य जगत्पतिम् [019.007]
मनोरथानवापाग्र्यान् [019.007]
स ददातु मनोरथान् [019.007]
एवमभ्यर्च्य पूजां च [019.008]
निष्पाद्य हरये ततः [019.008]
भुञ्जीत प्रयतः सम्यग् [019.008]
हविष्यं मनुजर्षभ [019.008]
फाल्गुनं चैत्रवैशाखौ [019.009]
ज्येष्ठमासं च पार्थिव [019.009]
चतुर्भिः पारणं मासैर् [019.009]
एभिर्निष्पादितं भवेत् [019.009]
रक्तपुष्पैस्तु चतुरो [019.010]
मासान्कुर्वीत चार्चनम् [019.010]
दहेच्च गुग्गुलं प्राश्य [019.010]
गोशृङ्गक्षालनं जलम् [019.010]
हविष्यान्नं च नैवेद्यम् [019.011]
आत्मनश्चैव भोजनम् [019.011]
ततश्च श्रूयतामन्यद् [019.011]
आषाढादौ तु या क्रिया [019.011]
जातीपुष्पाणि धूपश्च [019.012]
शस्तः सर्जरसो नृप [019.012]
प्राश्य दर्भोदकं चात्र [019.012]
शाल्यन्नं च निवेदनम् [019.012]
स्वयं तदेव चाश्नीयाच् [019.013]
शेषं पूर्ववदाचरेत् [019.013]
कार्त्तिकादिषु मासेषु [019.013]
गोमूत्रं कायशोधनम् [019.013]
सुगन्धं चेच्छया धूपं [019.014]
पूजाभृङ्गारकेण च [019.014]
कासारं चात्र नैवेद्यम् [019.014]
अश्नीयात्तच्च वै स्वयम् [019.014]
प्रतिमासं च विप्राय [019.015]
दातव्या दक्षिणा तथा [019.015]
प्रीणनं चेच्छया विष्णोः [019.015]
पारणे पारणे गते [019.015]
यथाशक्ति यथाप्रीति [019.016]
वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् [019.016]
सद्भावेनैव गोविन्दः [019.016]
पूजितः प्रीयते यतः [019.016]
पारणान्ते यथाशक्त्या [019.017]
स्नापितः पूजितो हरिः [019.017]
प्रीणितश्चेप्सितान्कामान् [019.017]
ददात्यव्याहतान्नृप [019.017]
एषा धन्या पापहरा [019.018]
द्वादशी फलमिच्छताम् [019.018]
यथाभिलषितान्कामान् [019.018]
ददाति मनुजेश्वर [019.018]
पूरयत्यखिलान्भक्त्या [019.019]
यतश्चैषा मनोरथान् [019.019]
मनोरथद्वादशीयं [019.019]
ततो लोकेषु विश्रुता [019.019]
उपोष्यैतां त्रिभुवनं [019.020]
प्राप्तमिन्द्रेण वै पुरा [019.020]
अदित्या चेप्सिताः पुत्रा [019.020]
धनं चोशनसा नृप [019.020]
धौम्येन चाप्यध्ययनम् [019.021]
अन्यैश्चाभिमतं फलम् [019.021]
राजर्षिभिस्तथा विप्रैः [019.021]
स्त्रीभिः शूद्रैश्च भूपते [019.021]
यं यं काममभिध्यायेद् [019.022,*(11)]
व्रतमेतदुपोषितः [019.022,*(11)]
तं तमाप्नोत्यसंदिग्धं [019.022,*(11)]
विष्णोराराधनोद्यतः [019.022,*(11)]
अपुत्रो लभते पुत्रम् [019.023]
अधनो लभते धनम् [019.023]
रोगाभिभूतश्चारोग्यं [019.023]
कन्या प्राप्नोति सत्पतिम् [019.023]
समागमं प्रवसितैर् [019.024]
उपोष्यैतामवाप्नुते [019.024]
सर्वान्कामानवाप्नोति [019.024]
मृतः स्वर्गे च मोदते [019.024]
नापुत्रो नाधनो नेष्ट- [019.025]
वियोगी न च निर्गुणः [019.025]
उपोष्यैतद्व्रतं मर्त्यः [019.025]
स्त्री जनो वापि जायते [019.025]
य एव व्रतसंचीर्णो [019.*(12)]
विष्णुलोके महीयते [019.*(12)]
स्वर्गलोके सहस्राणि [019.026]
वर्षाणां मनुजाधिप [019.026]
भोगानभिमतान्भुक्त्वा [019.026]
स्वर्गलोके ऽभिकाङ्क्षितान् [019.026]
इह पुण्यवतां नृणां [019.027]

धनिनां साधुशीलिनाम् [019.027]
गृहेषु जायते राजन् [019.027]
सर्वव्याधिविवर्जितः [019.027]
अशोकपूर्णिमां चान्यां [020.001]
शृणुश्व वदतो मम [020.001]
यामुपोष्य नरः शोकं [020.001]
नाप्नोति स्त्री तथापि वा [020.001]
फाल्गुनामलपक्षस्य [020.002]
पूर्णिमास्यां नरेश्वर [020.002]
मृज्जलेन नरः स्नात्वा [020.002]
दत्त्वा शिरसि वै मृदम् [020.002]
मृत्प्राशनं तथा कृत्वा [020.003]
कृत्वा च स्थण्डिलं मृदा [020.003]
पुष्पैः पत्रैस्तथाभ्यर्च्य [020.003]
भूधरं नान्यमानसः [020.003]
धरणीं च तथा देवीम् [020.003]
अशोकेत्यभिधीयते [020.003]
यथा विशोकां धरणीं [020.004]
कृतवांस्त्वं जनार्दनः [020.004]
तथा मां सर्वपापेभ्यो [020.004]
मोचयाशेषधारिणि [020.004]
यथा समस्तभूतानां [020.005]
धारणं त्वय्यवस्थितम् [020.005]
तथा विशोकं कुरु मां [020.005]
सकलेच्छाविभूतिभिः [020.005]
ध्यातमात्रे यथा विष्णौ [020.006]
स्वास्थ्यं यातासि मेदिनि [020.006]
तथा मनः स्वस्थतां मे [020.006]
कुरु त्वं भूतधारिणि [020.006]
एवं स्तुत्वा तथाभ्यर्च्य [020.007]
चन्द्रायार्घ्यं निवेद्य च [020.007]
उपोषितव्यं नक्तं वा [020.007]
भोक्तव्यं तैलवर्जितम् [020.007]
अनेनैव प्रकारेण [020.008]
चत्वारः फाल्गुनादयः [020.008]
उपोष्या नृपते मासाः [020.008]
प्रथमं तत्तु पारणम् [020.008]
आषाढादिषु मासेषु [020.009]
तद्वत्स्नानं मृदम्बुना [020.009]
तदेव प्राशनं पूजा [020.009]
तथैवेन्दोस्तथार्हणम् [020.009]
चतुर्ष्वन्येषु चैवोक्तं [020.010]
तथा वै कार्त्तिकादिषु [020.010]
पारणं त्रितयं चैव [020.010]
चातुर्मासिकमुच्यते [020.010]
प्रथमं धरणी नाम [020.011]
स्तुत्यै मासचतुष्टयम् [020.011]
द्वितीये मेदिनी वाच्या [020.011]
तृतीये च वसुंधरा [020.011]
पारणे पारणे वस्त्र- [020.012]
पूजया पूजयेन्नृप [020.012]
धरणीं देवदेवं च [020.012]
घृतस्नानेन केशवम् [020.012]
वस्त्राभावे तु सूत्रेण [020.013]
पूजयेद्धरणीं तथा [020.013]
घृताभावे तथा क्षीरं [020.013]
शस्तं वा सलिलं हरेः [020.013]
पातालमूलगतया [020.014]
चीर्णमेतन्महाव्रतम् [020.014]
धरण्या केशवप्रीत्यै [020.014]
ततः प्राप्ता समुन्नतिः [020.014]
देवेन चोक्ता धरणी [020.015]
वराहवपुषा तदा [020.015]
उपवासप्रसन्नेन [020.015]
समुद्धृत्य रसातलात् [020.015]
व्रतेनानेन कल्याणि [020.016]
प्रणतो यः करिष्यति [020.016]
तस्य प्रसादमप्यहम् [020.*(13)]
करोमि तव मेदिनि [020.*(13)]
तथैव कुरुते पूजां [020.*(13)]
भक्त्या मम शुभो जनः [020.*(13)]
तथैव तव कल्याणि [020.*(13)]
प्रणतो यः करिष्यति [020.*(13)]
व्रतमेतदुपाश्रित्य [020.016]
पारणं च यथाविधि [020.016]
सर्वपापविनिर्मुक्तः [020.017]
सप्त जन्मान्तराण्यसौ [020.017]
विशोकः सर्वकल्याण- [020.017]
भाजनो मतिमाञ्जनः [020.017]
सर्वत्र पूज्यः सततं [020.018]
सर्वेषामपराजितः [020.018]
यथाहमेवं वसुधे [020.018]
भविता निर्वृतेः पदम् [020.018]
तथा त्वमपि कल्याणि [020.*(14)]

भविष्यसि न संशयः [020.*(14)]
एवमेतन्महापुण्यं [020.019]
सर्वपापोपशान्तिदम् [020.019]
विशोकाख्यं व्रतं धन्यं [020.019]
तत्कुरुष्व महीपते [020.019]
स्त्रीणां धर्मं द्विजश्रेष्ठ [021.001]
उपवासं भवन्मम [021.001]
कथयेह यथातत्त्वम् [021.001]
उपवासविधिश्च यः [021.001]
कौमारके गृहस्थाया [021.002]
विधवायाश्च सत्तम [021.002]
धर्मं प्रब्रूह्यशेषेण [021.002]
भगवत्प्रीतिकारकम् [021.002]
श्रूयतामखिलं ब्रह्मन् [021.003]
यद्येतदनुपृच्छसि [021.003]
उपकाराय च स्त्रीणां [021.003]
त्रिषु लोकेष्वनुत्तमम् [021.003]
प्रश्नमेतत्पुरा देवी [021.004]
शैलराजसुता पतिम् [021.004]
पप्रच्छ शङ्करं ब्रह्मन् [021.004]
कैलासशिखरे स्थितम् [021.004]
कुमारिकाभिर्देवेश [021.005]
गृहस्थाभिश्च केशवः [021.005]
विधवाभिस्तथा स्त्रीभिः [021.005]
कथमाराध्यते वद [021.005]
साधु साध्वि त्वया पृष्टम् [021.006]
एतन्नारायणाश्रितम् [021.006]
उपवासादि यत्तत्त्वं [021.006]
श्रूयतामस्य यो विधिः [021.006]
योग्यं पतिं समासाद्य [021.007]
नारी धर्ममवाप्नुते [021.007]
दुःशीले ऽपि हि कामार्ते [021.007]
नारी प्राप्नोति भर्तरि [021.007]
अनाराध्य जगन्नाथं [021.008]
सर्वलोकेश्वरं हरिम् [021.008]
कथमाप्नोति वै नारी [021.008]
पतिं शीलगुणान्वितम् [021.008]
सुकलत्रप्रदं तस्माद् [021.009]
व्रतमच्युततुष्टिदम् [021.009]
कर्तव्यं लक्षणं तस्य [021.009]
श्रूयतां वरवर्णिनि [021.009]
यच्चीर्त्वा सर्वनारीणां [021.010]
श्रेष्ठमाप्नोत्यसंशयम् [021.010]
ऐहिकं च सुखं प्राप्य [021.010]
स्वर्गे भुङ्क्ते सुखान्यपि [021.010]
अनुज्ञां प्राप्य पितृतो [021.011]
मातृतश्च कुमारिका [021.011]
पूजयेच्च जगन्नाथं [021.011]
भक्त्या पापहरं हरिम् [021.011]
त्रिषूत्तरेषु स्वृक्षेषु [021.012]
पतिकामा कुमारिका [021.012]
माधवाख्यं तु वै नाम [021.012]
जपेन्नित्यमतन्द्रिता [021.012]
प्रियङ्गुणा रक्तपुष्पैर् [021.013]
बन्धूककुसुमैस्तथा [021.013]
समभ्यर्च्य ततो दद्याद् [021.013]
रक्तमेवानुलेपनम् [021.013]
सर्वौषध्या स्वयं स्नात्वा [021.014]
समभ्यर्च्य जगत्पतिम् [021.014]
नमो ऽस्तु माधवायेति [021.014]
होमयेन्मधुसर्पिषी [021.014]
स देवमुत्तरायोगे [021.015]
समभ्यर्च्य जनार्दनम् [021.015]
शोभनं पतिमाप्नोति [021.015]
प्रेत्य स्वर्गं च गच्छति [021.015]
अतिबाल्ये च यत्किंचित् [021.016]
तया पापमनुष्ठितम् [021.016]
तस्माच्च मुच्यते देवि [021.016]
सुखिनी चैव जायते [021.016]
अब्देनैकेन तन्वङ्गि [021.017]
धूतपापा यदिच्छति [021.017]
तदेव प्राप्नुयाद्भद्रे [021.017]
नारायणपरायणा [021.017]
षण्मासं प्रीणनं कार्यं [021.018]
भक्त्या शक्त्या च वै हरेः [021.018]
पारणान्ते महाभगे [021.018]
तथा ब्राह्मणतर्पणम् [021.018]
गार्हस्थ्ये ऽवस्थिता नारी [022.001]
भक्त्या संपूजयेत्पतिम् [022.001]
स एव देवता तस्याः [022.001]
पूज्यः पूज्यतरश्च सः [022.001]
तस्मिंस्तुष्टे परो धर्मस् [022.002]
तस्यैव परिचर्यया [022.002]
तोषमायाति सर्वात्मा [022.002]

परमात्मा जनार्दनः [022.002]
नैव तस्याः पृथग्यज्ञो [022.003]
न श्राद्धं नाप्युपोषितम् [022.003]
भर्तृशुश्रूषणेनैव [022.003]
प्राप्नोति स्त्री यथेप्सितम् [022.003]
तेनैव साप्यनुज्ञाता [022.004]
तस्य शुश्रूषणादनु [022.004]
तोषयेज्जगतामीशम् [022.004]
अनन्तमपराजितम् [022.004]
व्रतैर्नानाविधैर्देवि [022.005]
ऐहिकामुष्मिकाप्तये [022.005]
विष्णुव्रतादिभिर्दिव्यैस् [022.005]
तथा दानैर्मनोऽनुगैः [022.005]
घृतक्षीराभिषेकैश्च [022.006]
ब्राह्मणानां च तर्पणैः [022.006]
मनोज्ञैर्विविधैर्धूपैः [022.006]
पुष्पवस्त्रानुलेपनैः [022.006]
गीतवाद्यैस्तथा हृद्यैर् [022.007]
उपवासैश्च भामिनि [022.007]
एवमाराध्य गोविन्दम् [022.007]
अनुज्ञाता यथाविधि [022.007]
पतिना सकलान्कामान् [022.007]
अवाप्नोति न संशयः [022.007]
पतिना त्वननुज्ञाता [022.008]
किंचित्पुण्यं करोति या [022.008]
विफलं तदशेषं वै [022.008]
तस्याः शैलवरात्मजे [022.008]
न च प्रसादं कुरुते [022.009]
भगवान्मधुसूदनः [022.009]
नानुज्ञाता तु या नारी [022.009]
पतिनार्चति केशवम् [022.009]
या तु भर्तृपरा नारी [022.010]
नारायणमतन्द्रिता [022.010]
भक्त्या संपूजयेद्देवं [022.010]
तोषमायाति केशवः [022.010]
या तु भर्त्रा परित्यक्ता [022.011]
तथा या मृतभर्तृका [022.011]
पाषण्डानुगतो वापि [022.011]
यस्या भर्ता महेश्वर [022.011]
प्रायो ददाति नानुज्ञां [022.012]
विष्णोराराधने तदा [022.012]
कथमाराधनं कार्यं [022.012]
विष्णोस्तद्वद शंकर [022.012]
या तु भर्त्रा परित्यक्ता [022.013]
सा संपूज्य निजं पतिम् [022.013]
मनसा तन्मनस्का च [022.013]
तस्यैव हितकारिणी [022.013]
न निन्दाकरणी तस्य [022.014]
श्रेयोऽभिध्यायिनी तथा [022.014]
तस्यैव सर्वकालेषु [022.014]
सर्वकल्याणमिच्छति [022.014]
आराधयेज्जगन्नाथं [022.015]
सर्वधातारमच्युतम् [022.015]
कृतोपवासा पुष्पादि [022.015]
निवेद्य सकलं ततः [022.015]
भर्तुर्मनोरथावाप्तिं [022.016]
प्रार्थयेत्प्रथमं वरम् [022.016]
स्वयं यथाभिलषितं [022.016]
प्रार्थयेत्तं वरं ततः [022.016]
एवं भर्तृपरित्यक्ता [022.017]
योषिदाराधनं हरेः [022.017]
कुर्वाणा सकलान्कामान् [022.017]
अवाप्नोति न संशयः [022.017]
भर्ता करोति यच्चास्याः [022.018]
किंचित्पुण्यमहर्निशम् [022.018]
तस्य पुण्यस्य संपूर्णम् [022.018]
अर्धं प्राप्नोति सा शुभे [022.018]
यत्तु सा कुरुते पुण्यं [022.019]
विना दोषेण योज्झिता [022.019]
तत्तस्याः सकलं देवि [022.019]
तस्यार्धं न लभेत्पतिः [022.019]
भर्तर्येवं प्रवसिते [022.020]
त्यक्ता च पतिना शुभे [022.020]
कुर्वीताराधनं नारी [022.020]
उपवासादिना हरेः [022.020]
एतत्तवोक्तं यत्पृष्टं [022.021]
त्वयाहं गिरिनन्दिनि [022.021]
विधवानामतो धर्मं [022.021]
श्रूयतां विष्णुतुष्टिदम् [022.021]
मृते भर्तरि साध्वी स्त्री [022.022]
ब्रह्मचर्यव्रतोदिता [022.022]
स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् [022.022]
स्वभर्तृसलिलाञ्जलिम् [022.022]
कुर्याद्यानुदिनं भक्त्या [022.023]

देवानामपि पूजनम् [022.023]
अतिथेस्तर्पणं तद्वद् [022.023]
अग्निहोत्रममन्त्रकम् [022.023]
पूर्तधर्माश्रितं चान्यत् [022.024]
कुर्यान्नित्यमतन्द्रिता [022.024]
नित्यकर्म ऋते चास्या [022.024]
नेष्टं कर्म विधीयते [022.024]
विष्णोराराधनं चैव [022.025]
कुर्यान्नित्यमुपोषिता [022.025]
दानादि विप्रमुख्येभ्यो [022.025]
दद्यात्पुण्यविवृद्धये [022.025]
उपवासांश्च विविधान् [022.025]
कुर्याच्छास्त्रोदितान्शुभे [022.025]
लोकान्तरस्थं भर्तारम् [022.026]
आत्मानं च वरानने [022.026]
तारयत्युभयं नारी [022.026]
येत्थं धर्मपरायणा [022.026]
पुत्रैश्वर्यस्थिता नारी [022.027]
उपवासादिना हरिम् [022.027]
या तोषयति सिद्धिं सा [022.027]
पुत्रेभ्यो ऽपि प्रयच्छति [022.027]
शुभांल्लोकांस्तथा भर्तुर् [022.028]
आत्मनश्च यथेप्सितान् [022.028]
सकलं पूरयत्यस्तं [022.028]
पापं नयति चाखिलम् [022.028]
आत्मनश्चैव भर्तुश्च [022.029]
नारी परमिकां गतिम् [022.029]
ददात्याराध्य गोविन्दं [022.029]
सपुत्रा विधवा च या [022.029]
तस्मादेभिर्विधानैस्तु [022.030]
सर्वकालं तु योषितः [022.030]
केशवाराधनं कार्यं [022.030]
लोकद्वयफलप्रदम् [022.030]
ये नरा मृतपत्निकास् [022.031]
तैरप्येतदशेषतः [022.031]
पूर्तधर्माश्रितं कार्यं [022.031]
नित्यकर्म च केवलम् [022.031]
पुत्रैश्वर्यस्थितैः सम्यग् [022.032]
ब्रह्मचर्यगुणान्वितैः [022.032]
विष्णोराराधनं कार्यं [022.032]
तीर्थस्थैरथवा गृहे [022.032]
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः [022.033]
स्त्री शूद्रश्च वरानने [022.033]
अनाराध्य हृषीकेशं [022.033]
नाप्नोति परमां गतिम् [022.033]
ऐश्वर्यं संततिं श्रेष्ठाम् [022.034]
आरोग्यं द्रव्यसंपदम् [022.034]
ददाति भगवान्विष्णुर् [022.034]
गतिमग्र्यां सुतोषितः [022.034]
एवं शैलसुता प्रोक्ता [022.035]
स्वयं देवेन शंभुना [022.035]
पृष्टेन सम्यक्कथितं [022.035]
भवतो ऽपि महामुने [022.035]
सर्ववर्णैस्तथा स्त्रीभिर् [022.036]
अन्यैरपि जनैर्हरिः [022.036]
आराधनीयो नातुष्टे [022.036]
विष्णौ संप्राप्यते गतिः [022.036]
न दुर्गतिं रौरवादीन् [022.037]
नरकांश्च न गच्छति [022.037]
यमाराध्येश्वरं वन्द्यं [022.037]
कस्तं विष्णुं न पूजयेत् [022.037]
तस्मादमुष्मिकान्क्लेशान् [022.038]
नरके याश्च यातनाः [022.038]
सदैवोद्विजता दाल्भ्य [022.038]
समाराध्यो जनार्दनः [022.038]
भगवन्यातना घोराः [023.001]
श्रूयन्ते नरकेषु याः [023.001]
तासां स्वरूपमत्युग्रं [023.001]
यथावद्वक्तुमर्हसि [023.001]
शृणु दाल्भ्यातिघोराणां [023.002]
यातनानां मयोदितम् [023.002]
स्वरूपं नारकैर्यत्तु [023.002]
नरकेष्वनुभूयते [023.002]
योजनानां सहस्राणि [023.003]
रौरवो नरको द्विज [023.003]
अङ्गारपूर्णमध्यो ऽसौ [023.003]
ज्वालामालापरिष्कृतः [023.003]
तन्मध्ये पतितो याति [023.004]
योजनानि सहस्रशः [023.004]
सत्यहान्यानृती याति [023.004]
तत्र पापरतिर्नरः [023.004]
रौरवाद्द्विगुणश्चैव [023.005]
महारौवरसंज्ञितः [023.005]
तप्तताम्रपुटाङ्गार- [023.005]

ज्वलत्पावकसंवृतः [023.005]
परोपतापिनस्तत्र [023.006]
पतन्ति नरके नराः [023.006]
नाश्चर्यं द्विजशार्दूल [023.006]
वर्षलक्षयुतानि च [023.006]
कालसूत्रेण च्छिद्यन्ते [023.007]
चक्रारूढाश्च मानवाः [023.007]
कालाङ्गुलिस्थेन सदा [023.007]
आपादतलमस्तकात् [023.007]
कालसूत्र इति ख्यातो [023.008]
घोरः स नरकोत्तमः [023.008]
तत्रापि वञ्चका यान्ति [023.008]
ये चैवोत्कोचजीविनः [023.008]
तप्तकुम्भस्तथैवान्यो [023.009]
नरको भृशदारुणः [023.009]
तैलकुम्भेषु पच्यन्ते [023.009]
तत्राप्यग्निभृतेषु ते [023.009]
देववेदद्विजातीनां [023.010]
ये निन्दां कुर्वते सदा [023.010]
संशृण्वन्ति च ये मूढा [023.010]
ये च मत्सरिणो ऽधमाः [023.010]
करम्भवालुकाकुम्भ- [023.011]
संज्ञं च नरकं शृणु [023.011]
परदाररता ये तु [023.011]
पतन्ति नरके ऽधमाः [023.011]
हृतं यैश्च जलं ते ऽपि [023.012]
तस्मिन्यान्ति नराधमाः [023.012]
गोनिपानेषु विघ्नानि [023.012]
मूढा ये चापि कुर्वते [023.012]
करम्भवालुकाकुम्भ- [023.012]
नरके ते पतन्ति वै [023.012]
अन्धे तमसि दुष्पारे [023.013]
शीतार्तिपरिकम्पिताः [023.013]
भ्राम्यन्ते मानवा गात्रैः [023.013]
समस्तैः स्फुटितास्थिभिः [023.013]
गोवधः स्त्रीवधः पापैः [023.014]
कृतं यैश्च गवानृतम् [023.014]
ते तत्रातिमहाभीमे [023.014]
पतन्ति नरके नराः [023.014]
उत्पाट्यते तथा जिह्वा [023.015]
संदंशैर्भृशदारुणैः [023.015]
आक्रिशकानां दुष्टानां [023.015]
सदैवाबद्धभाषिणाम् [023.015]
करपत्रैश्च पाट्यन्ते [023.016]
यमस्य पुरुषैस्तथा [023.016]
परदारपरद्रव्य- [023.016]
हिंसकाः पुरुषाधमाः [023.016]
आयसीं च शिलां तप्ताम् [023.017]
अशेषाङ्गैस्तथा नराः [023.017]
परदाररता एवं [023.017]
समालिङ्गन्ति पापिनः [023.017]
सर्वाङ्गैर्विकृतैरक्तम् [023.018]
उद्गिरन्तो ऽतिपीडिताः [023.018]
यन्त्रेष्वन्येषु पीड्यन्ते [023.018]
जन्तुपीडाकरा नराः [023.018]
वृकैः संभक्ष्यते पृष्ठं [023.019]
नराणां पापकारिणाम् [023.019]
जनस्य पृष्ठमांसं यैर् [023.019]
भक्षितं पापकारिभिः [023.019]
असिपत्रवनैर्घोरैश् [023.020]
छिद्यन्ते पापकर्मिणः [023.020]
सद्भावप्रवणा यैस्तु [023.020]
भग्ना विश्रम्भिनो जनाः [023.020]
अयोमुखैः खगैर्भग्नाः [023.021]
खण्डखण्डं तथापरैः [023.021]
व्रजन्ति पापकर्माणः [023.021]
श्वशृगालैस्तथापरैः [023.021]
सूषायामपि धास्यन्ते [023.022]
ज्वलदग्निचयावृताः [023.022]
पाषाणपेष्यं पिष्यन्ते [023.022]
तथान्ये पापकर्मिणः [023.022]
देवतातिथिभृत्याणाम् [023.023]
अदत्त्वा भुञ्जते तु ये [023.023]
मृषागतास्तथावैक्यं [023.023]
त्रपुषा सीसकेन च [023.023]
प्रयान्ति पुरुषास्तैलैः [023.023]
क्वाथ्यन्ते ऽन्ये पुनः पुनः [023.023]
वर्णधर्मपरित्यागे [023.024]
नैक्यं ये पुरुषा गताः [023.024]
ते ऽपि पापसमाचारा [023.024]
वर्णसंकरकारिणः [023.024]
स्वरूपं नारकस्याग्नेः [023.025]
शृणुष्व कथयामि ते [023.025]
मुक्तस्ततो ऽन्यवह्निश्तः [023.025]

शेते संप्राप्य निर्वृतिम् [023.025]
शस्त्रधारास्तथैवैता [023.026]
मृणालप्रस्तरं नरः [023.026]
मन्यते नारकैः शस्त्रैर् [023.026]
विक्षतो द्विजसत्तम [023.026]
हिमखण्डचयाछन्नो [023.027]
निवातं मन्यते नरः [023.027]
विमुक्तो नारकाच्छीतात् [023.027]
प्रकाशं तमसस्तमः [023.027]
प्रोता गुदेषु भिन्नाङ्गा [023.028]
आर्ता रावविराविणः [023.028]
शूलेषु लोहेष्वपरे [023.028]
त्रिशूलेषु तथापरे [023.028]
याज्योपाध्यायदाम्पत्य- [023.029]
सुहृन्मित्रसुतादिषु [023.029]
कृतो भेदो दुराचारैर् [023.029]
यैरलीकोक्तिभाषिभिः [023.029]
आयसाः कण्टकास्तीक्ष्णा [023.030]
नरके कूटशाल्मलौ [023.030]
तेषु प्रोता दुरात्मानः [023.030]
परदारभुजो नराः [023.030]
कृमिकीटजलौकादि- [023.031]
तीक्ष्णदंष्ट्रास्यविक्षताः [023.031]
भ्राम्यन्ते चान्धतामिस्रे [023.031]
वृथामांसाशिनो हि ये [023.031]
एतांश्चान्यांश्च नरकाञ् [023.032]
शतशो ऽथ सहस्रशः [023.032]
कर्मान्तरं जनो भुङ्क्ते [023.032]
परिणामांश्च चेतसः [023.032]
यादृक्कर्म मनुष्याणां [023.033]
तादृग्विषयरूपवत् [023.033]
परिणामं मनो याति [023.033]
शुभाशुभमयं द्विज [023.033]
अतीवभीषणानित्थं [024.001]
शस्त्राग्निभयदान्नरः [024.001]
कथं न गच्छेन्नरकान् [024.001]
एतन्मे वक्तुमर्हसि [024.001]
अहो ऽतिकष्टपापानां [024.002]
विपाको नरकस्थितैः [024.002]
पुरुषैर्भुज्यते ब्रह्मंस् [024.002]
तन्मोक्षं वद सत्तम [024.002]
पुण्यस्य कर्मणः पाकः [024.003]
पुण्य एव द्विजोत्तम [024.003]
चेतसः परिणामोत्तः [024.003]
स्वर्गस्थैर्भुज्यते नरैः [024.003]
तथैव पाकः पापानां [024.004]
पुरुषैर्नरकस्थितैः [024.004]
भुज्यते तावदखिलं [024.004]
यावत्पापं क्षयं गतम् [024.004]
यदा तु पापस्य जयः [024.005]
क्षीयते सुकृतं तदा [024.005]
शुभस्य कर्मणो वृद्धौ [024.005]
क्षयमायात्यशोभनम् [024.005]
जये यतेत पुरुषस् [024.006]
तस्मात्सुकृतकर्मणः [024.006]
पापं कर्म विना नैव [024.006]
नरकप्राप्तिरिष्यते [024.006]
जयाय द्वादशी शस्ता [024.007]
नृणां सुकृतकर्मणाम् [024.007]
यामुपोष्य द्विजश्रेष्ठ [024.007]
न याति नरकं नरः [024.007]
फाल्गुनामलपक्षस्य [024.008]
एकादश्यामुपोषितः [024.008]
द्वादश्यां तु द्विजश्रेष्ठ [024.008]
पूजयेन्मधुसूदनम् [024.008]
एकादश्यां समुद्दिष्टं [024.009]
विष्णोर्नामानुकीर्तनम् [024.009]
पूजायां वासुदेवस्य [024.009]
कुर्वीत सुसमाहितः [024.009]
नमो नारायणायेति [024.010,*(15)]
वाच्यं च स्वपता निशि [024.010,*(15)]
क्रोधः प्रपञ्च ईर्ष्या च [024.010]
दम्भो लोभश्च वर्जितः [024.010]
कामो द्रोहो मदश्चापि [024.011]
मानमात्सर्यमेव च [024.011]
सर्वमेतत्परित्यज्य [024.011]
विष्णुभक्तेन चेतसा [024.011]
असारतां च लोके ऽस्मिन् [024.012]
संसारे भावयेन्मतिम् [024.012]
कामं क्रोधं च लोभं च [024.*(15)]
दम्भमीर्ष्यां च वर्जयेत् [024.*(15)]
मानद्रोहादिदोषांश्च [024.*(15)]
सर्वान्धनमदोद्धूतान् [024.*(15)]
भावयेद्विष्णुभक्तांश्च [024.*(15)]

संसारासारतां तथा [024.*(15)]
एवं भावितचित्तेन [024.*(15)]
प्राणिनां हितमिच्छता [024.*(15)]
तथैव कुर्याद्द्वादश्यां [024.012]
नाम्नामुच्चारणं द्विज [024.012]
यवपात्राणि पूर्वं तु [024.013]
दद्यान्मासचतुष्टयम् [024.013]
आषाढादिद्वितीयं तु [024.013]
पारणं यन्महामते [024.013]
तत्रापि घृतपात्राणि [024.013]
दद्याच्छ्रद्धासमन्वितः [024.013]
कार्त्तिकादिषु मासेषु [024.014]
माघन्तेषु तथा तिलान् [024.014]
विप्राय दद्यात्पात्रश्तान् [024.014]
प्रतिमाससमुपोषितः [024.014]
नामत्रयमशेषेषु [024.015]
मासि मासि दिनद्वयम् [024.015]
तथैवोच्चारयेद्दद्याद् [024.015]
द्वादश्यां च यवादिकम् [024.015]
प्रणम्य च हृषीकेशं [024.015]
कृतपूजः प्रसादयेत् [024.015]
विष्णो नमस्ते जगतः प्रसूते [024.016]
ओं वासुदेवाय नमो नमस्ते [024.016]
नारायण त्वां प्रणतो ऽस्म्यचिन्त्य [024.016]
जयो ऽस्तु मे शाश्वतपुण्यराशेः [024.016]
प्रसीद पुण्यं जयमेतु विष्णो [024.017]
ओं वासुदेव र्द्धिमुपैतु पुण्यम् [024.017]
नारायणों भूतिमुपैतु पुण्यम् [024.017]
प्रयातु चाशेषमघं विनाशम् [024.017]
विष्णो पुण्योद्भवो मे ऽस्तु [024.018]
वासुदेवास्तु मे शुभम् [024.018]
नारायणास्तु धर्मो मे [024.018]
जहि पापमशेषतः [024.018]
अनेकजन्मजनितं [024.019]
बाल्ययौवनवार्द्धिके [024.019]
पुण्यं विवृद्धिमायातु [024.019]
यातु पापं तु संक्षयम् [024.019]
आकाशादिषु शब्दादौ [024.020]
श्रोत्रादौ महदादिषु [024.020]
प्रकृतौ पुरुषे चैव [024.020]
ब्रह्मण्यपि च स प्रभुः [024.020]
यथैक एव सर्वात्मा [024.020]
वासुदेवो व्यवस्थितः [024.020]
तेन सत्येन मे पापं [024.021]
नरकार्तिप्रदं क्षयम् [024.021]
प्रयातु सुकृतस्यास्तु [024.021]
ममानुदिवसं जयः [024.021]
पापस्य हानिः पुण्यं च [024.021]
वृद्धिमभ्येत्यनुत्तमाम् [024.021]
एवमुच्चार्य विप्राय [024.022]
दत्त्वा यत्कथितं तव [024.022]
भुञ्जीत कृतकृत्यस्तु [024.022]
पारणे पारणे गते [024.022]
पारणान्ते च देवस्य [024.023]
प्रीणनं शक्तितो द्विज [024.023]
कुर्वीताखिलपाषण्डैर् [024.023]
आलापं च विवर्जयेत् [024.023]
इत्येतत्कथितं दाल्भ्य [024.024]
सुकृतस्य जयावहा [024.024]
द्वादशी नरकं मृत्यो [024.024]
यामुपोष्य न पश्यति [024.024]
नाग्नयो न च शस्त्राणि [024.025]
न च लोहमूखाः खगाः [024.025]
नारकास्तं प्रबाधन्ते [024.025]
मतिर्यस्य जनार्दने [024.025]
नामोच्चारणमात्रेण [024.026]
विष्णोः क्षीणो ऽघसंचयः [024.026]
भवत्यपास्तपापस्य [024.026]
नरके गमनं कुतः [024.026]
नमो नारायण हरे [024.027]
वासुदेवेति कीर्तयेत् [024.027]
न याति नरकं मर्त्यः [024.027]
संक्षीणाशेषपातकः [024.027]
तस्मात्पाषण्डिसंसर्गम् [024.028]
अकुर्वन्द्वादशीमिमाम् [024.028]
उपोष्य पुण्योपचयी [024.028]
न याति नरकं नरः [024.028]
पाषण्डिभिरसंस्पर्शम् [025.001]
असंभाषणमेव च [025.001]
विष्णोराराधनपरैर् [025.001]
नरैः कार्यमुपोषितैः [025.001]
किं ब्रूहि लक्षणं तेषां [025.002]
यादृशान्वर्जयेद्व्रती [025.002]
कथंचिद्यदि संलाप- [025.002]

दर्शनस्पर्शनादिकम् [025.002]
उपोषितानां पाषण्डैर् [025.003]
नराणां विप्र जायते [025.003]
किं तत्र वद कर्तव्यं [025.003]
येनाखण्डं व्रतं भवेत् [025.003]
श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मं [025.004]
वर्णाश्रमविभागजम् [025.004]
उल्लङ्घ्य ये प्रवर्तन्ते [025.004]
स्वेच्छया कूटयुक्तिभिः [025.004]
विकर्माभिरता मूढा [025.005]
युक्तिप्रागल्भ्यदुर्मदाः [025.005]
पाषण्डिनस्ते दुःशीला [025.005]
नरकार्हा नराधमाः [025.005]
तांस्तु पाषण्डिनः पापान् [025.006]
विकर्मस्थांश्च मानवान् [025.006]
वैडालव्रतिकांश्चैव [025.006]
नित्यमेव तु नालपेत् [025.006]
संभाष्यैताञ्शुचिषदं [025.007]
चिन्तयेदच्युतं बुधः [025.007]
इदं चोदाहरेत्सम्यक् [025.007]
कृत्वा तत्प्रवणं मनः [025.007]
शारीरमन्तःकरणोपघातं [025.008]
वाचश्च विष्णुर्भगवानशेषम् [025.008]
शमं नयत्वस्तु ममेह शर्म [025.008]
पापादनन्ते हृदि संनिविष्टे [025.008]
अन्तःशुद्धिं बहिःशुद्धिं [025.009]
शुद्धो ऽन्तर्मम यो ऽच्युतः [025.009]
स करोत्वमले तस्मिञ् [025.009]
शुचिरेवास्मि सर्वदा [025.009]
बाह्योपघातादनघो [025.010]
बोद्धा च भगवानजः [025.010]
शुद्धिं नयत्वनन्तात्मा [025.010]
विष्णुश्चेतसि संस्थितः [025.010]
एतत्संभाष्य जप्तव्यं [025.011]
पाषण्डिभिरुपोषितैः [025.011]
नमः शुचिषदेत्युक्त्वा [025.011]
सूर्यं पश्येत वीक्षितैः [025.011]
श्रूयते च पुरा मर्त्याः [025.012]
स्वेच्छया स्वर्गगामिनः [025.012]
बभूवुरनघाः सर्वे [025.012]
स्वधर्मपरिपालनात् [025.012]
देवाश्च बलिनो मर्त्यैर् [025.013]
वर्णकर्मण्यनुव्रतैः [025.013]
यज्ञाध्ययनदानेषु [025.013]
वर्तमानैश्च मानवैः [025.013]
दैतेयाश्च पराभावम् [025.014]
अतुष्टावसुरा ययुः [025.014]
ततश्च षण्डो मर्कश्च [025.014]
दैत्येन्द्राणां पुरोहितौ [025.014]
चक्रतुः कर्म देवानां [025.014]
विनाशायातिभीषणम् [025.014]
तत्रोत्पन्नो ऽतिकृष्णाङ्गस् [025.015]
तमःप्रायो ऽतिदारुणः [025.015]
दम्भाधारः शाठ्यसारो [025.015]
निद्राप्रकृतिरुल्वणः [025.015]
महामोह इति ख्यातः [025.016]
कृत्यरूपो विभीषणः [025.016]
चतुर्धा स विभक्तश्च [025.016]
ताभामत्र महीयते [025.016]
वेददेवद्विजातीनाम् [025.017]
एकांशेन स निन्दनम् [025.017]
करोत्यन्येन न रतिं [025.017]
योगकर्मसु विन्दति [025.017]
विकर्मण्यपरेणापि [025.018]
संयोजयति मानवान् [025.018]
ज्ञानापहारमन्येन [025.018]
करोति द्विजसत्तम [025.018]
ज्ञानबुद्ध्या तथाज्ञानं [025.019]
गृह्णात्यज्ञानमोहितः [025.019]
वेदवादविरोधेन [025.019]
या कथा सास्य रोचते [025.019]
एवं स तु महामोहः [025.020]
षण्डमर्कोपपादितः [025.020]
दम्भादिदूषितो ऽधर्म- [025.020]
स्वरूपो ऽतिभयंकर [025.020]
स लोकान्विविधोपायैर् [025.021]
लोकेष्वेव व्यवस्थितः [025.021]
मोहाभिभवनिःसाराण् [025.021]
करोति द्विजसत्तम [025.021]
तन्मोहितानामचिराद् [025.022]
विवेको याति संक्षयम् [025.022]
क्षीणज्ञाना विकर्माणि [025.022]
कुर्वन्त्यहरहो द्विज [025.022]
निजवर्णात्मकं धर्मं [025.023]

परित्यज्य विमोहिताः [025.023]
धर्मबुद्ध्या ततः पापं [025.023]
कुर्वन्त्यज्ञानदुर्मदाः [025.023]
ज्ञानावलेपस्तत्रैव [025.024]
ततस्तेषां प्रजायते [025.024]
सुहृद्भिर्वार्यमाणास्ते [025.024]
पण्डितैश्च दयालुभिः [025.024]
प्रयच्छन्त्युत्तरं ऊढाः [025.024]
कूटयुक्तिसमन्वितम् [025.024]
ततस्ते स्वयमात्मानम् [025.025]
अन्यं चाल्पमतिं नरम् [025.025]
विकर्मणा योजयन्तश् [025.025]
च्यवयन्ति स्वधर्मतः [025.025]
पाषण्डिनो दुराचाराः [025.026]
परान्नगुणवादिनः [025.026]
असंस्कृतान्नभोक्तारो [025.026]
व्रात्याः संस्कारवर्जिताः [025.026]
पाषण्डाः पापसंकल्पा [025.027]
दाम्भिकाः शठबुद्धयः [025.027]
वर्णसंकरकर्तारो [025.027]
मायाव्याजोपजीविनः [025.027]
निःशौचा वक्रमतयो [025.027]
नान्यदस्तीतिवादिनः [025.027]
एवंविधास्ते सन्मार्गाद् [025.028]
वेदप्रोक्ताद्बहिःस्थिताः [025.028]
क्रियाकलापं निन्दन्त [025.028]
ऋग्यजुःसामसंज्ञितम् [025.028]
आत्मानं च परांश्चैव [025.028]
कुर्वन्ति नरकस्थितान् [025.028]
तेषां दर्शनसंभाष- [025.029]
स्पर्शनानि नरैः सदा [025.029]
परित्याज्यानि दृष्टे च [025.029]
प्रोक्तः संभाषणे च यः [025.029]
संस्पर्शे च बुधः स्नात्वा [025.029]
शुचिः शुचिषदं स्मरेत् [025.029]
भवत्यतः सदैवैषाम् [025.030]
आलापस्पर्शनं त्यजेत् [025.030]
पुण्यकामो महाभागः [025.030]
किं पुनर्यदुपोषितः [025.030]
यतो हि निन्दिते कर्मण्य् [025.031]
अभ्यासो रतिरेव च [025.031]
पाषण्डिनामशेषाणाम् [025.031]
अप्रीतिर्वेदकर्माणि [025.031]
ते ह्यधोगामिनः प्रोक्ता [025.031]
आसुरं भावमाश्रिताः [025.031]
अप्राप्तिर्न तथा दुःखम् [026.001]
ऐश्वर्यादिर्द्विजोत्तम [026.001]
यथा मनोरथैर्लब्धैर् [026.001]
विच्युतिर्धर्महानिजा [026.001]
ऐश्वर्याद्वित्ततो वापि [026.002]
संततेर्देवलोकतः [026.002]
अभीष्टादन्यतो वापि [026.002]
पदाद्येन न विच्युतिम् [026.002]
प्राप्नोति पुरुषो ब्रह्मन् [026.003]
नारी वापुण्यसंक्षयात् [026.003]
तन्ममाचक्ष्व विप्रर्षे [026.003]
दुःखमेभ्यो हि विच्युतिः [026.003]
सत्यमेतन्महाभाग [026.004]
दुःखं प्राप्तस्य संक्षयः [026.004]
ऐश्वर्यादथ वित्तस्य [026.004]
बन्धुवर्गसुखस्य वा [026.004]
तदेतच्छ्रूयतां दाल्भ्य [026.005]
यथा नेष्टात्परिच्युतिः [026.005]
सर्गादिर्जायते सम्यग् [026.005]
उपवासवतां सताम् [026.005]
द्वादशर्क्षाणि विप्रर्षे [026.006]
प्रतिमासं तु यानि वै [026.006]
तन्नामान्यच्युतं तेषु [026.006]
सम्यक्संपूजयेद्बुधः [026.006]
पुष्पैर्धूपैस्तथाम्भोभिर् [026.007]
अभीष्टैरपरैस्तथा [026.007]
आदितः कृत्तिकां कृत्वा [026.007]
कार्त्तिके मुनिपुङ्गव [026.007]
नैवेद्यं कृसरं पूर्वम् [026.008]
अन्नं मासचतुष्टयम् [026.008]
निवेदयेत्कार्त्तिकादि [026.008]
संयावं च ततः परम् [026.008]
आषाढादौ च देवाय [026.009]
पायसं वै निवेदयेत् [026.009]
तेनैवान्नेन विप्रर्षे [026.009]
ब्राह्मणान्भोजयेद्बुधः [026.009]
पञ्चगव्यजलस्नातस् [026.010]
तस्यैव प्राशनाच्छुचिः [026.010]
नैवेद्यं स्वयमश्नीयान् [026.010]

नक्तं संपूजिते ऽच्युते [026.010]
एवं संवत्सरस्यान्ते [026.011]
ततः सुप्तोत्थिते ऽच्युते [026.011]
संयक्संपूज्य विप्रर्षे [026.011]
तमेव पुरुषोत्तमम् [026.011]
प्रणम्य प्रार्थयेद्विद्वाञ् [026.011]
शुचिः स्नातो यथाविधि [026.011]
नमो नमस्ते ऽच्युत संक्षयो ऽस्तु [026.012]
पापस्य वृद्धिं समुपैतु पुण्यम् [026.012]
ऐश्वर्यवित्तादि सदाक्षयं मे [026.012]
ऽक्षया च मे संततिरच्युतास्तु [026.012]
यथाच्युतस्त्वं परतः परस्मात् [026.013]
स ब्रह्मभूतात्परतः परात्मन् [026.013]
तथाच्युतं मे कुरु वाञ्छितं यन् [026.013]
मया पदं पापहराप्रमेय [026.013]
अच्युतानन्त गोविन्द [026.014]
प्रसीद यदभीप्सितम् [026.014]
तदक्षयममेयात्मन् [026.014]
कुरुष्व पुरुषोत्तम [026.014]
एवमन्ते समभ्यर्च्य [026.015]
प्रार्थयित्वा तथाशिषः [026.015]
यथावन्मुनिशार्दूल [026.015]
च्युतिं नाप्नोति मानवः [026.015]
संततेः स्वर्गवित्तादेर् [026.016]
ऐश्वर्यस्य तथा मुने [026.016]
यद्वाभिमतमत्यन्तं [026.016]
ततो न च्यवते नरः [026.016]
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन [026.017]
मासनक्षत्रपूजने [026.017]
यतेताक्षयकामस्तु [026.017]
सदैव मुनिपुङ्गव [026.017]
अत्रापि श्रूयते सिद्धा [027.001]
काचित्स्वर्गे महाव्रता [027.001]
नारी तपोधना भूत्वा [027.001]
प्रख्याता शाम्भरायणी [027.001]
समस्तसंदेहहरा [027.001]
सदा स्वर्गौकसां हि सा [027.001]
कस्यचित्त्वथ कालस्य [027.002]
देवराजः शतक्रतुः [027.002]
पूर्वेन्द्रचरितं ब्रह्मन् [027.002]
पप्रच्छेदं बृहस्पतिम् [027.002]
पूर्वेन्द्रा परतः पूर्वे [027.003]
ये बभूवुः सुरेश्वराः [027.003]
तेषां चरितमिच्छामि [027.003]
श्रोतुमाङ्गिरसां वर [027.003]
एवमुक्तस्तदा तेन [027.004]
देवेन्द्रेणामलद्युतिः [027.004]
प्राह धर्मभृतां श्रेष्ठः [027.004]
परमर्षिर्बृहस्पतिः [027.004]
नाहं चिरन्तनान्वेद्मि [027.005]
देवराज सुरेश्वरान् [027.005]
आत्मनः समकालीनं [027.005]
मामवैहि सुरेश्वर [027.005]
ततः पप्रच्छ देवेन्द्रः [027.006]
को ऽस्माभिर्मुनिपुङ्गव [027.006]
प्रष्टव्यो ऽत्र महाभाग [027.006]
कृतादिवसतिर्दिवि [027.006]
बृहस्पतिश्चिरं ध्यात्वा [027.007]
पुनराह शचीपतिम् [027.007]
तपस्विनीं महाभागां [027.007]
स्मृत्वासौ शाम्भरायणीम् [027.007]
न देवा न च गन्धर्वा [027.008]
न चान्ये चिरसंस्थिताः [027.008]
चिरन्तनानां चरितेष्व् [027.008]
अभिज्ञा त्रिदशेश्वर [027.008]
एकैव चिरकालज्ञा [027.009]
धर्मज्ञा शक्र केवलम् [027.009]
जानात्यखिलदेवेन्द्र- [027.009]
चरितं शाम्भरायणी [027.009]
इत्युक्तस्तेन देवेन्द्रः [027.010]
कौतूहलसमन्वितः [027.010]
ययौ यत्र महाभागा [027.010]
तापसी शाम्भरायणी [027.010]
सा तौ दृष्ट्वा समायातौ [027.011]
देवराजबृहस्पती [027.011]
सम्यगर्घ्येन संपूज्य [027.011]
प्रणिपत्य शुभव्रता [027.011]
नमो ऽस्तु देवराजाय [027.012]
तथैवाङ्गिरसे नमः [027.012]
यद्वां कार्यं महाभागौ [027.012]
सकलं तदिहोच्यताम् [027.012]
आवामभ्यागतौ प्रष्टुं [027.013]
त्वामत्रातिविवेकिनीम् [027.013]
यच्च कार्यं महाभागे [027.013]

तत्पृष्टा कथयेह नौ [027.013]
यदि स्मरसि कल्याणि [027.014]
पूर्वेन्द्रचरितानि नौ [027.014]
तदाख्याहि महाभागे [027.014]
देवेन्द्रस्य कुतूहलात् [027.014]
यदि शक्यं मया कर्तुं [027.*(16)]
तत्करिष्ये विमृष्यतु [027.*(16)]
यो वै पूर्वः सुरेन्द्रस्य [027.015]
ततश्च प्रथमो हि यः [027.015]
तस्मात्पूर्वतरो यश्च [027.015]
तस्यापि प्रथमाश्च ये [027.015]
तेषां पूर्वतरा ये च [027.016]
वेद्मि तानखिलानहम् [027.016]
तेषां च चरितं कृत्स्नं [027.016]
जानाम्याङ्गिरसां वर [027.016]
मन्वन्तराण्यनेकानि [027.017]
सृष्टिं च त्रिदिवौकसाम् [027.017]
सप्तर्षीन्सुबहून्देव [027.017]
मनूनां च सुतान्नृप [027.017]
तत्पृच्छ त्वं वदाम्येषा [027.017]
पूर्वेन्द्रचरितं मुने [027.017]
एवमुक्ते ततस्ताभ्यां [027.018]
पृष्टा सा शाम्भरायणी [027.018]
यथावदाचष्ट तयोः [027.018]
पूर्वेन्द्रचरितं द्विज [027.018]
स्वायम्भुवे यस्तु मनौ [027.019]
मनौ स्वारोचिषे तु यः [027.019]
उत्तमे तामसे चैव [027.019]
रैवते चाक्षुषे तथा [027.019]
यो यो बभूव देवेन्द्रस् [027.020]
तस्य तस्य तपस्विनी [027.020]
तयोर्जगाद चरितं [027.020]
यथावच्छाम्भरायणी [027.020]
ततः कौतूहलपरो [027.021]
देवराट्तां तपस्विनीम् [027.021]
उवाच जानासि कथं [027.021]
त्वमेतच्छाम्भरायणि [027.021]
सर्व एव हि देवेन्द्राः [027.022]
स्वर्गस्था ये मनीषिणः [027.022]
बभूवुरेतच्चरितम् [027.022]
एतेषां वेद्मि तेन वै [027.022]
किं कृतं वद धर्मज्ञे [027.023]
त्वया येनेयमक्षया [027.023]
स्वर्लोके वसतिः प्राप्ता [027.023]
यथा नान्येन केनचित् [027.023]
अहो सर्वव्रतानां तद् [027.024]
उपोषितं महद्व्रतम् [027.024]
प्रधानतरमत्यर्थं [027.024]
स्वर्गसंवासदं मतम् [027.024]
चरितं च मया तेषां [027.*(17)]
श्रुतं दृष्टं तथैव च [027.*(17)]
एवमुक्ता ततस्तेन [027.025]
देवेन्द्रेण यशस्विनी [027.025]
प्रत्युवाच महाभागा [027.025]
यथावच्छाम्भरायणी [027.025]
मासर्क्षेष्वच्युतो देवः [027.026]
प्रतिमासं सुरेश्वर [027.026]
यथोक्तव्रतया सम्यक् [027.026]
सप्त वर्षाणि पूजितः [027.026]
तस्येयं कर्मणो व्युष्टिर् [027.027]
अच्युताराधनस्य मे [027.027]
देवलोकादभिमता [027.027]
देवराज यदच्युतिः [027.027]
स्वर्गं द्रव्यमयैश्वर्यं [027.028]
संततिं वापि यो ऽच्युताम् [027.028]
नरो वाञ्छति तेनेत्थं [027.028]
तोषणीयो ऽच्युतः प्रभुः [027.028]
एतत्ते पूर्वदेवेन्द्र- [027.029]
चरितं सकलं मया [027.029]
स्वर्गवासाक्षयत्वं च [027.029]
मासर्क्षाच्युतपूजनात् [027.029]
यथावत्कथितं देव [027.030]
पृच्छतस्त्रिदशेश्वर [027.030]
धर्मार्थकाममोक्षांस्तु [027.030]
वाञ्छतां विबुधाधिप [027.030]
विष्णोराराधनान्नान्यत् [027.030]
परमं सिद्धिकारणम् [027.030]
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा [027.031]
देवराजबृहस्पती [027.031]
तां तथेत्यूचतुः साध्वीं [027.031]
चेरतुश्चापि तद्व्रतम् [027.031]
तस्माद्दाल्भ्य प्रयत्नेन [027.032]
प्रतिमासं समाहितः [027.032]
मासर्क्षाच्युतपूजायां [027.032]

भवेथास्तन्मनाः सदा [027.032]
भगवन्प्राणिनः सर्वे [028.001]
विषरोगाद्युपद्रवैः [028.001]
दुष्टग्रहोपघातैश्च [028.001]
सर्वकालमुपद्रुताः [028.001]
आभिचारुककृत्याभिः [028.002]
स्पर्षरोगैश्च दारुणैः [028.002]
सदा संपीड्यमानास्ते [028.002]
तिष्ठन्ति मुनिसत्तम [028.002]
येन कर्मविपाकेन [028.003]
विषरोगाद्युपद्रवाः [028.003]
न भवन्ति नृणां तन्मे [028.003]
यथावद्वक्तुमर्हसि [028.003]
व्रतोपवासैर्यैर्विष्णुर् [028.004]
नान्यजन्मनि पूजितः [028.004]
ते नरा मुनिशार्दूल [028.004]
ग्रहरोगादिभागिनः [028.004]
यैर्न तत्प्रवणं चित्तं [028.005]
सर्वदैव नरैः कृतम् [028.005]
विषग्रहज्वराणां ते [028.005]
मनुष्या दाल्भ्य भाजनाः [028.005]
आरोग्यं परमामृद्धिं [028.006]
मनसा यद्यदिच्छति [028.006]
तत्तदाप्नोत्यसंदिग्धं [028.006]
परत्राच्युततोषकृत् [028.006]
नाधीन्प्राप्नोति न व्याधीन् [028.007]
न विषग्रहबन्धनम् [028.007]
कृत्यास्पर्शभयं वापि [028.007]
तोषिते मधुसूदने [028.007]
सर्वदुष्टशमस्तस्य [028.008]
सौम्यास्तस्य सदा ग्रहाः [028.008]
देवानामप्रधृष्यो ऽसौ [028.008]
तुष्टो यस्य जनार्दनः [028.008]
यः समः सर्वभूतेषु [028.009]
यथात्मनि तथापरे [028.009]
उपवादादिना तेन [028.009]
तोष्यते मधुसूदनः [028.009]
तोषिते तत्र जायन्ते [028.010]
नराः पूर्णमनोरथाः [028.010]
अरोगाः सुखिनो भोग- [028.010]
भोक्तारो मुनिसत्तम [028.010]
न तेषां शत्रवो नैव [028.011]
स्पर्शरोगाभिचारुकाः [028.011]
ग्रहरोगादिकं वापि [028.011]
पापकार्यं न जायते [028.011]
अव्याहतानि कृष्णस्य [028.012]
चक्रादीन्यात्मयुधानि तम् [028.012]
रक्षन्ति सकलापद्भ्यो [028.012]
येन विष्णुरुपासितः [028.012]
अनाराधितगोविन्दा [028.013]
ये नरा दुःखभागिनः [028.013]
तेषां दुःखाभिभूतानां [028.013]
कर्तव्यं यद्दयालुभिः [028.013]
पश्यद्भिः सर्वभूतस्थं [028.014]
वासुदेवं महामुने [028.014]
समदृष्टिभिरीशेशं [028.014]
तन्मम ब्रूह्यशेषतः [028.014]
कुशमूलस्थितो ब्रह्मा [028.*(18).002]
कुशमध्ये जनार्दनः [028.*(18).002]
कुशाग्रे शंकरं विद्यात् [028.*(18).003]
त्रयो देवा व्यवस्थिताः [028.*(18).003]
गृहीत्वा च स मूलाग्रान् [028.*(18).004]
कुशाञ्शुद्धानुपस्पृशेत् [028.*(18).004]
मार्जयेत्सर्वगात्राणि [028.*(18).005]
कुशाग्रैर्दाल्भ्य शान्तिकृत् [028.*(18).005]
शरीरे यस्य तिष्ठन्ति [028.*(18).006]
कुशस्थजलबिन्दवः [028.*(18).006]
नश्यन्ति तस्य पापानि [028.*(18).007]
गरुडेनैव पन्नगाः [028.*(18).007]
विष्णुभक्ता विशेषेण [028.*(18).008]
॥ ॥चिद्गतमानसः [028.*(18).008]
रोगग्रहविषार्तानां [028.*(18).009]
कुर्याच्छान्तिमिमां शुभाम् [028.*(18).009]
नारसिंहं समभ्यर्च्य [028.*(18).010]
शुचौ देशे कुशासने [028.*(18).010]
मन्त्रैरेतैर्यथा लिङ्गं [028.*(18).011]
कुर्याद्दिग्बन्धमात्मनः [028.*(18).011]
वाराहं नारसिंहं च [028.*(18).012]
वामनं विष्णुमेव च [028.*(18).012]
ध्यात्वा समाहितो भूत्वा [028.*(18).013]
दिक्षु नामानि विन्यासेत् [028.*(18).013]
पूर्वे नारायणः पातु [028.*(18).014]
वारिजाक्षस्तु दक्षिणे [028.*(18).014]
प्रद्युम्नः पश्चिमस्यां तु [028.*(18).015]

वासुदेवस्तथोत्तरे [028.*(18).015]
ईशान्यामवताद्विष्णुर् [028.*(18).016]
आग्नेय्यां च जनार्दनः [028.*(18).016]
नैर्ऋत्यां पद्मनाभश्च [028.*(18).017]
वायव्यां चैव माधवः [028.*(18).017]
ऊर्ध्वं गोवर्धनधरो [028.*(18).018]
अधरायां त्रिविक्रमः [028.*(18).018]
एताभ्यो दशदिग्भ्यस्तु [028.*(18).019]
सर्वतः पातु केशवः [028.*(18).019]
अङ्गुष्ठाग्रे तु गोविन्दं [028.*(18).020]
तर्जन्यांस्तु महीधरम् [028.*(18).020]
मध्यमायां हृषीकेशम् [028.*(18).021]
अनामिक्यां त्रिविक्रमम् [028.*(18).021]
कणिष्ठायां न्यसेद्विष्णुं [028.*(18).022]
करमध्ये तु माधवम् [028.*(18).022]
एवं न्यासं पुरा कृत्वा [028.*(18).023]
पश्चादङ्गेषु विन्यसेत् [028.*(18).023]
शिखायां केशवं न्यस्य [028.*(18).024]
मूर्ध्नि नारायणं न्यसेत् [028.*(18).024]
चक्षुर्मध्ये न्यसेद्विष्णुं [028.*(18).025]
कर्णयोर्मधुसूदनम् [028.*(18).025]
त्रिविक्रमं कपालस्थं [028.*(18).026]
वामनं कर्णमूलयोः [028.*(18).026]
दामोदरं दन्तवक्रौ [028.*(18).027]
वाराहं चिबुके न्यसेत् [028.*(18).027]
उत्तरोष्ठे हृषीकेशं [028.*(18).028]
पद्मनाभं तथाधरे [028.*(18).028]
जिह्वायां वासुदेवं च [028.*(18).029]
ताल्वके गरुडध्वजम् [028.*(18).029]
वैकुण्ठं कन्ठमध्यस्थम् [028.*(18).030]
अनन्तं नासिकोपरि [028.*(18).030]
दक्षिणे तु भुजे विप्र [028.*(18).031]
विन्यसेत्पुरुषोत्तमम् [028.*(18).031]
वामभुजे महाभागं [028.*(18).032]
राघवं हृदि विन्यसेत् [028.*(18).032]
पीताम्बरं सर्वतनौ [028.*(18).033]
हरिं नाभौ तु विन्यसेत् [028.*(18).033]
करे तु दक्षिणे विप्र [028.*(18).034]
ततः संकर्षणं न्यसेत् [028.*(18).034]
वामे विप्र हरिं विद्यात् [028.*(18).035]
कटिमध्ये ऽपराजितम् [028.*(18).035]
पृष्ठे क्षितिधरं विद्याद् [028.*(18).036]
अच्युतं स्कन्धयोरपि [028.*(18).036]
माधवं बाहु कुक्षौ तु [028.*(18).037]
दक्षिणे योगशायिनम् [028.*(18).037]
स्वयंभुवं मेढ्रमध्ये [028.*(18).038]
ऊरुभ्यां तु गदाधरम् [028.*(18).038]
चक्रिणं जानुमध्ये तु [028.*(18).039]
जङ्घयोरच्युतं न्यसेत् [028.*(18).039]
गुल्पयोर्नरसिंहं च [028.*(18).040]
पादपृष्ठे ऽमितौजसम् [028.*(18).040]
श्रीधरं चाङ्गुलीषु स्यात् [028.*(18).041]
पद्माक्षं सर्वसन्धिषु [028.*(18).041]
रोमकूपे गुडाकेशं [028.*(18).042]
कृष्णं रक्तास्थिमज्जासु [028.*(18).042]
मनोबुद्ध्योरहंकारेष्व् [028.*(18).043]
एवं चित्ते जनार्दनम् [028.*(18).043]
नखेषु माधवं चैव [028.*(18).044]
न्यसेत्पादतले ऽच्युतम् [028.*(18).044]
एवं न्यासविधिं कृत्वा [028.*(18).045]
साक्षान्नारायणो भवेत् [028.*(18).045]
तनुर्विष्णुमयी तस्य [028.*(18).046]
यावत्किंचिन्न भाषते [028.*(18).046]
एवं न्यासं ततः कृत्वा [028.*(18).047]
यत्कार्यं शृणु तद्द्विज [028.*(18).047]
पादमूले तु देवस्य [028.*(18).048]
शङ्खं तत्रैव विन्यसेत् [028.*(18).048]
वनमालां तु विन्यस्य [028.*(18).049]
सर्वदेवाभिपूजिताम् [028.*(18).049]
गदां वक्षःस्थले चैव [028.*(18).050]
चक्रं चैव तु पृष्ठतः [028.*(18).050]
श्रीवत्साङ्कं शिरो न्यस्य [028.*(18).051]
पञ्चाङ्गकवचं न्यसेत् [028.*(18).051]
आपादामस्तके चैव [028.*(18).052]
विन्यसेत्पुरुषोत्तमम् [028.*(18).052]
ओं अपामार्जनको न्यासः [028.*(18).053]
सर्वव्याधिविनाशनः [028.*(18).053]
विष्णुरूर्ध्वमधो रक्षेद् [028.*(18).054]
वैकुण्ठो विदिशो दिशः [028.*(18).054]
पातु मां सर्वतो रामो [028.*(18).055]
धन्वी चक्री च केशवः [028.*(18).055]
पूजाकाले तु देवस्य [028.*(18).059]
जपकाले तथैव च [028.*(18).059]
होमारम्भेषु सर्वेषु [028.*(18).060]

त्रिसंध्यासु च नित्यशः [028.*(18).060]
आयुरारोग्यमैश्वर्यं [028.*(18).061]
ज्ञानं वित्तं फलं भवेत् [028.*(18).061]
यद्यत्सुखकरं प्रोक्तं [028.*(18).062]
तत्सर्वं प्राप्नुयान्नरः [028.*(18).062]
अभयं सर्वभूतेभ्यो [028.*(18).063]
विष्णुलोकं च गच्छति [028.*(18).063]
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि [028.*(18).077]
सर्वपापप्रणाशनम् [028.*(18).077]
वाराहरूपिणं देवं [028.*(18).078]
संस्मरत्यपराजितम् [028.*(18).078]
बृहत्तनुं बृहद्गात्रं [028.*(18).079]
बृहद्दंष्ट्रसुशोभनम् [028.*(18).079]
समस्तवेदवेदाङ्गं [028.*(18).080]
युक्ताङ्गं भूषणैर्युतम् [028.*(18).080]
उद्धृत्य भूमिं पातालाद् [028.*(18).081]
हस्ताभ्यामुपगृह्णताम् [028.*(18).081]
आलिङ्ग्य भूमिं शिरसि [028.*(18).082]
मूर्ध्नि जिघ्रन्तमास्थितम् [028.*(18).082]
रत्नवैडूर्यमुख्याभिर् [028.*(18).083]
मुक्ताभिरुपशोभितम् [028.*(18).083]
पीताम्बरधरं देवं [028.*(18).084]
शुक्लमाल्यानुलेपनम् [028.*(18).084]
त्रयस्त्रिंशकोटिदेवैः [028.*(18).085]
स्तूयमानं मुदानिशम् [028.*(18).085]
नृत्यद्भिरप्सरोभिश्च [028.*(18).086]
गीयमानं च किन्नरैः [028.*(18).086]
इत्थं ध्यात्वा महात्मानं [028.*(18).087]
जपेन्नित्यं महात्मनः [028.*(18).087]
सुवर्णमण्डपान्तस्थं [028.*(18).088]
पद्मं ध्यायेत्सकेसरम् [028.*(18).088]
सकर्णिकदलैरिष्टैर् [028.*(18).089]
अष्टभिः परिशोभितम् [028.*(18).089]
करं करहितं देवं [028.*(18).090]
पूर्णचन्द्राप्तसुप्रभम् [028.*(18).090]
तडित्समशटाशोभि [028.*(18).091]
कण्ठनालोपशोभितम् [028.*(18).091]
श्रीवत्साङ्कितवक्षःस्थं [028.*(18).092]
तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिलोचनम् [028.*(18).092]
जवाकुसुमसंकाशं [028.*(18).093]
रक्तहस्ततलान्वितम् [028.*(18).093]
पीतवस्त्रपरीधानं [028.*(18).094]
शुक्लयज्ञोत्तरीयकम् [028.*(18).094]
करं करहितं देवं [028.*(18).095]
पूर्णचन्द्राप्तसुप्रभम् [028.*(18).095]
कटिसूत्रेण हैमेन [028.*(18).096]
नूपुरेण विराजितम् [028.*(18).096]
वनमालादिशोभाढ्यं [028.*(18).097]
मुक्ताहारोपशोभितम् [028.*(18).097]
अनेकसूर्यसंकाशं [028.*(18).098]
मुकुटाटोपमस्तकम् [028.*(18).098]
शङ्खचक्रगृहीताभ्याम् [028.*(18).099]
उद्बाहुभ्यां विराजितम् [028.*(18).099]
पङ्कजाभं चतुर्हस्तं [028.*(18).100]
तत्पत्राभसुलोचनम् [028.*(18).100]
प्रातः सूर्यसमप्रख्य- [028.*(18).101]
कुण्डलाभ्यां विराजितम् [028.*(18).101]
केयूरकान्तिसस्पर्द्धि- [028.*(18).102]
मुक्तिकारत्नशोभितम् [028.*(18).102]
जानूपरिन्यस्तहस्तं [028.*(18).103]
वररत्ननखाङ्कुरम् [028.*(18).103]
जङ्घाभरणसस्पर्द्धि- [028.*(18).104]
विस्फुर्यत्कङ्कनत्विषम् [028.*(18).104]
मुक्ताफलाब्दसमहद्- [028.*(18).105]
दन्तपङ्क्तिविराजितम् [028.*(18).105]
चम्पकामुकुलप्रख्य- [028.*(18).106]
सुनासामुखपङ्कजम् [028.*(18).106]
अतिरक्तौष्ठवदनं [028.*(18).107]
व्यात्तास्यमतिभीषणम् [028.*(18).107]
वामाङ्कस्थं शिवभक्त- [028.*(18).108]
शान्तिदां सुनितम्बिनीम् [028.*(18).108]
अर्हणीयां सुजातोरुं [028.*(18).109]
सुनासां शुभलक्षणाम् [028.*(18).109]
सुभ्रूं सुकेशीं सुश्रोणीं [028.*(18).110]
सुशुभां सुद्विजाननाम् [028.*(18).110]
सुप्रतिष्ठां सुवदनां [028.*(18).111]
चतुर्हस्तां विचिन्तयेत् [028.*(18).111]
दुकूले चैव चार्वङ्गीं [028.*(18).112]
हारिणीं सर्वकामदाम् [028.*(18).112]
तप्तकञ्चनसंकाशां [028.*(18).113]
सर्वाभरणभूषिताम् [028.*(18).113]
सुवर्णकलशप्रख्य- [028.*(18).114]
पीनोन्नतपयोधराम् [028.*(18).114]
गृहीतपद्मयुगलं [028.*(18).115]

उद्बाहुभ्यां तथान्ययोः [028.*(18).115]
गृहीतमातुलङ्गाख्यं [028.*(18).116]
जाम्बुनदकरान्तथा [028.*(18).116]
एवं देवीं नृसिंहस्य [028.*(18).117]
वामाङ्कोपरि संस्मरेत् [028.*(18).117]
अतिविमलसुगात्रं रौप्यपात्रस्थमन्नं [028.*(18).118]
सुललितदधिखण्डं पाणिना दक्षिणेन [028.*(18).119]
कलशममृतपूर्णं सव्यहस्ते दधानं [028.*(18).120]
तदतिसकलदुःखं वामनं भावयेद्यः [028.*(18).121]
अन्या भास्करसप्रभाभिरखिलैर्भाभिर्दिशो भासयन्
[028.*(18).122]
भीमाक्षस्फुरदङ्कहासविलसाद्दंष्ट्राग्रदीप्ताननः
[028.*(18).123]
दोर्भिश्चक्रधरौ गदाब्जमुकुलौ त्रासांश्च पाशाङ्कुशौ
[028.*(18).124]
बिभ्रत्पिङ्गशिरो ऽरुहोद्धतसटश्चक्रविधानो हरिः
[028.*(18).125]
मनोभूतानीन्द्रियाणि [028.*(18).139]
गुणाः सत्त्वं रजस्तमः [028.*(18).139]
त्रैलोक्यस्येश्वरं सर्वम् [028.*(18).140]
अहंकारे प्रतिष्ठिताः [028.*(18).140]
ओं नमः परमार्थाय [028.015]
पुरुषाय महात्मने [028.015]
अरूपबहुरूपाय [028.015]
व्यापिने परमात्मने [028.015]
नमस्ते देवदेवाय [028.*(19)]
सुरशूर नमो ऽस्तु ते [028.*(19)]
लोकाध्यक्ष जगत्पूज्य [028.*(19)]
परमात्मन्नमस्ते [028.*(19)]
निष्कल्मषाय शुद्धाय [028.015]
सर्वपापहराय च [028.015]
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि [028.016,*(20),*(21)]
यत्तत्सिध्यतु मे वचः [028.016,*(20),*(21)]
वराहनरसिंहाय [028.017]
वामनाय महात्मने [028.017]
गोविन्दपद्मनाभाय [028.*(20).001]
वामदेवाय भूपते [028.*(20).001]
नारायणाय देवाय [028.*(20).003]
अनन्ताय महात्मने [028.*(20).003]
गरुडध्वजाय कृष्णाय [028.*(20).005]
पीताम्बरधराय च [028.*(20).005]
योगीश्वराय सिद्धाय [028.*(20).007]
गुह्याय परमात्मने [028.*(20).007]
जनार्दनाय कृष्णाय [028.*(20).009]
उपेन्द्रश्रीधराय च [028.*(20).009]
भक्तप्रियाय विधये [028.*(20).011]
विष्वक्सेनाय शार्ङ्गिने [028.*(20).011]
हिरण्यगर्भपतये [028.*(20).013]
हिरण्यकशिपुच्छिदे [028.*(20).013]
चक्रहस्ताय शूलाय [028.*(20).015]
तर्जन्यपत्राय धीमते [028.*(20).015]
आदित्याय उपेन्द्राय [028.*(20).017]
भूतानां जीवनाय च [028.*(20).017]
वासुदेवाय वन्द्याय [028.*(20).019]
वरदाय महात्मने [028.*(20).019]
विषूवृच्छ्रवसे तस्मै [028.*(20).021]
क्षीराम्बुनिछिशायिने [028.*(20).021]
अधोक्षजाय भद्राय [028.*(20).023]
श्रीधरायादिमूर्तये [028.*(20).023]
विश्वेशद्वारमूर्तिश्च [028.*(20).025]
मृत्युरायोहितो ऽस्ति सः [028.*(20).025]
नानारागांश्च दक्षांश्च [028.*(20).027]
विकटाय महाभीती [028.*(20).027]
जातुपतिं व्यग्रहस्तं [028.*(20).028]
वररत्ननखाकरम् [028.*(20).028]
नारायणाय विश्वाय [028.*(20).032]
विश्वेशायाम्बराय च [028.*(20).032]
दामोदराय देवाय [028.*(20).034]
अनन्ताय महात्मने [028.*(20).034]
त्रिविक्रमाय रामाय [028.017]
वैकुण्ठाय नराय च [028.017]
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि [028.018]
यत्तत्सिध्यतु मे वचः [028.018]
वराहनरसिंहेश [028.019]
वामनेश त्रिविक्रम [028.019]
हयग्रीवेश सर्वेश [028.019]
हृषीकेश हराशुभम् [028.019]
अपराजितचक्राद्यैश् [028.020]
चतुर्भिः परमायुधैः [028.020]
अखण्डितप्रभावैस्त्वं [028.020]
सर्वदुष्टहरो भव [028.020]
हरामुकस्य दुरितं [028.021]
दुष्कृतं दुरुपोषितम् [028.021]
मृत्युबन्धार्तिभयदं [028.021]

दुरिष्टस्य च यत्फलम् [028.021]
परापध्यानसहितं [028.022]
प्रयुक्तं चाभिचारुक [028.022]
गरस्पर्शमहायोग- [028.022]
प्रयोगजरयाजर [028.022]
ओं नमो वासुदेवाय [028.023]
नमः क्षुणाय शार्ङ्गिणे [028.023]
नमः पुष्करनेत्राय [028.023]
केशवायादिचक्रिणे [028.023]
नमः कमलकिञ्जल्क- [028.024]
पीतनिर्मलवाससे [028.024]
महाहवरिपुस्कन्ध- [028.024]
घृष्टचक्राय चक्रिणे [028.024]
दंष्ट्रोद्धृतक्षितिधृते [028.025]
त्रयीमूर्तिमते नमः [028.025]
महायज्ञवराहाय [028.025]
शेषभोगोरुशायिने [028.025]
तप्तहाटककेशान्त [028.026]
ज्वलत्पावकलोचन [028.026]
वज्राधिकनखस्पर्श [028.026]
दिव्यसिंह नमो ऽस्तु ते [028.026]
कपिल हेमाश्वशीर्ष [028.*(22)]
अतिरिक्तविलोचन [028.*(22)]
विद्युत्स्फुरितदंष्ट्राग्र [028.*(22)]
दिव्यसिंह नमो ऽस्तु ते [028.*(22)]
काश्यपायातिह्रस्वाय [028.027]
ऋग्यजुःसामभूषित [028.027]
तुभ्यं वामनरूपाय [028.027]
सृजते गां नमो नमः [028.027]
वराहाशेषदुष्टानि [028.028]
सर्वपापहराणि वै [028.028]
मर्द मर्द महादंष्ट्र [028.028]
मर्द मर्द च तत्फलम् [028.028]
नरसिंह करालास्य [028.029]
दन्तप्रान्तानलोज्ज्वल [028.029]
भञ्ज भञ्ज निनादेन [028.029]
दुष्टान्यस्यार्तिनाशन [028.029]
ऋग्यजुःसामगर्भाभिर् [028.030]
वाग्भिर्वामनरूपधृक् [028.030]
प्रशमं सर्वदुःखानि [028.030]
नयत्वस्य जनार्दनः [028.030]
एकाहिकं द्व्याहिकं च [028.031]
तथा त्रिदिवसं ज्वरम् [028.031]
चातुर्थकं तथात्युग्रं [028.031]
तथैव सततज्वरम् [028.031]
दोषोत्थं संनिपातोत्थं [028.032]
तथैवागन्तुकं ज्वरम् [028.032]
शमं नयाशु गोविन्द [028.032]
छित्त्वा च्छित्त्वा तु वेदनाम् [028.032]
नेत्रदुःखं शिरोदुःखं [028.033]
दुःखं चोदरसंभवम् [028.033]
अनुच्छ्वासमतिश्वासं [028.033]
परितापं सवेपथुं [028.033]
गुदघ्राणांह्रिरोगांश्च [028.034]
कुष्ठरोगं तथा क्षयम् [028.034]
कामलादींस्तथा रोगान् [028.034]
प्रमेहांश्चातिदारुणान् [028.034]
भगंदरातिसारांश्च [028.035]
मुखरोगं सवल्गुलिम् [028.035]
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रांश्च [028.035]
रोगानन्यांश्च दारुणान् [028.035]
ये वातप्रभवा रोगा [028.036]
ये च पित्तसमुद्भवाः [028.036]
कफोद्भवाश्च ये केचिद् [028.036]
ये चान्ये सांनिपातिकाः [028.036]
आगन्तवश्च ये रोगा [028.037]
लूताविस्फोटकादयः [028.037]
ते सर्वे प्रशमं यान्तु [028.037]
वासुदेवापमार्जिताः [028.037]
विलयं यान्तु ते सर्वे [028.038]
विष्णोरुच्चारणेन च [028.038]
क्षयं गच्छन्तु चाशेषास् [028.038]
ते चक्राभिहता हरेः [028.038]
अच्युतानन्तगोविन्द- [028.039]
नामोच्चारणभीषिताः [028.039]
नश्यन्तु सकला रोगाः [028.039]
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् [028.039]
स्थावरं जङ्गमं वापि [028.040]
कृत्रिमं वापि यद्विषम् [028.040]
दन्तोद्भवं नखभवम् [028.040]
आकाशप्रभवं विषम् [028.040]
लूतादिप्रभवं यच्च [028.041]
विषमत्यन्तदुःखदम् [028.041]
शमं नयतु तत्सर्वं [028.041]

कीर्तितो ऽस्य जनार्दनः [028.041]
ग्रहान्प्रेतग्रहांश्चैव [028.042]
तथा वै डाकिनीग्रहान् [028.042]
वेतालांश्च पिशाचांश्च [028.042]
गन्धर्वान्यक्षराक्षसान् [028.042]
शकुनीपूतनाद्यांश्च [028.043]
तथा वैनायकग्रहान् [028.043]
मुखमण्डिनिकां क्रूरां [028.043]
रेवतीं वृद्धरेवतीम् [028.043]
वृद्धिकाख्यान्ग्रहांश्चोग्रांस् [028.044]
तथा मातृग्रहानपि [028.044]
बालस्य विष्णोः चरितं [028.044]
हन्तु बालग्रहानिमान् [028.044]
वृद्धानां ये ग्रहाः केचिद् [028.045]
ये च बालग्रहाः क्वचित् [028.045]
नरसिंहस्य ते दृष्ट्या [028.045]
दग्धा ये चापि यौवने [028.045]
सटाकरालवदनो [028.046]
नरसिंहो महारवः [028.046]
ग्रहानशेषान्निःशेषान् [028.046]
करोतु जगतो हितम् [028.046]
नरसिंह महासिंह [028.047]
ज्वालामालोज्ज्वलानन [028.047]
ग्रहानशेषान्सर्वेश [028.047]
खाद खादाग्निलोचन [028.047]
ये रोगा ये महोत्पाता [028.048]
यद्विषं ये महाग्रहाः [028.048]
यानि च क्रूरभूतानि [028.048]
ग्रहपीडाश्च दारुणाः [028.048]
शस्त्रक्षतेषु ये दोषा [028.048]
ज्वालागर्दभकादयः [028.048]
यानि चार्याणि भूतानि [028.*(23)]
प्राणिपीडाकराणि वै [028.*(23)]
तानि सर्वाणि सर्वात्मन् [028.049]
परमात्मञ्जनार्दन [028.049]
किंचिद्रूपं समास्थाय [028.049]
वासुदेव विनाशय [028.049]
क्षिप्त्वा सुदर्शनं चक्रं [028.050]
ज्वालामालाविभीषणम् [028.050]
सर्वदुष्टोपशमनं [028.050]
कुरु देववराच्युत [028.050]
सुदर्शन महाचक्र [028.*(24).001]
गोविन्दस्य करायुध [028.*(24).001]
ज्वलत्पावकसंकाश [028.*(24).002]
सूर्यकोटिसमप्रभ [028.*(24).002]
त्रैलोक्यरक्षकर्तृ त्वं [028.*(24).003]
त्वं दुष्टदानवदारण [028.*(24).003]
तीक्ष्णधार महावेग [028.*(24).004]
छिन्धि च्छिन्धि महाज्वरम् [028.*(24).004]
छिन्धि च्छिन्धि महाव्याधिं [028.*(24).005]
छिन्धि च्छिन्धि महाग्रहान् [028.*(24).005]
छिन्धि वातं च धूतं च [028.*(24).006]
छिन्धि घोरं महाविषम् [028.*(24).006]
रुजदाघं च शूलं च [028.*(24).007]
निमिषज्वालगर्दभम् [028.*(24).007]
सुदर्शन महाज्वाल [028.051]
छिन्धि च्छिन्धि ममारयः [028.051]
सर्वदुष्टानि रक्षांसि [028.051]
क्षपयातिविभीषण [028.051]
हां हां हूं हूं फट्कारेण [028.*(25).001]
ठद्वयेन हतद्विषः [028.*(25).001]
सुदर्शनस्य मन्त्रेण [028.*(25).002]
ग्रहा यान्ति दिशो दिशः [028.*(25).002]
त्रैलोक्यस्याभयं कर्तुम् [028.*(25).009]
आज्ञापय जनार्दन [028.*(25).009]
सर्वदुष्टानि रक्षांसि [028.*(25).010]
क्षयं यान्ति विभीषया [028.*(25).010]
प्राच्यां प्रतीच्यां च दिशि [028.052]
दक्षिणोत्तरतस्तथा [028.052]
रक्षां करोतु सर्वात्मा [028.052]
नरसिंहः स्वगर्जितैः [028.052]
भूम्यन्तरिक्षे च तथा [028.053]
पृष्ठतः पार्श्वतो ऽग्रतः [028.053]
व्याघ्रसिंहवराहेषु [028.*(26)]
अग्निचोरभयेषु च [028.*(26)]
रक्षां करोतु भगवान् [028.053]
बहुरूपी जनार्दनः [028.053]
यथा विष्णुर्जगत्सर्वं [028.054]
सदेवासुरमानवम् [028.054]
तेन सत्येन दुष्टानि [028.054]
शममस्य व्रजन्तु वै [028.054]
यथा विष्णौ स्मृते सम्यक् [028.055]
संक्षयं याति पातकम् [028.055]
सत्येन तेन सकलं [028.055]

दुष्टमस्य प्रशाम्यतु [028.055]
परमात्मा यथा विष्णुर् [028.056]
वेदान्तेष्वभिधीयते [028.056]
तेन सत्येन सकलं [028.056]
दुष्टमस्य प्रशाम्यतु [028.056]
यथा यज्ञेष्वरो विष्णुर् [028.057]
वेदेष्वपि तु गीयते [028.057]
तेन सत्येन सकलं [028.057]
यन्मयोक्तं तथास्तु तत् [028.057]
यथा यज्ञेश्वरो विष्णुर् [028.*(27)]
यज्ञान्ते अपि गीयते [028.*(27)]
तेन सत्येन सकलं [028.*(27)]
यन्मयोक्तं तथास्तु तत् [028.*(27)]
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु [028.058]
प्रशाम्यत्वसुखं च यत् [028.058]
वासुदेवशरीरोत्थैः [028.058]
कुशैर्निर्माजितं मया [028.058]
अपामार्जति गोविन्दो [028.059]
नरो नारायणस्तथा [028.059]
तवास्तु सर्वदुःखानां [028.059]
प्रशमो वचनाद्धरेः [028.059]
इदं शास्त्रं पठेद्यस्तु [028.*(28)]
सप्ताहन्नियतः शुचिः [028.*(28)]
शान्तिं समस्तरोगास्ते [028.060]
ग्रहाः सर्वे विषानि च [028.060]
भूतानि च प्रयान्त्वीशे [028.060]
संस्मृते मधुसूदने [028.060]
एतत्समस्तरोगेषु [028.061]
भूतग्रहभयेषु च [028.061]
अपमार्जनकं शस्तं [028.061]
विष्णुनामाभिमन्त्रितम् [028.061]
एते कुशा विष्णुशरीरसंभवा [028.062]
जनार्दनो ऽहं स्वयं एव चागतः [028.062]
हतं मया दुष्टमशेषमस्य [028.062]
स्वस्थो भवत्येष वचो यथा हरेः [028.062]
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु [028.063]
दुष्टमस्य प्रशाम्यतु [028.063]
यदस्य दुरितं किंचित् [028.063]
तत्क्षिप्तं लवणार्णवे [028.063]
स्वास्थ्यमस्य सदैवास्तु [028.064]
हृषीकेशस्य कीर्तनात् [028.064]
यत एवागतं पापं [028.064]
तत्रैव प्रतिगच्छतु [028.064]
एतद्रोगादिपीडासु [028.065]
जन्तूनां हितमिच्छता [028.065]
विष्णुभक्तेन कर्तव्यम् [028.065]
अपमार्जनकं परम् [028.065]
अनेन सर्वदुष्टानि [028.066]
प्रशमं यान्त्यसंशयम् [028.066]
सर्वभूतहितार्थाय [028.066]
कुर्यात्तस्मात्सदैव हि [028.066]
सर्वापराधशमनम् [028.*(29).001]
अपामार्जनकं परम् [028.*(29).001]
एतत्स्तोत्रमिदं पुण्यं [028.*(29).002]
पठेदायुष्यवर्धनम् [028.*(29).002]
विनाशाय च रोगाणाम् [028.*(29).003]
अवमृत्युक्षयाय च [028.*(29).003]
व्याघ्रापस्मारकुष्ठादि [028.*(29).004]
पिशाचोरगराक्षसाः [028.*(29).004]
तस्य पार्श्वं न गच्छन्ति [028.*(29).005]
स्तोत्रमेतद्यथा पठेत् [028.*(29).005]
स्मरञ्जपन्निदं स्तोत्रं [028.*(29).006]
सर्वव्याधिविनाशनम् [028.*(29).006]
पठतां शृण्वतां नित्यं [028.*(29).007]
विष्णुलोकं स गच्छति [028.*(29).007]
सुरूपता मनुष्याणां [029.001]
स्त्रीणां च द्विजसत्तम [029.001]
कर्मणा जायते येन [029.001]
तन्ममाख्यातुमर्हसि [029.001]
सुरूपाणां सुगात्राणां [029.002]
सुवेषाणां तथा मुने [029.002]
न्यूनं तथाधिकं वापि [029.002]
किंचिदङ्गं प्रजायते [029.002]
समस्तैः शोभनैरङ्गैर् [029.003]
नराः केचित्तथा द्विज [029.003]
काणाः कुब्जाश्च जायन्ते [029.003]
त्रुटितश्रवणास्तथा [029.003]
नराणां योषितां चैव [029.004]
समस्ताङ्गसुरूपता [029.004]
कर्मणा येन भवति [029.004]
तत्सर्वं कथयामल [029.004]
लावण्यगतिवाक्यानि [029.005]
सति रूपे महामते [029.005]
प्रयान्ति चारुतां रूपं [029.005]

तेनोक्तः परमो गुणः [029.005]
वाक्यलावण्यसंस्कार- [029.006]
विलासललिता गतिः [029.006]
विडम्बना कुरूपाणां [029.006]
स्त्रीपुंसामभिजायते [029.006]
रूपकारणभूताय [029.007]
यतेत मतिमांस्ततः [029.007]
कर्मणा तन्ममाचक्ष्व [029.007]
कर्म यच्चारुरूपदम् [029.007]
सम्यक्पृष्टं त्वया हीदम् [029.008]
उपवासाश्रितं द्विज [029.008]
कथयामि यथा प्रोक्तं [029.008]
वसिष्ठेन महात्मना [029.008]
वसिष्ठमृषिमासीनं [029.009]
सप्तर्षिप्रवरं पतिम् [029.009]
पप्रच्छारुन्धती प्रश्नं [029.009]
यदेतद्भवता वयम् [029.009]
तस्याः स परिपृच्छन्त्या [029.010]
जगाद मुनिसत्तमः [029.010]
यत्तच्छृणुष्व धर्मज्ञ [029.010]
ममेह वदतो ऽखिलम् [029.010]
श्रूयतां मम यत्पृष्टस् [029.011]
त्वयाहं ब्रह्मवादिनि [029.011]
सुरूपता नृणां येन [029.011]
योषितां चोपजायते [029.011]
अनभ्यर्च्य यथान्यायम् [029.012]
अनाराध्य च केशवम् [029.012]
रूपादिका गुणाः केन [029.012]
प्राप्यन्ते ऽन्येन कर्मणा [029.012]
तस्मादाराधनीयो वै [029.013]
विष्णुरेव यशस्विनि [029.013]
परत्र प्राप्तुकामेन [029.013]
रूपसंपत्सुतादिकम् [029.013]
यस्तु वाञ्छति धर्मज्ञे [029.014]
रूपं सर्वाङ्गशोभनम् [029.014]
नक्षत्रपुरुषस्तेन [029.014]
संपूज्यः पुरुषोत्तमः [029.014]
नक्षत्राङ्गं यथाहारः [029.015]
समुपोष्यति यो हरिम् [029.015]
सुरूपैरखिलाङ्गैश्च [029.015]
रूपवानभिजायते [029.015]
योषिता च परं रूपम् [029.016]
इच्छन्त्या जगतः पतिः [029.016]
स एवाराधनीयो ऽत्र [029.016]
नक्षत्राङ्गो जनार्दनः [029.016]
नक्षत्ररूपी भगवान् [029.017]
पूज्यते पुरुषोत्तमः [029.017]
मुने येन विधानेन [029.017]
तन्ममाख्यातुमर्हसि [029.017]
चैत्रमासं समारभ्य [029.018]
विष्णोः पादादिपूजनम् [029.018]
यथा कुर्वीत रूपार्थी [029.018]
तन्निशामय तत्त्वतः [029.018]
नक्षत्रमेकमेकं वै [029.019]
स्नातः सम्यगुपोषितः [029.019]
नक्षत्रपुरुषस्याङ्गं [029.019]
पूजयेत्साध्वी चक्रिणः [029.019]
मूले पादौ तथा जङ्घे [029.020]
रोहिणीष्वर्चयेच्छुभे [029.020]
जानुनी चाश्विनीयोग [029.020]
आषाढे चोरुसंज्ञिते [029.020]
फाल्गुनीद्वितये गुह्यं [029.021]
कृत्तिकासु तथा कटिम् [029.021]
पार्श्वे भद्रपदायुग्मे [029.021]
द्वे कुक्षी रेवतीषु च [029.021]
अनुराध उरः पृष्ठं [029.022]
श्रविष्ठास्वभिपूजयेत् [029.022]
भुजयुग्मं विशाखासु [029.022]
हस्ते चैव करद्वयम् [029.022]
पुनर्वसावङ्गुलींश्च [029.023]
आश्लेषासु तथा नखान् [029.023]
ज्येष्ठायां पूजयेद्ग्रीवं [029.023]
श्रवणे श्रवणे तथा [029.023]
पुष्ये मुखं तथा स्वातौ [029.024]
दशनानभिपूजयेत् [029.024]
हन्वौ शतभिषायोगे [029.024]
मघायोगे च नासिकाम् [029.024]
मृगोत्तमाङ्गे नयने [029.025]
पूजयेद्भक्तितः शुभे [029.025]
चित्रायोगे ललाटं च [029.025]
भरण्यां च तथा शिरः [029.025]
संपूजनीया विद्वद्भिश् [029.025]
चाद्रासु च शिरोरुहाः [029.025]
नक्षत्रयोगेष्वेतेषु [029.026]

पूजितो जगतः पतिः [029.026]
नक्षत्रपुरुषाख्यो ऽयं [029.026]
यथावत्पुरुषोत्तमः [029.026]
पापापहारं कुरुते [029.027]
सम्यच्छ्रद्धावतां सताम् [029.027]
अङ्गोपाङ्गानि चैवास्य [029.027]
पापादीनि यशस्विनि [029.027]
सुरूपान्यभिजायन्ते [029.028]
सप्त जन्मान्तराणि वै [029.028]
सर्वाणि चैव भद्राणि [029.028]
शरीरारोग्यमुत्तमम् [029.028]
संततिं मनसः प्रीतिं [029.029]
रूपं चातीवशोभनम् [029.029]
वाङ्माधूर्यं तथा कान्तिं [029.029]
यच्चान्यदभिवाञ्छितम् [029.029]
ददाति नक्षत्रपुमान् [029.030]
पूजितश्च जनार्दनः [029.030]
उपोष्य सम्यगेतेषु [029.030]
क्रमेण र्क्षेषु शोभने [029.030]
संपूजनीयो भगवान् [029.031]
नक्षत्राङ्गो जनार्दनः [029.031]
गन्धपुष्पादिसंयुक्तं [029.*(30)]
पूजयित्वा यदाविधि [029.*(30)]
जानुभ्यां धरणीं गत्वा [029.*(30)]
इदं चोदाहरेत्ततः [029.*(30)]
स्वरूपमारोग्यमतीव वर्चसं [029.*(30)]
सुसंततिं त्वस्थितभक्तिमच्युताम् [029.*(30)]
अपि सर्वमेतं प्रोतं [029.*(30)]
सूत्रे मणिगणा इव [029.*(30)]
एकपुरुष महापुरुष [029.*(30)]
ऋक्षपुरुष नमो ऽस्तु ते [029.*(30)]
प्रतिनक्षत्रयोगे च [029.031]
भोजनीया द्विजोत्तमाः [029.031]
नक्षत्रज्ञाय विप्राय [029.032]
दद्याद्दानं च शक्तितः [029.032]
पारिते च पुनर्दद्यात् [029.032]
स्त्रीपूंसां चारुहासिनि [029.032]
छत्त्रोपानद्युगं चैव [029.033]
सप्तधान्यं सकाञ्चनम् [029.033]
घृतपात्रं च धर्मज्ञे [029.033]
यच्चान्यदतिवल्लभम् [029.033]
स्त्री वा साध्वी सदा विष्णोर् [029.034]
आराधनपरायणा [029.034]
अनेनैव विधानेन [029.034]
संपूज्यैतदवाप्नुयात् [029.034]
सर्वकामानवाप्नोति [030.001]
समाराध्य जनार्दनम् [030.001]
प्रकारैर्बहुभिर्ब्रह्मन् [030.001]
यान्यानिच्छति चेतसा [030.001]
नृणां स्त्रीणां च विप्रर्षे [030.002]
नान्यच्छोकस्य कारणम् [030.002]
अपत्यादधिकं किंचिद् [030.002]
विद्यते ह्यत्र जन्मनि [030.002]
अपुत्रता महद्दुःखम् [030.003]
अतिदुःखं कुपुत्रता [030.003]
अपुत्रः सर्वदुःखानां [030.003]
हेतुभूतो मतो मम [030.003]
धन्यास्ते ये सुतं प्राप्य [030.004]
सर्वदुःखविवर्जितम् [030.004]
शस्तं प्रशान्तं बलिनं [030.004]
परां निर्वृतिमागताः [030.004]
स्वकर्मनिरतं नित्यं [030.005]
देवद्विजपरायणम् [030.005]
शास्त्रज्ञं धर्मतत्त्वज्ञं [030.005]
दीनानाथजनाश्रयम् [030.005]
विनिर्जितारिं सर्वस्य [030.006]
मनोहृदयनन्दनम् [030.006]
देवानुकूलतायुक्तं [030.006]
युक्तं सम्यग्गुणेन च [030.006]
मित्रस्वजनसम्मान- [030.007]
लब्धनिर्वाणमुत्तमम् [030.007]
यः प्राप्नोति सुतं तस्मान् [030.007]
नान्यो धन्यतरो भुवि [030.007]
सो ऽहमिच्छामि तच्छ्रोतुं [030.008]
त्वत्तः कर्म महामुने [030.008]
येनेदृग्लक्षणः पुत्रः [030.008]
प्राप्यते भुवि मानवैः [030.008]
एवमेतन्महाभाग [030.009]
पित्रोः पुत्रसमुद्भवम् [030.009]
दुःखं प्रयात्युपशमं [030.009]
तेन येनेह केनचित् [030.009]
अत्रापि श्रूयतां वृत्तं [030.010]
यत्पूर्वमभवन्मुने [030.010]
उत्पत्तौ कार्तवीर्यस्य [030.010]

हैहयस्य महात्मनः [030.010]
कृतवीर्यो महीपालो [030.011]
हैहयानामभूत्पुरा [030.011]
तस्य शीलधना नाम [030.011]
बभूव वरवर्णिनी [030.011]
पत्नी सहस्रप्रवरा [030.011]
महिषी शीलमण्डना [030.011]
सा त्वपुत्रा महाभागा [030.012]
मैत्रेयीं पर्यपृच्छत [030.012]
गुणवत्पुत्रलाभाय [030.012]
कृतासनपरिग्रहाम् [030.012]
तया च पृष्टा वै सम्यग् [030.013]
मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी [030.013]
कथयामास परमं [030.013]
नाम्नानन्तव्रतं व्रतम् [030.013]
सर्वकामफलावाप्ति- [030.014]
कारकं पापनाशनम् [030.014]
तस्याः सा पुत्रलाभाय [030.014]
राजपुत्रास्तपस्विनी [030.014]
यो ऽयमिच्छेन्नरः कामं [030.015]
नारी वा वरवर्णिनि [030.015]
स तं समाराध्य विभुं [030.015]
समाप्नोति जनार्दनम् [030.015]
मार्गशीर्षे मृगशिरो [030.016]
भीरु यस्मिन्दिने भवेत् [030.016]
तस्मिन्संप्राश्य गोमूत्रं [030.016]
स्नातो नियतमानसः [030.016]
पुष्पैर्धूपैस्तथा गन्धैर् [030.017]
उपहारैः स्वशक्तितः [030.017]
वामपादमनन्तस्य [030.017]
पूजयेद्वरवर्णिनि [030.017]
अनन्तः सर्वकामानाम् [030.018]
अनन्तं भगवान्फलम् [030.018]
ददात्वनन्तं च पुनस् [030.018]
तदेवास्त्वन्यजन्मनि [030.018]
अनन्तपुण्योपचयं [030.019]
करोत्येतन्महाव्रतम् [030.019]
यथाभिलषितावाप्तिं [030.019]
कुर्वन्मा क्षयमेतु च [030.019]
इत्युच्चार्याभिपूज्यैनं [030.020]
यथावद्विधिना नरः [030.020]
समाहितमना भूत्वा [030.020]
प्रणिपातपुरःसरम् [030.020]
विप्राय दक्षिणां दद्याद् [030.021]
अनन्तः प्रीयतामिति [030.021]
समुच्चार्य ततो नक्तं [030.021]
भुञ्जीयात्तैलवर्जितम् [030.021]
ततश्च पौषे पुष्यर्क्षे [030.022]
तथैव भगवत्कटिम् [030.022]
वामामभ्यर्चयेत्कृत्वा [030.022]
गोमूत्रप्राशनं बुधः [030.022]
अनन्तः सर्वकामानाम् [030.023]
इति चोच्चारयेद्बुधः [030.023]
भुञ्जीत च तथा विप्रं [030.023]
वाचयित्वा यथाविधि [030.023]
माघे मघासु तद्वच्च [030.024]
बाहुं देवस्य पूजयेत् [030.024]
स्कन्धं च फल्गुनीयोगे [030.024]
फाल्गुने मासि भामिनि [030.024]
चतुर्ष्वेतेषु गोमूत्र- [030.025]
प्राशनं नृपनन्दिनि [030.025]
ब्राह्मणाय तथा दद्यात् [030.025,*(31)]
तिलान्कनकमेव च [030.025,*(31)]
देवस्य दक्षिणस्कन्धं [030.026]
चैत्रे चित्रासु पूजयेत् [030.026]
तथैव प्राशनं चात्र [030.026]
पञ्चगव्यमुदाहृतम् [030.026]
विप्रे वाचनके दद्याद् [030.027]
यावन्मासचतुष्टयम् [030.027]
वैशाखे च विशाखासु [030.027]
बाहुं संपूज्य दक्षिणम् [030.027]
तथैवोक्तयवान्दद्यात् [030.028]
तद्वन्नक्तं भुजिक्रिया [030.028]
कटिपूजां च ज्येष्ठासु [030.028]
ज्येष्ठमूले शुभव्रते [030.028]
आषाढासु तथाषाढे [030.029]
कुर्यात्पादार्चनं शुभे [030.029]
पदद्वयं च श्रवणे [030.029]
श्रावणे सुभ्रु पूजयेत् [030.029]
घृतं विप्राय दातव्यं [030.030]
प्राशनीयं तथा दधि [030.030]
कार्त्तिकान्तेषु मासेषु [030.030]
प्राशनं दानमेव च [030.030]
एतदेव समाख्यातं [030.030,*(32)]

देवं तद्वच्च पूजयेत् [030.030,*(32)]
गुह्यं प्रोष्ठपदायोगे [030.031]
मासि भाद्रपदे ऽर्चयेत् [030.031]
तद्वदाश्वयुजे पूज्यं [030.031]
हृदयं चाश्विनीषु वै [030.031]
कुर्यात्समाहितमनाः [030.032]
स्नानप्राशनशौचवान् [030.032]
अनन्तशिरसः पूजां [030.032]
कार्त्तिके कृत्तिकासु च [030.032]
यस्मिन्यस्मिन्दिने पूजा [030.033]
तत्र तत्र तदा दिने [030.033]
नामानन्तस्य जप्तव्यं [030.033]
क्षुतप्रस्खलितादिषु [030.033]
घृतेनानन्तमुद्दिश्य [030.034]
पूर्वमासचतुष्टयम् [030.034]
कुर्वीत होमं चैत्रादौ [030.034]
शालिना कुलनन्दिनि [030.034]
क्षीरेण श्रावणादौ तु [030.035]
होमं मासचतुष्टयम् [030.035]
शस्तं तु सर्वमासेषु [030.035]
हविष्यान्नं च भोजनम् [030.035]
एवं द्वादशभिर्मासैः [030.036]
पारणं त्रितयं शुभे [030.036]
पारिते समवाप्नोति [030.036]
सर्वानेव मनोरथान् [030.036]
पुत्रार्थिभिर्वित्तकामैर् [030.037]
भृत्यदारानभीप्सुभिः [030.037]
प्रार्थयद्भिश्च कर्तव्यम् [030.037]
आरोग्यबलसंपदम् [030.037]
एतद्व्रतं महाभागे [030.038]
पुण्यं स्वस्त्ययनप्रदम् [030.038]
अनन्तव्रतसंज्ञं वै [030.038]
सर्वपापप्रणाशनम् [030.038]
तत्कुरुष्वैव देवि त्वं [030.039]
व्रतं शीलधने वरम् [030.039]
विशिष्टं सर्वलोकस्य [030.039]
यदि पुत्रमभीप्ससि [030.039]
इति शीलधना श्रुत्वा [030.040]
मैत्रेयीवचनं शुभम् [030.040]
चचारैतद्व्रतवरं [030.040]
सुसमाहितमानसा [030.040]
पुत्रार्थिन्यास्ततस्तस्या [030.041]
व्रतेनानेन सुव्रत [030.041]
विष्णुस्तुतोष तुष्टे च [030.041]
विष्णौ सा सुषुवे सुतम् [030.041]
तस्य वै जातमात्रस्य [030.042]
प्रववावनिलः शिवः [030.042]
नीरजस्कमभूद्व्योम [030.042]
मुदं प्रापाखिलं जगत् [030.042]
देवदुन्दुभयो नेदुः [030.043]
पुष्पवृष्टिः पपात च [030.043]
प्रजगुर्दिवि गन्धर्वा [030.043]
ननृतुश्चाप्सरोगणाः [030.043]
धर्मे मनः समस्तस्य [030.043]
दाल्भ्य लोकस्य चाभवत् [030.043]
तस्य नाम पिता चक्रे [030.044]
तनयस्यार्जुनेति वै [030.044]
कृतवीर्यसुतत्वाच्च [030.044]
कार्तवीर्यो बभूव सः [030.044]
तेनापि भगवान्विष्णुर् [030.045]
दत्तात्रेयस्वरूपवान् [030.045]
आराधितो ऽतिमहता [030.045]
तपसा दाल्भ्य भूभृता [030.045]
तस्य तुष्टो जगन्नाथश् [030.046]
चक्रवर्तित्वमुत्तमम् [030.046]
ददौ शौर्यबले चाति- [030.046]
सकलान्यायुधानि च [030.046]
स च वव्रे वरं देव [030.047]
वधस्त्वत्तो भवेदिति [030.047]
पुरानुस्मरणं ज्ञानं [030.047]
भीतानां चार्तिनाशनम् [030.047]
स्मरणादुपकारित्वं [030.047]
जगतो ऽस्य जगत्पते [030.047]
तमाह देवदेवेशः [030.048]
पुण्डरीकनिभेक्षणः [030.048]
सर्वमेतन्महाभाग [030.048]
तव भूप भविष्यति [030.048]
यश्च प्रभाते रात्रौ च [030.049]
त्वां नरः कीर्तयिष्यति [030.049]
नमो ऽस्तु कार्तवीर्यायेत्य् [030.049]
अभिधास्यति चैव यः [030.049]
तिलप्रस्थप्रदानस्य [030.049]
स नरः पुण्यमाप्स्यति [030.049]
अनष्टद्रव्यता चैव [030.050]

तव नामाभिकीर्तनैः [030.050]
भविष्यति महीपालेत्य् [030.050]
उक्त्वा तं प्रययौ हरिः [030.050]
स चापि वरमासाद्य [030.051]
प्रसन्नाद्गरुडध्वजात् [030.051]
पालयामास भूपालः [030.051]
सप्तद्वीपां वसुंधराम् [030.051]
तेनेष्टं विविधैर्यज्ञैः [030.052]
समाप्तवरदक्षिणैः [030.052]
जित्वारिवर्गमखिलं [030.052]
धर्मतः पालिताः प्रजाः [030.052]
अनन्तव्रतमाहात्म्याद् [030.053]
आसाद्य तनयं च तम् [030.053]
पित्रोः पुत्रोद्भवं दुःखं [030.053]
नासीत्स्वल्पमपि द्विज [030.053]
एवमेतत्समाख्यातम् [030.054]
अनन्ताख्यं व्रतं तव [030.054]
यच्चीर्त्वा राजपत्नी सा [030.054]
कार्तवीर्यमसूयत [030.054]
यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म [030.055]
कार्तवीर्यस्य मानवः [030.055]
स्त्री वा दुःखमपत्योत्थं [030.055]
सप्त जन्मानि नाश्नुते [030.055]
रूपसंपत्समाख्याता [031.001]
स्त्रीपुंसां जायते शुभा [031.001]
समुपोष्य जगन्नाथं [031.001]
नक्षत्रपुरुषं हरिम् [031.001]
वासोऽतिशोभनं चारु- [031.002]
वस्त्राद्याभरणोज्ज्वलम् [031.002]
गृहं सर्वगुणोपेतम् [031.002]
अशेषोपस्करान्वितम् [031.002]
कर्मणा येन विप्रर्षे [031.003]
तोषितो मधुसूदनः [031.003]
ददाति भगवान्कर्म [031.003]
तन्नो विस्तरतो वद [031.003]
यन्मां पृच्छसि दाल्भ्य त्वं [031.004]
गृहोपस्करभूषणम् [031.004]
नराणां जायते येन [031.004]
तत्सर्वं कथयामि ते [031.004]
नन्दा भद्रा जया रिक्ता [031.005]
पूर्णा च द्विजसत्तम [031.005]
तिथयो वै समाख्याताः [031.005]
प्रतिपत्क्रमसंज्ञया [031.005]
पञ्चमी दशमी चैव [031.006]
तथा पञ्चदशी तिथिः [031.006]
पूर्णा एताः समाख्याताष् [031.006]
तिथयो मुनिसत्तम [031.006]
मृदा धातुविकारैर्वा [031.007]
वर्णकैर्गोमयेन वा [031.007]
विष्णोरायतने तासु [031.007]
यः करोत्युपलेपनम् [031.007]
प्रवातावातगुणवद् [031.008]
वर्षास्वतिमनोरमम् [031.008]
अनुलिप्तं शुभाकारं [031.008]
सुगृहं लभते मुने [031.008]
पूर्णं धान्यहिरण्याद्यैर् [031.009]
मणिमुक्ताफलोज्ज्वलम् [031.009]
प्रत्यासन्नजलाभोगं [031.009]
गृहमाप्नोति शोभनम् [031.009]
साम्नतस्वजनानां यत् [031.010]
सर्वेषामुत्तमोत्तमम् [031.010]
तदाप्नोति गृहं ब्रह्मन्न् [031.010]
अनुलेपनकृन्नरः [031.010]
येनानुलिप्ते तिष्ठन्ति [031.011]
विष्ण्वायतनभूतले [031.011]
ब्राह्मणक्षत्रियविशः [031.011]
शूद्राः साध्व्यस्तथा स्त्रियः [031.011]
तस्य पूण्यफलं दाल्भ्य [031.011]
श्रूयतां यत्प्रजायते [031.011]
अप्सरोगणसंकीर्णं [031.012]
मुक्ताहारगणोज्ज्वलम् [031.012]
श्रेष्ठं सर्वविमानानां [031.012]
स्वर्गे धिष्ण्यमवाप्नुते [031.012]
यावत्यस्तिथयो लिप्तं [031.013]
दिव्याब्दांस्तावतो द्विज [031.013]
तस्मिन्विमाने स नरः [031.013]
स्त्री वा तिष्ठति सत्तम [031.013]
सुगन्धगन्धसद्वस्त्र- [031.014]
सर्वभूषणभूषितः [031.014]
गन्धर्वाप्सरसां संघैः [031.014]
पूज्यमानः स तिष्ठति [031.014]
लिप्तं च यावतो हस्तान् [031.015]
विष्णोरायतनं द्विज [031.015]
तावद्योजनविस्तीर्ण- [031.015]

स्वर्गस्थानाधिपो हि सः [031.015]
पूज्यमानः सुरगणैः [031.016]
शीतोष्णादिविवर्जितः [031.016]
मनोज्ञगात्रो विप्रेन्द्रस् [031.016]
तिष्ठत्यस्ताघसंहतिः [031.016]
च्युतस्तस्मादिहागम्य [031.017]
विशिष्टे जायते कुले [031.017]
ततो ऽस्य सद्गृहवरं [031.017]
मर्त्यलोके ऽभिजायते [031.017]
न तत्र तावद्दारिद्र्यं [031.018]
नोपसर्गा न वा कलिः [031.018]
न चापि मृतनिष्क्रान्तिर् [031.018]
यावज्जीवत्यसौ द्विज [031.018]
विष्णुः समस्तभूतानि [031.019]
ससर्जैतानि यानि वै [031.019]
तेषां मध्ये जगद्धातुर् [031.019]
अतीवेष्टा वसुंधरा [031.019]
कृते संमार्जने तस्यास् [031.020]
तथैवोपरिलेपने [031.020]
प्रयाति परमं तोषं [031.020]
वैष्णवीयं मही यतः [031.020]
ब्रह्मन्येन विधानेन [031.021]
देवागारोपलेपलम् [031.021]
कर्तव्यं पुरुषैः सम्यक् [031.021]
स्त्रीभिर्वा तदुदीरय [031.021]
रिक्तायास्तु तिथेर्मध्ये [031.022]
कुर्यात्संकल्पमात्मनः [031.022]
उपलेपनकृद्विप्रो [031.022]
विष्णोरायतने भुवि [031.022]
द्वितीये ऽह्नि ततो देवं [031.023]
प्रणम्य यतमानसः [031.023]
धरणीपितरं विष्णुम् [031.023]
इदं वाक्यमुदीरयेत् [031.023]
त्वं सर्वभूतप्रभवो जगत्पते [031.024]
त्वय्येतदीशेश जगत्प्रतिष्ठितम् [031.024]
त्वमेव भूतानि यतस्ततो ऽहं [031.024]
त्वाम्पूजयाम्यद्य महीस्वरूपम् [031.024]
त्वं मही जगतां नाथ [031.025]
सर्वनाथ नमो ऽस्तु ते [031.025]
शुश्रूषितः प्रसीदेश [031.025]
भुवो लेपनकर्मणा [031.025]
इत्युच्चार्य क्षितौ क्षिप्त्वा [031.026]
प्रथमं धारनीतले [031.026]
पुष्पाणि वा द्विजश्रेष्ठ [031.026]
यः करोत्यनुलेपनम् [031.026]
न तस्य जायते भङ्गो [031.026]
गार्हस्थ्यस्य कदाचन [031.026]
या च नारी करोत्येवं [031.027]
यथावदनुलेपनम् [031.027]
नाप्नोति सा च वैधव्यं [031.027]
गृहभङ्गं कदाचन [031.027]
कृत्वोपलेपनं भूयः [031.028]
प्रणिपत्य जनार्दनम् [031.028]
स्नातो विष्णुं समभ्यर्च्य [031.028]
इदं वाक्यमुदीरयेत् [031.028]
प्रसीद भूधरानन्त [031.029]
मया यदुपलेपनम् [031.029]
कृतं तेन समस्तं मे [031.029]
नाशमभ्येतु पातकम् [031.029]
एवं संपूज्य भुञ्जीयाद् [031.030]
अपराह्णे द्विजोत्तम [031.030]
स्वनुलिप्ते महाभागे [031.030]
भुक्त्वा लिम्पेच्च तत्पुनः [031.030]
पक्षे पक्षे त्रिरात्रं तु [031.031]
यः करोत्युपलेपनम् [031.031]
सर्वपापविनिर्मुक्तः [031.031]
स्वर्गं गच्छत्यसंशयम् [031.031]
तत्क्षयात्स्वर्गलोके तु [031.032]
जातो गृहवरं यथा [031.032]
समाप्नोति यथाख्यातं [031.032]
तत्सर्वं तव सत्तम [031.032]
सर्वाभरणसंपूर्णं [031.033]
सर्वोपस्करधान्यवत् [031.033]
गोमहिष्यादिसंभोगं [031.033]
गृहमाप्नोति मानवः [031.033]
तस्मादभीप्सता सम्यग् [031.034]
गार्हस्थ्यमविखण्डितम् [031.034]
विष्णोरायतने कार्यं [031.034]
सर्वदैवोपलेपनम् [031.034]
सप्तद्वीपवतीं कृत्स्नां [031.*(33)]
यथेन्द्रस्त्रिदिवं तथा [031.*(33)]
अल्पोपलेपनाद्यस्य [031.035]
मान्धाता सकलां महीम् [031.035]
अवाप विष्णवायतनं [031.035]

नोपलिम्पेत को हि तत् [031.035]
दीपं प्रयच्छति नरो [032.001]
विष्णोरायतने हि यः [032.001]
सदक्षिणस्य यज्ञस्य [032.001]
फलं प्राप्नोत्यसंशयम् [032.001]
कार्त्तिके तु विशेषेण [032.002]
कौमुदे मासि दीपकम् [032.002]
दत्त्वा यत्फलमाप्नोति [032.002]
दाल्भ्य तत्केन लभ्यते [032.002]
दाल्भ्यान्यदपि वक्ष्यामि [032.003]
पुरावृत्तमिदं शृणु [032.003]
विदर्भराजतनया [032.003]
ललिता यदुवाच ह [032.003]
विदर्भराट्चित्ररथो [032.004]
बभूवास्त्रविशारदः [032.004]
तस्य पुत्रशतं राज्ञो [032.004]
जज्ञे पञ्चदशोत्तरम् [032.004]
एकैव कन्या दाल्भ्यासील् [032.005]
ललिता नामनामतः [032.005]
सर्वलक्षणसंपूर्णा [032.005]
भ्रातृणां पितुरेव च [032.005]
समस्तभृत्यवर्गस्य [032.006]
मातृणां स्वजनस्य च [032.006]
तथैव पौरवर्गस्य [032.006]
यश्चान्यो ददृशे शुभाम् [032.006]
तस्य तस्यातिचार्वङ्गी [032.006]
बभूवेष्टा द्विजोत्तम [032.006]
तां ददौ काशिराजाय [032.007]
स पिता चारुवर्मने [032.007]
उपयेमे च तां सुभ्रूं [032.007]
चारुवर्मा महीपतिः [032.007]
शतान्यन्यानि भार्याणां [032.008]
त्रीण्यासंश्चारुवर्मणः [032.008]
तासां मध्ये ऽग्रमहिषी [032.008]
ललिता तस्य चाभवत् [032.008]
सा च नित्यं जगद्धातुर् [032.009]
देवदेवस्य चक्रिणः [032.009]
दीपवर्तिपरा तद्वत् [032.009]
तैलस्याहरणोद्यता [032.009]
विष्णोरायतने तस्याः [032.010]
सहस्रं द्विजसत्तम [032.010]
दीपानां वै प्रजज्वाल [032.010]
दिवारात्रमतन्द्रितम् [032.010]
तस्या द्युतिपराभूतास् [032.011]
तस्या लावण्यनिर्जिताः [032.011]
सर्वाः सपत्न्यो ललितां [032.011]
पप्रच्छुरिदमादितः [032.011]
ललिते वद भद्रं ते [032.012]
भद्रं ते ललिते वद [032.012]
कौतूहलपराः सर्वा [032.012]
यत्पृच्छामस्तदुच्यताम् [032.012]
विषये सति वक्तव्यं [032.013]
यन्मया तदिहोच्यताम् [032.013]
नाहं मत्सरिणी भद्रा [032.013]
न च रागादिदूषिता [032.013]
भवत्यो मम सर्वासां [032.014]
भवतीनामहं तथा [032.014]
अपृथग्भर्तृसामन्या [032.014]
देवलोकाभिकामुकाः [032.014]
पूर्वं यूयमहं चैव [032.*(34)]
भवतीनां सधर्मिणी [032.*(34)]
न तथा पुष्पधूपेषु [032.015]
न तथा द्विजपूजने [032.015]
प्रयत्नं तव पश्यामो [032.015]
विष्णोरायतने शुभे [032.015]
यथाहनि तथा रात्रौ [032.016]
यथा रात्रौ तथाहनि [032.016]
तव दीपप्रदानाय [032.016]
यथा सुभ्रु सदोद्यमः [032.016]
तदेतत्कथयास्माकं [032.017]
ललिते कौतुकं परम् [032.017]
मन्यामो दीपदानस्य [032.017]
भवत्या विदितं फलम् [032.017]
एवमुक्ता ततस्ताभिर् [032.018]
ललिता ललितं वचः [032.018]
व्याजहार सपत्नीस्ता [032.018]
न किंचिदपि भामिनी [032.018]
पुनः पुनश्च सा ताभिर् [032.019]
बहुषो दाल्भ्य चोदिता [032.019]
दाक्षिण्यसारा ललिता [032.019]
कथयामास भामिनी [032.019]
कौतुकं भवतीनां चेद् [032.020]
अतीवाल्पे ऽपि वस्तुनि [032.020]
तदेषा कथयाम्येतद् [032.020]

यद्वृत्तं मम शोभनाः [032.020]
सौवीरराजस्य पुरा [032.021]
मैत्रेयो ऽभूत्पुरोहितः [032.021]
तेन चायतनं विष्णोः [032.021]
कारितं देविकातटे [032.021]
अहन्यहनि शुश्रूषां [032.022]
पुष्पधूपोपलेपनैः [032.022]
दीपदानादिभिश्चैव [032.022]
चक्रे तत्र स वै द्विजः [032.022]
कार्त्तिके दीपको ब्रह्मन् [032.023]
प्रदत्तस्तेन वै तदा [032.023]
आसीन्निर्वाणभूयिष्ठो [032.023]
देवार्चापुरतो निशि [032.023]
देवतायतने चासं [032.024]
तत्राहमपि मूषिका [032.024]
प्रदीपवर्तिहरणे [032.024]
कृतबुद्धिर्वराननाः [032.024]
गृहीता च मया वर्तिर् [032.025]
वृषदंशो ननाद च [032.025]
नष्टा चाहं तदा तस्य [032.025]
मार्जारस्य भयातुरा [032.025]
वर्तिप्रान्तेन नश्यन्त्या [032.026]
स दीपः प्रेरितो मया [032.026]
जज्वाल पूर्ववद्दीप्त्या [032.026]
तस्मिन्नायतने पुनः [032.026]
मृताहं च ततो जाता [032.027]
वैदर्भी राजकन्यका [032.027]
जातिस्मरा कान्तिमती [032.027]
भवतीनां समा गुणैः [032.027]
एष प्रभावो दीपस्य [032.028]
कार्त्तिके मासि शोभनाः [032.028]
दत्तस्य विष्ण्वायतने [032.028]
यस्येयं व्युष्टिरुत्तमा [032.028]
असंकल्पितमप्यस्य [032.029]
प्रेरणं यत्कृतं मया [032.029]
विष्ण्वायतनदीपस्य [032.029]
यस्येदं भुज्यते फलम् [032.029]
लोभाभिभूता हर्तुं तं [032.030]
प्रदीपमहमागता [032.030]
अवशेनैव तद्वर्त्या [032.030]
प्रेरणं तत्र मे कृतम् [032.030]
ततो जातिस्मृतिर्जन्म [032.031]
मानुष्यं शोभनं वपुः [032.031]
वश्यः पतिः पृथिवीशः [032.031]
किं पुनर्दीपदायिनाम् [032.031]
एतस्मात्कारणाद्दीपान् [032.032]
अहमेतानहर्निशम् [032.032]
प्रयच्छामि हरेर्धाम्नि [032.032]
ज्ञातमस्य हि यत्फलम् [032.032]
भवतीनामिदं सत्यं [032.033]
मयोक्तं केशवालये [032.033]
मूषिकत्वादहं येन [032.033]
कर्मणा सिद्धिमागता [032.033]
एष प्रभावो दीपस्य [032.034]
कार्त्तिके मासि सत्तम [032.034]
विष्ण्वायतनदत्तस्य [032.034]
जगाद ललिता यथा [032.034]
दिने दिने जगन्नाथ [032.035]
केशवेति समाहितः [032.035]
ददाति कार्त्तिके यस्तु [032.035]
विष्ण्वायतनदीपकम् [032.035]
जातिस्मरत्वं प्रज्ञां च [032.036]
प्राकाश्यं सर्ववस्तुषु [032.036]
अव्याहतेन्द्रियत्वं च [032.036]
संप्राप्नोति न संशयः [032.036]
शेषकाले च चक्षुष्मान् [032.037]
मेधावी दीपदो नरः [032.037]
जायते नरकं वापि [032.037]
तमःसंज्ञं न पश्यति [032.037]
एकादशीं द्वादशीं वा [032.038]
प्रतिपक्षं च यो नरः [032.038]
दीपं ददाति कृष्णाय [032.038]
तस्यापि शृणु यत्फलम् [032.038]
सुवर्णमणिमुक्ताढ्यं [032.039]
मनोज्ञमतिशोभनम् [032.039]
दीपमालाकुलं दिव्यं [032.039]
विमानं सो ऽधिरोहति [032.039]
तस्मादायतने विष्णोर् [032.040]
दद्याद्दीपं द्विजोत्तम [032.040]
तांश्च दत्तान्न हिंसेत [032.040]
न च तैलवियोजितान् [032.040]
कुर्वीत दीपहर्ता तु [032.040]
मूको ऽन्धो जायते यतः [032.040]
जायते नरकं चापि [032.*(35)]

तपःसंज्ञं स पश्यति [032.*(35)]
अन्धे तामसि दुष्पारे [032.041]
नरके पतितान्किल [032.041]
विक्रोशमानान्क्षुत्क्षामाञ् [032.041]
जगाद यमकिंकरः [032.041]
विलापैरलमत्रापि [032.042]
किं वो विलपिते फलम् [032.042]
यदा प्रमादिभिः पूर्वम् [032.042]
आत्मात्यन्तमुपेक्षितः [032.042]
पूर्वमालोचितं नैतत् [032.043]
किमप्यन्ते भविष्यति [032.043]
इदानीं यातनाभोगः [032.043]
किं विलापः करिष्यति [032.043]
देहो दिनानि स्वल्पानि [032.044]
विषयाश्चातिदुर्धराः [032.044]
एतत्को न विजानाति [032.044]
येन यूयं प्रमादिनः [032.044]
जन्तुजन्मसहस्रेभ्य [032.045]
एतस्मिन्मानुष्यो यदि [032.045]
तत्राप्यतिविमूढत्वात् [032.045]
किं भोगानभिधावति [032.045]
विरुद्धविषयास्वाद- [032.046]
मुदितैर्हसितं च यत् [032.046]
भवद्भिरागतं दुःखं [032.046]
विलापपरिणामिकम् [032.046]
अद्यकालिकया बुद्ध्या [032.047]
यदागामि न चिन्तितम् [032.047]
परितापाय तज्जातं [032.047]
दुःखं कर्मविपाकजम् [032.047]
स्वल्पमायुर्मनुष्याणां [032.048]
तदन्ते परतन्त्रता [032.048]
भुज्यते च कृतं पूर्वम् [032.048]
एतत्किं वो न चिन्तितम् [032.048]
यदभूत्परदारेषु [032.049]
प्रीतये ऽङ्गकुचादिकम् [032.049]
यातनादुःखरूपाय [032.049]
नरके च तदागतम् [032.049]
परदारमनोहारि [032.050]
यद्भवद्भिरगीयत [032.050]
हा मात इत्यादि रुतं [032.050]
तदिदानीं विलप्यते [032.050]
संदिग्धपरलोकानाम् [032.051]
ऐहिके निहतात्मनाम् [032.051]
मृतानां स्वकृतं कर्म [032.051]
पश्चात्तापाय केवलम् [032.051]
मुहूर्तार्धसुखास्वाद- [032.052]
लुब्धानामकृतात्मनाम् [032.052]
अनेकवर्षकोटिषु [032.052]
दुःखदं कर्म जायते [032.052]
हा मातस्तात तातेति [032.053]
भवद्भिः किं विलप्यते [032.053]
शुभाशुभं निजं कर्म [032.053]
तदद्य ह्यत्र भुज्यते [032.053]
पुत्रदारगृहक्षेत्र- [032.054]
हिताय सततोद्यताः [032.054]
न कुर्वन्ति कथं मूढाः [032.054]
स्वल्पमप्यात्मनो हितम् [032.054]
वञ्चितो ऽसौ मया लब्धम् [032.055]
इदमस्मादुपायतः [032.055]
न वेत्ति कश्चिदात्मार्थं [032.056]
वेत्ति प्रक्रमतो नरः [032.056]
न वेत्ति सूर्यचन्द्रादीन् [032.057]
कालमात्मानमेव च [032.057]
साक्षिभूतानशेषस्य [032.057]
शुभस्येहाशुभस्य च [032.057]
जन्मान्यन्यानि जायन्ते [032.058]
पुत्रदारादिदेहिनाम् [032.058]
तदर्थं यत्कृतं कर्म [032.058]
तस्य जन्मशतानि तत् [032.058]
अहो मोहस्य माहात्म्यं [032.059]
ममत्वं नरकेष्वपि [032.059]
क्रन्दते मातरं तातं [032.059]
पीड्यमानो ऽपि यत्स्वयम् [032.059]
एवमाकृष्टचित्तानां [032.060]
विषयास्वादतर्षुलैः [032.060]
नृणां न जायते बुद्धिः [032.060]
परमार्थावलोकिनी [032.060]
तथा च विषयासक्तिं [032.060]
करोत्यविरतं मनः [032.060]
को ऽतिभारो हरेर्नाम्नि [032.061]
जिह्वायाः परिकीर्तने [032.061]
वर्तितैले ऽल्पमौल्ये ऽपि [032.062]
यदग्निर्लभ्यते मुधा [032.062]
अतो ऽधिकतरो लोभः [032.062]

को वश्चित्ते ऽभवत्तदा [032.062]
येनेयं तेषु हस्तेषु [032.063]
स्वातन्त्र्ये सति दीपकः [032.063]
महाफलो विष्णुगृहे [032.063]
न दत्तो नरकापहः [032.063]
न वो विलपिते किंचिद् [032.064]
इदानीं दृश्यते फलम् [032.064]
अस्वातन्त्र्ये विलपतां [032.064]
स्वातन्त्र्ये ऽतिप्रमादिनाम् [032.064]
अवश्यंपातिनः प्राणा [032.065]
भोक्ता जीवो ह्यहर्निशम् [032.065]
दत्तं च लभते भोक्ता [032.065]
समये विषयानिति [032.065]
एतत्स्वातन्त्र्यवद्भिर्वो [032.066]
युक्तमासीत्परीक्षितुम् [032.066]
इदानीं किं विलापेन [032.066]
सहध्वं यदुपागतम् [032.066]
यद्येतदनभीष्टं वो [032.067]
यद्दुःखं समुपस्थितम् [032.067]
तद्भूयो ऽपि मतिः पापे [032.067]
न कर्तव्या कथंचन [032.067]
कृते ऽपि पापके कर्मण्य् [032.068]
अज्ञानादघनाशनम् [032.068]
कर्तव्यमव्यवस्थितं [032.068]
स्मरद्भिर्मधुसूदनम् [032.068]
नारकास्तद्वचः श्रुत्वा [032.069]
तामूचुरतिदुःखिताः [032.069]
क्षुत्क्षामकण्ठास्तृषया [032.069]
परिस्फुटिततालुकाः [032.069]
भो भो साधो कृतं कर्म [032.070]
यदस्माभिस्तदुच्यताम् [032.070]
नरकस्थैर्विपाको ऽयं [032.070]
भुज्यते यस्य दारुणः [032.070]
युष्माभिर्यौवनोन्माद- [032.071]
मुदितैरविवेकिभिः [032.071]
द्यूतोद्योताय गोविन्द- [032.071]
गृहाद्दीपः पुरा हृतः [032.071]
तेनास्मिन्नरके घोरे [032.072]
क्षुत्तृष्णापरिपीडिताः [032.072]
भवन्तः पतितास्तीव्र- [032.072]
शीतवातविदारिताः [032.072]
एतत्ते दीपदानस्य [032.073]
प्रदीपहरणस्य च [032.073]
पुण्यं पापं च कथितं [032.073]
केशवायतने द्विज [032.073]
सर्वत्रैव हि दीपस्य [032.074]
प्रदानं द्विज शस्यते [032.074]
विशेषेण जगद्धातुः [032.074]
केशवस्य निवेशने [032.074]
ये ऽन्धा मूका निःश्रुता निर्विवेका [032.075]
हीनास्तैस्तैः साधनैर्विप्रवर्य [032.075]
तैस्तैर्दीपाः साधुलोकप्रदत्ता [032.075]
देवागारादन्यतो विप्रणीताः [032.075]
आह्लादं चक्षुषः प्रीतिं [033.001]
करोति मनसस्तथा [033.001]
केषांचिद्दर्शनं ब्रह्मन् [033.001]
मनुष्याणामहर्निशम् [033.001]
उद्वेजनीया भूतानाम् [033.002]
अनिमित्तं तथापरे [033.002]
वदन्ते विप्रियं नैव [033.002]
प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः [033.002]
एतद्यस्य फलं ब्रह्मन् [033.003]
दानस्य तपसो ऽथवा [033.003]
उपवासस्य वा तन्मे [033.003]
यथावद्वक्तुमर्हसि [033.003]
अप्रीतिदस्य विप्रर्षे [033.004]
विपाको यस्य कर्मणः [033.004]
मनुष्याणामशेषं वै [033.004]
तन्ममाचक्ष्व सत्तम [033.004]
देवब्राह्मणवेदेषु [033.005]
यज्ञेषु च नराधमैः [033.005]
यैर्जुगुप्सा कृता दाल्भ्य [033.005]
मनसाप्यतिमानिभिः [033.005]
तेषां संदर्शनात्सर्वो [033.006]
न सुखं विन्दते द्विज [033.006]
वदन्त्यप्यनुकूलानि [033.006]
न तेषु प्रीयते जनः [033.006]
स्पर्शादुद्विजते लोकः [033.007]
कटु तेषां च दर्शनम् [033.007]
संभाषणं च निन्दा वै [033.007]
कृता वेदद्विजातिके [033.007]
तस्मान्न निन्दां वेदादौ [033.008]
न जुगुप्सां च पण्डितः [033.008]
यज्ञादौ च नरः कुर्याद् [033.008]

य इच्छेच्छ्रेय आत्मनः [033.008]
यैस्तु प्रीतिः समस्तेषु [033.009]
वेददेवद्विजातिषु [033.009]
यज्ञादिके चैव कृता [033.009]
दाल्भ्य तद्दर्शनं नृणाम् [033.009]
आह्लादश्चक्षुषः प्रीतिर् [033.010]
मनसो निर्वृतिः परा [033.010]
संभाषणे तथाह्लादः [033.010]
सर्वलोकस्य जायते [033.010]
स्तुताः प्रशस्ताः संप्रीत्या [033.011]
पूजिता बहुमानतः [033.011]
श्रेयः परं प्रयच्छन्ति [033.011]
देवा वेदा मखा द्विजाः [033.011]
लोकद्वये ऽपि चाप्रीतिं [033.012]
पशुपुत्रधनक्षयम् [033.012]
कुर्वन्ति द्विजशार्दूल [033.012]
एत एव विनिन्दिताः [033.012]
एत एव समाख्याताः [033.013]
स्तवादिग्रहणे गुणाह् [033.013]
निन्दायाः श्रवणे दोष [033.013]
एतेषामेवमेव हि [033.013]
तस्मात्स्तव्याः प्रशंस्याश्च [033.014]
देवा वेदा द्विजातयः [033.014]
यज्ञाश्च मनसाप्येषां [033.014]
न निन्दामाचरेद्बुधः [033.014]
अनायासेन भगवन् [034.001]
दानेनान्येन केनचित् [034.001]
पापं प्रशममायाति [034.001]
येन तद्वक्तुमर्हसि [034.001]
शृणु दाल्भ्य महापुण्यां [034.002]
द्वादशीं पापनाशनीम् [034.002]
यामुपोष्य परं पुण्यं [034.002]
प्राप्नुते श्रद्धयान्वितः [034.002]
माघमासे तु संप्राप्त [034.003]
आषाढार्क्षं भवेद्यदि [034.003]
मूलं वा कृष्णपक्षस्य [034.003]
द्वादश्यां नियतस्तदा [034.003]
गृह्णीयात्पुण्यफलदं [034.004]
विधानं तस्य मे शृणु [034.004]
देवदेवं समभ्यर्च्य [034.004]
सुस्नातः प्रयतः शुचिः [034.004]
कृष्णनाम्ना च संस्तूय [034.005]
एकादश्यां महामते [034.005]
उपोषितो द्वितीये ऽह्नि [034.005]
पुनः संपूज्य केशवम् [034.005]
संस्तूय नाम्ना च ततः [034.006]
कृष्णाख्येन पुनः पुनः [034.006]
दद्यात्तिलांस्तु विप्राय [034.006]
कृष्णो मे प्रीयतामिति [034.006]
स्नानप्राशनयोः शस्तास् [034.006]
तथा कृष्णतिला मुने [034.006]
तिलप्ररोहे जायन्ते [034.007]
यावत्संख्यास्तिला द्विज [034.007]
तावद्वर्षसहस्राणि [034.007]
स्वर्गलोके महीयते [034.007]
जातश्चेहाप्यरोगो ऽसौ [034.008]
नरो जन्मनि जन्मनि [034.008]
नान्धो न बधिरश्चेह [034.008]
न कुष्ठी न जुगुप्सितः [034.008]
भवत्येतामुषित्वा तु [034.008]
तिलाख्यां द्वादशीं नरः [034.008]
विष्णोः प्रीणनमन्त्रोक्तं [034.009]
समाप्ते वर्षपारणे [034.009]
पूजां च कुर्याद्विप्राय [034.009]
भूयो दद्यात्तथा तिलान् [034.009]
अनेन दाल्भ्य विधिना [034.010]
तिलदानादसंशयम् [034.010]
मुच्यते पातकैः सर्वैर् [034.010]
निरायासेन मानवः [034.010]
उद्भूतपुलकः सर्वान् [034.*(36)]
निरायासेन मानवः [034.*(36)]
दानविधिस्तथा श्रद्धा [034.011]
सर्वपातकशान्तये [034.011]
नार्थः प्रभूतो नायासः [034.011]
शारीरो मुनिसत्तम [034.011]
अनन्तस्याप्रमेयस्य [035.001]
व्यापिनः परमात्मनः [035.001]
नाम्नां नक्षत्रभेदेन [035.001]
तिथिभेदेन वा द्विज [035.001]
दानभेदेन चाख्यातो [035.002]
विभिन्नफलदस्त्वया [035.002]
विशेषः क्षेत्रभेदेन [035.002]
कथ्यतां यदि विद्यते [035.002]
यथ र्क्षतिथिभेदेन [035.003]

तेषामेव पुनः पुनः [035.003]
विशेषः कथितो नाम्नां [035.003]
विशेषफलदायकः [035.003]
तथा क्षेत्रविशेषेण [035.003]
भेदं नामकृतं वद [035.003]
शृणु दाल्भ्य यथाख्यातम् [035.004]
अर्जुनाय महात्मने [035.004]
प्रणिपातप्रसन्नेन [035.004]
विष्णुना प्रभविष्णुना [035.004]
कृते भारावतरणे [035.005]
निवृत्ते भारते रणे [035.005]
आगम्य शिबिरं विष्णू [035.005]
रथस्थः प्राह फाल्गुनम् [035.005]
इषुधीगाण्डिवं चैव [035.006]
समादाय त्वरान्वितः [035.006]
अवतीर्य रथाद्वीर [035.006]
दूरे तिष्ट्ःअ धनंजय [035.006]
अवरोक्ष्याम्यहं पश्चाद् [035.007]
अवतीर्णे ततस्त्वयि [035.007]
एतत्कुरु महाबाहो [035.007]
मा विलम्बस्व फाल्गुन [035.007]
एवमुक्तस्तथा चक्रे [035.008]
वाक्यं पार्थो गदाधृतः [035.008]
अवारोहत्ततः पश्चात् [035.008]
स्वयमेव जनार्दनः [035.008]
अवतीर्णे जगन्नाथे [035.009]
स्वसमुत्थेन वह्निना [035.009]
जज्वाल स रथः सद्यो [035.009]
भस्मीभूतश्च तत्क्षणात् [035.009]
सोपस्करपताको ऽथ [035.009]
सध्वजः सह वाजिभिः [035.009]
सच्छत्रो वह्निना सद्यो [035.010]
रथो भस्मलवीकृतः [035.010]
वह्निना च यथा काष्ठं [035.010]
सद्यो भस्मलवीकृतम् [035.010]
तदद्भुतं महद्दृष्ट्वा [035.011]
पार्थः पप्रच्छ केशवम् [035.011]
हृष्टरोमा द्विजश्रेष्ठ [035.011]
भयविस्मयगद्गदः [035.011]
आश्चर्यं पुरुषव्याघ्र [035.012]
किमेतन्मधुसूदन [035.012]
विनाग्निना रथो ऽयं मे [035.012]
दग्धस्तृणचयो यथा [035.012]
भीष्मद्रोणकृपादीनां [035.013]
कर्णादीनां च फाल्गुन [035.013]
दग्धो ऽस्त्रैर्विविधैरेष [035.013]
पूर्वमेव रथस्तव [035.013]
मदधिष्ठितत्वात्कौन्तेय [035.014]
न शीर्णो ऽयं तदाभवत् [035.014]
प्रत्यहन्निशि चक्रेण [035.014]
मया न्यस्तेन रक्षितः [035.014]
सो ऽयं दग्धो महाबाहो [035.015]
त्वय्यद्य कृतकर्मणि [035.015]
मयावतारिते चक्रे [035.015]
मा पार्थ कुरु विस्मयम् [035.015]
कं भवन्तमहं विद्याम् [035.016]
अतिमानुषचेष्टितम् [035.016]
कर्मणात्यद्भुतेनाग्निर् [035.016]
धूमेनैवेह सूचितः [035.016]
पूर्वमेव यथाख्यातं [035.017]
रणारम्भे तवार्जुन [035.017]
कालो ऽस्मि लोकनाशाय [035.017]
प्रवृत्तो ऽहं यथाधुना [035.017]
तन्मया साधितं कार्यं [035.018]
त्रिदशानां तथा भुवः [035.018]
भारावतरणार्थाय [035.018]
मम जन्म महीतले [035.018]
एवमुक्तो ऽर्जुनः सम्यक् [035.019]
प्रणिपत्य जनार्दनम् [035.019]
तुष्टाव वाग्भिरिष्टाभिर् [035.019]
उद्भूतपुलकस्ततः [035.019]
नमो ऽस्तु ते चक्रधरोग्ररूप [035.020]
नमो ऽस्तु ते शार्ङ्गधरारुणाक्ष [035.020]
नमो ऽस्तु ते ऽभ्युद्यतखड्ग रौद्र [035.020]
नमो ऽस्तु विभ्रान्तगदान्तकारिन् [035.020]
भयेन सन्नो ऽस्मि सवेपथेन [035.021]
नाङ्गानि मे देव वशं प्रयान्ति [035.021]
वाचः समुच्चारयतः स्खलन्ति [035.021]
केशा हृषीकेश समुच्छ्वसन्ति [035.021]
कालो भवान्कालकरालकर्मा [035.022]
येनैतदेवं क्षयमक्षयात्मन् [035.022]
क्षत्रं समुद्भूतरुषा समस्तम् [035.022]
नीतं भुवो भारविरेचनाय [035.022]
प्रसीद कर्तर्जय लोकनाथ [035.023]

प्रसीद सर्वस्य च पालनाय [035.023]
स्थितौ समस्तस्य च कालरूप [035.023]
कृतोद्यमेशान जयाव्ययात्मन् [035.023]
न मे दृगेषा तव रूपमेतद् [035.024]
द्रष्टुं समर्था क्षुभितो ऽस्मि चान्तः [035.024]
पूर्वस्वभावस्थितविग्रहो ऽपि [035.024]
संलक्ष्यसे ऽत्यन्तमसौम्यरूप [035.024]
स्मरामि रूपं तव विश्वरूपं [035.025]
यद्दर्शितं पूर्वमभून्ममैव [035.025]
यस्मिन्मया विश्वमशेषमासीद् [035.025]
दृष्टं सयक्षोरगदेवदैत्यम् [035.025]
सा मे स्मृतिर्दर्शनभाषनादि- [035.026]
प्रकुर्वतो नाथ गता प्रणाशम् [035.026]
कालो ऽहमस्मीत्युदिते त्वया तु [035.026]
समागतेयं पुनरप्यनन्त [035.026]
कर्ता भवान्कारणमप्यशेषम् [035.027]
कार्यं च निष्कारण कर्तृरूप [035.027]
आदौ स्थितौ संहरणे च देव [035.027]
विश्वस्य विश्वं स्वयमेव च त्वम् [035.027]
ब्रह्मा भवान्विश्वसृगादिकाले [035.028]
विश्वस्य रूपो ऽसि तथा विसृष्टौ [035.028]
विष्णुः स्थितौ पालनबद्धकक्षो [035.028]
रुद्रो भवान्संहरणे प्रजानाम् [035.028]
एभिस्त्रिभिर्नाथ विभूतिभेदैर् [035.029]
यश्चिन्त्यते कारणमात्मनो ऽपि [035.029]
वेदान्तवेदोदितमस्ति विष्णोः [035.029]
पदं ध्रुवं तत्परमं त्वमेव [035.029]
यन्निर्गुणं सर्वविकल्पहीनम् [035.030]
अनन्तमस्थूलमरूपगन्धम् [035.030]
परं पदं वेदविदो वदन्ति [035.030]
त्वमेव तच्छब्दरसादिहीनम् [035.030]
यथा हि मूले विटपी महाद्रुमः [035.031]
प्रतिष्ठितस्कन्धवरोग्रशाखः [035.031]
तथा समस्तामरमर्त्यतिर्यग्- [035.031]
व्योमादिशब्दादिमयं त्वयीदम् [035.031]
मुञ्चामि यावत्परमायुधानि [035.032]
वैरिष्वनन्ताहवदुर्मदेषु [035.032]
दृष्ट्वा हि तावत्सहसा पतन्तो [035.032]
नूनं तवैवाच्युत स प्रभावः [035.032]
हता हतास्ते भवतो दृशैव [035.033]
मया पुनः केशव शस्त्रपूगैः [035.033]
काह्न कर्णभीष्मप्रमुखान्विजेतुं [035.033]
युष्मत्प्रसादेन विना समर्थः [035.033]
त्रिशूलपाणिर्मम यः पुरस्तान् [035.034]
निषूदयन्वैरिबलं जगाम [035.034]
ज्ञातं मया सांप्रतमेतदीश [035.034]
तव प्रसादस्य हि सा विभूतिः [035.034]
यमेन्द्रवित्तेशजलेशवह्नि- [035.035]
सूर्यात्मको यश्च ममास्त्रपूगः [035.035]
नाशाय नाभूत्पतितो ऽपि काये [035.035]
त्वत्संनिधानस्य हि सो ऽनुभावः [035.035]
बाल्ये भवान्यानि चकार देव [035.036]
कर्माण्यसह्यानि सुरासुराणाम् [035.036]
तैरेव जानीम न यत्परं त्वां [035.036]
दोषः स निर्दोषो मनुष्यतायाः [035.036]
तालोच्छ्रिताग्रं गुरुभारसारम् [035.037]
आयामविस्तारवदद्यजातः [035.037]
पादाग्रविक्षेपविभिन्नभाण्डं [035.037]
चिक्षेप को ऽन्यः शकटं यथा त्वम् [035.037]
अन्येन केनाच्युत पूतनायाः [035.038]
प्राणैः समं पीतमसृग्विमिश्रम् [035.038]
त्वया यथा स्तन्यमतीवबाल्ये [035.038]
गोष्ठे च भग्नौ यमलार्जुनौ तौ [035.038]
विषानलोष्णाम्बुनिपातभीमम् [035.039]
आस्फोट्य को वा भुवि मनुषो ऽन्यः [035.039]
ननर्त पादाब्जनिपीडितस्य [035.039]
फणं समारुह्य च कालियस्य [035.039]
सुरेशसंदेशविरोधवत्सु [035.040]
वर्षत्सु मेघेषु गवान्निमित्तम् [035.040]
दिनानि सप्तास्ति च कस्य शक्तिर् [035.040]
गोवर्धनं धारयितुं करेण [035.040]
प्रलम्बचाणूरमुखान्निहत्य [035.041]
कंसासुरं यस्य बिभेति शक्रः [035.041]
तमष्टवर्षो निजघान को ऽन्यो [035.041]
निरायोधो नाथ मनुष्यजन्मा [035.041]
बाणार्थमभ्युद्यतमुग्रशूलं [035.042]
निर्जित्य संख्ये त्रिपुरारिमेकः [035.042]
सकार्त्तिकेयज्वरमस्त्रबाहुं [035.042]
करोति को बाणमनच्युतो ऽन्यः [035.042]
कः पारिजातं सुरसुन्दरीणां [035.043]
सदोपभोग्यं विजितेन्द्रसैन्यः [035.043]
स्वर्गान्महीमुच्छ्रितवीर्यधैर्यः [035.043]
समानयामास यथा प्रभो त्वम् [035.043]
हत्वा हयग्रीवमुदारवीर्यं [035.044]

निशुम्भशुम्भौ नरकं च को ऽन्यः [035.044]
जग्राह कन्यापुरमात्मनो ऽर्थं [035.044]
प्राग्ज्योतिषाख्ये नगरे महात्मन् [035.044]
स्थितौ स्थितस्त्वं परिपासि विश्वं [035.045]
तैस्तैरुपायैरविनीतभीतैः [035.045]
मैत्री न येषां विनयाय तांस्तान् [035.045]
सर्वान्भवान्संहरते ऽव्ययात्मन् [035.045]
हिताय तेषां कपिलादिरूपिणा [035.046]
त्वयानुशस्ता बहवो ऽनुजीवाः [035.046]
येषां न मैत्री हृदि ते न नेया [035.046]
विश्वोपकारी वध एव तेषाम् [035.046]
इत्थं भवान्दुष्टवधेन नूनं [035.047]
विश्वोपकाराय विभो प्रवृत्तः [035.047]
स्थितौ स्थितं पालनमेव विष्णुः [035.047]
करोति हन्त्यन्तगतो ऽन्तरुद्रः [035.047]
एतानि चान्यानि च दुष्कराणि [035.048]
दृष्टानि कर्माणि तथापि सत्यम् [035.048]
मन्यामहे त्वां जगतः प्रसूतिं [035.048]
किं कुर्म माया तव मोहनीयम् [035.048]
त्वं सर्वमेतत्त्वयि सर्वमेतत् [035.049]
त्वत्तस्तथैतत्तव चैतदीश [035.049]
एतत्स्वरूपं तव सर्वभूतं [035.049]
विभूतिभेदैर्बहुभिः स्थितस्य [035.049]
प्रसीद कृष्णाच्युत वासुदेव [035.050]
जनार्दनानन्त नृसिंह विष्णो [035.050]
मनुष्यसामान्यधिया यदीश [035.050]
दृष्टो मया तत्क्षमस्वादिदेव [035.050]
न वेद्मि सद्भावमहं तवाद्य [035.051]
सद्भावभूतस्य चराचरस्य [035.051]
यो वै भवान्को ऽपि नतो ऽस्मि तस्मै [035.051]
मनुष्यरूपाय चतुर्भुजाय [035.051]
देवदेव जगन्नाथ [035.052]
सर्वपापहरो भव [035.052]
हेतुमात्रस्त्वहं तत्र [035.052]
त्वयैतदुपसंहृतम् [035.052]
प्रसीदेश हृषीकेश [035.053]
अक्षौहिण्या दशाष्ट च [035.053]
त्वया ग्रस्ता भुवो भूत्यै [035.053]
हेतुभूता हि मद्विधाः [035.053]
वयमन्ये च गोविन्द [035.054]
नराः क्रीडनकास्तव [035.054]
मद्विधैः करणैर्देव [035.054]
करोषि स्थितिपालनम् [035.054]
यदत्र सदसद्वापि [035.055]
किंचिदुच्चारितं मया [035.055]
भक्तिमानिति तत्सर्वं [035.055]
क्षन्तव्यं मम केशव [035.055]
एवं स्तुतस्ततः प्राह [036.001]
प्रीतिमांस्तं जनार्दनः [036.001]
परिष्वज्य महाबाहुं [036.001]
समाश्वास्य च फाल्गुनम् [036.001]
प्रुवाच भगवान्देवः [036.*(37)]
प्रहृष्टेनान्तरात्मना [036.*(37)]
यस्त्वां वेत्ति स मां वेत्ति [036.002]
यस्त्वामनु स मामनु [036.002]
अभेदेनात्मना वेद्मी [036.002]
त्वामहं पाण्डुनन्दन [036.002]
ममांशत्वं महाबाहो [036.003]
जगतः पालनेच्छया [036.003]
भुवो भारावतारार्थं [036.003]
पृथक्पार्थ मया कृतम् [036.003]
देवदैत्योरगा यक्षा [036.004]
गन्धर्वाः किंनराप्सराः [036.004]
राक्षसाश्च पिशाचाश्च [036.004]
पशुपक्षिसरीसृपाः [036.004]
वृक्षगुल्मादयः शैलाः [036.005]
सर्वभूतानि चार्जुन [036.005]
ममैवांशानि भूतानि [036.005]
विद्धि सर्वाण्यरिंदम [036.005]
भगवन्सर्वभूतात्मन् [036.006]
सर्वभूतेषु वै भवान् [036.006]
परमात्मस्वरूपेण [036.006]
स्थितं वेद्मि तदव्ययम् [036.006]
क्षेत्रेषु येषु येषु त्वं [036.007]
चिन्तनीयो मयाच्युत [036.007]
चेतसः प्रणिधानार्थं [036.007]
तन्ममाख्यातुमर्हसि [036.007]
यत्र यत्र च यन्नाम [036.008]
प्रीतये भवतः स्तुतौ [036.008]
प्रसादसुमुखो नाथ [036.008]
तन्ममाशेषतो वद [036.008]
सर्वगः सर्वभूतो ऽहं [036.009]
न हि किंचिन्मया विना [036.009]
चराचरे जगत्यस्मिन् [036.009]

विद्यते कुरुसत्तम [036.009]
तथापि येषु स्थानेषु [036.010]
चिन्तनीयो ऽहमर्जुन [036.010]
स्तोतव्यो नामभिर्यैस्तु [036.010]
श्रूयतां तद्वदामि ते [036.010]
पुष्करे पुण्डरीकाक्षं [036.011]
गयायां च गदाधरम् [036.011]
लोहदण्डे तथा विष्णुं [036.011]
स्तुवंस्तरति दुष्कृतम् [036.011]
क्ष्वामाच्ये कुमारं [036.*(38)]
नेपाले लोकभावनम् [036.*(38)]
राघवं चित्रकूटे तु [036.012]
प्रभासे दैत्यसूदनम् [036.012]
वृन्दावने च गोविन्दं [036.012]
मा स्तुवन्पुण्यभाग्भवेत् [036.012]
मन्दोदपाने वैकुण्ठं [036.*(39)]
माहन्त्रे चाच्युतं विभुम् [036.*(39)]
जयं जयन्त्यां तद्वच्च [036.013]
जयन्तं हस्तिनापुरे [036.013]
वाराहं कर्दमाले तु [036.013]
काश्मीरे चक्रपाणिनम् [036.013]
जनार्दनं च कुब्जाम्रे [036.014]
मथुरायां च केशवम् [036.014]
कुब्जके श्रीधरं तद्वद् [036.014]
गङ्गाद्वारे सुरोत्तमम् [036.014]
शालग्रामे महायोगिं [036.015]
हरिं गोवर्धनाचले [036.015]
पिण्डारके चतुर्बाहुं [036.015]
शङ्खोद्धारे च शङ्खिनम् [036.015]
वामनं च कुरुक्षेत्रे [036.016]
यमुनायां त्रिविक्रमम् [036.016]
वनमालं च किष्किन्धायां [036.*(40)]
देवं रैवतके द्विज [036.*(40)]
काशीजले महायोगं [036.*(40)]
देवं चामिततेजसम् [036.*(40)]
वैशाखयूपे अजितं [036.*(40)]
विरजायां विप्रक्षयम् [036.*(40)]
विश्वेश्वरं तथा शोणे [036.016]
कपिलं पूर्वसागरे [036.016]
श्वेतद्वीपपतिं चापि [036.017]
गङ्गासागरसंगमे [036.017]
भूधरं देविकानद्यां [036.017]
प्रयागे चैव माधवम् [036.017]
नरनारायणाख्यं च [036.018]
तथा बदरिकाश्रमे [036.018]
समुद्रे दक्षिणे स्तव्यं [036.018]
पद्मनाभेति फाल्गुन [036.018]
द्वारकायां तथा कृष्णं [036.019]
स्तुवंस्तरति दुर्गतिम् [036.019]
रामं नाम महेन्द्राद्रौ [036.019]
हृषीकेशं तथार्बुदे [036.019]
अश्वतीर्थे हयग्रीवं [036.020]
विश्वरूपं हिमाचले [036.020]
नृसिंहं कृतसौचे च [036.020]
विपाशायां द्विजप्रियम् [036.020]
नैमिषे यज्ञपुरुषं [036.021]
जम्बूमार्गे तथाच्युतम् [036.021]
अनन्तं सैन्धवारण्ये [036.021]
दण्डके शाङ्गधारिणम् [036.021]
उत्पलावर्तके शौरिं [036.022]
नर्मदायां श्रियः पतिम् [036.022]
दामोदरं रैवतके [036.022]
नन्दायां जलशायिनम् [036.022]
सर्वयोगेश्वरं चैव [036.023]
सिन्धुसागरसंगमे [036.023]
सह्याद्रौ देवदेवेशं [036.023]
वैकुण्ठं मागधे वने [036.023]
सर्वपापहरं विन्ध्ये [036.024]
उड्रेषु पुरुषोत्तमम् [036.024]
हृदये चापि कौन्तेय [036.024]
परमात्मानमात्मनः [036.024]
वटे वटे वैश्रवणं [036.025]
चत्वरे चत्वरे शिवम् [036.025]
पर्वते पर्वते रामं [036.025]
सर्वत्र मधुसूदनम् [036.025]
नरं भूमौ तथा व्योम्नि [036.026]
कौन्तेय गरुडध्वजम् [036.026]
वासुदेवं च सर्वत्र [036.026]
संस्मरञ्ज्योतिषां पतिम् [036.026]
अर्चयन्प्रणमंस्तु त्वं [036.027]
संस्मरंश्च धनंजय [036.027]
एतेष्वेतानि नामानि [036.027]
नरः पापैः प्रमुच्यते [036.027]
स्थानेष्वेतेषु मन्नाम्नाम् [036.028]

एतेषां प्रीणनं नरः [036.028]
द्विजानां प्रीणनं कृत्वा [036.028]
स्वर्गलोके ऽभिजायते [036.028]
नामान्येतानि कौन्तेय [036.029]
स्थानान्येतानि चात्मवान् [036.029]
जयं वै पञ्चपञ्चाशत् [036.029]
त्रिसन्ध्यं मत्परायणः [036.029]
त्रीणि जन्मानि यत्पापम् [036.030]
अवस्थात्रितये कृतम् [036.030]
तत्क्षालयत्यसंदिग्धं [036.030]
जायते च सतां कुले [036.030]
द्विष्कालं वा जपन्नेव [036.031]
दिवारात्रौ च यत्कृतम् [036.031]
तस्माद्विमुच्यते पापात् [036.031]
सद्भावपरमो नरः [036.031]
जप्तान्येतानि कौन्तेय [036.032]
सकृच्छ्रद्धासमन्वितम् [036.032]
मोचयन्ते नरं पापाद् [036.032]
यत्तत्रैव दिने कृतम् [036.032]
धन्यं यशस्यमायुष्यं [036.033]
जयं कुरु कुलोद्वह [036.033]
ग्रहानुकूलतां चैव [036.033]
करोत्याशु न संशयः [036.033]
उपोषितो मत्परमः [036.034]
स्थानेष्वेतेषु मानवः [036.034]
कृतायतनवासश्च [036.034]
प्राप्नोत्यभिमतं फलम् [036.034]
उत्क्रान्तिरप्यशेषेषु [036.035]
स्थानेष्वेतेषु शस्यते [036.035]
अन्यस्थानाच्छतगुणम् [036.035]
एतेष्वनशनादिकम् [036.035]
यस्तु मत्परमः कालं [036.036]
करोत्येतेषु मानवः [036.036]
देवानामपि पूज्यो ऽसौ [036.036]
मम लोके महीयते [036.036]
यन्न तापाय वै पुंसां [037.001]
भवत्यामुष्मिकं कृतम् [037.001]
तापाय यच्च भवति [037.001]
तदाचक्ष्व महामुने [037.001]
उपवासप्रभावं च [037.002]
कृष्णाराधनकाङ्क्षिणः [037.002]
कथयेह मम ब्रह्मन् [037.002]
न च तृप्यामि कथ्यते [037.002]
श्रूयतां दाल्भ्य यत्पृष्टाः [037.003]
कौतुकाद्भवता वयम् [037.003]
आमुष्मिकं न तापाय [037.003]
यच्च तापाय जायते [037.003]
उपोषितप्रभावं च [037.004]
कृष्णाराधनकाङ्क्षिणः [037.004]
कथयामि यथावृत्तं [037.004]
पूर्वमेव महामते [037.004]
वैदिशं नाम नगरं [037.005]
प्रख्यातमिह सत्तम [037.005]
तत्र वैश्यो ऽभवत्पूर्वं [037.005]
वीरभद्र इति श्रुतः [037.005]
भार्याजामातृदुहितृ- [037.006]
पुत्रपौत्रस्नुषान्वितः [037.006]
प्रभूतभृत्यवर्गश्च [037.006]
बहुव्यापारकारकः [037.006]
पुत्रपौत्रादिभरण- [037.007]
व्यासक्तमतिरेव च [037.007]
परलोकं प्रति मतिस् [037.007]
तस्य चात्यन्तदुर्मुखा [037.007]
चकारानुदिनं सो ऽथ [037.008]
न्यायान्यायैर्धनार्जनम् [037.008]
सर्वत्रान्यत्र निःस्नेहः [037.008]
परस्वे चातितर्षुलः [037.008]
न जुहोत्युदिते काले [037.009]
न ददात्यतितृष्णया [037.009]
बभूव चोद्यमस्तस्य [037.009]
पुत्रादिभरणे परः [037.009]
नित्यनैमित्तिकानां च [037.010]
हानिं चक्रे स्वकर्मणाम् [037.010]
तृष्णाभिभूतो विप्रर्षे [037.010]
स्ववर्गभरणाधृतः [037.010]
कालेन गच्छता सो ऽथ [037.011]
मृतो विन्ध्याटवीतटे [037.011]
यातनादेहभृत्प्रेतो [037.011]
ग्रीष्मकाले ऽभवन्मुने [037.011]
तं ददर्श महाभागो [037.012]
दिव्यज्ञानसमन्वितः [037.012]
वेदवेदान्तविद्विद्वान् [037.012]
पिपीतो नाम वै द्विजः [037.012]
भास्करस्यांशुभिर्दीप्तैर् [037.013]

दह्यन्तमनिवारणैः [037.013]
प्रतप्तवालुकामध्ये [037.013]
तृषा चात्यन्तपीडितम् [037.013]
क्षुत्क्षामकण्ठं शुष्कास्यं [037.014]
स्तब्धोद्वृत्तविलोचनम् [037.014]
निष्क्रान्तजिह्वमङ्गेषु [037.014]
विस्फोटैः सर्वतश्चितम् [037.014]
निश्वासायासखेदेन [037.015]
विरलास्यमनादरम् [037.015]
श्रान्तं मक्षिकयाकीर्णं [037.*(41)]
दुर्गंधं चातिदारुणम् [037.*(41)]
निजेन कर्मणा बद्धम् [037.015]
असमर्थं पलायने [037.015]
तं तादृशमथो दृष्ट्वा [037.016]
गार्दभेयो महामुनिः [037.016]
पिपीतः प्राह विप्रर्षिः [037.016]
कारुण्यस्तिमितं वचः [037.016]
जानन्नपि तथा प्राप्तं [037.017]
तदनुष्ठानजं फलम् [037.017]
जन्तोस्तस्योपकाराय [037.017]
सर्वतो ह्लादयन्निव [037.017]
अधः सूर्यांशुभिस्तप्तैर् [037.018]
बहुभिर्यानपांसुभिः [037.018]
उपर्यर्ककरैरुग्रैस् [037.018]
तृषा चार्तस्तथा क्षुधा [037.018]
अन्यैस्तथाधिभिर्घोरैर् [037.019]
अविषह्यैरवारणैः [037.019]
कथयेह यथातत्त्वम् [037.019]
एकाकी दह्यसे कथम् [037.019]
तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा [037.020]
पिपीतस्य सवेदनम् [037.020]
यातनास्थ उवाचेदं [037.020]
कृच्छ्रादुच्छ्वास्य मस्तकम् [037.020]
ब्रह्मन्नालोचितं पूर्वं [037.021]
कथमन्ते भविष्यति [037.021]
अशाश्वते शाश्वतधीस् [037.021]
तेन दह्यामि दुर्मतिः [037.021]
धनापणगृहक्षेत्र- [037.022]
पुत्रदारहिते रतः [037.022]
नात्मनो ऽहं हितारम्भी [037.022]
तेन दह्यामि दुर्मतिः [037.022]
इदं करिष्ये कृत्वेदं [037.023]
करिष्याम्यपरं त्विदम् [037.023]
इतीच्छाशतसरो ऽहं [037.023]
तेन दह्यामि दुर्मतिः [037.023]
जुहोमि यदि तन्नास्ति [037.024]
ददामि यदि सीदति [037.024]
कुटुम्बमिति मूढो ऽहम् [037.024]
तेन दह्यामि दुर्मतिः [037.024]
शीतोष्णवर्षाभिभवं [037.025]
लोभात्सोढःअं मयाशुभम् [037.025]
तदेव हि न धर्मार्थं [037.025]
तेन दह्यामि दुर्मतिः [037.025]
पितृदेवमनुष्याणाम् [037.026]
अदत्त्वापोषिता हि ये [037.026]
ते ऽन्यत्र क्वापि वर्तन्ते [037.026]
दह्याम्येको ऽत्र दुर्मतिः [037.026]
पुत्रभृत्यकलत्रेषु [037.027]
मम त्वादृतमानसः [037.027]
कृत्वा कर्माण्यसाधूनि [037.027]
दह्याम्येको ऽत्र दुर्मतिः [037.027]
मृते मयि धने तस्मिन्न् [037.028]
अन्यायोपार्जिते मया [037.028]
नूनं ममेति वर्तन्ते [037.028]
दह्याम्येको ऽत्र दुर्मतिः [037.028]
न हि नः पूजिता गेहान् [037.029]
निर्गता द्विजसत्तमाः [037.029]
स्ववर्गहितकामस्य [037.029]
तेन दह्याम्यहर्निशम् [037.029]
यन्मे न पूजिता देवाः [037.030]
कुटुम्बं पोषीतं परम् [037.030]
एकाकी तेन दह्यामि [037.030]
ये पुष्टास्ते ऽन्यतो गताः [037.030]
नित्यनैमित्तिकं कर्म [037.031]
कृते येषां न म कृतम् [037.031]
एकाकी तेन दह्यामि [037.031]
तैर्मन्ये क्वापि रम्यते [037.031]
यन्मे परिजनस्यार्थे [037.032]
कृतं कर्म शुभाशुभम् [037.032]
एकाकी तेन दह्यामि [037.032]
गतास्ते फलभोगिनः [037.032]
दाराः पुत्राश्च भृत्याश्च [037.033]
पापव्याप्त्या मयैधिताः [037.033]
एकाकी तेन दह्यामि [037.033]

गतास्ते फलभोगिनः [037.033]
पुत्रदारादिभृत्यार्थे [037.034]
मयान्यायार्थसंचयाः [037.034]
कृतास्तेनात्र दह्यामि [037.034]
भुञ्जते ऽप्यन्यतो गताः [037.034]
कृतं पापं मया भुक्तम् [037.035]
अन्यैस्तत्कर्मसंचितम् [037.035]
दह्याम्येको ऽहमत्यन्तं [037.035]
त्यक्तस्तैः फलभोगिभिः [037.035]
यन्ममत्वाभिभूतेन [037.036]
मया धनमुपार्जितम् [037.036]
अन्यस्य ते ऽद्य कस्यापि [037.036]
केवलं मम दुष्कृतम् [037.036]
अन्तर्दुःखेन दग्धो ऽन्तर् [037.037]
बहिर्दह्यामि भानुना [037.037]
नान्तर्दुःखं न वा भानुः [037.037]
पापमेव द्विधा स्थितम् [037.037]
कंचित्कर्मसमुद्धारं [037.038]
पश्यस्यसुखसागरात् [037.038]
मम येनाहमाह्लादम् [037.038]
आप्नुयां मुनिसत्तम [037.038]
अल्पकालिकमुद्धारं [037.039]
तव पश्याम्यसंशयम् [037.039]
प्रक्षीणप्रायमेतत्ते [037.039]
सुकृतं चास्ति ते परम् [037.039]
अतीते दशमे जन्मन्य् [037.040]
अच्युताराधनेच्छया [037.040]
सुकर्मजयदां भद्र [037.040]
द्वादशीं त्वमुपोषितः [037.040]
तव तस्याः प्रभावेण [037.041]
पापमत्यन्तदुर्जयम् [037.041]
अल्पैरहोभिः संक्षीणं [037.041]
नवपात्रे यथा जलम् [037.041]
यदन्यः क्षपयेद्वर्षैस् [037.042]
तद्दिनैर्भवतः क्षयम् [037.042]
गतं पापमयं तस्याः [037.042]
प्रभावो ऽत्यन्तदुर्लभः [037.042]
शमं पापस्य कुरुते [037.043]
जयं सुकृतकर्मणः [037.043]
सत्कर्मजयदा ह्येषा [037.043]
ततो वै द्वादशी स्मृता [037.043]
यच्चैतद्वेदनार्तेन [037.044]
भवता परिदेवितम् [037.044]
तत्तथा नात्र संदेहो [037.044]
ममता पापहेतुकी [037.044]
पापमत्र कृतं प्रेत्य [037.045]
भद्र तापाय जायते [037.045]
आह्लादाय तथा पुण्यम् [037.045]
इह पुण्यकृतां नृणाम् [037.045]
वीरभद्रं समाश्वास्य [037.046]
ययावित्थं महामुनिः [037.046]
सो ऽप्यल्पेनैव कालेन [037.046]
ततो मोक्षमवाप्तवान् [037.046]
एवं दाल्भ्य परे लोके [037.047]
यदत्रासुकृतं कृतम् [037.047]
तत्तापाय सुखायोक्तं [037.047]
यदत्रैव शुभं कृतम् [037.047]
उपवासप्रभावश्च [037.048]
कथितस्ते महामुने [037.048]
येनाल्पैरेव दिवसैर् [037.048]
भूरि पापं क्षयं गतम् [037.048]
तस्मान्नरेण पुण्याय [037.049]
पतितव्यं न पातके [037.049]
उपवासाश्च कर्तव्याः [037.049]
सदैवात्महितैषिणा [037.049]
संसारासारतां ज्ञात्वा [038.001]
विषयांश्चातितर्षुलान् [038.001]
कर्तव्यं यन्महाभाग [038.001]
पुरुषेण तदुच्यताम् [038.001]
संसारासारतां ज्ञात्वा [038.002]
विषयांश्चातितर्षुलान् [038.002]
गृद्धिस्तेष्वेव संत्याज्या [038.002]
तत्त्यागो गुणवान्नृणाम् [038.002]
येषामब्दसहस्राणां [038.003]
सहस्रैरपि नो नरः [038.003]
भोगात्तृप्तिं समाप्नोति [038.003]
कस्तैर्भोगैर्विरज्यते [038.003]
यावतो वाञ्छते भोगान् [038.004]
अहन्यहनि मानवः [038.004]
तेषां सहस्रभागे ऽपि [038.004]
दाल्भ्य प्राप्तिं न विन्दति [038.004]
अथ चेत्तनवाप्नोति [038.005]
सहस्रगुणितान्नरः [038.005]
तथाप्यतृप्त एवान्तम् [038.005]

अन्तकाले गमिष्यति [038.005]
तृप्तये ये न संप्राप्ताः [038.006]
प्राप्यन्ते ये न वाञ्छिताः [038.006]
बुद्धिमानिन्द्रियार्थेषु [038.006]
तेष्वसङ्गी सदा भवेत् [038.006]
येषां तृप्तिर्न भोगेन [038.007]
त्यागश्चैवोपकारकः [038.007]
उपोषितविधानेन [038.007]
भोगान्त्यागस्ततो वरः [038.007]
कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि [038.008]
नरैस्तस्मान्मुमुक्षुभिः [038.008]
निष्कामैर्दाल्भ्य कार्याणि [038.008]
फलाय च फलेप्सुभिः [038.008]
अत्राप्युदाहरन्तीमं [038.009]
मुनयो मुनिसत्तम [038.009]
दस्राभ्यां सह संवादम् [038.009]
ऐलस्य च महात्मनः [038.009]
ऐलः पुरूरवाः पूर्वं [038.010]
बभूव मनुजेश्वरः [038.010]
चकमे यं महाभागम् [038.010]
उर्वशी सुरसुन्दरी [038.010]
संत्यज्य त्रिदशावासं [038.011]
रूपौदार्यगुणान्वितम् [038.011]
भेजे तमुर्वशी दाल्भ्य [038.011]
बुधस्य तनयं नृपम् [038.011]
नासत्यदस्रौ रूपेण [038.012]
देवानामधिकौ ततः [038.012]
उर्वशीलोभनं तस्य [038.012]
रूपं द्रष्टुं समुत्सुकौ [038.012]
प्रतिष्ठानं पुरं तस्य [038.013]
बुधपुत्रस्य धीमतः [038.013]
जग्मतुः सुमहाभागौ [038.013]
तस्य द्वास्थमथोचतुः [038.013]
क्षत्तो ऽस्मद्वचनादैलं [038.014]
ब्रूहि त्वं वसुधाधिपम् [038.014]
द्रष्टुं तवाश्विनौ प्राप्तौ [038.014]
रूपसंपद्गुणं णॄप [038.014]
तदेह्यत्र महाभाग [038.014]
इहास्मान्संप्रवेशय [038.014]
आश्चर्यभूतं लोकेषु [038.015]
उर्वशीलोभनं वपुः [038.015]
तत्कौतुकं न कुरुते [038.015]
कस्य पार्थिवपुङ्गव [038.015]
आवां समागतौ तस्मात् [038.*(42)]
त्वां द्रष्टुं मनुजोत्तम [038.*(42)]
द्वास्थस्तथेति तावाह [038.016]
प्रविवेश च सत्वरम् [038.016]
आचचक्षे च तद्राज्ञे [038.016]
नासत्यवचनं द्विज [038.016]
तच्छ्रुत्वा वचनं राजा [038.017]
द्वास्थमाह मुहूर्तकम् [038.017]
विलम्ब्यतां महाभागौ [038.017]
तौ ब्रूहि वचनान्मम [038.017]
व्यायामतैलसंसर्ग- [038.018]
मलिनो न विभूषितः [038.018]
प्रसाधनं च कृत्वाहं [038.018]
निष्क्रमामि त्वरान्वितः [038.018]
निष्क्रम्य स ततो द्वास्थो [038.019]
यथोक्तं भूभृतखिलम् [038.019]
समाचष्ट ततो दाल्भ्य [038.019]
तौ च भूयस्तमूचतुः [038.019]
अप्रसाधितमेवाशु [038.020]
भवन्तं वसुधाधिप [038.020]
पश्यावस्तव भूयो ऽपि [038.020]
त्वां द्रक्ष्यावः प्रसाधितम् [038.020]
इत्युक्तो निर्गतस्तूर्णं [038.021]
भवनादवनीपतिः [038.021]
तैलाभ्यक्ततनुर्दाल्भ्य [038.021]
व्यायामपरिधानधृक् [038.021]
स प्रणामं तयोः कृत्वा [038.022]
किंचिन्नतशिरा नृपः [038.022]
प्रोवाच यन्मया कार्यं [038.022]
भवतोस्तदिहोच्यताम् [038.022]
सप्तद्वीपवती पृथ्वी [038.023]
पुत्रदारबलं धनम् [038.023]
यच्चान्यदपि तत्सर्वं [038.023]
युवयोर्मे निवेदितम् [038.023]
इत्युदाहृतमाकर्ण्य [038.024]
नृपतेरश्विनावपि [038.024]
अङ्गोपाङ्गादिकं सर्वं [038.024]
शनकैस्तावपश्यताम् [038.024]
शिरोललाटबाहुं स- [038.025]
नयनादिविलोकनम् [038.025]
कृत्वा च तं महीपालम् [038.025]

ऊचतुस्ताविदं सुरौ [038.025]
प्रविश्य स्नाहि भूपाल [038.026]
यथार्थैश्च विभूषणैः [038.026]
विभूषितं तु भूयस्त्वां [038.026]
द्रक्ष्यावो ऽवां नरेश्वर [038.026]
तथेति चोक्त्वा स नृपः [038.027]
प्रविवेश महामुने [038.027]
चक्रे च सकलं सम्यक् [038.027]
स्नात्वा देहप्रसाधनम् [038.027]
स्नातो ऽनुलिप्तः स्रग्धारी [038.028]
सुवस्त्रः सुविभूषितः [038.028]
नासत्यदस्रयोः पार्श्वम् [038.028]
इयाय वसुधाधिपः [038.028]
भूयो ऽपि तौ यथा पूर्वम् [038.029]
अङ्गोपाङ्गविलोकनम् [038.029]
चक्रतुर्नृपतेस्तस्य [038.029]
स्मितभिन्नौष्ठसंपुटौ [038.029]
तौ सहासौ समालक्ष्य [038.030]
स तदा वसुधाधिपः [038.030]
हासस्य कारणं देव- [038.030]
भिषजौ तावपृच्छत [038.030]
पृच्छन्तं न ततो दाल्भ्य [038.031]
नृपतिं हास्यकारणम् [038.031]
यदूचतुर्महाभागौ [038.031]
तच्छृणुष्व वदामि ते [038.031]
शृणु भूपाल सकलं [038.032]
हासकारणमावयोः [038.032]
युष्मद्दर्शनसंभूतं [038.032]
क्षणापचयहेतुकम् [038.032]
अस्नातस्याभवद्भूप [038.033]
यादृशी ते सुरूपता [038.033]
सांप्रतं तादृशी नेयं [038.033]
भूषितस्यापि भूषणैः [038.033]
स्नातः स्रग्दामधारी त्वं [038.034]
स्वनुलिप्तः सुभूषितः [038.034]
तथाप्यस्नात एव प्राच् [038.034]
शोभनो ऽभून्न सांप्रतम् [038.034]
किंतु तत्कारणं येन [038.035]
व्यायाममलिनाम्बरः [038.035]
शोभनो ऽहमभूत्पूर्वम् [038.035]
इदानीं न विभूषितः [038.035]
दिव्येन चक्षुषा भूप [038.036]
कालस्यास्य च तस्य च [038.036]
वयःपरिणतिं सूक्ष्मां [038.036]
पश्यावो ऽपचयप्रदाम् [038.036]
यथा हि नाडिका पूर्णा [038.037]
गलत्यविरतं नृप [038.037]
नृणां परिणतस्तद्वच् [038.037]
शरीरग्रहणादनु [038.037]
जन्मतो ऽनन्तरं बाल्यं [038.038]
पौगण्डत्वं ततः परम् [038.038]
यौवनं मध्यदेहित्वं [038.038]
वार्द्धकं च जरा नृणाम् [038.038]
स्थूलदृष्ट्या तु पश्यन्ति [038.038]
न तु ते सूक्ष्मदर्शिनः [038.038]
निमेषशतभागस्य [038.039]
सहस्रांशः क्षणो नृप [038.039]
तस्याप्ययुतभागांशो [038.039]
भवत्यपचयो नृणाम् [038.039]
सूक्ष्मातिसूक्ष्मापचयी [038.040]
भवत्येष पुमान्नृप [038.040]
परिणामं क्रमाद्याति [038.040]
तृप्तिं वारि पिबन्निव [038.040]
तदहर्जातबाल्यस्य [038.041]
बालस्यापचयो हि सः [038.041]
प्रतिक्षणांशया वृद्धिर् [038.041]
बालत्वं हीयते तया [038.041]
पौगण्डे यौवने चैव [038.042]
वार्द्धके च महामते [038.042]
हानिक्रमः स एवोक्तो [038.042]
यो बाल्ये कथितस्तव [038.042]
कान्तिर्या नृप बालस्य [038.043]
पोगण्डस्य हि सा कुतः [038.043]
तत्कान्तिसौकुमार्याद्यैः [038.043]
शून्यमेव हि यौवनम् [038.043]
कान्त्यादिसंपदो हानिः [038.044]
परमा नृप वार्द्धके [038.044]
तत्राप्यनुक्षणं हानिर् [038.044]
हानिरा मृत्युतो नृप [038.044]
एवं प्रतिक्षणांशांशो [038.045]
नृणामपचयप्रदः [038.045]
कुर्वतः किमु कालस्ते [038.045]
महास्नानप्रसाधनम् [038.045]
अस्मद्दृष्टो भवान्यावत् [038.046]

प्रविष्टो निजमन्दिरम् [038.046]
तावद्धानिमनुप्राप्तः [038.046]
किमु यामार्धसंस्थितः [038.046]
यादृशो ऽद्य भवांस्तादृक् [038.047]
त्वं न रूपी नरेश्वर [038.047]
परश्वः शस्तनं नैव [038.047]
चतुर्थे ऽह्नि च तन्मयः [038.037]
एवं समस्तभूतानि [038.048]
स्थावराणि चराणि च [038.048]
प्रतिक्षणांशापचयं [038.048]
प्राप्नुवन्ति महीतले [038.048]
तस्मान्न कौतुकं कार्यं [038.049]
भवता तु नरेश्वर [038.049]
यत्ते रूपमभूत्पूर्वम् [038.049]
अप्रसाधितशोभनम् [038.049]
राजा पुरूरवा भूयः [038.050]
श्रुत्वा वाक्यमिदं तयोः [038.050]
चिन्तयित्वा वचः प्राह [038.050]
संवेगोत्कम्पिमानसः [038.050]
अहो भवद्भ्यां कथितम् [038.051]
अनवस्थितसंस्थितम् [038.051]
स्वरूपं जगतो देवौ [038.051]
येन त्रस्तो ऽस्मि सांप्रतम् [038.051]
अज्ञानतिमिरान्धानां [038.052]
मद्विधानां भवद्विधाः [038.052]
प्रदीपभूताः संदेहो [038.052]
विद्यते नात्र कश्चन [038.052]
सदापचयदोषेण [038.053]
दुष्टकायैः सुरोत्तमौ [038.053]
यत्कार्यं पुरुषैस्तच्च [038.053]
कथ्यतां हितकाम्यया [038.053]
अतिमूढो ऽध्रुवे काये [038.054]
सदापचयधर्मिणि [038.054]
नरस्तदुपभोग्यानि [038.054]
ध्रुवाणि परिमार्गति [038.054]
आसनं शयनं यानं [038.055]
परिधानं गृहादिकम् [038.055]
वाञ्छत्यहो ऽतिमोहेन [038.055]
सुस्थिरं स्वयमस्थिरः [038.055]
मूढो ऽध्रुवं ध्रुवमतिः [038.056,*(43)]
किमात्मानं न बुध्यते [038.056,*(43)]
बाल्यात्पौगण्डतां गत्वा [038.056]
यः पुनर्यौवनं गतः [038.056]
भुवः शैलं समारूढः [038.057]
समारूढस्ततो द्रुमम् [038.057]
आरोहणं स किमन्यद् [038.057]
ऋक्षभीतः करिष्यति [038.057]
बाल्यात्पौगण्डतां यातो [038.058]
यौवनाद्वृद्धतां गतः [038.058]
वयोऽवस्था ततः कान्या [038.058]
यद्भोगाय स्थिरेच्छकः [038.058]
तस्मादेतन्मनुष्येण [038.059]
विचार्यात्महितैषिणा [038.059]
श्रेयस्यामुष्मिके यत्नः [038.059]
कर्तव्यो ऽहर्निशं नृप [038.059]
भोगेष्वसक्तिः सततं [038.060]
तथैवात्मावलोकनम् [038.060]
श्रेयः परं मनुष्याणां [038.060]
कपिलः प्राह पार्थिवः [038.060]
सर्वत्र समदर्शित्वं [038.061]
निर्ममत्वमसङ्गिता [038.061]
श्रेयः परं मनुष्याणां [038.061]
प्राह पञ्चशिखो मुनिः [038.061]
आगर्भजन्मबाल्यादि- [038.062]
वयोऽवस्थादिवेदनम् [038.062]
श्रेयः परं मनुष्याणाम् [038.062]
अङ्गारिष्ठो ऽब्रवीन्नृपः [038.062]
अध्यात्मिकादिदुःखानाम् [038.063]
अत्यन्तादिप्रतिक्रिया [038.063]
श्रेयः परं मनुष्याणां [038.063]
जनको ह्याह मोक्षवित् [038.063]
अभिन्नयोर्भेदकरः [038.064]
प्रत्ययो यः परात्मनोः [038.064]
हिरण्यगर्भस्तच्छान्तिं [038.064]
श्रेयः परममब्रवीत् [038.064]
कर्तव्यमिति यत्कर्म [038.065]
ऋग्यजुःसामसंज्ञितम् [038.065]
क्रियते तत्परं श्रेयो [038.065]
जैगीषव्यो ऽब्रवीन्मुनिः [038.065]
हानिं सर्वविधित्सानाम् [038.066]
आत्मनः सुखहेतुकीम् [038.066]
श्रेयः परं मनुष्याणां [038.066]
देवलो ऽप्याह तत्त्ववित् [038.066]
यद्यत्त्यजति कामानां [038.067]

तत्सुखस्याभिपूर्यते [038.067]
एतदेव परं श्रेयो [038.067]
विज्ञानं हितकामिनाम् [038.067]
कामानुसारी पुरुषः [038.068]
कामाननु विनश्यति [038.068]
अश्रेयसं परं चैतद् [038.068]
यद्रूपालातिकामिता [038.068]
एवं विज्ञाततत्त्वार्थः [038.069]
सनको योगिनां वरः [038.069]
नरेन्द्र प्राह विप्राणां [038.069]
परमार्थपरंपरम् [038.069]
क्रियाकलापफलदम् [038.070]
ऋग्यजुःसामसंज्ञितम् [038.070]
अमुष्मिन्मध्यमं श्रेयः [038.070]
प्राहुः सप्त र्षयो नृप [038.070]
इहैव फलदं काम्यं [038.071]
कर्म यत्क्रियते नरैः [038.071]
तदाहुरपरं श्रेयो [038.071]
ऋचीकच्यवनादयः [038.071]
द्वे कर्मणी नरश्रेष्ठ [038.072]
ब्रह्मणा समुदाहृते [038.072]
प्रवृत्ताख्यं निवृत्तं च [038.072]
स्वर्गमुक्तिफले हि ते [038.072]
प्रवृत्तमपि मोक्षाय [038.073]
कर्म पार्थिव जायते [038.073]
कर्म स्वरूपतो भ्रष्टम् [038.073]
अनाकाङ्क्ष्य फलं कृतम् [038.073]
सामान्यं चापरं श्रेयः [038.074]
सर्ववर्णाश्रमेषु यत् [038.074]
तच्छृणुष्व महीपाल [038.074]
वदतो मम तत्त्वतः [038.074]
सत्यं वक्तव्यं नित्यं मैत्रेण भाव्यं [038.075]
कार्यं च त्याज्यं नित्यमायासकारि [038.075]
लोके ऽमुष्मिन्यद्धितं च तथास्मिंस् [038.075]
तस्मिन्नात्मा योजनीयो ऽनुधीरैः [038.075]
तीर्थस्नानैः सोपवासैरजस्रं [038.076]
पात्रे दानैर्होमजापैश्च नित्यम् [038.076]
शुद्धिर्नेयो देवताभ्यर्चनैश्च [038.076]
शुद्धो ऽप्यात्मा सङ्गदोषादशुद्धः [038.076]
शुद्धं वस्त्रं सङ्गदोषादशुद्धं [038.077]
भूयः शुद्धिं शोध्यमानं पर्याति [038.077]
एतज्ज्ञात्वा न प्रमादो मनुष्यैः [038.077]
शुद्धे ह्यात्मन्यात्मविद्भिर्विधेयः [038.077]
इत्युक्त्वा तौ नरेन्द्रं तौ [038.078]
तेन चार्घ्यादिना पृथक् [038.078]
सम्यक्संपूजितौ यातौ [038.078]
नाक पृष्ठमथाश्विनौ [038.078]
स चाप्यनित्यतामेवम् [038.079]
अवगम्य नरेश्वरः [038.079]
निष्कामो ऽनुदिनमेव [038.079]
अवगम्य नरेश्वरः [038.079]
निष्कामो ऽनुदिनं यज्ञैर् [038.079]
इयाज पुरुषोत्तमम् [038.079]
भोगासङ्गि मनो दाल्भ्य [038.080]
यदासीत्तस्य भूपतेः [038.080]
तदेव भगवद्ध्यान- [038.080]
परं चक्रे महामुने [038.080]
तत्याजार्थेषु ममताम् [038.081]
अहंकारं तथात्मनि [038.081]
समतां सर्वभूतेषु [038.081]
संप्राप पृथिवीपतिः [038.081]
यस्यात्मन्यपि विप्रर्षे [038.082]
नाहंमानो ऽस्ति कुत्रचित् [038.082]
मदावलेपो पूपादौ [038.082]
तस्य स्यादिति का कथा [038.082]
एवं दाल्भ्य मनुष्येण [038.083]
समतामनुतिष्ठता [038.083]
सर्वभोगेषु संत्याज्यो [038.083]
ध्येयश्च पुरुषोत्तमः [038.083]
कुत्र तिष्ठति गोविन्दो [038.084]
बाह्यनिवृतचेतसि [038.084]
तस्मान्निःसङ्गचित्तेन [038.084]
शक्यश्चिन्तयितुं हरिः [038.084]
प्रीतिद्वेषादयस्त्यक्त्वा [038.085]
महर्षे यस्य चेतसा [038.085]
प्रियातिथिस्तद्धृदये [038.085]
विष्णुर्मोक्षफलप्रदः [038.085]
कार्यारम्भेषु सर्वेषु [039.001]
दुःस्वप्नेषु च सत्तम [039.001]
अमङ्गल्येषु सर्वेषु [039.001]
यज्जप्तव्यं तदुच्यताम् [039.001]
येनारम्भाश्च सिध्यन्ति [039.002]
दुःस्वप्नं चोपशाम्यति [039.002]
अमङ्गलानां सर्वेषां [039.002]

प्रतिघातश्च जायते [039.002]
जनार्दनं भूतपतिं जगद्गुरुं [039.003]
स्मरन्मनुष्यः सततं महामुने [039.003]
दुष्टान्यशेषाण्यपहन्ति साधयत्य् [039.003]
अशेषकार्याणि तथा यदीच्छति [039.003]
शृणुष्व चान्यद्वदतो ममाखिलं [039.004]
वदामि यत्ते द्विजवर्य मङ्गलम् [039.004]
सर्वार्थसिद्धिं प्रददाति यः सदा [039.004]
निहन्त्यशेषाणि च पातकानि [039.004]
प्रतिष्ठितं यत्र जगच्चराचरं [039.005]
जगच्च यो यो जगतश्च हेतुः [039.005]
जगच्च पात्यत्ति च यः स सर्वदा [039.005]
ममास्तु मङ्गल्यविवृद्धये हरिः [039.5-44]
व्योमाम्बुवाय्वग्निमहीस्वरूपैर् [039.006]
विस्तारवान्यो ऽणुतरो ऽणुभागात् [039.006]
स स्थूलसूक्ष्मः सततेश्वरेश्वरो [039.006]
यस्मात्परस्तात्पुरुषादनन्ताद् [039.007]
अनादिमध्यादखिलं न किंचित् [039.007]
स हेतुहेतुः परमेश्वरेश्वरो [039.007]
हिरण्यगर्भाच्युतरुद्ररूपी [039.008]
सृजत्यशेषं परिपाति हन्ति [039.008]
गुणाश्रयी यो भगवान्स सर्वदा [039.008]
परः सुराणां परमो ऽसुराणां [039.009]
परो मुनीनां परमो यतीनाम् [039.009]
परः समस्तस्य च यः स देवो [039.009]
ध्यातो यतीनामपकल्मषैर्यो [039.010]
ददाति मुक्तिं परमेश्वरेश्वरः [039.010]
मनोभिराद्यः पुरुषः स सर्वदा [039.010]
सुरेन्द्रवैवस्वतवित्तपाम्बुप- [039.011]
स्वरूपरूपी परिपाति यो जगत् [039.011]
स शुद्धसत्त्वः परमेश्वरेश्वरो [039.011]
यन्नामकीर्तनतो विमुच्यते [039.012]
अनेकजन्मार्जितपापसंचयैः [039.012]
पापेन्धनाग्निः स सदैव निर्मलो [039.012]
येनोद्धृतेयं धरणी रसातलाद् [039.013]
अशेषसत्त्वस्थितिकारणादिदम् [039.013]
बिभर्ति विश्वं जगतः स मूलवान् [039.013]
पादेषु वेदा जठरे चराचरं [039.014]
रोमस्वशेषा मुनयो मुखे मखाः [039.014]
यस्येश्वरेशस्य स सर्वदा प्रभुर् [039.014]
समस्तयज्ञाङ्गमयं वपुर्विभोर् [039.015]
यस्याङ्गमीशेश्वरसंस्तुतस्य [039.015]
वराहरूपो भगवान्स सर्वदा [039.015]
विक्षोभ्य सर्वोदधितोयसंपदं [039.016]
दधार धात्रीं जगतश्च योद्भवः [039.016]
यज्ञेश्वरो यज्ञपुमान्स सर्वदा [039.016]
पातालमूलेश्वरभोगिसंहतौ [039.017]
विन्यस्य पादौ पृथिवीं च बिभ्रतः [039.017]
यस्योपमानं न बभूव सो ऽच्युतो [039.017]
विघर्घरं यस्य च बृंहतो मुहुः [039.018]
सनन्दनाद्यैर्जनलोकसंस्थितैः [039.018]
श्रुतं जयेत्युक्तिपरैः स सर्वदा [039.018]
एकार्णवाद्यस्य महीयसो महीम् [039.019]
आदाय वेगेन समुत्पतिष्यतः [039.019]
नुतं वपुर्योगिवरैः स सर्वदा [039.019]
हतो हिरण्याक्षमहासुरः पुरा [039.020]
पुराणपुंसा परमेण येन [039.020]
वराहरूपः स पतिः प्रजापतेर् [039.020]
दंष्ट्राकरालं सुरभीतिनाशनं [039.021]
कृत्वा वपुर्दिव्यनृसिंहरूपिणं [039.021]
त्रातं जगद्येन स सर्वदा प्रभुर् [039.021]
दैत्येन्द्रवक्षःस्थलदारदारुणैः [039.022]
करोरुहैः शत्रुरुजानुकारिभिः [039.022]
चिच्छेद लोकस्य भयानि चाव्ययो [039.022]
दन्तान्तदीप्तिद्युतिनिर्मलाणि [039.023]
चकार सर्वाणि दिशां मुखानि [039.023]
निनादवित्रासितदानवो ह्यसौ [039.023]
यन्नामसंकीर्तनतो महाभयाद् [039.024]
विमोक्षमाप्नोति न संशयं नरः [039.024]
समस्तलोकार्तिहरो नृकेसरी [039.024]
सटाकलापभ्रमणानिलहताः [039.025]
स्फुटन्ति यस्याम्बुधराः समन्ततः [039.025]
स दिव्यसिंहः स्फुरिताकुलेक्षणो [039.025]
यदीक्षणज्योतिषि रश्मिमण्डलं [039.026]
प्रलीनमेव न रराज भास्वतः [039.026]
कुतः शशाङ्कस्य स सिंहरूपधृङ् [039.026]
द्रवन्ति दैत्याः प्रणमन्ति देवता [039.027]
नश्यन्ति रक्षांस्यपयान्ति चारयः [039.027]
यत्कीर्तनात्सो ऽद्भुतरूपकेसरी [039.027]
अशेषदेवेशनरेश्वरेश्वरैः [039.028]
सदा स्तुतं यच्चरितं महाद्भुतम् [039.028]
स सर्वलोकार्तिहरो महाहरिर् [039.028]
ऋक्कारितं यो यजुषातिशान्तिमत् [039.029]
सामध्वनिध्वस्तसमस्तपातकम् [039.029]

चक्रे जगद्वामनकः स सर्वदा [039.029]
यत्पादविन्यासपवित्रतां मही [039.030]
ययौ वियद्गग्यजुषामुदीरणात् [039.030]
स वामनो दिव्यशरीरधृक्सदा [039.030]
यस्मिन्प्रयाते सुरभूभृतो ऽध्वरं [039.031]
ननाम खेदादवनिः ससागरा [039.031]
स वामनः सर्वजगन्मयः सदा [039.031]
महाद्युतौ दैत्यपतेर्महाध्वरं [039.032]
यस्मिन्प्रविष्टे क्षुभितं महासुरैः [039.032]
स वामनो ऽन्तस्थितसप्तलोकधृङ् [039.032]
समस्तदेवेष्टिमयं महाद्युतिर् [039.033]
दधार यो रूपमतीन्द्रियं प्रभुः [039.033]
त्रिविक्रमाक्रान्तजगत्त्रयः सदा [039.033]
सङ्घैः सुराणां दिवि भूतले स्थितैस् [039.034]
तथा मनुष्यैर्गगने स सर्वदा [039.034]
स्तुतः क्रमाद्यः प्रददे स सर्वदा [039.034]
क्रान्त्वा धरित्रीं गगनं तथा दिवं [039.035]
मरुत्पतेर्यः प्रददौ त्रिविष्टपम् [039.035]
स देवदेवो भुवनेश्वरेश्वरो [039.035]
अनुग्रहं चापि बलेरनुत्तमं [039.036]
चकार यश्चेन्द्रपदोपलक्षणं [039.036]
सुरांश्च यज्ञस्य भुजः स सर्वदा [039.036]
रसातलाद्येन पुरा समाहृताः [039.037]
समस्तवेदा वरवाजिरूपिणा [039.037]
स कैटभारिर्मधुसूदनो महान् [039.037]
निःक्षत्रियां यश्च चकार मेदिनीम् [039.038]
अनेकशो बाहुवनं तथाछिनत् [039.038]
यः कार्तवीर्यस्य स भार्गवोत्तमो [039.038]
निहत्य वालिं च कपीश्वरं हि यो [039.039]
निबध्य सेतुं जलधौ दशाननम् [039.039]
जघान चान्यान्रजनीचरानसौ [039.039]
चिक्षेप बालः शकटं बभञ्ज यो [039.040]
यमलार्जुनौ कंसमरिं जघान [039.040]
ममर्द चाणूरमुखं स सर्वदा [039.040]
प्रातः सहस्रांशुमरीचिनिर्मलं [039.041]
करेण बिभ्रद्भगवान्सुदर्शनम् [039.041]
कौमोदकीं चापि गदामनुत्तमां [039.041]
हिमेन्दुकुन्दस्फटिकाभ्रकोमलं [039.042]
मुखानिलापूरितमीश्वरेश्वरः [039.042]
मध्याह्नकाले च स शङ्खमुत्तमम् [039.042]
तथापराह्णे प्रविकासिपङ्कजं [039.043]
वक्षःस्थलेन श्रियमुद्वहद्विभुः [039.043]
विस्तारिपद्मोत्पलपत्रलोचनो [039.043]
सर्वेषु कालेषु समस्तदेशेष्व् [039.044]
अशेषकार्येषु तथेश्वरेश्वरः [039.044]
सर्वैः स्वरूपैर्भगवाननादिमान् [039.044]
एतत्पठन्दाल्भ्य समस्तपापैर् [039.045]
विमुच्यते विष्णुपरो मनुष्यः [039.045]
सिध्यन्ति कार्याणि तथास्य सर्वाण्य् [039.045]
अर्थानवाप्नोति तथा यथेष्टम् [039.045]
दुःस्वप्नं प्रशममुपैति पठ्यमाने [039.046]
स्तोत्रे ऽस्मिञ्श्रवणविधौ सदोत्थितस्य [039.046]
प्रारम्भो द्रुतमुपयाति सिद्धिमीशः [039.046]
पापानि क्षपयति चास्य वासुदेवः [039.046]
मङ्गल्यं परममिदं सदार्थसिद्धिं [039.047]
निर्विघ्नं त्वधिकफलं सदा ददाति [039.047]
किं लोके तदिह परत्र चास्ति पुंसाम् [039.047]
यद्विष्णुप्रवणधिया न दाल्भ्य साध्यम् [039.047]
देवेन्द्रस्त्रिभुवनमर्थमेकपिङ्गः [039.048]
सर्वर्द्धिं त्रिभुवनगां च कार्तवीर्यः [039.048]
वैदेहः परमपदं प्रसाद्य विष्णुं [039.048]
संप्राप्तः सकलफलप्रदो हि विष्णुः [039.048]
सर्वारम्भेषु दाल्भ्यैतद् [039.049]
दुःस्वप्नेषु च पण्डितः [039.049]
जपेदेकमतिर्विष्णौ [039.049]
तथामङ्गल्यदर्शने [039.049]
शमं प्रयान्ति दुष्टानि [039.050]
ग्रहपीडाश्च दारुणाः [039.050]
कर्मारम्भाश्च सिध्यन्ति [039.050]
पुण्यमाप्नोति चोत्तमम् [039.050]
हरिर्ददाति भद्राणि [039.051]
मङ्गल्यस्तुतिसंस्तुतः [039.051]
करोत्यखिलरूपैश्च [039.051]
रक्षामक्षतशक्तिधृक् [039.051]
कुर्वीत किं पुमान्स्थानं [040.001]
कः पुमान्ब्रह्मणो बलम् [040.001]
ब्रह्मणश्च कथं भेदो [040.001]
ज्ञेयो ऽभिन्नफलप्रदः [040.001]
स्वकर्मणा धनं लब्ध्वा [040.002]
नित्यनैमित्तिकाः क्रियाः [040.002]
कुर्वीत शुद्धिमास्थाय [040.002]
स्वेच्छया च तथा परः [040.002]
त्यक्त्वा रागादिकान्दोषान् [040.003]
समः सर्वत्र वै भवेत् [040.003]

सर्वत्र मैत्रीं कुर्वीत [040.003]
दद्यादिष्टानि चार्थिनाम् [040.003]
कुर्याद्दीनेषु करुणां [040.004]
दुःशीलान्परिवर्जयेत् [040.004]
मुदितां धर्मशीलेषु [040.004]
भावनां मुनिसत्तम [040.004]
एकत्र वा जगन्नाथे [040.005]
भावनां पुरुषोत्तमे [040.005]
निःशेषार्थमलापेतां [040.004]
शुद्धां कुर्वीत पण्डितः [040.005]
शरीरबाह्यतां शश्वद् [040.006]
धिंसां कुर्वीत न क्वचित् [040.006]
निन्दावमानमन्येषां [040.006]
यच्चान्यदुपघातकम् [040.006]
शरीरवाङ्मनःशुद्धिं [040.007]
कुर्वीत च सदात्मनः [040.007]
भूतानामुपकारश्च [040.007]
तपोभिश्चात्मकर्षणम् [040.007]
एष धर्मः समासेन [040.008]
दाल्भ्याख्यातो मया तव [040.008]
अधर्मश्चायमेवोक्तो [040.008]
विपरीतो मनीषिभिः [040.008]
एते यत्र गुणाः पूर्वं [040.009]
कथिता ज्ञानसंयुताः [040.009]
ब्रह्मणः साश्रयः शुद्ध [040.009]
उपचारात्तदेव सः [040.009]
एकस्यैव सतस्तस्य [040.010]
ब्रह्मणो द्विजसत्तम [040.010]
नाम्नां बहुत्वं लोकानाम् [040.010]
उपकारकरं शृणु [040.010]
निमित्तशक्तयो नाम्नो [040.011]
भेदतस्तदुदीरणात् [040.011]
विभिन्नान्येव साध्यन्ते [040.011]
फलानि कुरुनन्दन [040.011]
यच्छक्ति नाम तत्तस्य [040.012]
तत्तस्मिन्नेव वस्तुनि [040.012]
साधकं पुरुषव्याघ्र [040.012]
सौम्यक्रूरेषु वस्तुषु [040.012]
वासुदेवाच्युतानन्त- [040.013]
सत्याज्यपुरुषोत्तमैः [040.013]
परमात्मेश्वराद्यैश्च [040.013]
स्तुतो नामभिरव्ययः [040.013]
निमित्तभावं भगवान् [040.014]
विमुक्तेर्यात्यधोक्षजः [040.014]
तथान्यकार्यसंसिद्धौ [040.014]
यद्यत्तत्तन्निशामय [040.014]
धनकृद्धर्मकृद्धर्मी [040.015]
धर्मात्मा विश्वकृच्छुचिः [040.015]
शुचिषद्विष्णुरब्जाक्षः [040.015]
पुष्कराक्षो ह्यधोक्षयः [040.015]
शुचिश्रवाः शिपिविष्टो [040.015]
यज्ञेशो यज्ञभावनः [040.015]
नाम्नामित्येवमादीनां [040.016]
समुच्चारणतो नरः [040.016]
धर्मं महान्तमाप्नोति [040.016]
पापबन्धक्षयं तथा [040.016]
तथार्थप्राप्तये ब्रह्मन् [040.017]
देवनामानि मे शृणु [040.017]
येषां समुच्चारणतो [040.017]
वित्तमाप्नोति भक्तिमान् [040.017]
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः [040.018]
श्रीधरः श्रीनिकेतनः [040.018]
श्रियः पतिः श्रीपरमः [040.018]
श्रीमाञ्श्रीवत्सलाञ्छनः [040.018]
नृसिंहो दुष्टदामनो [040.019]
जयो विष्णुस्त्रिविक्रमः [040.019]
स्तुतः प्रयच्छते चार्थम् [040.019]
एवमादिभिरच्युतः [040.019]
काम्यः कामप्रदः कान्तः [040.020]
कामपालस्तथा हरिः [040.020]
आनन्दो माधवश्चैव [040.020]
कामसंसिद्धये नृप [040.020]
रामः परशुरामश्च [040.021]
नृसिंहो विष्णुरेव च [040.021]
विक्रमश्चैवमादीनि [040.021]
जप्यान्यरिजिगीषुभिः [040.021]
विद्यामभ्यसता नित्यं [040.022]
जप्तव्यः पुरुषोत्तमः [040.022]
दामोदरं बन्धगतो [040.022]
नित्यमेव जपन्नरः [040.022]
केशवं पुण्डरीकाक्षं [040.023]
पुष्कराक्षं तथा जपेत् [040.023]
नेत्रबाधासु सर्वासु [040.023]
हृषीकेशं भयेषु च [040.023]

अच्युतं चामृतं चैव [040.024]
जपेदौषधकर्मणि [040.024]
भ्राजिष्णुमग्निहानौ च [040.024]
जपेदालम्बने स्थितम् [040.024]
संग्रामाभिमुखं गच्छन् [040.025]
संस्मरेदपराजितम् [040.025]
पातालनरसिंहं च [040.025]
जलप्रतरणे स्मरेत् [040.025]
चक्रिणं गदिनं चैव [040.026]
शार्ङ्गिनं खड्गिनं तथा [040.026]
क्षेमार्थे प्रसवन्राजन् [040.026]
दिक्षु प्राच्यादिषु स्मरेत् [040.026]
अजितं चाधिकं चैव [040.027]
सर्वं सर्वश्वरं तथा [040.027]
संस्मरेत्पुरुषो भक्त्या [040.027]
व्यवहारेषु सर्वदा [040.027]
नारायणं सर्वकालं [040.028]
क्षुतप्रस्खलितादिषु [040.028]
ग्रहनक्षत्रपीडासु [040.028]
देवबाधाटवीषु च [040.028]
अस्युवैरिनिरोधेषु [040.029]
व्याघ्रसिंहादिसंकटे [040.029]
अन्धकारे च तीव्रे च [040.029]
नरसिंहमनुस्मरेत् [040.029]
तरत्यखिलदुर्गाणि [040.029]
तापार्तो जलशायिनम् [040.029]
गरुडध्वजानुस्मरणाद् [040.030]
आपद्भ्यो मुच्यते नरः [040.030]
ज्वरदुष्टशिरोरोग- [040.030,*(44)]
विषवीर्यं प्रशाम्यति [040.030,*(44)]
स्नाने देवार्चने होमे [040.031]
प्रणिपाते प्रदक्षिणे [040.031]
कीर्तयेद्भगवन्नाम [040.031]
वासुदेवेति तत्परः [040.031]
स्थगने वित्तधान्यादेर् [040.032]
अपध्याने च दुष्टजे [040.032]
कुर्वीत तन्मना भूत्वा [040.032]
अनन्ताच्युतकीर्तनम् [040.032]
नारायणं शार्ङ्गधरं [040.033]
श्रीधरं पुरुषोत्तमम् [040.033]
वामनं खड्गिनं चैव [040.033]
दुःस्वप्नेषु च संस्मरेत् [040.033]
एकार्णवाहिपर्यङ्क- [040.034]
शायिनं च नरः स्मरेत् [040.034]
वाय्वग्नीगृहदाहाय [040.034]
प्रवृद्धावुपलक्ष्य च [040.034]
विद्यार्थी मोहविभ्रान्ति- [040.035]
वेगाघूर्णितमानसः [040.035]
मनुष्यो मुनिशार्दूल [040.035]
सदाश्वशिरसं स्मरेत् [040.035]
बलभद्रं समृद्ध्यर्थी [040.036]
सीरकर्मणि कीर्तयेत् [040.036]
जगत्सूतिमपत्यार्थी [040.036]
स्तुवन्भक्त्या न सीदति [040.036]
जप्तव्यं सुप्रजाख्यं तु [040.037]
देवदेवस्य सत्तम [040.037]
दम्पत्योरात्मसंबन्धे [040.037]
विवाहाख्ये पुनः पुनः [040.037]
श्रीशं सर्वाभ्युदयिके [040.038]
कर्मणि संप्रकीर्तयेत् [040.038]
अरिष्टान्तेष्वशेषेषु [040.038]
विशोकं च सदा जपेत् [040.038]
मरुत्प्रतापाग्निजल- [040.039]
बन्धनादिषु मृत्युषु [040.039]
स्वातन्त्र्यपरतन्त्रेषु [040.039]
वासुदेवं जपेद्बुधः [040.039]
सर्वार्थशक्तियुक्तस्य [040.040]
देवदेवस्य चक्रिणः [040.040]
यद्वाभिरोचते नाम [040.040]
तत्सर्वार्थेषु कीर्तयेत् [040.040]
सर्वार्थसिद्धिमाप्नोति [040.041]
नाम्नामेकार्थता यतः [040.041]
सर्वाण्येतानि नामानि [040.041]
परस्य ब्रह्मणो ऽनघ [040.041]
एवमेतानि नामानि [040.042]
देवदेवस्य कीर्तयेत् [040.042]
यं यं काममभिध्यायेत् [040.042]
तं तमाप्नोत्यसंशयम् [040.042]
सर्वान्कामानवाप्नोति [040.042]
समाराध्य जगद्गुरुम् [040.042]
तन्मयत्वेन गोविन्दम् [040.043]
इत्येतद्दाल्भ्य नान्यथा [040.043]
तन्मयो वाञ्छितान्कामान् [040.043]
यदवाप्नोति मानवः [040.043]

निमित्तशक्तिः सा तस्य [040.044]
न भेदो दाल्भ्य मानसः [040.044]
वाङ्मनःकायिकं द्वेषं [040.044]
यच्च कुर्वन्प्रयात्यधः [040.044]
स्वरूपशक्तिः सा तस्य [040.045]
मतिभेदकृतं न तद् [040.045]
स शाक्तो निर्गुणः शुद्धो [040.045]
ब्रह्मभूतो जगद्गुरुः [040.045]
कर्मभिर्नामभिर्जीवो [040.046]
दृश्यते दाल्भ्य नैकधा [040.046]
यथा च गङ्गासलिलं [040.046]
सितमत्यन्तनिर्मलम् [040.046]
एकस्वरूपमध्यात्मं [040.047]
पुण्यापुण्यविभेदिभिः [040.047]
भ्रान्तिज्ञानान्वितैर्मिश्रं [040.047]
सितासितविचेष्टितैः [040.047]
दृश्यते नैकधा दाल्भ्य [040.047]
प्राणिभिर्भिन्नबुद्धिभिः [040.047]
तापार्तास्तापशमनम् [040.048]
अतिप्रीत्यतिशीतलम् [040.048]
कफदोषान्वितैर्नाति- [040.048]
प्रीतियुक्तैर्निरंशुभिः [040.048]
स्त्रीयोग्यमेतन्नेतीति [040.049]
प्रीत्यप्रीतिसमन्वितैः [040.049]
मध्यस्थबुद्ध्या चैवान्ये [040.049]
नातिशीतातितापिभिः [040.049]
पवित्रमित्येतदिति [040.050]
पुण्यबुद्ध्या तथापरैः [040.050]
मृष्टमेतदितीत्यन्यैर् [040.050]
मत्स्याढ्यमिति चापरैः [040.050]
तुल्यबुद्ध्यापि चैवान्यैर् [040.051]
हेयबुद्ध्या तथापरैः [040.051]
नातिवेगातिवेगं च [040.051]
हृष्टोद्विग्नैस्तथापरैः [040.051]
किमेतेनेति चैवान्यैः [040.052]
परदाराभिलाषिभिः [040.052]
दाल्भ्य संदृश्यते चान्यैर् [040.052]
जन्तुभिर्भायकातरैः [040.052]
तदेव पूयं पश्यन्ति [040.052]
प्रेताद्या हृतिपापिनः [040.052]
एतैश्चान्यैश्च बहुभिर् [040.053]
विशेषैर्बहुजन्तुभिः [040.053]
विशेषवत्कर्मभेदाद् [040.053]
एकमेव हि दृश्यते [040.053]
नैते गङ्गाम्भसो भेदाः [040.054]
प्रीत्यप्रीतिप्रदायिनः [040.054]
प्राणिनां चेतसो भेदाद् [040.054]
दाल्भ्यैते कर्मयोनयः [040.054]
समस्तकर्मणा दाल्भ्य [040.055]
संक्षये भयमेत्यसौ [040.055]
विशेषकारणाभावाद् [040.055]
विशेषाभाव एव हि [040.055]
विष्ण्वाख्यमेवं तद्ब्रह्म [040.056]
शुद्धमत्यन्तनिर्मलम् [040.056]
अभेदं बहुधा भिन्नं [040.056]
दृश्यते कर्मभेदिभिः [040.056]
योगिभिर्दृश्यते शुद्धं [040.057]
रागाद्युपशमामलैः [040.057]
रागिभिर्विषयाकारं [040.057]
तदेव ब्रह्म दृश्यते [040.057]
कर्ममार्गाश्रितैः कर्म- [040.058]
भोक्तृत्वे च तथेष्यते [040.058]
किमप्यस्तीति चैवान्यैर् [040.058]
अविवेकिभिरुच्यते [040.058]
सर्वमेतत्तदेवेति [040.059]
वदन्त्यद्वैतवादिनः [040.059]
प्रत्यक्षं दृश्यमेवेति [040.059]
वदन्त्यन्ये दुरुक्तिभिः [040.059]
वदन्त्यन्ये तदेवाहं [040.060]
नास्तीत्यन्ये वदन्ति तत् [040.060]
तिर्यङ्मनुष्यदेवाख्यं [040.060]
तदन्यैरभिधीयते [040.060]
वन्द्यबुद्ध्या तु तत्कैश्चिद् [040.061]
ध्येयबुद्ध्या तथापरैः [040.061]
गम्यबुद्ध्या तथान्यैश्च [040.061]
लभ्यबुद्ध्या च जन्तुभिः [040.061]
गृह्यते तत्परं ब्रह्म [040.062]
रिपुबुद्ध्या तथापरैः [040.062]
आत्मपुत्रसुहृद्भर्तृ- [040.062,*(45)]
परबुद्ध्या तथापरैः [040.*(45)]
परबुद्ध्या च नैकधा [040.062]
प्राणिभिः कर्मवैषम्य- [040.063]
भिन्नबुद्धिभिरव्ययम् [040.063]
तद्ब्रह्म गृह्यते दाल्भ्य [040.063]

परमार्थं निबोध मे [040.063]
भूतेन्द्रियान्तःकरण- [040.064]
प्रधानपुरुषात्मकम् [040.064]
अपरं ब्रह्मणो रूपं [040.064]
परं दाल्भ्य निशामय [040.064]
अहेयमक्षरं शुद्धम् [040.065]
असंभूतिनिरञ्जनम् [040.065]
विष्णवाख्यं परमं ब्रह्म [040.065]
यद्वै पश्यन्ति सूरयः [040.065]
यथैतद्भवता प्रोक्तं [041.001]
धर्मार्थादिस्तु साधनम् [041.001]
पत्नी नृणां मुनिश्रेष्ठ [041.001]
योषितस्च तथा नरः [041.001]
तच्छ्रोतुमिच्छे विप्रर्षे [041.002]
विधवा स्त्री न जायते [041.002]
उपोषीतेन येनाग्र्या [041.002]
पत्न्या च रहितो नरः [041.002]
अशून्यशयना नाम [041.003]
द्वितीयां शृणु तां मम [041.003]
यामुपोष्य न वैधव्यं [041.003]
प्रयाति स्त्री द्विजोत्तम [041.003]
पत्नीवियुक्तश्च नरो [041.004]
न कदाचित्प्रजायते [041.004]
शेते जगत्पतिः कृष्णः [041.004]
श्रिया सार्धं यदा द्विज [041.004]
अशून्यशयना नाम [041.005]
तदा ग्राह्या हि सा तिथिः [041.005]
कृष्णपक्षद्वितीयायां [041.005]
श्रावणे द्विजसत्तम [041.005]
इदमुच्चारयेन्नाम [041.006]
प्रणम्य जगतः पतिम् [041.006]
श्रीवत्सधारिणं श्रीशं [041.006]
भक्त्याभ्यर्च्य श्रिया सह [041.006]
श्रीवत्सधारिञ्श्रीकान्त [041.007]
श्रीधाम श्रीपते ऽच्युत [041.007]
गार्हस्थ्यं मा प्रणाशं मे [041.007]
यातु धर्मार्थकामदम् [041.007]
अग्नयो मा प्रणश्यन्तु [041.008]
मा प्रणश्यन्तु देवताः [041.008]
पितरो मा प्रणश्यन्तु [041.008]
मत्तो दाम्पत्यभेदतः [041.008]
लक्ष्म्या प्रयुज्यते देव [041.009]
न कदाचिद्यथा भवान् [041.009]
तथा कलत्रसंबन्धो [041.009]
देव मा मे विभिद्यताम् [041.009]
लक्ष्म्या न शून्यं वरद [041.010]
यथा ते शयनं सदा [041.010]
शय्या ममाप्यशून्यास्तु [041.010]
तथैव मधुसूदन [041.010]
एवं प्रसाद्य पूजां च [041.011]
कृत्वा लक्ष्म्यास्तथा हरेः [041.011]
फलानि दद्याच्छय्यायाम् [041.011]
अभीष्टानि जगत्पतेः [041.011]
नक्तं प्रणम्यायतने [041.012]
हविर्भुञ्जीत वाग्यतः [041.012]
ब्राह्मणाय द्वितीये ऽह्नि [041.012]
शक्त्या दद्याच्च दक्षिणाम् [041.012]
एवं करोति यः सम्यग् [041.013]
नरो मासचतुष्टयम् [041.013]
तस्य जन्मत्रयं दाल्भ्य [041.013]
गृहभङ्गो न जायते [041.013]
अशून्यशयनश्चासौ [041.014]
धर्मकर्मार्थसाधकः [041.014]
भवत्यव्याहतैश्वर्यः [041.014]
पुरुषो नात्र संशयः [041.014]
नारी च दाल्भ्य धर्मज्ञा [041.015]
व्रतमेतद्यथाविधि [041.015]
या करोति न सा शोच्या [041.015]
बन्धुवर्गस्य जायते [041.015]
वैधव्यं दुर्भगत्वं वा [041.016]
भर्तृत्यागं च सत्तम [041.016]
नाप्नोति जन्मत्रितयम् [041.016]
एतच्चीर्त्वा पतिव्रता [041.016]
उपवासाश्रितं सम्यग् [042.001]
लोकद्वयफलप्रदम् [042.001]
कथितं भवता सर्वं [042.001]
यत्पृष्टो ऽसि मया द्विज [042.001]
अन्यदिच्छाम्यहं श्रोतुं [042.002]
तद्भवान्प्रब्रवीतु मे [042.002]
संसारहेतुं मुक्तिं च [042.002]
संसारान्मुनिसत्तम [042.002]
अविद्याप्रभवं कर्म [042.003]
हेतुभूतं द्विजोत्तम [042.003]
संसारस्यास्य तन्मुक्तिः [042.003]

संक्षेपाच्छ्रूयतां मम [042.003]
स्वजातिविहितं कर्म [042.004]
लोभद्वेषविवर्जितम् [042.004]
कुर्वतः क्षीयते पूर्वं [042.004]
मन्युबन्धश्च नेष्यते [042.004]
अपूर्वसंभवाभवात् [042.005]
क्षयं यात्यादिकर्माणि [042.005]
दाल्भ्य संसारविच्छेदः [042.005]
कारणाभावसंभवः [042.005]
भवत्यसंशयं चान्यच् [042.006]
श्रूयतामत्र कारणम् [042.006]
संसारान्मुच्यते दाल्भ्य [042.006]
समासाद्वदतो मम [042.006]
गृहीतकर्मणा येन [042.007,*(46)]
पुंसां जातिर्द्विजोत्तम [042.007,*(46)]
तत्प्रायश्चित्तभूतं वै [042.007]
शृणु कर्मक्षयावहम् [042.007]
ब्राह्मणक्षत्रियविशां [042.008]
शूद्रान्त्यानां च सत्तम [042.008]
स्वजातिविहितं कर्म [042.008]
रागद्वेषादिवर्जितम् [042.008]
जातिप्रदस्य क्षयदं [042.009]
तदेवाद्यस्य कर्मणः [042.009]
ज्ञानकारणभावं च [042.009]
तदेव प्रतिपद्यते [042.009]
पुमांश्चाधिगतज्ञानो [042.010]
भेदं नाप्नोति सत्तम [042.010]
ब्रह्मणा विष्णुसंज्ञेन [042.010]
परमेणाव्ययात्मना [042.010]
एतत्ते कथितं दाल्भ्य [042.011]
संसारस्य समासतः [042.011]
कारणं भवमुक्तिश्च [042.011]
जायते योगिनो यथा [042.011]
इति दाल्भ्यः पुलस्त्येन [043.001]
यथावत्प्रतिबोधितः [043.001]
आराधयामास हरिं [043.001]
लेभे कामांश्च वाञ्छितान् [043.001]
तथा त्वमपि दैत्येन्द्र [043.002]
केशवाराधनं कुरु [043.002]
आराध्य तं जगन्नाथं [043.002]
न कश्चिदवसीदति [043.002]
इति शुक्रवचः श्रुत्वा [043.003]
प्रह्लादो मधुसूदनम् [043.003]
आराध्य प्राप्तवान्कृत्स्नं [043.003]
त्रैलोक्यैश्वर्यमूर्जितम् [043.003]
एतन्मयोक्तं सकलं [043.004]
तव भूमिप पृच्छतः [043.004]
अनाराध्याच्युतं देवं [043.004]
कः कामान्प्राप्नुते नरः [043.004]
अम्बरीसो नरपतिर् [043.005]
विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् [043.005]
श्रुत्वा बभूव सततं [043.005]
केशवार्पितमानसः [043.005]
एवं त्वमपि कौरव्य [043.006]
यदि मुक्तिमभीप्सयसि [043.006]
भोगान्वा विलुपान्देवात् [043.006]
तस्मादाराधयाच्युतम् [043.006]
ददाति वाञ्छितान्कामान् [043.007]
सकामैरर्चितो हरिः [043.007]
मुक्तिं ददाति गोविन्दो [043.007]
निष्कामैरभिपूजितः [043.007]
भगवानवतीर्णो ऽभून् [043.008]
मर्त्यलोकं जनार्दनः [043.008]
भारावतरणार्थाय [043.008]
भुवो भूतपतिर्हरिः [043.008]
मानुषत्वे च गोविन्दो [043.009]
मम पूर्वपितामहैः [043.009]
चकार प्रीतिमतुलां [043.009]
सामान्यपुरुषो यथा [043.009]
सारथ्यं कृतवांश्चैव [043.010]
तेषां सर्वेश्वरो हरिः [043.010]
निस्तीर्णो येन भीष्मौघो [043.010]
कुरुसैन्यमहोदधिः [043.010]
उपकारी महाभागः [043.011]
स तेषां सर्ववस्तुषु [043.011]
केशवः पाण्डुपुत्राणां [043.011]
सुतानां जनको यथा [043.011]
धन्यास्ते कृतपुण्याश्च [043.012]
मम पाण्डुसुता मताः [043.012]
विविशुर्ये परिष्वङ्गे [043.012]
गोविन्दभुजपञ्जरम् [043.012]
राज्यहेतोररीञ्जघ्नुर् [043.013]
अकस्मात्पाण्डुनन्दनाः [043.013]
सप्तलोकैकनाथेन [043.013]

ये ऽभवन्नेकशायिनः [043.013]
आत्मानमवगच्छामि [043.014]
भगवन्धूतकल्मषम् [043.014]
जातं निर्धूतपापे ऽस्मिन् [043.014]
कुले विष्णुपरिग्रहे [043.014]
एवं देववरस्तेषां [043.015]
प्रसादसुमुखो हरिः [043.015]
पृच्छतां कच्चिदाचष्टे [043.015]
किंचिद्गुह्यं महात्मनाम् [043.015]
गुह्यं जनार्दनं यांस्तु [043.016]
धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः [043.016]
पप्रच्छ धर्मानखिलांस् [043.016]
तन्ममाख्यातुमर्हसि [043.016]
धर्मार्थकाममोक्षेषु [043.017]
यद्गुह्यं मधुसूदनः [043.017]
तेषामवोचद्भगवाञ् [043.017]
श्रोतुमिच्छामि तत्त्वहम् [043.017]
बहूनि धर्मगुह्यानि [043.018]
धर्मपुत्राय केशवः [043.018]
पुरा प्रोवाच राजेन्द्र [043.018]
प्रसादसुमुखो हरिः [043.018]
शरतल्पगताद्भीष्माद् [043.019]
धर्माञ्श्रुत्वा युधिष्ठिरः [043.019]
पृष्टवान्यज्जगन्नाथं [043.019]
तन्मे निगदतः शृणु [043.019]
पञ्चमेनाश्वमेधेन [044.001]
यदा स्नातो युधिष्ठिरः [044.001]
तदा नारायणं देवं [044.001]
प्रश्नमेतमपृच्छत [044.001]
भगवन्वैष्णवा धर्माः [044.002]
किंफलाः किंपरायणाः [044.002]
किं कृत्यमधिकृत्यैते [044.002]
भवतोत्पादिताः पुरा [044.002]
यदि ते पाण्डुषु स्नेहो [044.003]
विद्यते मधुसूदन [044.003]
श्रोतव्याश्चेन्मया धर्मास् [044.003]
ततस्तान्कथयाखिलान् [044.003]
पवित्राश्चैव ये धर्माः [044.004]
सर्वपापप्रणाशनाः [044.004]
तव वक्त्राच्च्युता देव [044.004]
सर्वधर्मेष्वनुत्तमाः [044.004]
याञ्श्रुत्वा ब्रह्महा गोघ्नः [044.005]
पितृघ्नो गुरुतल्पगः [044.005]
सुरापो वा कृतघ्नश्च [044.005]
मुच्यते सर्वकिल्बिषैः [044.005]
एतन्मे कथितं सर्वं [044.006]
सभामध्ये ऽरिसूदन [044.006]
वसिष्ठाद्यैर्महाभागैर् [044.006]
मुनिभिर्भावितात्मभिः [044.006]
ततो ऽहं तव देवेश [044.007]
पादमूलमुपागतः [044.007]
धर्मान्कथय तान्देव [044.007]
यद्यहं भवतः प्रियः [044.007]
श्रुता मे मानवा धर्मा [044.008]
वासिष्ठाश्च महामते [044.008]
पराशरकृताश्चैव [044.008]
तथात्रेयस्य धीमतः [044.008]
श्रुता गार्ग्यस्य शङ्खस्य [044.009]
लिखितस्य यमस्य च [044.009]
जापालेश्च महाबाहो [044.009]
मुनेर्द्वैपायनस्य च [044.009]
उमामहेश्वराश्चैव [044.010]
जातिधर्माश्च पावनाः [044.010]
गुणेश्च गुणबाहोश्च [044.010]
काश्यपेयास्तथैव च [044.010]
बह्वायनकृताश्चैव [044.011]
शाकुनेयास्तथैव च [044.011]
अगस्त्यगीता मौद्गल्याः [044.011]
शाण्डिल्याः सौरभास्तथा [044.011]
भृगोरङ्गिरसश्चैव [044.012]
कश्यपोद्दालकास्तथा [044.012]
सौमन्तूग्रायणाग्राश्च [044.012]
पैलस्य च महात्मनः [044.012]
वैशम्पायनगीताश्च [044.013]
पिशङ्गमकृताश्च ये [044.013]
ऐन्द्राश्च वारुणाश्चैव [044.013]
कौबेरा वात्स्यपौणकाः [044.013]
आपस्तम्बाः श्रुता धर्मास् [044.014]
तथा गोपालकस्य च [044.014]
भृग्वङ्गिरःकृताश्चैव [044.014]
सौर्या हारीतकास्तथा [044.014]
याज्ञवल्क्यकृताश्चैव [044.014]
तथा सप्तर्षयश्च ये [044.014]
एताश्चान्याश्च विविधाः [044.015]

श्रुता मे धर्मसंहिताः [044.015]
भगवञ्श्रोतुमिच्छामि [044.015]
तव वक्राद्विनिःसृतान् [044.015]
एवमुक्तः स पार्थेन [044.016]
प्रत्युवाच जनार्दनः [044.016]
बहुमानाच्च प्रीत्या च [044.016]
धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् [044.016]
इष्टस्त्वं हि महाबाहो [044.017]
सदा मम युधिष्ठिर [044.017]
परमार्थं तव ब्रूयां [044.017]
किं पुनर्धर्मसंहिताम् [044.017]
परमज्ञानिभिः सिद्धैर् [044.018]
युञ्जद्भिरपि नित्यशः [044.018]
प्रशान्तस्येव दीपस्य [044.018]
गतिर्मम दुरत्यया [044.018]
सर्ववेदमयं ब्रह्म [044.019]
पवित्रमृषिभिः स्तुतम् [044.019]
कथयिष्यामि ते राजन् [044.019]
धर्मं धर्मभृताम्वर [044.019]
एवमुक्ते तु कृष्णेन [044.020]
ऋषयो ऽमिततेजसः [044.020]
समाजग्मुः सभामध्ये [044.020]
श्रोतुकामा हरेर्गिरम् [044.020]
देवगन्धर्वऋषयो [044.*(47)]
गुह्यकाश्च महायशाः [044.*(47)]
वालखिल्या महात्मानो [044.*(47)]
मुनयः संमितव्रताः [044.*(47)]
पावनान्सर्वधर्मेभ्यो [044.*(47)]
रहस्यान्द्विजसत्तम [044.*(47)]
वैष्णवानखिलान्धर्मान् [044.021]
यः पठेत्पापनाशनान् [044.021]
भवेयुरक्षयास्तस्य [044.021]
लोकाः सत्पुण्यभागिनः [044.021]
कृष्णदृष्टिहतं चास्य [044.022]
किल्बिषं संप्रणश्यति [044.022]
वैष्णवस्य च यज्ञस्य [044.022]
फलं प्राप्नोति मानवः [044.022]
कौतूहलसमाविष्टः [045.001]
पप्रच्छेदं युधिष्ठिरः [045.001]
यमलोकस्य चाध्वानम् [045.001]
अन्तरं मानुषस्य च [045.001]
कीदृशं किंप्रमाणं वा [045.002]
कथं वान्तं जनार्दन [045.002]
तरन्ति पुरुषाः कृष्ण [045.002]
केनोपायेन संशमे [045.002]
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा [045.003]
विस्मितो मधुसूदनः [045.003]
प्रत्युवाच महात्मानं [045.003]
धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् [045.003]
साधु साधुरयं प्रश्नः [045.004]
श्रूयतां भो युधिष्ठिर [045.004]
षडशीतिसहस्राणि [045.004]
योजनानां नराधिप [045.004]
यमलोकस्य चाध्वानम् [045.005]
अन्तरं मानुषस्य च [045.005]
ताम्रपात्रमिवातप्तं [045.005]
शूलव्यामिश्रकण्टकम् [045.005]
द्वादशादित्यसंकाशं [045.006]
भैरवं दुरतिक्रमम् [045.006]
न तत्र वृक्षा न च्छाया [045.006]
पानीयं केतनानि च [045.006]
यत्र विश्रमते श्रान्तः [045.007]
पुरुषो ऽध्वानको नृप [045.007]
याम्यैर्दूतैर्नीयमानो [045.007]
यमस्याज्ञाकरैर्बलात् [045.007]
अवश्यं च महाराज [045.008]
स गन्तव्यो महापथः [045.008]
नरैः स्त्रीभिस्तथा तिर्यैः [045.008]
पृथिव्यां जीवसंज्ञकैः [045.008]
एकविंशच्च नरका [045.009]
यमस्य विषये स्मृताः [045.009]
ये तु दुष्कृतकर्माणस् [045.009]
ते पतन्ति पृथक्पृथक् [045.009]
नरको रौरवो नाम [045.010]
महारौरव एव च [045.010]
क्षुरधारा महारौद्रः [045.010]
सूकरस्ताल एव च [045.010]
वज्रकुम्भो महाघोरः [045.011]
शाल्मलो ऽथ विमोहनः [045.011]
कीटादः कृमिभक्षश्च [045.011]
शाल्मलिश्च महाद्रुमः [045.011]
तथा पूयवहः पापा [045.012]
रुधिरान्धो महत्तमः [045.012]
अग्निज्वालो महानादः [045.012]

संदाम्शः शुनभोजनः [045.012]
तथा वैतरणी चोष्णा [045.012]
असिपत्त्रवनं तथा [045.012]
विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा [045.013]
पपात भुवि पाण्डवः [045.013]
स संज्ञश्च मुहूर्तेन [045.013]
भूयः केशवमब्रवीत् [045.013]
भीतश्चास्मि महाबाहो [045.014]
श्रुत्वा मार्गस्य विस्तरम् [045.014]
केनोपायेन तं मार्गं [045.014]
तरन्ति पुरुषाः सुखम् [045.014]
ब्राह्मणेभ्यः प्रदानानि [045.015]
नानारूपाणि पार्थिव [045.015]
यो दद्याच्छ्रद्धया युक्तः [045.015]
सुखं याति महापथम् [045.015]
उपानहप्रदा यान्ति [045.016]
सुखं छायासु च्छत्त्रदाः [045.016]
न तेषामशुभं किंचिच् [045.016]
शूलादि न च कण्टकाः [045.016]
उपानहौ यो ददाति [045.017]
पात्रभूते द्विजोत्तमे [045.017]
अश्वतर्यः प्रदातारम् [045.017]
उपतिष्ठन्ति तं नरम् [045.017]
वितृष्णाश्चाम्बुदातारस् [045.018]
तर्पिताश्चान्नदास्तथा [045.018]
औप्रावृता वस्त्रदाश्च [045.018]
नग्ना वै यान्त्यवस्त्रदाः [045.018]
हिरण्यदाः सुखं यान्ति [045.019]
पुरुषाः स्वाभ्यलंकृताः [045.019]
गोप्रदा यान्ति च सुखं [045.019]
विमुक्ताः सर्वकिल्बिषैः [045.019]
भूमिदाः सुखमधन्ते [045.020]
सर्वकामैः सुतर्पिताः [045.020]
यान्ति चैवापरिक्लिष्टा [045.020]
नराः शय्यासनप्रदाः [045.020]
ततः सुखतरं यान्ति [045.021]
विमानेषु गृहप्रदाः [045.021]
क्षीरप्रदा हि दिव्याभिः [045.021]
ससर्पिर्भिस्तथैव च [045.021]
गोप्रदाता लभेत्तृप्तिं [045.022]
तस्मिन्देशे सुदुर्लभाम् [045.022]
आरामरोपी च्छायासु [045.022]
शीतलासु सुखं व्रजेत् [045.022]
सुगन्धिगन्धिनो यान्ति [045.023]
गन्धमाल्यप्रदा नरः [045.023]
अदत्तदाना गच्छन्ति [045.023]
पद्भ्यां यानेन यानदाः [045.023]
दीपप्रदाः सुखं यान्ति [045.023]
दीपयन्तश्च तत्पथम् [045.023]
विमानैर्हंसयुक्तैस्तु [045.024]
यान्ति मासोपवासिनः [045.024]
चक्रवाकप्रयुक्तेन [045.024]
पञ्चरात्रोपवासिनः [045.024]
ततो बर्हिणयुक्तेन [045.024]
षड्रात्रमुपवासिनः [045.024]
त्रिरात्रमेकभक्तेन [045.025]
क्षपयेद्यस्तु पाण्डव [045.025]
अनन्तरं च यो ऽश्नीयात् [045.025]
तस्य लोका यथा मम [045.025]
पनीयं परलोकेषु [045.026]
पावनं परमं स्मृतम् [045.026]
पानीयस्य प्रदानेन [045.026]
तृप्तिर्भवति शाश्वती [045.026]
पानीयस्य गुणा दिव्याः [045.026]
प्रेतलोके सुखावहाः [045.026]
तत्र पुण्योदका नाम [045.027]
नदी तेषां प्रवर्तते [045.027]
शीतलं सलिलं तत्र [045.027]
पिबन्ति ह्यमृतोपमम् [045.027]
ये च दुष्कृतकर्माणः [045.028]
पूयं तेषां प्रवर्तते [045.028]
एषा नदी महाराज [045.028]
सर्वकामदुघा शुभा [045.028]
अध्वनि खिन्नगात्रस्तु [045.029]
द्विजो यः क्षुत्तृष्णान्वितः [045.029]
पृच्छन्सदान्नदातारम् [045.029]
अभ्येति गृहमाशया [045.029]
तं पूजय प्रयत्नेन [045.029]
सो ऽतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः [045.029]
पितरो देवताश्चैव [045.*(50)]
ऋषयश्च तपोधनाः [045.*(50)]
पूजिताः पूजिते तस्मिन् [045.*(50)]
निराशे तु निराशकाः [045.*(50)]
तमेव गच्छन्तमनुव्रजन्ति [045.030]

देवाश्च सर्वे पितरस्तथैव [045.030]
तस्मिन्द्विजे पूजिते पूजितास्ते [045.030]
गते निराशे प्रतियान्ति नाशम् [045.030]
अहन्यहनि दातव्यं [045.*(51)]
ब्राह्मणेभ्यो युधिष्ठिर [045.*(51)]
आगमिष्यति यत्पात्रं [045.*(51)]
तत्पात्रं तारयिष्यति [045.*(51)]
न तथा हविषो होमैर् [046.001]
न पुष्पैर्नानुलेपनैः [046.001]
अग्नौ वा सुहुते राजन् [046.001]
यथा ह्यतिथिपूजने [046.001]
कपिलायां तु दत्तायां [046.002]
यत्फलं ज्येष्ठपुष्करे [046.002]
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ [046.002]
विप्राणां पादशौचने [046.002]
द्विजपादोदकक्लिन्ना [046.003]
यावत्तिष्ठति मेदिनी [046.003]
तावत्पुष्करपात्रेषु [046.003]
पिबन्ति पितरो जलम् [046.003]
देवमाल्यापनयनं [046.004]
द्विजोच्छिष्टापमार्जनम् [046.004]
श्रान्तसंवाहनं चैव [046.004]
दीनस्य परिपालनम् [046.004]
एकैकं पाण्डवश्रेष्ठ [046.004]
गोप्रदानाद्विशिष्यते [046.004]
पादशौचं तथाभ्यङ्गं [046.005]
दीपमन्नं प्रतिश्रयम् [046.005]
ददन्ति ये महाराज [046.005]
नोपसर्पन्ति ते यमम् [046.005]
स्वागतेनाग्नयः प्रीता [046.006]
आसनेन शतक्रतुः [046.006]
पितरः पादशौचेन [046.006]
अन्नाद्येन प्रजापतिः [046.006]
अभयस्य प्रदानेन [046.*(52)]
भवेत्प्रीतिर्ममातुला [046.*(52)]
येषां तडागानि बहूदकानि [046.007]
प्रपाश्च कूपाश्च प्रतिश्रयाश्च [046.007]
अन्नप्रदानं मधुरा च वाणी [046.007]
यमस्य ते निर्वचना भवन्ति [046.007]
सवृषं गोशतं तेन [046.008]
दत्तं भवति शाश्वतम् [046.008]
पापं कर्म च यत्किंचिद् [046.009]
ब्रह्महत्यासमं भवेत् [046.009]
शोधयेत्कपिलां दत्त्वा [046.009]
एतद्वै नात्र संशयः [046.009]
प्रासादा यत्र सौवर्णा [046.010]
वसोर्धारा च स्यन्दते [046.010]
गन्धर्वाप्सरसो यत्र [046.010]
तत्र गच्छन्ति गोप्रदाः [046.010]
प्रयच्छते यः कपिलां सवत्सां [046.011]
कांस्योपदोहां कनकाग्रशृङ्गीम् [046.011]
यान्यान्हि कामानभिवाञ्छते ऽसौ [046.011]
तांस्तानवाप्नोत्यमलांश्च लोकान् [046.011]
यावद्वत्सस्य द्वौ पादौ [046.012]
शिरश्चैव प्रदृश्यते [046.012]
तावद्द्यौः पृथिवी ज्ञेया [046.012]
यावद्गर्भं न मुञ्चति [046.012]
तस्मिन्काले प्रदातव्या [046.012]
विधिना या मयोदिता [046.012]
अन्तरिक्षगतो वत्सो [046.013]
यावद्योन्यां प्रदृश्यते [046.013]
तावद्द्यौः पृथिवी ज्ञेया [046.013]
यावद्गर्भं न मुञ्चति [046.013]
यावन्ति तस्य रोमाणि [046.014]
तावद्वर्षाणि मानवः [046.014]
हंसयुक्तेन यानेन [046.*(53)]
युक्तेनाप्सरसां गणैः [046.*(53)]
गन्धर्वाप्सरसोद्गीतैः [046.014]
स्वर्गलोके महीयते [046.014]
तिलधेनुं प्रवक्ष्यामि [046.015]
यश्चास्या विधिरुत्तमः [046.015]
सुवर्णनाभिं यः कृत्वा [046.015]
सुखुरं कृष्णमार्गणाम् [046.015]
कुतपप्रस्तरस्थां तु [046.016]
तिलां कृत्वा प्रयत्नतः [046.016]
तिलैः प्रस्थादि तां दद्यात् [046.016]
सर्वरत्नैरलंकृताम् [046.016]
ससमुद्रद्रुमा चैव [046.017]
सशैलवनकानना [046.017]
चतुरन्ता भवेद्दत्ता [046.017]
पृथिवी नात्र संशयः [046.017]
कृष्णाजिने तिलां कृत्वा [046.018]
कृष्णां वा यदि वेतराम् [046.018]
राजतेषु तु पात्रेषु [046.*(54)]

कोणेषु मधुसर्पिषी [046.*(54)]
प्रीयतां धर्मराजेति [046.018]
यद्वा मनसि वर्तते [046.018]
यावज्जीवकृतं पापं [046.018]
तेन दानेन पूयते [046.018]
धनं प्राप्नोति पुण्येन [047.001]
मौनेनाज्ञां प्रयच्छति [047.001]
उपभोगं तु दानेन [047.001]
जीवितं ब्रह्मचर्यया [047.001]
अहिंसया परं रूपम् [047.002]
दीक्षया कुलजन्म च [047.002]
फलमूलाशनाद्राज्यं [047.002]
स्वर्गः पर्णाशनो भवेत् [047.002]
पयोभक्ष दिवं यान्ति [047.003]
स्नानेन द्रविणाधिकाः [047.003]
शाकं साधयतो राज्यं [047.003]
नाकपृष्ठमनाशनात् [047.003]
स्थण्डिले च शयानस्य [047.004]
गृहाणि शयनानि च [047.004]
चीरवल्कलधारिणां [047.004]
वस्त्राण्याभरणानि च [047.004]
शयनासनयानानि [047.005]
ये गता हि तपोवनम् [047.005]
अग्निप्रवेशी नियतं [047.005]
ब्रह्मलोके महीयते [047.005]
रसानां प्रतिसंहारात् [047.006]
सौभाग्यमभिजायते [047.006]
आमिषप्रतिषेधात्तु [047.006]
भवत्यायुष्मती प्रजा [047.006]
उदवासं वसेद्यस्तु [047.007]
नागानामधिपो भवेत् [047.007]
सत्यवादी नरश्रेष्ठ [047.007]
देवतैह् सह मोदते [047.007]
कीर्तिर्भवति दानेन [047.008]
आरोग्यं चाप्यहिंसया [047.008]
द्विजशुश्रूषया राज्यं [047.*(55)]
द्विजत्वं चापि पुष्कलम् [047.*(55)]
द्विजशुश्रूषया राज्यं [047.008]
दिव्यरूपमवाप्नुते [047.008]
अन्नपानप्रदानेन [047.009]
कामभोगैस्तु तृप्यते [047.009]
दीपालोकप्रदानेन [047.009]
चक्षुष्माञ्जायते नरः [047.009]
गन्धमाल्यप्रदानेन [047.010]
तुष्टिर्भवति पुष्कला [047.010]
केशश्मश्रून्धारयतो ह्य् [047.010]
अग्र्या भवति संततिः [047.010]
वाक्शौचं मनसः शौचं [047.011]
यच्च शौचं जलाश्रयम् [047.011]
त्रिभिः शौचैरुपेतो यः [047.011]
स स्वर्गी नात्र संशयः [047.011]
ताम्रायसानां भण्डानां [047.012]
दाता रत्नाधिपो भवेत् [047.012]
लभते तु परं स्थानं [047.012]
बलवान्पुष्यते सदा [047.012]
धान्यं क्रमेणार्जितवित्तसंचयं [048.001]
विप्रे सुशीले ते प्रयच्छते यः [048.001]
वसुंधरा तस्य भवेत्सुतुष्टा [048.001]
धारा वसूनां प्रतिमुञ्चतीह [048.001]
पुष्पोपभोगं च फलोपभोगं [048.002]
यः पादपं स्पर्शयते द्विजाय [048.002]
स श्रीसमृद्धं बहुरत्नपूर्णं [048.002]
लभत्यधिष्ठानवरं समृद्धम् [048.002]
इन्धनानि च यो दद्याद् [048.003]
द्विजेभ्यः शिशिरागमे [048.003]
कायाग्निदीप्तिं सौभाग्यम् [048.003]
ऐश्वर्यं चाधिगच्छति [048.003]
छत्त्रप्रदानेन गृहं वरिष्ठं [048.004]
रथं तथोपानहसंप्रदानात् [048.004]
धुर्यप्रदानेन गवाम्तथैव [048.004]
लोकानवाप्नोति पुरंदरस्य [048.004]
स्वर्गीयमप्याह हिरण्यदानम् [048.004]
तथा वरिष्ठं कनकप्रदानम् [048.004]
नैवेशिकं सर्वगुणोपपन्नं [048.005]
प्रयच्छते यः पुरुषो द्विजाय [048.005]
स्वाध्यायचारित्रगुणान्विताय [048.005]
तस्यापि लोकाः प्रवरा भवन्ति [048.005]
यो ब्रह्मदेयां प्रददाति कन्यां [048.006]
भूमिप्रदानं च करोति विप्रे [048.006]
हिरण्यदानं च तथा विशिष्टं [048.006]
स शक्रो लोकं लभते दुरापम् [048.006]
सुचित्रवस्त्राभरणोपधानं [048.007]
दद्यान्नरो यः शयनं द्विजाय [048.007]
रूपान्वितां दक्षवतीं मनोज्ञां [048.007]

भार्यामयत्नोपचितां लभेत्सः [048.007]
लवणस्य तु दातारस् [048.008]
तिलानां सर्पिषस्तथा [048.008]
तेजस्विनो ऽभिजायन्ते [048.008]
भोगिनष् चिरजीविनः [048.008]
स्वर्गे ऽप्सरोभिः सह भुक्तभोगस् [048.*(56)]
ततश्च्युतः शीलवतीं स भार्याम् [048.*(56)]
रूपान्वितां दक्षवतीं सुरक्तां [048.*(56)]
सुखेन धर्मेण तथापि काले [048.*(56)]
तस्यैव सार्धं सुरलोकमेति [048.*(56)]
तस्यैव चान्यत्पुनरेति जन्म [048.*(56)]
कीदृग्विधास्ववस्थासु [049.001]
दत्तं दानं जनार्दन [049.001]
इहलोकेष्वनुभवेत् [049.001]
पुरुषस्तद्ब्रवीहि मे [049.001]
गर्भस्थास्याथवा बाल्ये [049.002]
यौवने वार्द्धके ऽपि वा [049.002]
अवस्थां कृष्ण कथय [049.002]
परं कौतूहलं हि मे [049.002]
वृथाजन्मानि चत्वारि [049.003]
वृथादानानि षोडश [049.003]
अपुत्राणां वृथा जन्म [049.003]
ये च धर्मबहिष्कृताः [049.003]
परपाकं च ये ऽश्नन्ति [049.003]
परदाररताश्च ये [049.003]
पर्यस्थानं वृथा दानं [049.004]
सदोषं परिकीर्तितम् [049.004]
आरूढपतिते चैव [049.004]
अन्यायोपार्जितं च यत् [049.004]
व्यर्थं चाब्राह्मणे दानं [049.005]
पतिते तस्करे तथा [049.005]
गुरोश्चाप्रीतिजनके [049.005]
कृतघ्ने ग्रामयाजके [049.005]
ब्रह्मबन्धौ च यद्दत्तं [049.006]
यद्दत्तं वृषलीपतौ [049.006]
वेदविक्रयिणे चैव [049.006]
यस्य चोपपतिर्गृहे [049.006]
स्त्रीनिर्जितेषु यद्दत्तं [049.007]
व्यालग्राहे तथैव च [049.007]
परिचारके च यद्दत्तं [049.007]
वृथादानानि षोडश [049.007]
तमोवृतस्तु यो दद्याद् [049.008]
भयात्क्रोधात्तथैव च [049.008]
वृथा दानं तु तत्सर्वं [049.008]
भुङ्क्ते गर्भस्थ एव तु [049.008]
सेर्ष्यामन्युमनाश्चैव [049.009]
दम्भार्थं चार्थकारणात् [049.009]
यो ददाति द्विजातिभ्यः [049.009]
स बालत्वे तदश्नुते [049.009]
यः शुद्धिः प्रयतो भूत्वा [049.*(58)]
प्रसन्नमानसेन्द्रियः [049.*(58)]
प्रददाति द्विजातिभ्यो [049.*(58)]
यौवनस्थस्तदश्नुते [049.*(58)]
देशे देशे च पात्रे च [049.010]
यो ददाति द्विजातिषु [049.010]
मनसा परितुष्टेन [049.010]
यौवनस्थस्तदश्नुते [049.010]
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु [049.011]
सर्वदानानि पार्थिव [049.011]
दातव्यानि द्विजातिभ्यः [049.011]
स्वर्गमार्गमभीप्सता [049.011]
त्रैलोक्य कृष्ण भूतानां [050.001]
सर्वलोकात्मको ह्यसि [050.001]
नृणां यदुवरश्रेष्ठ [050.001]
तुष्यसे केन कर्मणा [050.001]
ब्राह्मणैः पूजितैर्नित्यं [050.002]
पूजितो ऽहं न संशयः [050.002]
निर्भर्त्सितैश्च निर्भग्नस् [050.002]
तस्याहं सर्वकर्मसु [050.002]
विप्रापरा गतिर्मह्यं [050.003]
यस्तान्पूजयते नृप [050.003]
तमहं तेन रूपेण [050.003]
प्रपश्यामि युधिष्ठिर [050.003]
काणाः कुब्जाश्च खञ्जाश्च [050.004]
दरिद्रा व्याधिताश्च ये [050.004]
नावमन्येद्द्विजान्प्राज्ञो [050.004]
मम रूपं हितं तथा [050.004]
बहवो ऽपि न जानन्ते [050.005]
नरा ज्ञानबहिष्कृताः [050.005]
यथाहं द्विजरूपेण [050.005]
चरामि पृथिवीतले [050.005]
ये केचित्सागरान्तायां [050.006]
पृथिव्यां कीर्तिता द्विजाः [050.006]
तद्रूपं हि परं मह्यं [050.006]

यो ऽर्चयेदर्चयेत्तु सः [050.006]
तद्रूपान्घ्नन्ति ये विप्रान् [050.007]
विकर्मसु च युञ्जन्ति [050.007]
अप्रेषणे प्रेषयन्तो [050.007]
दासत्वं कारयन्ति हि [050.007]
मृतांस्तान्करपत्त्रेन [050.008]
यमदूता महाबलाः [050.008]
निकृन्तन्ति यथा काष्ठं [050.008]
सूत्रमार्गेण शिल्पिनः [050.008]
ये चैवाश्लक्ष्णया वाचा [050.009]
तर्जयन्ति नराधमाः [050.009]
वदन्ति क्रोधनिःस्पर्शं [050.009]
पादेनाभिहनन्ति च [050.009]
मृतांस्तान्यमलोकेषु [050.010]
निहत्य धरणीतले [050.010]
उरः पादेन चाक्रम्य [050.010]
क्रोधसंरक्तलोचनः [050.010]
अग्निवर्णैश्च संदंशैर् [050.010]
जिह्वामुद्धरते यमः [050.010]
पापाश्च नारके वह्नौ [050.*(59)]
धास्यन्ते यमकिंकरैः [050.*(59)]
ये तु विप्रान्निरीक्षन्ति [050.011]
पापाः पापेन चक्षुषा [050.011]
अब्रह्मण्याः श्रुतेर्बाह्या [050.011]
नित्यं ब्रह्मद्विषो नराः [050.011]
तेषां घोरा महाकाया [050.012]
वज्रतुण्डा भयानकाः [050.012]
उद्धरन्ति मुहूर्तेन [050.012]
चक्षुः काका यमाज्ञया [050.012]
यस्ताडयति विप्रांस्तु [050.013]
क्षतं कुर्यात्सशोणितम् [050.013]
अस्थिभङ्गं च यः कुर्यात् [050.013]
प्राणैर्वापि वियोजयेत् [050.013]
ब्रह्मघ्नः सो ऽनुपूर्वेण [050.014]
नरके वसुधाधिप [050.014]
कीलैर्विनिहतः पापो [050.014]
मीरायां पच्यते भृशम् [050.014]
सुबहूनि सहस्राणि [050.015]
वर्षाणां क्लेशभाग्भवेत् [050.015]
रवान्मुञ्चति दुर्बुद्धिर् [050.015]
न तस्मै निष्कृतिः स्मृता [050.015]
तस्माद्विप्रा नरश्रेष्ठ [050.016]
नमस्कार्याश्च नित्यशः [050.016]
अन्नपानप्रदानैस्तु [050.016]
पूजार्हाः सततं द्विजाः [050.016]
आमन्त्रयित्वा यो विप्रान् [050.017]
गन्धैर्माल्यैश्च मानवः [050.017]
तर्पयेच्छ्रद्धया युक्तः [050.017]
स मामर्चयते सदा [050.017]
स मां प्रसादयेच्चैव [050.017]
स च मां परितोषयेत् [050.017]
तपोदमान्वितेष्वेव [050.*(60)]
नित्यं पूजां प्रयोजयेत् [050.*(60)]
ये ब्राह्मणाः सो ऽहमसंशयं नृप [050.018]
तेष्वर्चितेष्वर्चितो ऽहं यथावत् [050.018]
तेष्वेव तुष्टेष्वहमेव तुष्टो [050.018]
वैरं च तैर्यस्य ममापि वैरम् [050.018]
सुगन्धिधूपादिभिरभ्यर्च्य विप्रं [050.*(61),001]
तमच्युतं नार्चयते सदैव [050.*(61),002]
यो भक्षतोयादिभिरन्नपानैर् [050.*(61),003]
अनुलेपाचमनप्रदानैः [050.*(61),004]
यः पूजयेद्भोजयित्वा द्विजाग्र्यान् [050.*(61),005]
संपूजयित्वा परितोषयेच्च [050.*(61),006]
अर्घ्यादिना ये ऽभिपूज्य [050.*(61),007]
पूजयन्ति सदाच्युतम् [050.*(61),007]
तेनैव मामेव सदा [050.*(61),008]
पूजयन्ति न संशयः [050.*(61),008]
विरूपाश्च सुरूपाश्च [050.*(61),009]
विजनान्निष्कलानपि [050.*(61),009]
कृपया भावितात्मानो [050.*(61),010]
ये ऽर्चयन्ति द्विजोत्तमान् [050.*(61),010]
अनसूया हितात्मानो [050.*(61),011]
विप्रानाराधते क्वचित् [050.*(61),011]
असंशयं सदा भक्त्या [050.*(61),012]
मामेवार्चयते हि सः [050.*(61),012]
ततः पवित्रमतुलं [050.*(61),013]
न पुण्यमधिकं ततः [050.*(61),013]
यश्चन्दनैः सागरुगन्धमाल्यैर् [050.019]
अभ्यर्चयेद्दारुमयीं ममार्चाम् [050.019]
नासौ ममार्चामर्चयते ऽर्चयन्वै [050.019]
विप्रार्चनादर्चित एव चाहम् [050.019]
विप्रप्रसादान्मध एव चाहं [050.020]
विप्रप्रसादादसुराञ्जयामि [050.020]
विप्रप्रसादात्पुरुषोत्तमत्वं [050.020]

विप्रप्रसादादजितो ऽस्मि नित्यम् [050.020]
सायं प्रातश्च यः संध्याम् [051.001]
उपास्ते ऽस्कन्नमानसः [051.001]
जपन्हि पावनीं देवीं [051.001]
गायत्रीं वेदमातरम् [051.001]
स तया पावितो देव्या [051.002]
ब्राह्मणः पूतकिल्बिषः [051.002]
न सीदेत्प्रतिगृह्णानः [051.002]
पृथिवीं तु ससागराम् [051.002]
ये चान्ये दारुणाः केचिद् [051.003]
ग्रहाः सूर्यादयो दिवि [051.003]
ते चास्य सौम्या जायन्ते [051.003]
शिवाः शिवतमाह् सदा [051.003]
यत्रतत्रगतं चैनं [051.004]
दारुणाः पिशिताशनाः [051.004]
घोररूपा महाकाया [051.004]
न कर्षन्ति द्विजोत्तमम् [051.004]
यावन्तश्च पृथिव्यां हि [051.005]
चीर्णवेदव्रता द्विजाः [051.005]
अचीर्णव्रतवेदा वा [051.005]
विकर्मपथमाश्रिताः [051.005]
तेषां तु पावनार्थं हि [051.006]
नित्यमेव युधिष्ठिर [051.006]
द्वे संध्ये ह्युपतिष्ठेत [051.006]
तदस्कन्नं महाव्रतम् [051.006]
नास्ति किंचिन्नरव्याघ्र [051.007]
दुष्कृतं ब्राह्मणस्य तु [051.007]
यत्र स्थितः सदाध्यात्मे [051.007]
द्वे संध्ये ह्युपतिष्ठति [051.007]
पूर्णाहुतिं वा प्राप्नोति [051.008]
जुहुते च त्रयो ऽग्नयः [051.008]
दहन्ति दुष्कृतं तस्य [051.008]
अग्नयो नात्र संशयः [051.008]
एवं सर्वस्य विप्रस्य [051.009]
किल्बिषं निर्दहाम्यहम् [051.009]
उभे संध्ये ह्युपासिनस् [051.009]
तस्मात्सर्वशुचिर्द्विजः [051.009]
दैवे पित्र्ये च यत्नेन [051.010]
नियोक्तव्यो ऽजुगुप्सितः [051.010]
जुगुप्सितस्तु तच्छ्राद्धं [051.010]
दहत्यग्निरिवेन्धनम् [051.010]
पुराणं मानवा धर्माः [052.001]
साङ्गो वेदश्चिकित्सितम् [052.001]
आज्ञासिद्धानि चत्वारि [052.001]
न हन्तव्यानि हेतुभिः [052.001]
हत्वा ह्येतानि संमूढः [052.001]
कल्पं तमसि पच्यते [052.001]
न ब्राह्मणं परीक्षेत [052.002]
श्राद्धकाले ह्युपस्थिते [052.002]
सुमहान्परिवादो हि [052.002]
ब्राह्मणानां परीक्षणे [052.002]
काणाः कुण्ठाश्च षण्डाश्च [052.003]
दरिद्रा व्याधितास्तथा [052.003]
सर्वे श्राद्धे नियोक्तव्या [052.003]
मिश्रिता वेदपारगैः [052.003]
अक्षयं तु भवेच्छ्राद्धम् [052.003]
एतद्धर्मविदो विदुः [052.003]
ब्राह्मणो हि महद्भूतं [052.004]
जन्मना सह जायते [052.004]
लोका लोकेश्वराश्चापि [052.004]
सर्वे ब्राह्मणपूजकाः [052.004]
ब्राह्मणाः कुपिता हन्युर् [052.005]
भस्म कुर्युश्च तेजसा [052.005]
लोकानन्यान्सृजेयुश्च [052.005]
लोकपालांस्तथापरान् [052.005]
ब्राह्मणा हि महात्मानो [052.006]
विरजाः स्वर्गसंक्रमाः [052.006]
ब्राह्मणानां परीवादाद् [052.006]
असुराः सलिलेशयाः [052.006]
अपेयः सागरो यैस्तु [052.007]
कृतः कोपान्महात्मभिः [052.007]
येषां कोपाग्निरद्यापि [052.007]
दण्डके नोपशाम्यति [052.007]
एते स्वर्गस्य नेतारो [052.008]
भूमिदेवाः सनातनाः [052.008]
एभिश्चाधिकृतः पन्था [052.008]
देवयानः स उच्यते [052.008]
ते पूज्यास्ते नमस्कार्यास् [052.009]
तेषु सर्वं प्रतिष्ठितम् [052.009]
ते वै लोकानिमान्सर्वान् [052.009]
धारयन्ति परस्परम् [052.009]
प्रमाणं सर्वलोकानां [052.010]
नियता ब्रह्मचारिणः [052.010]
तानपाश्रित्य तिष्ठन्ते [052.010]

त्रयो लोकाः सनातनाः [052.010]
गूढस्वाध्यायतपसो [052.011]
ब्राह्मणाः संशितव्रताः [052.011]
विद्यास्नाता व्रतस्नाता [052.011]
अनपाश्रित्यजीविनः [052.011]
आशीविषा इव क्रुद्धा [052.012]
उपचर्या हि ब्राह्मणाः [052.012]
तपसा दीप्यमानास्ते [052.012]
दहेयुः सागरानपि [052.012]
ब्राह्मणेषु च तुष्टेषु [052.013]
तुष्यन्ते सर्वदेवताः [052.013]
ब्राह्मणानां नमस्कारैः [052.013]
सूर्यो दिवि विराजते [052.013]
ब्राह्मणानां परीवादात् [052.013]
पतेयुरपि देवताः [052.013]
धुरि ये नावसीदन्ति [052.014]
प्रणीते यज्ञवह्नयः [052.014]
भोजनाच्छादनैर्दानैस् [052.014]
तारयन्ति तपोधनाः [052.014]
ते गतिः सर्वभूतानाम् [052.015]
अध्यात्मगतिचिन्तकाः [052.015]
आदिमध्यावसानानां [052.015]
ज्ञानानां छिन्नसाम्शयाः [052.015]
परापरविशेषज्ञा [052.016]
नेतारः परमां गतिम् [052.016]
अवध्या ब्राह्मणास्तस्मात् [052.016]
पापेष्वपि रताः सदा [052.016]
यश्च सर्वमिदं हन्याद् [052.017]
ब्राह्मणं वापि तत्समम् [052.017]
सो ऽग्निः सो ऽर्को महातेजा [052.018]
विषं भवति कोपितः [052.018]
भूतानां अग्रभुग्विप्रो [052.018]
वर्णश्रेष्ठः पिता गुरुः [052.018]
न स्कन्दते न व्यथते [052.019]
न च नश्यति कर्हिचित् [052.019]
वरिष्ठमग्निहोत्राद्धि [052.019]
ब्राह्मणस्य मुखे हुतम् [052.019]
अविद्यो वा सविद्यो वा [052.020]
ब्राह्मणो मम दैवतम् [052.020]
प्रणीतश्चाप्रणीतश्च [052.020]
यथाग्निर्दैवतं महत् [052.020]
एवं विद्वानविद्वान्वा [052.*(63)]
ब्राह्मणो दैवतं महत् [052.*(63)]
श्मशानेष्वपि तेजस्वी [052.021]
पावको नैव दुष्यति [052.021]
हव्यकव्यव्यपेतो ऽपि [052.021]
ब्राह्मणो नैव दुष्यति [052.021]
सर्वथा ब्राह्मणाः पूज्याः [052.022]
सर्वथा दैवतं महत् [052.022]
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन [052.022]
रक्षेदापत्सु ब्राह्मणान् [052.022]
शक्रो ऽपि हि द्विजेन्द्राणां [052.022]
बिभेति विबुधाधिपः [052.022]
दानं देवाः प्रशंसन्ति [053.001]
इति धर्मविदो विदुः [053.001]
नानादानविधिं तस्माच् [053.001]
शृणुष्व सुसमाहितः [053.001]
हिरण्यदानं गोदानं [053.002]
पृथिवीदानमेव च [053.002]
एतानि वै पवित्राणि [053.002]
तारयन्ति परत्र च [053.002]
यद्यदिष्टतमं लोके [053.003]
यच्चास्ति दयितं गृहे [053.003]
तत्तद्गुणवते देयं [053.003]
तदेवाक्षयमिच्छता [053.003]
सुवर्णदानं गोदानं [053.004]
पृथिवीदानमेव च [053.004]
एतत्प्रयच्छमानो वै [053.004]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [053.004]
यद्ददासि विशिष्टेभ्यो [053.005]
यच्चाश्नासि दिने दिने [053.005]
तत्ते वित्तमहं मन्ये [053.005]
शेषं कस्यापि रक्षसि [053.005]
तुल्यनामानि शस्तानि [053.006]
त्रीणि तुल्यफलानि च [053.006]
नित्यं देयानि राजेन्द्र [053.006]
गावः पृथ्वी सरस्वती [053.006]
तद्वज्जलममित्रघ्न [053.007]
तत्तुल्यफलनामतः [053.007]
दत्त्वा तृप्तिमवाप्नोति [053.007]
यत्रतत्राभिजायते [053.007]
संकल्पविहितो यो ऽर्थो [053.008]
ब्राह्मणेभ्यः प्रदीयते [053.008]
अर्थिभ्यो ह्यर्थहेतुभ्यो [053.008]

मनस्वी तेन जायते [053.008]
सीदते द्विजमुख्याय [053.009]
यो ऽर्थिने न प्रयच्छति [053.009]
असमर्थे सति दुर्बुद्धिर् [053.009]
नरकायोपपद्यते [053.009]
धेनवो ऽनड्डुहश्चैव [053.010]
छत्त्रं वस्त्रमुपानहौ [053.010]
देयानि याचमानेभ्यः [053.010]
पानमन्नं तथैव च [053.010]
एवं दानं समुद्दिष्टं [053.010]
व्युष्टिमत्तारकं परम् [053.010]
एष ते विहितो यज्ञः [053.011]
श्रद्धापूतः सदक्षिणः [053.011]
विशिष्टः स च यज्ञेषु [053.011]
ददतामनसूयया [053.011]
दानविद्भिः कृतः पन्था [053.012]
येन यान्ति मनीषिणः [053.012]
यैर्दानैस्तर्पयिष्यन्ति [053.012]
श्रद्धापूतैर्द्विजोत्तमान् [053.012]
यथा हि सुकृते क्षेत्रे [053.013]
फलं विन्दति क्षेत्रिकः [053.013]
एवं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो [053.013]
दाता फलमुपाश्नुते [053.013]
ब्राह्मणाश्चैव विद्यन्ते [053.014]
सत्यवन्तो बहुश्रुताः [053.014]
न ददाति च दानानि [053.014]
मोघं तस्य धनार्जनम् [053.014]
उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं [053.015]
किमद्य सुकृतं मया [053.015]
दत्तं वा दापितं वापि [053.015]
वोत्साह्यमपि वा कृतम् [053.015]
उत्थायोत्थाय दातव्यं [053.016]
ब्राह्मणेभ्यो युधिष्ठिर [053.016]
आगमिष्यति यत्पात्रं [053.016]
तत्पात्रं तारयिष्यति [053.016]
यच्च वेदमयं पात्रं [053.017]
यच्च पात्रं तपोमयम् [053.017]
असंकीर्णं च यत्पात्रं [053.017]
तत्पात्रं तारयिष्यति [053.017]
अध्यायं तपसो वक्ष्ये [054.001]
तन्मे निगदतः शृणु [054.001]
तपसो हि परं नास्ति [054.001]
तपसा विन्दते फलम् [054.001]
ऋषयस्तप आस्थाय [054.002]
मोदन्ते दैवतैः सह [054.002]
तपसा प्राप्यते स्वर्गं [054.002]
तपसा प्राप्यते यशः [054.002]
आयुःप्रकर्षं भोगांश्च [054.003]
तपसा विन्दते नरः [054.003]
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं [054.003]
सौभाग्यं रूपमुत्तमम् [054.003]
तपसा लभ्यते सर्वं [054.004]
मनसा यद्यदिच्छति [054.004]
नातप्ततपसो यान्ति [054.004]
ब्रह्मलोकं कदाचन [054.004]
यत्कार्यं किंचिदास्थाय [054.005]
पुरुषस्तप्यते तपः [054.005]
सर्वं तत्समवाप्नोति [054.005]
परत्रेह च मानवः [054.005]
सुरापः पारदारी च [054.006]
भ्रूणहा गुरुतल्पगः [054.006]
तपसा तरते सर्वं [054.006]
सर्वतश्च विमुच्यते [054.006]
अपि सर्वेश्वरः स्थाणुर् [054.007]
विष्णुश्चैव सनातनः [054.007]
ब्रह्मा हुताशनः शक्रस् [054.007]
तपस्यन्ति सनातनाः [054.007]
षडशीतिसहस्राणि [054.008]
मुनीनामूर्ध्वरेतसाम् [054.008]
तपसा दिवि मोदन्ते [054.008]
समेता दैवतैः सह [054.008]
तपसा प्राप्यते राज्यं [054.009]
शक्रः सर्वसुरेश्वरः [054.009]
तपसा पालयन्सर्वम् [054.009]
अहन्यहनि वृत्रहा [054.009]
सूर्याचन्द्रमसौ देवौ [054.010]
सर्वलोकहिते रतौ [054.010]
तपसैव प्रकाशेते [054.010]
नक्षत्राणि ग्रहास्तथा [054.010]
न चास्ति तत्सुखं लोके [054.011]
यद्विना तपसा किल [054.011]
तपसैव सुखं सर्वम् [054.011]
इति धर्मविदो विदुः [054.011]
विश्वामित्रश्च तपसा [054.*(64)]

ब्राह्मणत्वमुपागतः [054.*(64)]
सर्वं च तपसाभ्येति [054.012]
सर्वं च सुखमश्नुते [054.012]
तपस्तप्यति यो ऽरण्ये [054.012]
मुनिर्मूलफलाशनः [054.012]
ऋचमेकां अपि पठन् [054.012]
स याति परमां गतिम् [054.012]
तस्मात्तपः समास्थाय [054.*(65)]
प्रार्थयेद्यदभीप्सितम् [054.*(65)]
सत्यमेव परं ब्रह्म [055.001]
सत्यमेव परं तपः [055.001]
सत्यमेव परो यज्ञः [055.001]
सत्यमेव परं श्रुतम् [055.001]
सत्यं देवेषु जागर्ति [055.001]
मुक्तिः सत्यतरोः फलम् [055.001]
तपो यशश्च पुण्यं च [055.002]
पितृदेवर्षिपूजनम् [055.002]
आद्यो विधिश्च विद्या च [055.002]
सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् [055.002]
सत्यं यज्ञस्तथा वेदा [055.003]
मन्त्रा देवी सरस्वती [055.003]
व्रतचर्या तथा सत्यम् [055.003]
ओंकारः सत्यमेव च [055.003]
सत्येन वायुरभ्येति [055.004]
सत्येन तपते रविः [055.004]
सत्येन चाग्निर्दहति [055.004]
स्वर्गं सत्येन गच्छति [055.004]
सत्येन चापः क्षिपति [055.004]
पर्जन्यः पृथिवीतले [055.004]
पारणं सर्ववेदानां [055.005]
सर्वतीर्थावगहनह् [055.005]
सत्यं च वदतो लोके [055.005]
तत्समं स्यान्न संशयः [055.005]
अश्वमेधसहस्रं च [055.006]
सत्यं च तुलया धृतम् [055.006]
अश्वमेधसहस्राद्धि [055.006]
सत्यमेतद्विशिष्यते [055.006]
मुनयः सत्यनिरता [055.*(66)]
मुनयः सत्यविक्रमाः [055.*(66)]
मुनयः सत्यप्रपथाः [055.*(66)]
परां सिद्धिमितो गताः [055.*(66)]
सत्येन देवाः प्रीयन्ते [055.007]
पितरो ब्राह्मणास्तथा [055.007]
सत्यमाहुः परं धर्मं [055.007]
तस्मात्सत्यं न लोपयेत् [055.007]
मुनयः सत्यनिरतास् [055.008]
तस्मात्सत्यं विशिष्यते [055.008]
स्वर्गे सत्यपरा नित्यं [055.008]
मोदन्ते देवता इव [055.008]
अप्सरोगणसंकीर्णैर् [055.009]
विमानैरुपयान्ति ते [055.009]
वक्तव्यं हि सदा सत्यं [055.009]
न सत्याद्विद्यते परम् [055.009]
एतत्प्रमाणं यः कुर्यात् [055.*(67)]
सर्वयज्ञफलं लभेत् [055.*(67)]
अगाधे विमले शुद्धे [055.010]
सत्यतीर्थे ह्रदे शुभे [055.010]
स्नातव्यं मनसा युक्तैः [055.010]
स्नानं तत्परमं स्मृतम् [055.010]
आत्मार्थे च परार्थे वा [055.011]
पुत्रार्थे वापि पार्थिव [055.011]
ये ऽनृतं नाभिभाषन्ते [055.011]
ते नराः स्वर्गगामिनः [055.011]
अपि चेदं पुरा गीतं [055.012]
धर्मविद्भिर्युधिष्ठिर [055.012]
यः सत्यवादी पुरुषो [055.012]
नानृतं परिभाषते [055.012]
संप्राप्य विरजांल्लोकान् [055.013]
उषित्वा शाश्वतीः समाः [055.013]
शुचीनां श्रीमतां गेहे [055.013]
जायते सुमहामतिः [055.013]
विद्यारोग्यसुखैश्वर्यैर् [055.*(68)]
युक्तो योगपरो भवेत् [055.*(68)]
आदित्यचन्द्रावनलानिलौ च [055.014]
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च [055.014]
अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये [055.014]
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम् [055.014]
तस्मान्न वाच्यमनृतं हि सद्भिर् [055.015]
एवंविधैर्धर्मविदो वदन्ति [055.015]
सत्यं वदंस्तेजसा दीप्यमानो [055.015]
न हीयते धर्मयशो ऽर्थकामैः [055.015]
एष वाणीकृतो धर्मो [055.016]
वैदिको धर्मनिश्चये [055.016]
एवमेतद्यथान्यायं [055.016]

सत्याध्याये प्रकीर्तितम् [055.016]
तत्प्रमाणं बुधः कुर्यान् [055.016]
न सत्याद्विद्यते परम् [055.016]
सर्वेषामेव वर्णानां [056.001]
प्रवक्ष्यामि युधिष्ठिर [056.001]
उपोषितैश्च कौन्तेय [056.001]
यत्प्रयोज्यं यथाविधि [056.001]
फलं यदुपवासस्य [056.002]
तन्निबोध च पाण्डव [056.002]
अवाप्नोति यथा कामान् [056.002]
उपवासपरायणः [056.002]
मयैते नृपते काम्या [056.003]
विहिता हितमिच्छता [056.003]
उपवासा मनुष्याणां [056.003]
मय्येवार्पितचेतसाम् [056.003]
पञ्चमीं चैव षष्ठीं च [056.004]
पौर्णमासीं च पाण्डव [056.004]
उपोष्य रूपवान्धन्यः [056.004]
सुभगश्चैव जायते [056.004]
अष्टमीं चैव कौन्तेय [056.005]
शुक्लपक्षे चतुर्दशीम् [056.005]
उपोष्य व्याधिरहितो [056.005]
वीर्यवांश्चैव जायते [056.005]
मार्गशीर्षं तु यो मासं [056.006]
नित्यमेकाशनो भवेत् [056.006]
कृषिभागी भवेद्राजन् [056.006]
बहुपुत्रश्च जायते [056.006]
पौषमासे तु राजेन्द्र [056.007]
भक्तेनैकेन यः क्षपेत् [056.007]
सुभगो दर्शनीयश्च [056.007]
ज्ञानभागी च जायते [056.007]
पितॄनुद्दिश्य माघं तु [056.008]
यः क्षपेदेकभोजनम् [056.008]
मासेन पुरुषव्याघ्र [056.008]
सो ऽनन्त्यं फलमश्नुते [056.008]
भगदैवतमासं तु [056.009]
यः क्षपेदेकभोजनम् [056.009]
स्त्रीषु वल्लभतां याति [056.009]
वश्याश्चास्य भवन्ति ताः [056.009]
चैत्रं तु पुरुषव्याघ्र [056.010]
यः क्षपेदेकभोजनम् [056.010]
मासेन पुरुषव्याघ्र [056.*(69)]
मौनन्तु फलमश्नुते [056.*(69)]
भगदैवतमासं तु [056.*(69)]
यः क्षपेदेकभोजनः [056.*(69)]
स्त्रीषु वल्लभतां याति [056.*(69)]
वश्याश्चास्य भवन्ति ताः [056.*(69)]
चैत्रं तु पुरुषव्याघ्र [056.*(69)]
यः क्षपेदेकभोजनः [056.*(69)]
सुवर्णमणिमुक्ताढ्ये [056.010,*(69)]
कुले महति जायते [056.010,*(69)]
निस्तरेदेकभक्तेन [056.011,*(69)]
वैशाखं यो नराधिप [056.011,*(69)]
नरो वा यदि वा नारी [056.011]
ज्ञातीनां श्रेष्ठतां व्रजेत् [056.011]
ज्येष्ठमासमपानीयम् [056.012]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [056.012]
ऐश्वर्यं पुरुषव्याघ्र [056.012]
स्त्रीभागी चोपजायते [056.012]
आषाढं भरतश्रेष्ठ [056.013]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [056.013]
शूरश्च बहुधान्यश्च [056.013]
बहुपुत्रश्च जायते [056.013]
श्रावणं तु नरव्याघ्र [056.014]
भक्तेनैकेन यः क्षपेत् [056.014]
यत्र यत्रोपपद्येत [056.014]
तत्र स्याज्ज्ञातिवर्धनः [056.014]
मासं भाद्रपदं राजन्न् [056.015]
एकभक्तेन यः क्षपेत् [056.015]
धनाढ्यो वीर्यवांश्चैव [056.015]
ऐश्वर्यं प्रतिपद्यते [056.015]
यः क्षपेदेकभक्तेन [056.016]
मासमाश्वयुजं नरः [056.016]
धनवान्वाहनाढ्यश्च [056.016]
बहुपुत्रश्च जायते [056.016]
कार्त्तिकं तु नरो मासं [056.017]
नित्यमेकाशनो भवेत् [056.017]
शूरश्च बहुभार्यश्च [056.017]
कीर्तिमांश्चैव जायते [056.017]
एते मासा नरश्रेष्ठ [056.018]
एकभक्तेन कीर्तिताः [056.018]
तिथीनां नियमांश्चैव [056.018]
तान्शृणुष्व नराधिप [056.018]
पक्षे पक्षे चतुर्थं तु [056.019]

भक्तं यः क्षपयेन्नरः [056.019]
विपुलं धनमाप्नोति [056.019]
भगवानग्निरब्रवीत् [056.019]
मासे मासे चतुर्थं तु [056.020]
भक्तमेकं तु यः क्षपेत् [056.020]
कृषिभागी यशोभागी [056.020]
तेजस्वी चापि जायते [056.020]
पक्षे पक्षे त्रिरात्रं तु [056.021]
यः क्षपेन्नरपुङ्गव [056.021]
गणे घोषे पुरे ग्रामे [056.021]
माहात्म्यं प्रतिपद्यते [056.021]
मासे मासे त्रिरात्रं तु [056.022]
भक्तेनैकेन यः क्षपेत् [056.022]
गणाधिपत्यं लभते [056.022]
निःसपत्नमकण्टकम् [056.022]
यस्तु सायं तथा कल्यं [056.023]
भुङ्क्ते नैवान्तरा पिबेत् [056.023]
अहिंसानिरतो नित्यं [056.023]
जुह्वानो जातवेदसम् [056.023]
षड्भिरेव तु वर्षैस्तु [056.024]
सिध्यते नात्र संशयः [056.024]
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य [056.024]
फलं प्राप्नोति मानवः [056.024]
अष्टमेन तु भक्तेन [056.025]
राजन्संवत्सरं नयेत् [056.025]
गवामयस्य यज्ञस्य [056.025]
फलं प्राप्नोति मानवः [056.025]
हंससारसयुक्तेन [056.026]
विमानेन स गच्छति [056.026]
पूर्णं वर्षसहस्रं तु [056.026]
स्वर्गलोके महीयते [056.026]
आर्तो वा व्याधितो वापि [056.027]
गच्छेदनशनं तु यः [056.027]
पदे पदे यज्ञफलं [056.027]
तस्य मन्नामकीर्तनात् [056.027]
दिव्यऋक्षप्रयुक्तेन [056.028]
विमानेन स गच्छति [056.028]
शतमप्सरसां चैव [056.028]
रमयन्तीह तं नरम् [056.028]
सहस्रशतसंयुक्ते [056.029]
विमाने सूर्यवर्चसे [056.029]
आरूढस्त्रीशताकीर्णे [056.029]
विहरन्सुखमेधते [056.029]
न क्रुद्धो व्याधितो नार्तः [056.030]
प्रसन्नमनसेन्द्रियः [056.030]
गच्छेदनशनं यस्तु [056.030]
तस्यापि शृणु यत्फलम् [056.030]
शतं वर्षसहस्राणां [056.031]
स्वर्गलोके महीयते [056.031]
स्वस्थः सफलसंकल्पः [056.031]
सुखी विगतकल्मषः [056.031]
स्त्रीसहस्रसमाकीर्णे [056.031]
सुप्रभे सुखमेधते [056.031]
यावन्ति रोमकूपानि [056.032]
तस्य गात्रेषु भारत [056.032]
तावद्वर्षसहस्राणि [056.032]
दिव्यानि दिवि मोदते [056.032]
नास्ति वेदात्परं शास्त्रं [056.033]
नास्ति मातृसमो गुरुः [056.033]
न धर्मात्परमो लाभस् [056.033]
तपो नानशनात्परम् [056.033]
ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति [056.034]
दिवि चेह च पावनम् [056.034]
उपवासैस्तथा तुल्यं [056.034]
तपो ह्यन्यन्न विद्यते [056.034]
उपोष्य विधिवद्देवास् [056.035]
त्रिदिवं प्रतिपेदिरे [056.035]
मुनयश्च परां सिद्धिम् [056.035]
उपवासैरवाप्नुवन् [056.035]
दिव्यं वर्षसहस्रं तु [056.036]
विश्वामित्रेण धीमता [056.036]
क्षान्तमेकेन भक्तेन [056.036]
येन विप्रत्वमागतः [056.036]
च्यवनो जमदग्निश्च [056.037]
वसिष्ठो गौतमो भृगुः [056.037]
सर्वे ह्येते दिवं प्राप्ताः [056.037]
क्षमावन्तो बहुश्रुताः [056.037]
विधिनानेन राजेन्द्र [056.037]
यो मया परिकीर्तितः [056.037]
पठेत यो वै शृणुयाच्च भक्त्या [056.038]
न विद्यते तस्य नरस्य पापम् [056.038]
उपद्रवैर्मुच्यते सर्वाङ्गिकैर् [056.038]
न चापि पापैरभिभूयते नरः [056.038]
ब्राह्मणत्वं सुदुष्प्रापं [057.001]

निसर्गाद्ब्राह्मणो भवेत् [057.001]
क्षत्रियो वाथवा वैश्यो [057.001]
निसर्गादेव जायते [057.001]
दुष्कृतेन तु दुष्टात्मा [057.002]
स्थानाद्भ्रश्यति मानवः [057.002]
श्रेष्ठं स्थानं समासाद्य [057.002]
तस्माद्रक्षेत पण्डितः [057.002]
यस्तु विप्रत्वमुत्सृज्य [057.003]
क्षत्रियत्वं निषेवते [057.003]
ब्राह्मण्यात्स परिभ्रष्टः [057.003]
क्षत्रयोन्यां प्रसूयते [057.003]
वैश्यकर्माणि वा कुर्वन् [057.004]
वैश्ययोनौ प्रजायते [057.004]
शूद्रकर्माणि कुर्वाणः [057.004]
शूद्रत्वमुपपद्यते [057.004]
स तत्र दुर्गतिं प्राप्य [057.005]
स्थानाद्भ्रष्टो युधिष्ठिर [057.005]
शूद्रयोनिमनुप्राप्तो [057.005]
यदि धर्मं न सेवते [057.005]
मानुष्यात्स परिभ्रष्टस् [057.006]
तिर्यग्योनौ प्रजायते [057.006]
अधर्मसेवनान्मूढस् [057.006]
तमोपहतचेतनः [057.006]
जात्यन्तरसहस्राणि [057.007]
तत्रैव परिवर्तते [057.007]
तस्मात्प्राप्य शुभं स्थानं [057.007]
प्रमादान्न तु नाशयेत् [057.007]
शूद्रान्नेनावशेषेण [057.008]
यो म्रियेज्जठरे द्विजः [057.008]
आहिताग्निस्तथा यज्वा [057.008]
स शूद्रगतिभाग्भवेत् [057.008]
क्षत्रान्नेनावशेषेण [057.009]
क्षत्रत्वमुपपद्यते [057.009]
वैश्यान्नेनावशेषेण [057.009]
वैश्यत्वमुपपद्यते [057.009]
तां योनिं लभते विप्रो [057.009]
भुक्त्वान्नं यस्य वै मृतः [057.009]
ब्राह्मणत्वं शुभं प्राप्य [057.010]
दुर्लभं यो ऽवमन्यते [057.010]
भोज्याभोज्यं न जानाति [057.010]
स भवेत्क्षत्रियो द्विजः [057.010]
कर्मणा येन मेधावी [057.011]
शूद्रो वैश्यो ऽभिजायते [057.011]
तत्ते वक्ष्यामि निखिलं [057.011]
येन वर्णोत्तमो भवेत् [057.011]
शूद्रकर्म यथोद्दिष्टं [057.012]
शूद्रो भूत्वा समाचरेत् [057.012]
यथावत्परिचर्यां तु [057.012]
त्रिषु वर्णेषु नित्यदा [057.012]
कुरुते ऽविमना यस्तु [057.012]
स शूद्रो वैश्यतां व्रजेत् [057.012]
क्षत्रियत्वं यथा वैश्यस् [057.013]
तद्वक्ष्याम्यनुपूर्वशः [057.013]
चौक्षः पापजनद्वेष्टा [057.013]
शेषान्नकृतभोजनः [057.013]
अग्निहोत्रमुपादाय [057.014]
जुह्वानश्च यथाविधि [057.014]
स वैश्यः क्षत्रियकुले [057.014]
जायते नात्र संशयः [057.014]
क्षत्रियो ब्रह्मयोन्यां तु [057.015]
जायते शृणु तद्यथा [057.015]
ददाति यजते यज्ञैर् [057.015]
विधिवच्चाप्तदक्षिणैः [057.015]
अधीते स्वर्गमन्विच्छंस् [057.015]
त्रेताग्निशरणः सदा [057.015]
आर्तहस्तप्रदो नित्यं [057.016]
प्रजा धर्मेण पालयन् [057.016]
ऋतुकाले तु स्वां भार्याम् [057.016]
अभिगच्छन्विधानतः [057.016]
सर्वातिथ्यं त्रिवर्गस्य [057.017]
दीयतां भुज्यतामिति [057.017]
शूद्राणां याचकानां च [057.017]
नित्यं सिद्धिमिति ब्रुवन् [057.017]
गोब्राह्मणस्य चार्थाय [057.018]
रणे चाभिमुखो हतः [057.018]
त्रेताग्निमन्त्रपूतात्मा [057.018]
क्षत्रियो ब्राह्मणो भवेत् [057.018]
विधिज्ञः क्षत्रियकुले [057.018]
याजकः स तु जायते [057.018]
प्राप्यते ऽविकलः स्वर्गो [057.019]
वर्णैः सत्पथमास्थितैः [057.019]
ब्राह्मणत्वं सुदुष्प्रापं [057.019]
कृच्छ्रेणासाद्यते नरैः [057.019]
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन [057.019]

रक्षेद्ब्राह्मण्यमुत्तमम् [057.019]
सुवर्णं परमं दानं [058.001]
सुवर्णं दक्षिणा परा [058.001]
एतत्पवित्रं परमम् [058.001]
एतत्स्वस्त्ययनं महत् [058.001]
दश पूर्वापरान्वंशान् [058.002]
आत्मानं च विशाम्पते [058.002]
अपि पापशतं कृत्वा [058.002]
दत्त्वा विप्रेषु तारयेत् [058.002]
सुवर्णं ये प्रयच्छन्ति [058.003]
नराः शुद्धेन चेतसा [058.003]
देवतास्ते प्रयच्छन्ति [058.003]
समस्ता इति नः श्रुतम् [058.003]
अग्निर्हि देवताः सर्वाः [058.004]
सुवर्णं च हुताशनः [058.004]
तस्मात्सुवर्णं ददता [058.004]
दत्ताः सर्वाश्च देवताः [058.004]
अग्न्यभावे च कुर्वन्ति [058.005]
वह्निस्थानेषु काञ्चनम् [058.005]
सर्ववेदप्रमाणज्ञा [058.005]
वेदश्रुतिनिदर्शनात् [058.005]
ये त्वेनं ज्वालयित्वाग्निम् [058.006]
आदित्योदयनं प्रति [058.006]
दद्युर्वै व्रतमुद्दिश्य [058.006]
सर्वान्कामानवाप्नुयुः [058.006]
सुवर्णदः स्वर्गलोके [058.007]
कामानिष्टानुपाश्नुते [058.007]
विरजाम्बरसंवीतः [058.007]
परियाति यतस्ततः [058.007]
विमानेनार्कवर्णेन [058.008]
भास्वरेण विराजता [058.008]
अप्सरोगणसंकीर्णे [058.008]
भास्वता स्वेन तेजसा [058.008]
हंसबर्हिणयुक्तेन [058.009]
कामगेन नरोत्तमः [058.009]
दिव्यगन्धवहः स्वर्गे [058.009]
परिगच्छेदितस्ततः [058.009]
तस्मात्स्वशक्त्या दातव्यं [058.010]
काञ्चनं मानवैर्भुवि [058.010]
न ह्यतः परमं लोके [058.010]
सद्यः पापविमोचनम् [058.010]
सुवर्णस्य तु शुद्धस्य [058.011]
सुवर्णं यः प्रयच्छति [058.011]
बहून्यब्दसहस्राणि [058.011]
स्वर्गलोके महीयते [058.011]
लोकांस्तु सृजता पूर्वं [059.001]
गावः सृष्टाः स्वयंभुवा [059.001]
प्रीत्यर्थं सर्वभूतानां [059.001]
तस्मात्ता मातरः स्मृताः [059.001]
तास्तु दत्त्वा सौरभेयीः [059.002]
स्वर्गलोके महीयते [059.002]
तस्मात्ता वर्णयिष्यामि [059.002]
दानं चासां यथाविधि [059.002]
यादृशी विधिना येन [059.003]
दातव्या यादृशाय च [059.003]
द्विजाय पोषणार्थं तु [059.003]
होमधेनुकृते न वै [059.003]
प्रथमा गौरकपिला [059.*(70)]
द्वितीया गौरपिङ्गला [059.*(70)]
तृतीया रक्तकपिला [059.*(70)]
चतुर्थी नीलपिङ्गला [059.*(70)]
पञ्चमी शुक्लपिङ्गाक्षी [059.*(70)]
षष्ठी तु शुक्लपिङ्गला [059.*(70)]
सप्तमी चित्रपिङ्गाक्षी [059.*(70)]
अष्टमी बभ्रुरोहिणी [059.*(70)]
नवमी श्वेतपिङ्गाक्षी [059.*(70)]
दशमी श्वेतपिङ्गला [059.*(70)]
तादृशा ये ऽप्यनड्वाहः [059.*(70)]
कपिलास्ते प्रकीर्तिताः [059.*(70)]
ब्राह्मणो वाहयेत्तांस्तु [059.*(70)]
नान्यो वर्णः कदाचन [059.*(70)]
धेनुं दत्त्वा सुव्रतां सोपधानां [059.004]
कल्याणवत्सां च पयस्विनीं च [059.004]
यावन्ति रोमाणि भवन्ति धेन्वा [059.004]
दुह्येत कामान्नृप वर्षाणि तावत् [059.004]
प्रयच्छते यः कपिलां सवत्सां [059.005]
कांस्योपदोहां कनकाग्रशृङ्गीम् [059.005]
तैस्तैर्गुणैः कामदुघा हि भूत्वा [059.005]
नरं प्रदातारमुपैति सा गौः [059.005]
गोसहस्रं तु यो दद्यात् [059.006]
सर्वकामैरलंकृतम् [059.006]
परां वृद्धिं श्रियं प्राप्य [059.006]
स्वर्गलोके महीयते [059.006]
दश चोभयतः प्रेत्य [059.007]

मातामहपितामहैः [059.007]
गच्छेत्सुकृतिनां लोकान् [059.007]
गावो दत्त्वा यथाविधि [059.007]
दायादलब्धैरर्थैर्यो [059.008]
गवाः क्रीत्वा प्रयच्छति [059.008]
तस्यापि चाक्षया लोका [059.008]
भवन्तीह परत्र च [059.008]
यो द्यूतेन धनं जित्वा [059.009]
क्रीत्वा गावः प्रयच्छति [059.009]
स गच्छेद्दिरजांल्लोकान् [059.009]
गोप्रदानफलार्जितान् [059.009]
प्रतिगृह्य तु यो दद्याद् [059.010]
गावः शुद्धेन चेतसा [059.010]
स गत्वा दुर्गमं स्थानम् [059.010]
अमरैः सह मोदते [059.010]
यश्चात्मविक्रयं कृत्वा [059.011]
गावो दद्याद्यथाविधि [059.011]
स गत्वा विरजांल्लोकान् [059.011]
सुखं वसति देववत् [059.011]
संग्रामे यस्तनुं त्यक्त्वा [059.012]
गावः क्रीत्वा प्रयच्छति [059.012]
देहविक्रयमूल्यस्ताः [059.012]
शाश्वताः कामदोहनाः [059.012]
रूपान्विताः शीलवयोपपन्नाः [059.013]
सर्वाः प्रशस्ता हि सुगन्धवत्यः [059.013]
यथा हि गङ्गा सरितां वरिष्ठा [059.013]
तथार्जुनीनां कपिला वरिष्ठा [059.013]
अन्तर्जाताः सुक्रयज्ञानलब्धाः [059.014]
प्राणांस्त्यक्त्वा सोदकाः सोद्वहाश्च [059.014]
कृच्छ्रोत्सृष्टाः पोषणायाभ्युपेता [059.014]
द्वारैरेतैर्गोविशेषा वरिष्ठाः [059.014]
तिस्रो रात्र्यश्चाप्युपोष्येह दाता [059.015]
तृप्ता गा वै तर्पितेभ्यः प्रयच्छेत् [059.015]
वत्सैः पीताः सोपधानास्त्र्यहं च [059.015]
दत्त्वा गा वै गोरसैर्वर्तितव्यम् [059.015]
लोके ज्येष्ठा लोकवृत्तान्तवृत्ता [059.016]
वेदैर्गीताः सोमनिष्यन्दभूताः [059.016]
सौम्याः पुण्याः कामदाः प्राणदाश्च [059.016]
गावो दत्त्वा सर्वदा सन्ति सन्तः [059.016]
न चैवासां दानमात्रं प्रशस्तं [059.017]
पात्रं कालो गोविशेषो विधिश्च [059.017]
दृष्ट्वा गावः पावकादित्यभूताः [059.017]
स्वाध्यायाढ्ये पात्रवर्ये विशिष्टे [059.017]
वैतानस्थं सत्यवाक्यं कृतज्ञं [059.018]
गोषु क्षान्तं गोशरण्यं सुवृत्तं [059.018]
शस्तं पात्रं गोप्रदानस्य भूमेस् [059.018]
तथा सुवर्णस्य च सर्वकालम् [059.018]
भिक्षादानं चाधिकं संप्रशस्तं [059.*(71)]
पाथोदानं चान्नदानं तथा च [059.*(71)]
भिक्षते बहुभृत्याय [059.019]
श्रोत्रियायाहिताग्नये [059.019]
दातव्या गौः प्रयत्नेन [059.019]
एकाप्यतिफला हि सा [059.019]
तां चेद्विक्रीणते राजन् [059.020]
वचसा कलुषीकृताम् [059.020]
नासौ प्रशस्यते विप्रो [059.020]
ब्राह्मणो नैव स स्मृतः [059.020]
तस्याधर्मप्रवृत्तस्य [059.021]
लुब्धस्यानृतवादिनः [059.021]
हव्यकव्यव्यपेतस्य [059.021]
न देया गौः कथंचन [059.021]
जीर्णां चैवोपभुक्तां च [059.022]
जरत्कूपमिवाफलाम् [059.022]
तमः प्रविशते दाता [059.022]
द्विजं क्लेशेन योजयन् [059.022]
दुष्टाः कृशाश्चैव पालयतीश्च [059.023]
नैतादृशा दानयोग्या भवन्ति [059.023]
क्लेशैर्विप्रं यो ऽफलैः संयुनक्ति [059.023]
गच्छेत्स तिर्यग्विफलांश्च लोकान् [059.023]
अनड्वाहं सुव्रतं यो ददाति [059.024]
हलस्य वोढारमनन्तवीर्यम् [059.024]
युगंधरं बलवन्तं युवानं [059.024]
प्राप्नोति लोकान्दशधेनुदस्य [059.024]
प्रयच्छते यः पुरुषो द्विजाय [059.025]
स्वाध्यायचारित्रगुणान्विताय [059.025]
बलेन युक्तं वृषभं तु नीलं [059.025]
षडाङ्गवं प्रीतिकरं सुरूपम् [059.025]
युवानं बलिनं श्यामं [059.026]
शतेन सह यूथपम् [059.026]
गवेन्द्रं ब्राह्मणेन्द्राय [059.026]
भूरिशृङ्गमलंकृतम् [059.026]
वृषभं ये प्रयच्छन्ति [059.027]
श्रोत्रियायाहिताग्नये [059.027]
ते गत्वा तद्गवां लोकं [059.*(72)]

देवलोकान्महत्तरम् [059.*(72)]
तत्र स्थित्वा तु सुचिरं [059.*(72)]
सर्वकामैः सुतर्पिताः [059.*(72)]
ऐश्वर्ये ते ऽभिजायन्ते [059.027]
जायमानाः पुनः पुनः [059.027]
सदक्षिणां काञ्चनरूप्यशृङ्गीं [059.028]
कांस्योपदोहां कनकोत्तरीयाम् [059.028]
धेनुं तिलानां कनकोत्तरीयाम् [059.028]
लोका वसूनामचला भवन्ति [059.028]
तिलालाभे तु यो दद्याद् [059.029]
घृतधेनुं यतव्रतः [059.029]
स दुर्गात्तारितो धेन्वा [059.029]
ब्रह्मलोके महीयते [059.029]
घृतालाभे तु यो दद्याज् [059.030]
जलधेनुं यतव्रतः [059.030]
स सर्वं तरते दुर्गं [059.030]
जलं दिव्यं समश्नुते [059.030]
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च [059.031]
कुलमेकं द्विधाकृतम् [059.031]
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति [059.031]
हविरेकत्र तिष्ठति [059.031]
उपगम्य तु यो दद्याद् [059.032]
गावः शुद्धेन चेतसा [059.032]
यावन्ति तासां रोमाणि [059.032]
तावत्स्वर्गे महीयते [059.032]
शृणु त्वं मे गवां लोका [059.033]
यादृशा यत्र वा स्थिताः [059.033]
मनोज्ञा रमणीयाश्च [059.033]
सर्वकामदुघाः सदा [059.033]
पुण्याः पापहराश्चैव [059.034]
गवां लोका न संशयः [059.034]
अत्यन्तसुखिनस्तत्र [059.034]
सर्वपापविवर्जिताः [059.034]
प्रमोदन्ते महास्थाने [059.035]
नरा विगतकल्मषाः [059.035]
ते व्रजन्ते विमानेषु [059.035]
ग्रहा दिवि गता इव [059.035]
एवं यैर्दत्तसत्काराः [059.036]
सुरभ्यश्चार्चिताः सदा [059.036]
कामरूपा महात्मानः [059.036]
पूता विगतकिल्बिषाः [059.036]
तुल्यप्रभावा देवैस्ते [059.037]
मोदन्ते ऽप्सरसां गणैः [059.037]
गन्धर्वैरुपगीयन्ते [059.037]
गोशरण्या न संशयः [059.037]
ब्रह्मण्याः साधुवृत्ताश्च [059.038]
दयावन्तो ऽनुकम्पिनः [059.038]
घृणिनः शुभकर्माणो [059.038]
मोदन्ते ते ऽमरैः सह [059.038]
यथैव सलिले मत्स्यः [059.039]
सलिलेन सहोह्यते [059.039]
गोभिः पापकृतं कर्म [059.039]
दृढमेव मयोह्यते [059.039]
मातरः सर्वभूतानां [059.040]
प्रजासंरक्षणे स्मृताः [059.040]
ब्रह्मणा लोकसारेण [059.040]
गावः पापभयापहाः [059.040]
तासु दत्तासु राजेन्द्र [059.041]
किं न दत्तं भवेदिह [059.041]
कृशाय तु विशेषेण [059.041]
वृत्तिग्लानाय सीदते [059.041]
भूदानेन समं दानं [060.001]
न भूतं न भविष्यति [060.001]
इति धर्मविदः प्राहुस् [060.001]
तन्मे निगदतः शृणु [060.001]
षष्टिं वर्षसहस्राणि [060.002]
स्वर्गे वसति भूमिदः [060.002]
आच्छेत्ता चानुमन्ता च [060.002]
तान्येव नरके वसेत् [060.002]
अतिदानं तु सर्वेषां [060.003]
भूमिदानमिहोच्यते [060.003]
अचला ह्यक्षया भूमिः [060.003]
सर्वान्कामान्प्रयच्छति [060.003]
भूमिदः स्वर्गमारुह्य [060.004]
शाश्वतीरेधति समाः [060.004]
पुनश्च जन्म संप्राप्य [060.004]
भवेद्भूमिपतिर्ध्रुवम् [060.004]
यथा भूमिः सदा देवी [060.005]
दातारं कुरुते पतिम् [060.005]
एवं सदक्षिणा दत्ता [060.005]
कुरुते गौर्जनाधिपम् [060.005]
अपि पापकृतं प्राप्य [060.006]
प्रतिगृह्णीत भूमिदम् [060.006]
महीं ददन्पवित्री स्यात् [060.006]

पुण्या हि जगती यतः [060.006]
नाम वै प्रियदत्तेति [060.007]
गुह्यमेतत्सनातनम् [060.007]
तदस्याः सततं प्रीत्यै [060.007]
कीर्तनीयं प्रयच्छता [060.007]
यत्किंचित्कुरुते पापं [060.008]
पुरुषो वृत्तिकर्षितः [060.008]
अपि गोचर्ममात्रेण [060.008]
भूमिदानेन शुध्यति [060.008]
सुवर्णं रजतं ताम्रं [060.009]
मणिमुक्तावसूनि च [060.009]
सर्वानेतान्महाप्राज्ञ [060.009]
ददाति वसुधां ददन् [060.009]
तपो यज्ञाः श्रुतं शीलम् [060.010]
अलोभः सत्यवादिता [060.010]
गुरुदैवतपूजा च [060.010]
नातिक्रमन्ति भूमिदम् [060.010]
भर्तुर्निःश्रेयसे युक्तास् [060.011]
त्यक्तात्मानो रणे हताः [060.011]
ब्रह्मलोकगताः सन्तो [060.011]
नातिक्रामन्ति भूमिदम् [060.011]
फलकृष्टां महीं दत्त्वा [060.012]
सोदकां सफलान्विताम् [060.012]
सोदकं वापि शरणं [060.012]
प्राप्नोति मम संपदम् [060.012]
रत्नोपकीर्णां वसुधां [060.013]
यो ददाति द्विजातये [060.013]
मुक्तः स कलुषैः सर्वैः [060.013]
स्वर्गलोके महीयते [060.013]
इक्षुभिः संततां भूमिं [060.014]
यवगोधूमशाड्बलाम् [060.014]
ये प्रयच्छन्ति विप्रेभ्यो [060.014]
नोपसर्पन्ति ते यमम् [060.014]
सर्वकामदुघां धेनुं [060.015]
सर्वसस्यसमुद्भवाम् [060.015]
यो ददाति द्विजेन्द्राय [060.015]
ब्रह्मलोकं स गच्छति [060.015]
भूमिदानं नरः कुर्वन् [060.016]
मुच्यते महतो भयात् [060.016]
न भूयो भूमिदानाद्धि [060.016]
दानमन्यद्विशिष्यते [060.016]
पुण्यां सर्वरसां भूमिं [060.017]
यो ददाति नरर्षभ [060.017]
न तस्य लोकाः क्षीयन्ते [060.017]
भूमिदस्य महात्मनः [060.017]
यथा जनित्री पुष्णाति [060.018]
क्षीरेण स्वसुतं नृप [060.018]
एवं सर्वगुणा भूमिर् [060.018]
दातारमनुपुष्यति [060.018]
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैर् [060.019]
इष्ट्वा विपुलदक्षिणैः [060.019]
न तत्फलं अवाप्नोति [060.019]
यद्दत्त्वा वसुधां नृप [060.019]
मृत्योर्हि किंकरा दण्डा ह्य् [060.020]
अग्नितापाः सुदारुणाः [060.020]
घोराश्च वारुणाः पाशा [060.020]
नोपसर्पन्ति भूमिदम् [060.020]
पितरः पितृलोकस्था [060.021]
देवलोके दिवौकसः [060.021]
संतर्पयन्ति दातारं [060.021]
भूमेः प्रभवतां वर [060.021]
कृशाय कृशभृत्याय [060.022]
वृत्तिक्षीणाय सीदते [060.022]
भूमिं वृत्तिकरीं दत्त्वा [060.022]
सत्री भवति मानवः [060.022]
सिंहासनं तथा च्छत्रं [060.023]
वराश्वा वरवारणाः [060.023]
भूमिदानस्य पुष्पाणि [060.023]
फलं स्वर्गं तथैव च [060.023]
आदित्या इव दीप्यन्ते [060.024]
तेजसा दिवि मानवाः [060.024]
ये प्रयच्छन्ति वसुधां [060.024]
ब्राह्मणायाहिताग्नये [060.024]
यथा बीजानि रोहन्ति [060.025]
प्रकीर्णानि महीतले [060.025]
तथा कामाधिरोहन्ति [060.025]
भूमिदानगुणार्जिताः [060.025]
आस्फोटयन्ति पितरः [060.026]
प्रवल्गन्ति पितामहाः [060.026]
भूमिदो नः कुले जातः [060.026]
स नः संतारयिष्यति [060.026]
आदित्या वसवो रुद्रा ह्य् [060.027]
अश्विनौ वसुभिः सह [060.027]
शूलपाणिश्च भगवान् [060.027]

अभिनन्दन्ति भूमिदम् [060.027]
स नः कुलस्य पुरुषः [060.028]
स नो बन्धुः स नो गतिः [060.028]
स दाता स च विक्रान्तो [060.028]
यो ददाति वसुंधराम् [060.028]
दातारमनुगृह्णाति [060.029]
यथा दत्तेन रोचते [060.029]
पूर्वदत्तां हरन्भूमिं [060.029]
नरकायोपपद्यते [060.029]
विन्ध्याटवीष्वतोयासु [060.030]
शुष्ककोटरवासिनः [060.030]
कृष्णसर्पा हि जायन्ते [060.030]
ये हरन्ति वसुंधराम् [060.030]
पतन्त्यश्रूणि रुदतां [060.031]
दीनानामवसीदताम् [060.031]
ब्राह्मणानां हृतं क्षेत्रं [060.031]
हन्यात्त्रिपुरुषं कुलम् [060.031]
साधुभ्यो भूमिमाक्षिप्य [060.032]
न भूतिं विन्दते क्वचित् [060.032]
दत्त्वा हि भूमिं साधुभ्यो [060.032]
विन्दते भूतिमुत्तमाम् [060.032]
पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो [060.033]
यत्नाद्रक्ष युधिष्ठिर [060.033]
महीं महीभृतां श्रेष्ठ [060.033]
दानाच्छ्रेयो ऽनुपालनम् [060.033]
यत्रैषः पठ्यते श्राद्धे [060.034]
भूमिदानस्य संस्तवः [060.034]
न तत्र रक्षसां भागो [060.034]
नासुराणां कथंचन [060.034]
अक्षयं तु भवेच्छ्राद्धं [060.035]
पितॄणां नात्र संशयः [060.035]
तस्माद्विश्रावयेदेनं [060.035]
श्राद्धेषु ब्राह्मणान्सदा [060.035]
एवमेतद्यथोद्दिष्टं [060.036]
पितॄणां दत्तमक्षयम् [060.036]
भूमिदानं महाराज [060.036]
सर्वपापापहं शुभम् [060.036]
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैर् [061.001]
इष्ट्वा विपुलदक्षिणैः [061.001]
न तत्फलमवाप्नोति [061.001]
संग्रामे यदवाप्नुयात् [061.001]
इति यज्ञविदः प्राहुर् [061.002]
यज्ञकर्मविशारदाः [061.002]
तस्मात्तत्ते प्रवक्ष्यामि [061.002]
यत्फलं शस्त्रजीविनाम् [061.002]
धर्मलाभो ऽर्थलाभश्च [061.003]
यशोलाभस्तथैव च [061.003]
यः शूरो वध्यते युद्धे [061.003]
विमृदन्परवाहिनीम् [061.003]
तस्य धर्मार्थकामाश्च [061.003]
यज्ञाश्चैवाप्तदक्षिणाः [061.003]
परं ह्यभिमुखं हत्वा [061.004]
तद्यानं यो ऽधिरोहति [061.004]
विष्णुक्रान्तं स यजत [061.004]
एवं युध्यन्रणाजिरे [061.004]
अश्वमेधानवाप्नोति [061.004]
चतुरस्तेन कर्मणा [061.004]
यस्तु शस्त्रमनुत्सृज्य [061.005]
वीर्यवान्वाहिनीमुखे [061.005]
संमुखो वर्तते शूरः [061.005]
स स्वर्गान्न विवर्तते [061.005]
राजानं राजपुत्रं वा [061.006]
सेनापतिमथापि वा [061.006]
हन्यात्क्षत्रेण यः शूरस् [061.006]
तस्य लोको ऽक्षयो ध्रुवः [061.006]
यावन्ति तस्य शस्त्राणि [061.007]
भिन्दन्ति त्वचमाहवे [061.007]
तावतो लभते लोकान् [061.007]
सर्वकामदुघो ऽक्षयान् [061.007]
वीरासनं वीरशय्या [061.008]
वीरस्थानस्थितिः स्थिरा [061.008]
गवार्थे ब्राह्मणार्थे वा [061.008]
स्वाम्यर्थे तु कृतं च यैः [061.008]
ते गच्छन्त्यमलं स्थानं [061.008]
यथा सुकृतिनस्तथा [061.008]
अभग्नं यः परं हन्याद् [061.009]
भग्नं च परिरक्षति [061.009]
यस्मिन्स्थिते पलायन्ति [061.009]
सो ऽपि प्राप्नोति स्वर्गतिम् [061.009]
ऊर्ध्वं तिर्यक्क यश्चार्वाक् [061.010]
प्राणान्संत्यजते युधि [061.010]
हताश्वश्च पतेद्युद्धे [061.010]
स स्वर्गान्न निवर्तते [061.010]
यस्य चिह्नीकृतं गात्रं [061.011]

शरशक्त्यृष्टितोमरैः [061.011]
देवकन्यास्तु तं वीरं [061.011]
रमयन्ति रमन्ति च [061.011]
वराप्सरःसहस्राणि [061.012]
शूरमायोधने हतम् [061.012]
त्वरितान्यभिधावन्ति [061.012]
मम भर्ता ममेति च [061.012]
हतस्याभिमुखस्याजौ [061.013]
पतितस्यानिवर्तिनः [061.013]
ह्रियते यत्परैर्द्रव्यं [061.013]
नरमेधफलं तु तत् [061.013]
भूयो गतिं प्रवक्ष्यामि [061.014]
रणे ये ऽभिमुखा हताः [061.014]
शक्यं त्विह समृद्धैस्तु [061.015]
यष्टुं क्रतुशतैर्नरैः [061.015]
आत्मदेहं तु विप्रार्थे [061.015]
त्यक्तुं युद्धे सुदुष्करम् [061.015]
यां यज्ञसंघैस्तपसा च विप्राः [061.016]
स्वर्गैषिणस्तत्र चयैः प्रयान्ति [061.016]
क्षणेन तामेव गतिं प्रयान्ति [061.016]
महाहवे स्वां तनुं संत्यजन्तः [061.016]
सर्वांश्च वेदान्सह षड्भिरङ्गैः [061.017]
सांख्यं च योगं च वने च वासम् [061.017]
एतान्गुणानेक एवातिशेते [061.017]
संग्रामधाम्न्यात्मतनुं त्यजेद्यः [061.017]
इमां गिरं चित्रपदां शुभाक्षरां [061.018]
सुभाषितां वृतभिदां दिवौकसाम् [061.018]
चमूमुखे यः स्मरते दृढस्मृतिर् [061.018]
न हन्यते हन्ति च सो ऽरणे रिपून् [061.018]
एष पुण्यतमः स्वर्ग्यः [061.019]
सुयज्ञः सर्वतोमुखः [061.019]
सर्वेषामेव वर्णानां [061.019]
क्षत्रियस्य विशेषतः [061.019]
भूयश्चैव प्रवक्ष्यामि [061.020]
भीष्मवाक्यमनुत्तमम् [061.020]
यादृशाय प्रहर्तव्यं [061.020]
यादृशं परिवर्जयेत् [061.020]
आततायिनमायान्तम् [061.021]
अपि वेदान्तगं रणे [061.021]
जिघांसन्तं जिघांसीयान् [061.021]
न तेन ब्रह्महा भवेत् [061.021]
हताश्वश्च न हन्तव्यः [061.022]
पानीयं यश्च याचते [061.022]
व्याधितो दुर्बलश्चैव [061.022]
रथहीनस्तथैव च [061.022]
भग्नधन्वाच्छिन्नगुणः [061.023]
प्राणेप्सुः कृपणं ब्रुवन् [061.023]
विमुक्तकेशो धावेद्यो [061.023]
यश्चोन्मत्ताकृतिर्भवेत् [061.023]
पर्णशाखातृणग्राही [061.024]
तवास्मीति च यो वदेत् [061.024]
ब्राह्मणो ऽस्मीति यश्चाह [061.024]
बालो वृद्धो नपुंसकः [061.024]
तस्मादेतान्परिहरेद् [061.025]
यथोद्दिष्टान्रणाजिरे [061.025]
हतो न हन्यते सद्भिर् [061.025]
हता एव हि भीरवः [061.025]
अमांसभक्षणे राजन् [062.001]
यो धर्मः कुरुपुङ्गव [062.001]
तन्मे शृणु यथातथ्यं [062.001]
यश्चास्य विधिरुत्तमः [062.001]
मासि मास्यश्वमेधेन [062.002]
यो यजेत शतं समाः [062.002]
न च खादति यो मांसं [062.002]
सममेतद्युधिष्ठिर [062.002]
सदा यजति सत्त्रेण [062.003]
सदा दानं प्रयच्छति [062.003]
सदा तपस्वी भवति [062.003]
मधुमांसविवर्जनात् [062.003]
सर्ववेदा न तत्कुर्युः [062.004]
सर्वदानानि चैव हि [062.004]
यो मांसरसमास्वाद्य [062.004]
सर्वमांसानि वर्जयेत् [062.004]
दुष्करं हि रसज्ञेन [062.005]
मांसस्य परिवर्जनम् [062.005]
चतुर्व्रतमिदं श्रेष्ठं [062.005]
प्राणिनां मृत्युभीरुणाम् [062.005]
तदा भवति लोके ऽस्मिन् [062.006]
प्राणिनां जीवितैषिणाम् [062.006]
विश्वास्यश्चोपगम्यश्च [062.006]
न हि हिंसारुचिर्यदा [062.006]
दुष्टरांस्तरते म॥ ॥आं [062.*(74)]
मांसस्य परिवर्जनात् [062.*(74)]
प्राणा यथात्मनो ऽभीष्टा [062.007]

भूतानामपि ते तथा [062.007]
आत्मौपम्येन गन्तव्यं [062.007]
बुद्धिमद्भिर्महात्मभिः [062.007]
अहिंसा परमो धर्मः [062.008]
सत्यमेव च पाण्डव [062.008]
अहिंसा चैव सत्यं च [062.008]
धर्मो हि परमः स्मृतः [062.008]
न हि मांसं तृणात्काष्ठाद् [062.009]
उपलाद्वापि जायते [062.009]
जीवादुत्पद्यते मांसं [062.*(75)]
तस्माद्वर्हन्ति तद्बुधाः [062.*(75)]
यदि वै खादको न स्यान् [062.009]
न तदा घातको भवेत् [062.009]
लोभाद्वा बुद्धिमोहाद्वा [062.010]
यो मांसान्यत्ति मानवः [062.010]
निर्घृणः स हि मन्तव्यः [062.010]
सद्धर्मपरिवर्जितः [062.010]
स्वमांसं परमांसेन [062.011]
यो वर्धयितुमिच्छति [062.011]
उद्विग्नवासे वसति [062.011]
यत्रतत्राभिजायते [062.011]
धनेन क्रायको हन्ति [062.012]
उपभोगेन खादकः [062.012]
घातको वधबन्धाभ्याम् [062.012]
इत्येष त्रिविधो वधः [062.012]
भक्षयित्वा तु यो मांसं [062.013]
पश्चादपि निवर्तते [062.013]
तस्यापि सुमहान्धर्मो [062.013]
यः पापाद्विनिवर्तते [062.013]
वरमेकस्य सत्त्वस्य [062.*(76)]
दद्यादक्षयदक्षिणाम् [062.*(76)]
न तु विप्रसहस्रस्य [062.*(76)]
गोसहस्रं सकाञ्चनम् [062.*(76)]
यो दद्यात्काञ्चनं मेरुं [062.*(76)]
कृत्स्नां वापि वसुंधराम् [062.*(76)]
अभक्षणं च मांसस्य [062.*(76)]
न तु तुल्यं युधिष्ठिर [062.*(76)]
इदमन्यत्प्रवक्ष्यामि [062.013]
पुराणमृषिनिर्मितम् [062.013]
श्रूयते च पुराकल्पे ह्य् [062.014]
ऋषीणां व्रीहयः पशुः [062.014]
यजन्ते येन वै यज्ञान् [062.014]
ऋषयः पुण्यकर्मिणः [062.014]
ऋषिभिः संशयं पृष्टो [062.015]
वसू राजा ततः पुरा [062.015]
अभक्ष्यं भक्ष्यमिति वै [062.015]
मांसमाह नराधिप [062.015]
आकाशान्मेदिनीं प्राप्तस् [062.016]
ततः स पृथिवीपतिः [062.016]
एतदेव पुनश्चोक्त्वा [062.016]
विवेश धरणीतलम् [062.016]
कौमुदं तु विशेषेण [062.017]
शुक्लपक्षे नराधिप [062.017]
वर्जयेत्सर्वमांसानि [062.017]
धर्मो ह्यत्र विधीयते [062.017]
चतुरो वार्षिकान्मासान् [062.018]
यो मांसं परिवर्जयेत् [062.018]
चत्वारि भद्राण्याप्नोति [062.018]
कीर्तिरायुर्यशो बलम् [062.018]
अप्येकमिह यो मासं [062.019]
सर्वमांसानि वर्जयेत् [062.019]
अतीत्य सर्वदुःखानि [062.019]
सुखं जीवेन्निरामयः [062.019]
यो हि वर्षशतं पूर्णं [062.020]
तपस्तप्येत्सुदारुणम् [062.020]
अप्येकं वर्जयेन्मासं [062.020]
मांसमेतत्समं मतम् [062.020]
यो वर्जयति मांसानि [062.021]
मासं पक्षमथापि वा [062.021]
स वै हिंसानिवृत्तस्तु [062.021]
ब्रह्मलोके महीयते [062.021]
सर्वकालं तु मांसानि [062.022]
वर्जितानि महर्षिभिः [062.022]
मन्वा क्षुपेण श्वेतेन [062.022]
तथैवेक्ष्वाकुनापि च [062.022]
भृगुणा नलरामाभ्यां [062.023]
दिलीपरघुपौरवैः [062.023]
आयुषा चैव गार्ग्येण [062.023]
जनकैश्चक्रवर्तिभिः [062.023]
धुन्धुमाराम्बरीषाभ्यां [062.024]
नहुषेण च धीमता [062.024]
गाधिना पुरुकुत्सेन [062.024]
कुरुणा पुरुणा तथा [062.024]
मुचुकुन्देन मान्धात्रा [062.025]

सगरेण महात्मना [062.025]
शिबिना चाश्वपतिना [062.025]
वीरसेनादिभिस्तथा [062.025]
संजयेनाथ भीष्मेण [062.026]
पुष्करेणाथ पाण्डुना [062.026]
सुवर्णष्ठीविना चैव [062.026]
दुष्वन्तनृगरोहितैः [062.026]
एतैश्चान्यैश्च बहुभिः [062.027]
सर्वैर्मांसं न भक्षितम् [062.027]
शरत्कौमुदिकं मासं [062.027]
ततः स्वर्गं गता नृपाः [062.027]
सर्वकामसमृद्धास्ते [062.027]
वसन्ति दिवि संस्थिताः [062.027]
ब्रह्मलोके च पूज्यन्ते [062.028]
ज्वलमानाः श्रियावृताः [062.028]
उपास्यमाना गान्धर्वैः [062.028]
स्त्रीसहस्रसमन्विताः [062.028]
तदेवमुत्तमं धर्मम् [062.029]
अहिंसालक्षणं शुभन् [062.029]
ये रक्षन्ति महात्मानो [062.029]
नाकपृष्ठे वसन्ति ते [062.029]
मधु मांसं च ये नित्यं [062.030]
वर्जयन्तीह मानवाः [062.030]
जन्मप्रभृति मद्यं च [062.030]
सर्वे ते मुनयः स्मृताः [062.030]
आपन्नश्चापदो मुच्येद् [062.031]
बद्धो मुच्येत बन्धनात् [062.031]
व्याधितो मुच्यते रोगाद् [062.031]
दुःखान्मुच्येत दुःखितः [062.031]
यश्चैनं पठते नित्यं [062.032]
प्रयत्नाद्भरतर्षभ [062.032]
घोरं संतरते दुर्गं [062.032]
स्वर्गवासं च विन्दति [062.032]
तिर्यग्योनिं न गच्छेच्च [062.032]
रूपवांश्चैव जायते [062.032]
एतत्ते कथितं राजन् [062.033]
मांसस्य परिवर्जनम् [062.033]
प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च [062.033]
प्रमाणमृषिसत्तमैः [062.033]
गोब्राह्मणहितार्थाय [063.001]
चातुर्वर्ण्यहिताय च [063.001]
अशिष्टनिग्रहार्थाय [063.001]
शिष्टानां रक्षणाय च [063.001]
युधिष्ठिरस्य राजर्षेर् [063.001]
एवं नारायणो ऽब्रवीत् [063.001]
पञ्च रूपाणि राजानो [063.002]
धारयन्त्यमितौजसः [063.002]
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य [063.002]
यमस्य वरुणस्य च [063.002]
तान्न हिंसेन्न चाक्रोशेन् [063.003]
नाक्षिपेन्नाप्रियं वदेत् [063.003]
देवा मानुषरूपेण [063.003]
चरन्ति पृथिवीमिमाम् [063.003]
इन्द्रात्प्रभुत्वं ज्वलनात्प्रतापं [063.004]
क्रौर्यं यमाद्वैश्रवणात्प्रभावम् [063.004]
सत्त्वस्थितिं रामजनार्दनाभाम् [063.004]
आदाय राज्ञः क्रियते शरीरम् [063.004]
न चापि राजा मन्तव्यो [063.005]
मनुष्यो ऽयमिति प्रभो [063.005]
महती देवता ह्येषा [063.005]
नररूपेण तिष्ठति [063.005]
स्वयमिन्द्रो नरो भूत्वा [063.006]
पृथिवीमनुशासति [063.006]
न हि पालयितुं शक्तो [063.006]
मनुष्यः पृथिवीमिमाम् [063.006]
यत्प्रजापालनैः पुण्यं [063.007]
प्राप्नुवन्तीह पार्थिवाः [063.007]
न तत्क्रतुसहस्रेण [063.007]
प्राप्नुवन्ति द्विजोत्तमाः [063.007]
अधीतहुततप्तस्य [063.008]
कर्मणः सुकृतस्य च [063.008]
षष्ठं लभति भागं तु [063.008]
प्रजा धर्मेण पालयन् [063.008]
ग्रामाधिपत्यं नगराधिपत्यं [063.009]
देशाधिपत्यं पृथिवीपतित्वम् [063.009]
न प्राप्नुवन्तीह मनुष्यमात्रा [063.009]
ये देवतानां न भवन्ति भागाः [063.009]
न तदस्ति व्रतं लोके [063.010]
यद्राज्ञश्चरितोपमम् [063.010]
न तद्वेदरहस्यं वा [063.010]
यद्राज्ञः फलतो ऽधिकम् [063.010]
एवंवृत्तास्तु राजानो [063.010]
देवभागा न मानुषाः [063.010]
चतुर्वेद्यं हुतच ॥न [063.*(77)]

यो हिंसेत नराधिपः [063.*(77)]
दण्डस्यैते भयाद्भीता [063.*(77)]
न खादन्ति परस्परम् [063.*(77)]
ज ॥दण्डभयात्के ॥ । [063.*(77)]
न दुर्वन्ति हि पातकम् [063.*(77)]
यमदण्डभयादन्ये [063.*(77)]
न दुर्वन्ति परस्परम् [063.*(77)]
नाभीतो यजते कांश्चन [063.*(77)]
नाभीतो दण्डमिच्छति [063.*(77)]
य एव देवा हन्तारस् [063.011]
तांल्लोको ऽर्चयते भृशम् [063.011]
हन्ता शक्रश्च रुद्रश्च [063.011]
हन्ता वैश्रवणो यमः [063.011]
वरुणो वायुरादित्यः [063.011]
पर्जन्यो ऽग्निर्बृहस्पतिः [063.011]
एतान्देवान्नमस्यन्ति [063.012]
प्रतापप्रणता जनाः [063.012]
न ब्रह्माणं न धातारं [063.012]
न पूषाणं कथंचन [063.012]
दण्डग्रस्तं जगत्सर्वं [063.013]
वश्यत्वमनुगच्छति [063.013]
नायं क्लीबस्य लोको ऽस्ति [063.013]
न परः पार्थिवोत्तम [063.013]
न हि पश्यामि जीवन्तं [063.014]
राजन्कंचिदहिंसया [063.014]
उदके जन्तवो नित्यं [063.014]
पृथिव्यां च फलेषु च [063.014]
न हत्वा लिप्यते राजा [063.014]
प्रजा धर्मेण पालयन् [063.014]
यदि दण्डो न विद्येत [063.015]
दुर्विनीतास्तथो नराः [063.015]
हन्युः पशून्मनुष्यांश्च [063.015]
याज्ञियानि हवींषि च [063.015]
वृकवत्क्षपयेयुश्च [063.*(78)]
यो यस्य बलवत्तरः [063.*(78)]
तस्मात्प्राणिहिते दण्डे [063.*(79)]
हिंसादोषो न बाधते [063.*(79)]
नैवोस्त्रा न बलीवर्दा [063.016]
नाश्वाश्वतरगर्दभाः [063.016]
युक्ता वहेयुर्यानानि [063.016]
दण्डश्चेन्नोद्यतो भवेत् [063.016]
सत्यं किलैतद्यदुवाच शक्रो [063.017]
दण्डः प्रजा रक्षति साधुवृत्तः [063.017]
यस्याग्नयः प्रतिमासस्य भीताः [063.017]
संतर्जिता दण्डभयाज्ज्वलन्ति [063.017]
यत्र श्यामो लोहिताक्षो [063.018]
दण्डश्चरति पापहा [063.018]
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ते [063.018]
नेता चेत्साधु पश्यति [063.018]
दण्डनीतौ सुनीतायां [063.019]
सर्वे सिध्यन्त्युपक्रमाः [063.019]
दण्डश्चेन्न प्रवर्तेत [063.019]
विनश्येयुरिमाः प्रजाः [063.019]
वृकवद्भक्षयेयुश्च [063.020]
यो यस्य बलवत्तरः [063.020]
काकाद्याश्च पुरोदाशं [063.020]
श्वा चैवावलिहेद्धविः [063.020]
स्वाम्यं च न स्यात्कस्मिंश्चित् [063.021]
प्रवर्तेताधरोत्तरम् [063.021]
चातुर्वर्ण्यविमोक्षाय [063.021]
दुर्विनीतभयाय च [063.021]
दण्डेन नियतो लोको [063.022]
धर्मस्थानं च रक्षति [063.022]
सर्वो दण्डजितो लोको [063.022]
दुर्लभो हि शुचिर्जनः [063.022]
दण्डस्य हि भयाद्भीता [063.023]
नरास्तिष्ठन्ति शासने [063.023]
ति ऽपि भोगाय कल्पन्ते [063.023]
दण्डेनोपरिपीडिताः [063.023]
गुरुरात्मवतां शास्ता [063.024]
शास्ता राजा दुरात्मनां [063.024]
इहप्रच्छन्नपापानां [063.024]
शास्ता वैवस्वतो यमः [063.024]
पापानामथ मूढानां [063.025]
परद्रव्यापहारिणाम् [063.025]
परदाररता ये च [063.025]
ये च पातकसंज्ञिताः [063.025]
तेषां तु शासनार्थाय [063.025]
मयैतत्समुदाहृतम् [063.025]
ब्राह्मण्यं दुष्करं ज्ञात्वा [063.026]
तस्य दण्डं निपातयेत् [063.026]
कर्मानुरूपो दण्डः स्याद् [063.026]
गोहिरण्यादिको भवेत् [063.026]
अवध्यो ब्राह्मणो राजन् [063.026]

स्त्री वृद्धो बाल एव च [063.026]
यश्चरेदशुभं कर्म [063.027]
पापं राजविगर्हितम् [063.027]
पातकेषु च वर्तेत [063.027]
निग्रहं तस्य कारयेत् [063.027]
शिरसो मुण्डनं कृत्वा [063.028]
गोमयेनानुलेपयेत् [063.028]
खरयानेन नगरं [063.028]
डिण्डिमेन तु भ्रामयेत् [063.028]
राजनिर्दिष्टदण्डस्य [063.028]
प्रायश्चित्तं न विद्यते [063.028]
एष ते कथितो दण्डो [063.029]
ब्राह्मणस्य युधिष्ठिर [063.029]
क्षत्रियस्य तु यो दण्डस् [063.029]
तं वक्ष्याम्यनुपूर्वशः [063.029]
परद्रव्यादिहरणे [063.030]
परदाराभिमर्दने [063.030]
पातकेषु च सर्वेषु [063.030]
यो हि वर्तेत क्षत्रियः [063.030]
तस्य दण्डं प्रवक्ष्यामि [063.030]
तन्मे निगदतः शृणु [063.030]
हस्तपादपरिच्छेदं [063.031]
कर्णनासावकर्तनम् [063.031]
सर्वस्वहरणं कृत्वा [063.031]
परराष्ट्राय प्रेशयेत् [063.031]
राज्यं काङ्क्षेत यो मूढो [063.032]
राजपत्नीमथापि वा [063.032]
शरैस्तु राजा विध्येत [063.032]
शक्तिचक्रगदादिभिः [063.032]
क्षत्रियस्य तु दुष्टस्य [063.033]
दण्ड एष विधीयते [063.033]
वैश्यस्यापि च यो दण्डस् [063.033]
तं प्रवक्ष्यामि भारत [063.033]
पातकेष्वेव क्रूरेषु [063.034]
यस्तु वैश्यः प्रवर्तते [063.034]
परदारे परद्रव्ये [063.034]
तस्य निग्रहमादिशेत् [063.034]
शूलायां भेदनं तस्य [063.035]
वृक्षशाखावलम्बनम् [063.035]
एतद्वैश्यस्य निर्दिष्टं [063.035]
शूद्रस्याप्यनुपूर्वशः [063.035]
शूले शूद्रस्य यो दुष्टस् [063.036]
तस्यैकस्य वधः स्मृतः [063.036]
कुञ्जरेणाभिमर्देत [063.036]
मीनीयामथ पाचयेत् [063.036]
एतच्छूद्रस्य निर्दिष्टं [063.036]
नान्यो दण्डो विधीयते [063.036]
नैकस्यार्थे कुलं हन्यान् [063.037]
न राष्ट्रं न च ग्रामकम् [063.037]
धनलोभान्न मोक्तव्यो [063.*(80)]
रागाद्वा शासनं विना [063.*(80)]
एकं सुशिष्टितं कृत्वा [063.037]
शेषं कोशं प्रवेशयेत् [063.037]
युधिष्ठिरस्य राजर्षेर् [063.038]
एवं नारायणो ऽब्रवीत् [063.038]
समासेन यथान्यायं [063.038]
दण्डनीतिमनुत्तमाम् [063.038]
उत्तमाधमकार्येषु [063.039]
समेषु विषमेषु च [063.039]
राजधर्मांस्तु पश्येत [063.039]
विष्णुना समुदाहृतान् [063.039]
एतान्धर्माञ्जगन्नाथः [064.001]
पाण्डुपुत्राय पृच्छते [064.001]
जगाद पुरुषव्याघ्र [064.001]
किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि [064.001]
भगवन्वहतां भक्तिं [064.002]
देवदेवे जनार्दने [064.002]
यत्फलं कथितं तज्ज्ञैस् [064.002]
तन्मे विस्तरतो वद [064.002]
यत्फलं वहतां भक्तिम् [064.003]
अच्युते भवति प्रभो [064.003]
न तद्वर्णयितुं शक्यं [064.003]
हरिः सर्वेप्सितप्रदः [064.003]
यादृक्सत्त्वं मनुष्याणां [064.004]
तादृगाराध्य केशवम् [064.004]
फलमिच्छन्ति तादृच्च [064.004]
लभ्यते तैर्नरेश्वर [064.004]
मुक्तिकामा नरा मुक्तिं [064.005]
स्वर्गं देवत्वमीप्सवः [064.005]
गन्धर्वयक्षसिद्धानां [064.005]
वृण्वन्त्यन्ये सलोकताम् [064.005]
वर्षेष्वभीप्सवो विष्णुं [064.006]
पातालेषु तथापरे [064.006]
भोगानभीप्सवो विष्णुं [064.006]

तोषयण्ति नराधिप [064.006]
तथापरे नरैश्वर्यम् [064.007]
आरोग्यं गुणवद्धवि [064.007]
प्रार्थयन्त्यच्युतं देवम् [064.007]
आराध्य जगतो गतिम् [064.007]
धर्मोपदेशादचलां [064.008]
वहन्भक्तिं जनार्दने [064.008]
सशरीरो गतः स्वर्गं [064.008]
धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः [064.008]
तथैव जनकः कृष्णे [064.009]
विनिवेश्य स्वमानसम् [064.009]
अवाप परमां सिद्धिं [064.009]
वसुः प्रायात्त्रिपिष्टपम् [064.009]
अन्ये च ये ये मुनयो [064.010]
ये ये च वसुधाधिपाः [064.010]
अवापुरतुलान्कामांस् [064.010]
ते ते संतोष्य केशवम् [064.010]
अनाराध्य जगन्नाथं [064.011]
सर्वपापहरं हरिम् [064.011]
सद्गतिः केन संप्राप्ता [064.011]
भोगाश्चापि मनोरमाः [064.011]
द्रौणिब्रह्मास्त्रनिर्दग्धस् [064.012]
तव राजन्पितामहः [064.012]
विष्णोः कार्यमनुष्यस्य [064.012]
दर्शनादुत्थितः पुनः [064.012]
नामसंकीर्तनाद्यस्य [064.013]
पापमन्यैरुपद्रवैः [064.013]
समं विनाशमायाति [064.013]
देवः को ऽभ्यधिकस्ततः [064.013]
राष्ट्रस्य शरणं राजा [064.014]
पितरौ बालकस्य च [064.014]
धर्मः समस्तमर्त्यानां [064.014]
सर्वस्य शरणं हरिः [064.014]
मुक्तिहेतुमनाद्यन्तम् [064.015]
अजमक्षयमच्युतम् [064.015]
नमस्यन्सर्वलोकस्य [064.015]
नमस्यो जायते नरः [064.015]
न हि तस्य गुणाः सर्वे [064.016]
सर्वैर्मुनिगणैरपि [064.016]
वक्तुं शक्या वियुक्तस्य [064.016]
सत्त्वाद्यैरखिलैर्गुणैः [064.016]
श्रुतं मया यथा पूर्वम् [064.017]
आर्यको मे युधिष्ठिरः [064.017]
सशरीरो गतः स्वर्गं [064.017]
जितमात्मीयकर्मभिः [064.017]
यत्त्वेतद्भगवानाह [064.018]
स यथा पाण्डुपूर्वजः [064.018]
धर्मोपदेशाद्गोविन्दम् [064.018]
आराधयत तद्वद [064.018]
पुरा शासति धर्मज्ञे [064.019]
धर्मपुत्रे युधिष्ठिरे [064.019]
तस्यैव वैश्वदेवान्ते [064.019]
चण्डालो ऽभ्यागमत्किल [064.019]
समुपेत्य गृहं तस्य [064.020]
धर्मपुत्रस्य विस्मितः [064.020]
उवाच श्वपचो द्वाःस्थं [064.020]
प्रश्रयावनतस्थितः [064.020]
कस्यैतद्भवनं दिव्यं [064.021]
मणिरत्नविभूषितम् [064.021]
शुद्धस्फटिकसोपानं [064.021]
मणिकाञ्चनतोरणम् [064.021]
अष्टाशीतिसहस्राणि [064.022]
ब्राह्मणानां दिने दिने [064.022]
युधिष्ठिरमृते भूपं [064.022]
भुञ्जते कस्य वेश्मनि [064.022]
कथमेतन्न जानीषे [064.023]
चन्द्रबिम्बमिवापरम् [064.023]
युधिष्ठिरस्य भवनं [064.023]
देवराजगृहोपमम् [064.023]
अबलस्य बलं राजा [064.024]
बालस्य रुदितं बलम् [064.024]
बलं मूर्खस्य वै मौनं [064.024]
तस्करस्यानृतं बलम् [064.024]
गच्छ जल्प स्वराजानं [064.025]
प्रतीहार वचो मम [064.025]
दुःखार्तः कार्यवान्राजंश् [064.025]
चण्डालो द्वारि तिष्ठति [064.025]
केनापि हेतुमात्रेण [064.*(81)]
भवन्तं दुष्टमागतः [064.*(81)]
इत्युक्तो धर्मराजस्य [064.026]
प्रतीहारो यथोदितम् [064.026]
निवेदयामास तथा [064.026]
धर्मराजो ऽब्रवीदिदम् [064.026]
किं रूपं कीदृशं शीलं [064.027]

को ऽस्यार्थः किं प्रयोजनम् [064.027]
ब्रूहि द्वाःस्थ यथावन्मे [064.027]
नरस्तिष्ठति कीदृशः [064.027]
काककोकिलकृष्णाङ्गो [064.028]
भग्ननासारुणेक्षणः [064.028]
यवमध्यः कृशग्रीवो [064.028]
वक्रपादो महाहनुः [064.028]
ब्रूहि गच्छ दुराचारं [064.029]
चण्डालं पापकर्मिणम् [064.029]
देवकार्यस्य वेलायां [064.029]
दुतस्त्वं प्रत्युपस्थितः [064.029]
चण्डालपतितौ दृष्ट्वा [064.030]
नरः पश्येत भास्करम् [064.030]
स्नातस्त्वेतावथालोक्य [064.030]
सचैलस्नानमर्हति [064.030]
इत्याज्ञप्ते तथोक्तस्तु [064.031]
चण्डालस्तेन वै ततः [064.031]
प्रत्युवाच प्रतीहारम् [064.031]
ईषन्मन्युपरिप्लुतः [064.031]
किं देवकार्येण नराधिपस्य [064.032]
कृत्वा हि मन्युं विषयस्थितानाम् [064.032]
तद्देवकार्यं स च यज्ञहोमो [064.032]
यदश्रुपाता न पतन्ति राष्ट्रे [064.032]
इदं वचनमव्यग्रं [064.*(82)]
प्रतीहार त्वरा मम [064.*(82)]
निवेदय स्वराजेन्द्रं [064.*(82)]
यथेष्टं स करोतु वै [064.*(82)]
इत्युक्तः सत्वरं गत्वा [064.*(82)]
धर्मराजं तथा तथं [064.*(82)]
कथयामास तत्सर्वं [064.*(82)]
चाण्डालेन यदीरितम् [064.*(82)]
सुशोभनमिदं वाक्यं [064.*(82)]
न भवेदन्त्यजातिषु [064.*(82)]
चिन्तयित्वा ततो राजा [064.*(82)]
निर्जगाम युधिष्ठिरः [064.*(82)]
इत्येतद्वचनं श्रुत्वा [064.033]
निर्जगाम युधिष्ठिरः [064.033]
प्रत्युवाच च चण्डालम् [064.033]
ईषन्कोपसमन्वितः [064.033]
कुतस्ते भयमुत्पन्नं [064.034]
येन त्वं गृहमागतः [064.034]
आवाधाकारणं सर्वं [064.034]
यथावत्कथयस्व मे [064.034]
तदहं ते प्रतिज्ञाय [064.035]
चण्डकर्मकरक्षणम् [064.035]
अपास्य देवकार्यार्थं [064.035]
प्रविश्याम्यन्तरं पुनः [064.035]
न भुञ्जते ब्राह्मणा मे [064.036]
सर्वाश्चोद्विजते जनः [064.036]
प्राणिहिंसा च नो वृत्तिर् [064.036]
देव पुष्णाति मे ऽनृतम् [064.036]
अनेकजन्मसाहस्रीं [064.037]
प्राप्य संसारपद्धतिम् [064.037]
मानुष्ये कुत्सितां जातिम् [064.037]
आपन्नो मुषितो ऽस्मि भोः [064.037]
कर्मभूमिमिमां राजन् [064.038]
प्रार्थयन्ति दिवौकसः [064.038]
तां संप्राप्य वृथाजन्मा [064.038]
मुष्टो ऽस्मि कुरुसत्तम [064.038]
दुःखे दुःखाधिकान्पश्येत् [064.039]
सुखे पश्येत्सुखाधिकान् [064.039]
आत्मानं शोकहर्षाभ्यां [064.039]
शत्रुभ्यामिव नार्पयेत् [064.039]
सो ऽहमिच्छामि विज्ञातुम् [064.040]
अतिदुष्कृतकर्मकृत् [064.040]
वक्तुमर्हसि धर्मज्ञ [064.040]
कः पापिष्ठतरो मया [064.040]
अध्वानमुपरि श्रान्तं [064.041]
ब्राह्मणं गृहमागतम् [064.041]
अनर्चयित्वा यो भुङ्क्ते [064.041]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.041]
मातरं पितरं चैव [064.042]
विकलं नेत्रदुर्बलम् [064.042]
यो नाभ्युद्धरते पुत्रः [064.042]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.042]
गोधनस्य तृषार्तस्य [064.043]
जलार्थं परिधावतः [064.043]
विघ्नमाचरते यस्तु [064.043]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.043]
विवाहयित्वा यः कन्यां [064.044]
कुलजां शीलमण्डनाम् [064.044]
विना त्यजति दोषेण [064.044]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.044]
आशाकारस्त्वदाता यो [064.045]

दातुश्च प्रतिषेधकः [064.045]
दत्तं च यः कीर्तयति [064.045]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.045]
बहुभृत्यैर्दरिद्रैश्च [064.046]
धनं सन्तं द्विजोत्तमैः [064.046]
याचितो न प्रयच्छेद्यः [064.046]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.046]
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि [064.047]
वैश्यः शूद्रो ऽपि वा नरः [064.047]
स्वधर्मं संत्यजेद्यस्तु [064.047]
स पापिष्ठतरस्त्वया [064.047]
कृतार्थो ऽहं गमिष्यामि [064.048]
यशोधर्ममवाप्नुहि [064.048]
तुष्टो ऽस्म्यहं स्वया योन्या [064.048]
मत्तः प्रोक्तास्त्वयाधमाः [064.048]
देवतानामृषीणां च [064.049]
पितृणां च कृतं मया [064.049]
सांप्रतं देशकालो ऽयं [064.049]
त्वमेवात्र भवातिथिः [064.049]
चण्डालो ऽहं महाराज [064.050]
पतितो लोकवर्जितः [064.050]
कथं निहीनो वर्णेभ्यो [064.050]
भोक्ष्यामि भवतो गृहे [064.050]
चण्डालो भव पापो वा [064.051]
शत्रुर्वा पितृघातकः [064.051]
देशकालाभ्युपेतं त्वां [064.051]
भरणीयं हि वेद्म्यहम् [064.051]
दशसूनासमं चक्रं [064.052]
दशचक्रसमो ध्वजः [064.052]
दशध्वजसमा वेश्या [064.052]
दशवेश्यासमो नृपः [064.052]
दश सूनासहस्राणि [064.053]
कुरुते यो हि सौनिकः [064.053]
तेन तुल्यः स्मृतो राजा [064.053]
घोरस्तस्य प्रतिग्रहः [064.053]
नानागोत्रादिचरणा [064.054]
भुञ्जते ब्राह्मणा मम [064.054]
न ते वदन्ति वाग्दुष्टं [064.054]
यथैतत्कीर्तितं त्वया [064.054]
लोभात्मानो न जानीयुर् [064.055]
ब्राह्मणा राजकिल्बिषम् [064.055]
वरं स्वमांसमत्तव्यं [064.055]
न तु राजप्रतिग्रहम् [064.055]
राजकिल्बिषदग्धानां [064.056]
ब्राह्मणानां युधिष्ठिर [064.056]
छिन्नानामिव बीजानां [064.056]
पुनर्जन्म न विद्यते [064.056]
राजप्रतिग्रहो घोरो [064.057]
मध्वास्वादो विषोपमः [064.057]
बुधेन प्रतिहर्तव्यः [064.057]
स्वमांसस्येव भक्षणम् [064.057]
अधीत्य चतुरो वेदान् [064.058]
सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् [064.058]
नरेन्द्रभवने भुङ्क्त्वा [064.058]
विष्ठायां जायते कृमिः [064.058]
निन्दसे सर्वराजानो [064.059]
न चात्मानं प्रशंससि [064.059]
धैर्यवानात्मनो ऽनिन्द्यो [064.*(84)]
नाश्वासार्थं च पृच्छसि [064.*(84)]
विमुक्तक्रोधहर्शश्च [064.*(84)]
को ऽप्यत्र प्रतिभासि नः [064.*(84)]
अनिन्द्यो निन्द्यरूपेण [064.*(84)]
महात्मा त्वं हि मे मतः [064.*(84)]
को भवान्ब्रूहि सत्यं मे [064.*(84)]
किमर्थमिह चागतः [064.*(84)]
भवानुपेन्द्रः शक्रो वा [064.*(84)]
शर्वो वा त्वं पिनाकधृक् [064.*(84)]
अथवा निन्द्यरूपेण [064.059]
पिता नस्त्वमिहागतः [064.059]
ज्ञातो ऽस्मि पृथिवीपाल [064.060]
तुष्टश्च तव दर्शनात् [064.060]
नन्दन्तु भूमिभागास्ते [064.060]
येषु त्वं पृथिवीपतिः [064.060]
निर्जित्य परसैन्यानि [064.061]
क्षितिं धर्मेण पालय [064.061]
स्वल्पमप्यस्तु ते वेलां [064.061]
मा गोविन्दोज्झितं मनः [064.061]
किं मे राज्येन भोस्तात [064.062]
विषयैर्जीवितेन वा [064.062]
यो ऽहं सूनासहस्रैस्तु [064.062]
दशभिः परिवेष्टितः [064.062]
मा विषादं नरश्रेष्ठ [064.063]
समुपैहि युधिष्ठिर [064.063]
यज्ञेश्वरं यज्ञमूर्तिं [064.063]

त्वं च विष्णुं समाश्रितः [064.063]
येषां न विषये विप्रा [064.064]
यज्ञैर्यज्ञपतिं हरिम् [064.064]
यजन्ति भूभुजस्तेषाम् [064.064]
एतत्सूनोदितं फलम् [064.064]
येषां पाषण्डसंकीर्णं [064.065]
न राष्ट्रं ब्राह्मणोत्कटम् [064.065]
ते तु सूनासहस्राणां [064.065]
दशानां भागिनो नृपाः [064.065]
येषां न यज्ञपुरुषः [064.066]
कारणं पुरुषोत्तमः [064.066]
ते तु पापसमाचाराः [064.066]
सूनापापौघभागिनः [064.066]
त्वं तु मत्प्रभवस्तात [064.067]
विष्णुभक्तस्तथैव च [064.067]
इष्टिर्वैश्वानरी पापम् [064.067]
उपहंस्यति ते ऽखिलम् [064.067]
अवश्यं विषये कश्चिद् [064.068]
ब्राह्मणः संश्रितव्रतः [064.068]
इष्टिं वैश्वानरीं क्लृप्तां [064.068]
निर्वपेदब्दपर्यये [064.068]
तस्य षड्भागमात्रेण [064.068]
त्वं पापं निर्दहिष्यसि [064.068]
स त्वं वरय भद्रं ते [064.069]
वरं यन्मनसेच्छसि [064.069]
सम्यक्क्षत्त्रसमाचाराद् [064.069]
अहमाराधितस्त्वया [064.069]
अथ पातकभीतस्त्वं [064.070]
सर्वभावेन भारत [064.070]
विमुक्तान्यसमारम्भो [064.070]
नारायणपरो भव [064.070]
परः पराणामाद्यो ऽसौ [064.071]
ज्ञेयो ध्येयो जनार्दनः [064.071]
तदर्थमपि कर्माणि [064.071]
कुर्वन्पापं व्यपोहति [064.071]
लोभादिव्याप्तहृदयो [064.072]
यत्पापं कुरुते नरः [064.072]
विलयं याति तत्सर्वम् [064.072]
अच्युते हृदये स्थिते [064.072]
शमायालं जलं वह्नेस् [064.073]
तमसो भास्करादयः [064.073]
क्षान्तिः कलेरघौघस्य [064.073]
नामसंकीर्तनं हरेः [064.073]
प्रसन्नो यदि मे तात [064.074]
वरार्हो यदि चाप्यहम् [064.074]
वरं तदेकमेवैतं [064.074]
प्राप्तुमिच्छाम्यहं पितः [064.074]
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तेषु [064.075]
योगस्थस्य सदा मम [064.075]
या काचिन्मनसो वृत्तिः [064.075]
सा भवत्वच्युताश्रया [064.075]
या या जायेत मे बुद्धिर् [064.076]
यावज्जीवाम्यहं पितः [064.076]
सा सा छिनत्तु संदेहान् [064.076]
कृष्णाप्तौ परिपन्थिनः [064.076]
यथा गोविन्दमाराध्य [064.077]
सशरीरः सुरालयम् [064.077]
प्राप्नुयामिति मे तात [064.077]
प्रयच्छ प्रवरं वरम् [064.077]
एवमेतदशेषं ते [064.078]
मत्प्रसादाद्भविष्यति [064.078]
नास्ति गोविन्दभक्तानां [064.078]
वाञ्छितं भुवि दुर्लभम् [064.078]
इति धर्मोपदेशेन [064.079]
सर्वदेववरं हरिम् [064.079]
आराध्य पाण्डवो यातः [064.079]
सशरीरः सुरालयम् [064.079]
भूयश्च शृणु राजेन्द्र [065.001]
जनकेन महात्मना [065.001]
यद्गीतं वहता भक्तिं [065.001]
ज्ञानमासाद्य केशवे [065.001]
सर्वत्र समदृष्टिं तं [065.002]
जनकं मिथिलेश्वरम् [065.002]
पश्यन्तमच्युतमयं [065.002]
सर्वं च सचराचरम् [065.002]
द्विजरूपं समास्थाय [065.003]
देवदेवो जनार्दनः [065.003]
उपतस्थे महाभागं [065.003]
प्रत्युवाच च पार्थिवम् [065.003]
राजञ्जनक भद्रं ते [065.004]
यद्ब्रवीमि निबोध तत् [065.004]
कुरुष्व च महाबुद्धे [065.004]
यदि साधु मतं तव [065.004]
पृथिवीं पृथिवीपालः [065.005]

पालयित्वा पिता तव [065.005]
स्वर्गं गतस्तथा भ्राता [065.005]
सम्यक्सत्यध्वजो नृपः [065.005]
त्वं पुनर्निरभीमानः [065.006]
सर्वत्र समदर्शनः [065.006]
रिपुमित्रादिवर्गेषु [065.006]
कथमेतद्भविष्यति [065.006]
मित्रेषु मित्रवन्न त्वं [065.007]
नाहितेष्वरिवद्भवान् [065.007]
मध्यस्थभाग्न चैव त्वं [065.007]
तथोदासीनवृत्तिषु [065.007]
शब्दादयो ये विशयास् [065.008]
ते वैराग्यफला नृप [065.008]
नीत्या विहीनस्तु भवान् [065.008]
कथं राज्यं करिष्यति [065.008]
सर्वैर्नीतिं समास्थाय [065.009]
यथा ते प्रपितामहैः [065.009]
कृतं राज्यं तथा भूप [065.009]
कुरु मातिजडो भव [065.009]
तव प्रज्ञा मता ह्येषा [065.010]
मम मोहो महीपते [065.010]
त्रिवर्गसाधनं प्रज्ञा [065.010]
न धर्मादिविरोधिनी [065.010]
सम्यगाह भवान्विप्र [065.011]
वाच्यमेवं भवद्विधैः [065.011]
ममापि श्रूयतां वाक्यं [065.011]
भवतो यदि रोचते [065.011]
यदा सर्वगतो विष्णुः [065.012]
परमात्मा प्रजापतिः [065.012]
तदा मित्रादिमध्यस्थ- [065.012]
संज्ञा केषु निपात्यताम् [065.012]
पिता माता तथा भ्राता [065.013]
यदा नान्यज्जनार्दनात् [065.013]
पितृमातृमयीं संज्ञां [065.013]
तदा कुत्र करोम्यहम् [065.013]
सो ऽहं ब्रवीमि यद्वाक्यं [065.014]
तन्निबोध द्विजोत्तम [065.014]
अनेकरूपरूपो ऽयं [065.014]
विष्णुरेवाखिलं जगत् [065.014]
विष्णुः पिता मे जगतः प्रतिष्ठा [065.015]
विष्णुर्माता विष्णुरेवाग्रजो मे [065.015]
विष्णुर्गातिर्विष्णुमयस्तथास्मि [065.015]
विष्णौ स्थितो ऽस्म्यक्षगतश्च विष्णुः [065.015]
यो मे ममत्वोपगतः स विष्णुर् [065.016]
यश्चारिभूतो मम सो ऽपि विष्णुः [065.016]
दिवं वियद्भूः ककुभश्च विष्णुर् [065.016]
भूतानि विष्णुर्भुवनानि विष्णुः [065.016]
पश्यामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यच् [065.017]
शृणोमि विष्णुं न परं ततो ऽन्यत् [065.017]
स्पृशामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यज् [065.017]
जिघ्रामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यत् [065.017]
रसामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यन् [065.018]
मन्ये च विष्णुं न परं ततो ऽन्यत् [065.018]
जिघ्रामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यच् [065.*(85)]
नमामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यत् [065.*(85)]
बुध्यामि विष्णुं न परं ततो ऽन्यत् [065.018]
सर्वं हि विष्णुर्न परं ततो ऽन्यत् [065.018]
विष्णुः समस्तं न परं ततो ऽस्ति [065.019]
विष्णुः समस्तं न परं च देवः [065.019]
विष्णुः स्थारीयान्न परं ततो ऽस्ति [065.*(86)]
विष्णुर्लघीयान्न परं ततो ऽस्ति [065.019]
विष्णुर्गरीयान्न परं ततो ऽन्यत् [065.019]
यथा न विष्णुव्यतिरिक्तमन्यच् [065.020]
शृणोमि पश्यामि तथा स्पृशामि [065.020]
सत्येन तेनोपशमं प्रयान्तु [065.020]
दोषा विमुक्तेः परिपन्थिनो ये [065.020]
न मे ऽस्ति बन्धुर्न च मे ऽस्ति शत्रुर् [065.021]
न भूतवर्गो न जनो मदन्यः [065.021]
त्वं चाहं अन्ये च शरीरभेदैर् [065.021]
विभिन्नमीशस्य हरेः स्वरूपम् [065.021]
मूर्तामूर्तिविशेषं तु [065.022]
पश्यतस्तन्मयं द्विज [065.022]
क्रोधहर्षादयो भावाः [065.022]
स्थास्यन्ति हृदये कथम् [065.022]
स त्वं प्रसीद मोहो ऽयम् [065.023]
अथ चेन्मम सुव्रत [065.023]
तथापि मा रुषं कार्षीर् [065.023]
अचिकित्स्या हि मोहिताः [065.023]
बहुरूपस्ततो रूपं [065.024]
शङ्खचक्रगदाधरम् [065.024]
दर्शयामास सुप्रीतो [065.024]
जनकाय जनार्दनः [065.024]
ततस्तद्दर्शनाद्भूपं [065.025]
शिरसा प्रणतं प्रभुः [065.025]

आद्यः प्रजापतिपतिः [065.025]
प्रत्युवाचाच्युतो हरिः [065.025]
वरं वरय भूपाल [065.026]
परितुष्टो ऽस्मि ते ऽनघ [065.026]
मय्यर्पितमनोबुद्धेः [065.026]
सदैवाहं न दुर्लभः [065.026]
यदि देव प्रसन्नो ऽसि [065.027]
सम्यगाराधितो मया [065.027]
तद्वृणोमि वरं भक्तिस् [065.027]
त्वय्येवास्तु सदा मम [065.027]
एवं भविष्यतीत्युक्त्वा [065.028]
गतो ऽन्तर्धानमीश्वरः [065.028]
सो ऽपि लेभे लयं विष्णौ [065.028]
भक्त्या योगिसुदुर्लभम् [065.028]
इति कृष्णे नरव्याघ्र [065.029]
कुर्वन्भक्तिं नरः सदा [065.029]
प्राप्नोति पुरुषव्याघ्र [065.029]
मुक्तिं चाप्यतिदुर्लभाम् [065.029]
जगद्धातुरनन्तस्य [066.001]
वासुदेवस्य भार्गव [066.001]
ममावतारानखिलाञ् [066.001]
श्रोतुमिच्छा प्रवर्तते [066.001]
यथा यथा हि कृष्णस्य [066.002]
कथेयं कथ्यते त्वया [066.002]
जायते मनसः प्रीतिर् [066.002]
उद्भूतपुलकस्तथा [066.002]
मनःप्रीतिरनायासाद् [066.003]
अपुण्यचयसंक्षयः [066.003]
प्राप्यते पुरुषैर्ब्रह्मञ् [066.003]
शृण्वद्भिर्भगवत्कथाम् [066.003]
स कुरुष्वामलमते [066.004]
प्रसादप्रवणं मनः [066.004]
अवतारान्सुरेशस्य [066.004]
विष्णोरिच्छामि वेदितुम् [066.004]
जगद्गुरुं जगद्योनिम् [066.005]
अनन्तमुदकेशयम् [066.005]
नारायणं पुराकल्पे [066.005]
पृष्टवान्कमलोद्भवः [066.005]
विनिर्जग्मुर्मुखेभ्यस्तु [066.006]
ब्रह्मणो व्यक्तजन्मनः [066.006]
ओंकारप्रवणा वेदा [066.006]
जग्मुस्ते च रसातलम् [066.006]
एकार्णवे जगत्यस्मिन् [066.007]
ब्रह्मण्यमिततेजसि [066.007]
कृष्णनाभिह्रदोद्भूत- [066.007]
कमलोदरशायिनि [066.007]
भोगिशय्याशयः कृष्णो [066.008]
द्वितीयां तनुमात्मनः [066.008]
कृत्वा मीनमयीं सद्यः [066.008]
प्रविवेश रसातलम् [066.008]
वेदमूर्तिस्ततो वेदान् [066.009]
आनिन्ये ब्रह्मणो ऽन्तिकम् [066.009]
मधुकैटभाभ्यां च पुनर् [066.009]
भोगिशय्यागतो हरिः [066.009]
हृतान्हयशिरा भूत्वा [066.009]
वेदानाहृतवान्रसात् [066.009]
आहृतेष्वथ वेदेषु [066.010]
देवदेवं पितामहः [066.010]
तुष्टाव प्रणतो भक्त्या [066.010]
तस्य चाविर्बभौ हरिः [066.010]
अथामरगुरुं विष्णुम् [066.011]
अनन्तमजमव्ययम् [066.011]
उवाच प्रकटीभूतं [066.011]
प्रणिपत्याब्जसंभवः [066.011]
नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय [066.012]
नमस्तुभ्यं त्रिमूर्तये [066.012]
बहुरूपादिमध्यान्त [066.012]
परिणामविवर्जित [066.012]
जगदीशस्य सर्वस्य [066.013]
जगतः सर्वकामद [066.013]
अहमात्मभवो देव [066.013]
त्वयाध्यक्षो निरूपितः [066.013]
सो ऽहमिच्छामि तं ज्ञातुम् [066.014]
आत्मानं प्रभवाव्ययम् [066.014]
विश्वस्य च विरूपस्य [066.014]
स्थावरस्य चरस्य च [066.014]
यदि ते ऽनुग्रहकृता [066.015]
मयि बुद्धिर्जनार्दन [066.015]
तन्मां भक्त इति ज्ञात्वा [066.015]
कथयात्मानमच्युत [066.015]
कथयामि तवात्मानम् [066.016]
अनाख्यागोदरं परम् [066.016]
न वाचां विषये यो ऽसाव् [066.016]
अविशेषणलक्षणः [066.016]

प्रसादसुमुखः सो ऽहम् [066.017]
इमं यच्छामि ते वरम् [066.017]
अनाख्यातस्वरूपं मां [066.017]
भवाञ्ज्ञास्यति योगतः [066.017]
भक्तो मां तत्त्वतो वेत्ति [066.018]
मयि भक्तिश्च ते परा [066.018]
मज्जिज्ञासा परा ब्रह्मंस् [066.018]
तेन जाता मतिस्तव [066.018]
एवमुक्तस्ततो ब्रह्मा [066.019]
विष्णुना प्रभविष्णुना [066.019]
विष्णोः स्वरूपं जिज्ञासुर् [066.019]
युयोजात्मानमात्मना [066.019]
स ददर्शातिसूक्ष्मं च [066.020]
सूक्ष्मज्योतिष्यजं विभुम् [066.020]
नियुतार्धार्धमात्रेण [066.020]
व्याप्ताशेषचराचरम् [066.020]
आत्मानमिन्द्ररुद्रार्क- [066.021]
चन्द्राश्विवसुमारुतान् [066.021]
खादीन्यथ च शब्दादीन् [066.021]
ददृशे च स तन्मयान् [066.021]
ये व्यक्ता ये तथाव्यक्ता [066.022]
भावा ये चापि पौरुषाः [066.022]
तांश्च तत्रातिसूक्ष्मो ऽपि [066.022]
दृष्टवानखिलान्विभुः [066.022]
ततः प्रणम्य देवेशम् [066.023]
अजमार्तिहरं हरिम् [066.023]
पितामहः प्रह्वतनुर् [066.023]
वाक्यमेतदुवाच ह [066.023]
ज्ञातं स्वरूपमज्ञात- [066.024]
स्वरूप भगवंस्तव [066.024]
मया न यद्वाग्विषये [066.024]
तत्रस्थं चाखिलं जगत् [066.024]
धन्यो ऽस्म्यनुगृहीतो ऽस्मि [066.025]
स्वरूपं यन्मया तव [066.025]
भगवञ्ज्ञातमज्ञातम् [066.025]
अनन्ताज नमो ऽस्तु ते [066.025]
यदि प्रसादं देव त्वं [066.026]
प्रकरोषि ममापरम् [066.026]
परमं चावतारेषु [066.026]
यद्रूपं तद्वदस्व मे [066.026]
केषु केषु मया ज्ञेयः [066.027]
स्थानेषु त्वमधोक्षज [066.027]
संभूतयो ममाचक्ष्व [066.027]
या भविष्यन्ति ते भुवि [066.027]
देवलोके नृलोके वा [066.028]
पाताले खे ऽन्यतो ऽपि वा [066.028]
संभूतयो यास्तु भवान् [066.028]
करिष्यति वदस्व ताः [066.028]
त्वं कर्ता सर्वभूतानां [066.029]
संहर्ता चेश्वरेश्वरः [066.029]
तवापि कर्ता नान्यो ऽस्ति [066.029]
स्वेच्छया क्रीडते भवान् [066.029]
अहं वेद्मि भवन्तं हि [066.029]
न तवान्यो ऽस्ति वेदिता [066.029]
यन्मां त्वं पृच्छसि ब्रह्मन् [066.030]
अवताराश्रितं परम् [066.030]
तत्ते सम्यक्प्रवक्ष्यामि [066.030]
निबोध मम सुव्रत [066.030]
मम प्रकृत्या संयोगः [066.031]
स्वेच्छया संप्रवर्तते [066.031]
देवेषु नृषु तिर्यक्षु [066.031]
स्थावरेषु चरेषु च [066.031]
ममावताराः कार्यार्थं [066.031]
जगतश्चोपकारिणः [066.031]
यदा यदा हि धर्मस्य [066.032]
ग्लानिः समुपजायते [066.032]
अभ्युत्थानमधर्मस्य [066.032]
तदात्माङ्गं सृजाम्यहम् [066.032]
परित्राणाय साधूनां [066.033]
विनाशाय च दुष्कृतां [066.033]
धर्मसंस्थापनार्थाय [066.033]
संभवामि युगे युगे [066.033]
पूर्वोत्पन्नेषु भूतेषु [066.034]
नृदेवादिषु चाप्यहम् [066.034]
अनुप्रविश्य धर्मस्य [066.034]
करोमि परिपालनम् [066.034]
प्रविश्य च तथा पूर्वं [066.035]
तनुं धर्मभृतां वर [066.035]
जगतो ऽस्य जगत्सृष्टिं [066.035]
करोमि स्थितिपालनम् [066.035]
देवत्वे देविका चेष्टा [066.036]
तिर्यक्त्वे मम तामसी [066.036]
इच्छया मानुषत्वे च [066.036]
विचरामि नृचेष्टया [066.036]

प्रतिक्षणं च भूतेषु [066.037]
सृजामि जगतः स्थितिम् [066.037]
करोमि विद्यमानेषु [066.037]
धर्मसंस्थापनेषु च [066.037]
यद्वै धर्मोपकाराय [066.038]
यच्च दुष्टनिवर्हणम् [066.038]
चरितं मानुषादीनां [066.038]
तद्वै जानीहि मत्कृतम् [066.038]
यच्च पृच्छसि मां ब्रह्मन् [066.039]
काः काः संभूतयस्तव [066.039]
ताः शृणुष्व समासेन [066.039]
या भविष्यन्ति सांप्रतम् [066.039]
मत्स्येन भूत्वा पातालात् [066.040]
तव वेदाः समुद्धृताः [066.040]
मधुकैटभाभ्यां च हृता [066.040]
दत्ताश्वशिरसा मया [066.040]
त्वमप्यत्र महाभाग [066.041]
मदंशः कमलोदरात् [066.041]
मन्नाभिसंभवाज्जातः [066.041]
प्रजासृष्टिकरः परः [066.041]
एकार्णवं च यदिदं [066.042]
ब्रह्मन्पश्यस्यशेषतः [066.042]
अस्मिन्वसुमतीं देवीं [066.042]
मग्नां पातालमागताम् [066.042]
वेदपादो यूपदंष्ट्रः [066.043]
क्रतुदन्तश्चितीमुखः [066.043]
अग्निजिह्वो दर्भरोमा [066.043]
ब्रह्मशीर्षो महातपाः [066.043]
अहोरात्रेक्षणधरो [066.044]
वेदाङ्गश्रुतिभूषणः [066.044]
आज्यनासः श्रुवस्तुण्डः [066.044]
सामघोषस्वरो महान् [066.044]
प्राग्वंशकायो द्युतिमान् [066.045]
नानादीक्षाभिराचितः [066.045]
दक्षिणाहृदयो योगी [066.045]
महासत्त्रमयो महान् [066.045]
उपकर्मेष्टिरुचिरः [066.046]
प्रवर्ग्यावर्तभूषणः [066.046]
नानाच्छन्दोगतिपथो [066.046]
ब्रह्मोक्तिकर्मविक्रमः [066.046]
भूत्वा यज्ञवराहो ऽहम् [066.047]
इति ब्रह्मन्रसातलात् [066.047]
पृथिवीमुद्धरिष्यामि [066.047]
स्थापयैष्यामि च स्थितौ [066.047]
पर्वतानां नदीनां च [066.048]
द्वीपादीनां च या स्थितिः [066.048]
तां च तद्वत्करिष्यामि [066.048]
शैलादीनामनुक्रमात् [066.048]
हिरण्याक्षं च दुर्वृत्तं [066.049]
कश्यपस्यात्मसंभवम् [066.049]
तेनैव घातयिष्यामि [066.049]
रूपेणाहं प्रजापते [066.049]
उत्पाद्य पृथिवीं सम्यक् [066.050]
स्थापयित्वा यथा पुरा [066.050]
सृष्टिं ततः करिष्यामि [066.050]
त्वामाविश्य प्रजापतिम् [066.050]
जानासि कापिलं रूपं [066.*(88)]
प्रथमं पौरुषं मम [066.*(88)]
सर्वविद्याप्रणेतारं [066.*(88)]
त्वया वेदेषु दर्शितम् [066.*(88)]
रविमण्डलमध्यस्थम् [066.*(88)]
अग्नेर्यत्परमं पदम् [066.*(88)]
तत उत्सृज्य रूपाणि [066.051]
अमरादिविभेदतः [066.051]
व्यापयिष्यामि लोकांस्तु [066.051]
भूलोकादीमशेषतः [066.051]
सृष्टं जगदिदं देव- [066.052]
मानुष्यादिविशेषणम् [066.052]
हिरण्यकशिपुर्दैत्यस् [066.052]
तापयिष्यति विक्रमात् [066.052]
व्यंसयित्वा वरांस्तस्य [066.053]
तैस्तैर्हेतुभिरात्मवान् [066.053]
नृसिंहरूपं कृत्वाहं [066.053]
घातयिष्यामि तं रिपुम् [066.053]
क्षीराब्दौ कूर्मरूपो ऽहं [066.054]
देवानां कमलोद्भव [066.054]
मन्दरं धारयिष्यामि [066.054]
पृष्ठेनामृतमन्थने [066.054]
हरिष्यति च देवानां [066.055]
यज्ञभागान्यदा बलिः [066.055]
तदाहं वामनो भूत्वा [066.055]
गत्वा तस्य महाध्वरम् [066.055]
वञ्चयित्वासुरपतिं [066.056]
करिष्यामि त्रिपिष्टपम् [066.056]

बलिं चापि करिष्यामि [066.056]
पातालतलवासिनम् [066.056]
अत्रेर्दत्त्वा वरं चैव [066.057]
तस्य पुत्रत्वमागतः [066.057]
दत्तात्रेयो भविष्यामि [066.057]
निहंस्यामि तथासुरान् [066.057]
सत्त्वानामुपकाराय [066.058]
प्रधानपुरुषान्तरम् [066.058]
दर्शयिष्यामि लोकेषु [066.058]
कापिलं रूपमास्थितः [066.058]
कार्तवीर्यादिभिश्चान्यैश् [066.059]
चतुर्दशभिरन्विताः [066.059]
भविष्यन्ति मदंशेन [066.059]
त्रेतायां चक्रवर्तिनः [066.059]
ततश्च भार्गवो रामो [066.060]
गृहीतपरशुर्द्विजः [066.060]
भूत्वा क्षत्रियहीनां च [066.060]
करिष्यामि वसुंधराम् [066.060]
पुनश्च राघवो रामो [066.061]
भूत्वा दशरथात्मजः [066.061]
बद्ध्वा महोदधिं कर्ता [066.061]
राक्षसानां कुलक्षयम् [066.061]
उत्तीर्य च परं पारं [066.*(89)]
लङ्कामासाद्य दुर्जयाम् [066.*(89)]
निहत्य रावणं वीरं [066.*(89)]
वरदानेन दर्पितम् [066.*(89)]
मायाविनां महावीर्यं [066.*(89)]
रक्षसां वनशायिनाम् [066.*(89)]
लक्ष्मणानुचरो रामः [066.*(89)]
करिष्यामि कुलक्षयम् [066.*(89)]
अष्टाविंशतिमे प्राप्ते [066.062]
द्वापरे कंसमुच्छ्रितम् [066.062]
केशिनं धेनुकं चैव [066.062]
शकुनिं पूतनां तथा [066.062]
अरिष्टं च हनिष्यामि [066.062]
मुरुं नरकमेव च [066.062]
निशुम्भं सहयग्रीवण् [066.063]
तथान्यांश्चासुरेश्वरान् [066.063]
हनिष्यामि सुदुर्वृत्तांल् [066.063]
लोकानां हितकाम्यया [066.063]
प्रवर्षति स देवेन्द्रे [066.064]
महोभङ्गविरोधिते [066.064]
गोवर्धनं गिरिवरं [066.064]
धारयिष्यामि बाहुना [066.064]
भाराक्रान्तामिमामुर्वीं [066.065]
धनंजयसहायवान् [066.065]
घातयित्वाखिलान्भूपांल् [066.065]
लघ्वीं कर्तास्मि सत्तम [066.065]
प्राप्ते कलियुगे कृत्स्नम् [066.066]
उपसंहृत्य वै कुलम् [066.066]
द्वारकां प्लावयिष्यामि [066.066]
उत्स्रक्ष्यामि मनुष्यताम् [066.066]
द्वितीयो यो ममांशस्तु [066.067]
रामो ऽनन्तः स लाङ्गली [066.067]
सो ऽपि संत्यज्य वसुधां [066.067]
रसातलमुपेष्यति [066.067]
ततः कलियुगे घोरे [066.068]
संप्राप्ते ऽब्जसमुद्भव [066.068]
शुद्धोदनसुतो बुद्धो [066.068]
भविष्यामि विमत्सरः [066.068]
बौद्धं धर्ममुपाश्रित्य [066.069]
करिष्ये धर्मदेशनाम् [066.069]
नराणामथ नारीणां [066.069]
दयां भूतेषु दर्शयन् [066.069]
रक्ताम्बरा ह्याञ्जिताक्षाः [066.070]
प्रशान्तमनसस्ततः [066.070]
शूद्रा धर्मं प्रवक्ष्यन्ति [066.070]
मयि बुद्धत्वमागते [066.070]
एडूकचिह्ना पृथिवी [066.071]
न देवगृहभूषिता [066.071]
भवित्री प्रायशो ब्रह्मन् [066.071]
मयि बुद्धत्वमागते [066.071]
स्कन्धदर्शनमात्रं हि [066.072]
पश्यन्तः सकलं जगत् [066.072]
शूद्राः शूद्रेषु दास्यन्ति [066.072]
मयि बुद्धत्वमागते [066.072]
अल्पायुषस्ततो मर्त्या [066.073]
मोहोपहतचेतसः [066.073]
नरकार्हाणि कर्माणि [066.073]
करिष्यन्ति प्रजापते [066.073]
स्वाध्यायेष्ववसीदन्तो [066.074]
ब्राह्मणाः शौचवर्जिताः [066.074]
अन्त्यप्रतिग्रहादानं [066.074]
करिष्यन्त्यल्पमेधसः [066.074]

न श्रोष्यन्ति पितुः पुत्राः [066.075]
श्वश्रूश्वशुरयोः स्नुषाः [066.075]
न भार्या भर्तुरीशस्य [066.075]
न भृत्या विनयस्थिताः [066.075]
वर्णसंकरतां प्राप्ते [066.076]
लोके ऽस्मिन्दस्युतां गते [066.076]
ब्राह्मणादिषु वर्णेषु [066.076]
भविष्यत्यधरोत्तरम् [066.076]
धर्मकञ्चुकसंवीता [066.077]
विधर्मरुचयस्तथा [066.077]
मानुषान्भक्षयिष्यन्ति [066.077]
म्लेच्छाः पार्थिवरूपिणः [066.077]
ततः कलियुगस्यान्ते [066.078]
वेदो वाजसनेयकः [066.078]
दश पञ्च च वै शाखाः [066.078]
प्रमाणेन भविष्यति [066.078]
ततो ऽहं संभविष्यामि [066.079]
ब्राह्मणो हरिपिङ्गलः [066.079]
कल्की विष्णुयशःपुत्रो [066.079]
याज्ञवल्क्यपुरोहितः [066.079]
म्लेच्छानुत्सादयिष्यामि [066.080]
गृहीतास्त्रः कुशायुधः [066.080]
स्थापयिष्यामि मर्यादाश् [066.080]
चातुर्वर्ण्ये यथोदिताः [066.080]
तथाश्रमेषु सर्वेषु [066.081]
ब्रह्मचारिव्रतादिकाः [066.081]
स्थापयित्वा ततः सर्वाः [066.081]
प्रजाः सद्धर्मवर्त्मनि [066.081]
कल्किरूपं परित्यज्य [066.081]
दिवमेष्याम्यहं पुनः [066.081]
ततः कृतयुगं भूयः [066.082]
पूर्ववत्संप्रवत्स्यते [066.082]
वर्णाश्रमाश्च धर्मेषु [066.082]
द्वेषु स्थास्यन्ति सत्तम [066.082]
एवं सर्वेषु कल्पेषु [066.083]
सर्वमन्वन्तरेषु च [066.083]
ममावताराः शतशो [066.083]
ये भवन्ति जगद्धिताः [066.083]
संकर्षणात्मजश्चैव [066.084]
कल्पान्ते च रसातलात् [066.084]
समुत्पत्स्येत्तदा रुद्रः [066.084]
कालाग्निरिति यः श्रुतः [066.084]
ततः क्षयं करिष्यामि [066.085]
जगत्स्थावरजङ्गमम् [066.085]
भूयश्चैव हि स्वप्स्यामि [066.085]
जगत्येकार्णवे स्थिते [066.085]
त्वद्रूपी च ततो भूत्वा [066.085]
जगत्स्रक्ष्याम्यहं पुनः [066.085]
एतत्संक्षेपतो ब्रह्मन् [066.086]
मयाख्यातं यथातथम् [066.086]
अंशावतरणं सर्वं [066.086]
मत्तः संक्षेपतः शृणु [066.086]
यद्दृश्यं यच्च वै स्पृश्यं [066.087]
यद्घ्रेयं रस्यते च यत् [066.087]
यच्छ्रव्यं यच्च मन्तव्यं [066.087]
बोधव्यं चाहमंशगः [066.087]
यत्तु बुद्धेः परतरम् [066.088]
अनाख्येयमनोपमम् [066.088]
तदहं ब्रह्म निर्द्वन्द्वं [066.088]
यद्वै पश्यन्ति सूरयः [066.088]
इदं जन्मरहस्यं मे [066.089]
यो नरः कीर्तयिष्यति [066.089]
सुलभो ऽहं भविष्यामि [066.089]
तस्य जन्मनि जन्मनि [066.089]
पठन्नेतद्ब्रह्महा तु [066.090]
सुरापो गुरुतल्पगः [066.090]
स्तेयी कृतघ्नो गोघ्नश्च [066.090]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [066.090]
गर्भिणी जनयेत्पुत्रं [066.091]
कन्या विन्दति सत्पतिम् [066.091]
लभन्ते ऽभिमतान्कामान् [066.091]
नरास्तांस्तान्यथेप्सितान् [066.091]
इति देवातिदेवेन [066.092]
ब्रह्मणो व्यक्तजन्मनः [066.092]
रहस्यमिदमाख्यातं [066.092]
तवापि कथितं मया [066.092]
विष्णुः सर्वगतो ऽनन्तः [066.093]
सर्वं तत्र प्रतिष्ठितम् [066.093]
स च सर्वमिदं राजन् [066.093]
न ततो विद्यते परम् [066.093]
एतत्पवित्रं पठितं [066.094]
तथा दुःस्वप्ननाशनम् [066.094]
जातिस्मरत्वं प्रज्ञां च [066.094]
ददाति पठतां नृणाम् [066.094]

मया हि देवदेवस्य [067.001]
विष्णोरमिततेजसः [067.001]
श्रुताः संभूतयः सर्वा [067.001]
गदतस्तव सुव्रत [067.001]
यदि प्रसन्नो भगवान् [067.002]
अनुग्राह्यो ऽस्मि वा यदि [067.002]
तदहं श्रोतुमिच्छामि [067.002]
नृणां दुःस्वप्ननाशनम् [067.002]
स्वप्ना हि सुमहाभाग [067.003]
दृश्यन्ते ये शुभाशुभाः [067.003]
फलानि ते प्रयच्छन्ति [067.003]
तद्गुणान्येव भार्गव [067.003]
यद्यत्पुण्यं पवित्रं च [067.004]
नृणामतिशुभप्रदम् [067.004]
दुःस्वप्नोपशमायालं [067.004]
तन्मे विस्तरतो वद [067.004]
इदमेव महाराज [067.005]
पृष्टवांस्ते पितामहः [067.005]
भीष्मं धर्मभृतां श्रेष्ठं [067.005]
धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः [067.005]
देवव्रतं महाप्राज्ञं [067.006]
सर्वशास्त्रविशारदम् [067.006]
विनयेनोपसंगम्य [067.006]
पर्यपृच्छद्युधिष्ठिरः [067.006]
दुःस्वप्नदर्शनं घोरम् [067.007]
अवेक्ष्य भरतर्षभ [067.007]
प्रयतः किं जपेज्जप्यं [067.007]
विबुद्धः किमनुस्मरेत् [067.007]
पितामह महाबुद्धे [067.008]
बुद्धेर्भेदो महानयम् [067.008]
तदहं श्रोतुमिच्छामि [067.008]
ब्रूहि मे वदतां वर [067.008]
शृणु राजन्महाबाहो [067.009]
वर्तयिष्यामि ते ऽखिलम् [067.009]
दुःस्वप्नदर्शने जप्यं [067.009]
यद्वै नित्यं समाहितैः [067.009]
अत्राप्युदाहरन्तीमम् [067.010]
इतिहासं पुरातनम् [067.010]
गजेन्द्रमोक्षणं पुण्यं [067.010]
कृष्णस्याक्लिष्टकर्मणः [067.010]
सर्वरत्नमयः श्रीमांस् [067.011]
त्रिकूटो नाम पर्वतः [067.011]
सुतः पर्वतराजस्य [067.011]
सुमेरोर्भास्करद्युतेः [067.011]
क्षीरोदजलवीच्यग्रैर् [067.012]
धौतामलशिलातलः [067.012]
उत्थितः सागरं भित्त्वा [067.012]
देवर्षिगणसेवितः [067.012]
अप्सरोभिः समाकीर्णः [067.013]
श्रीमान्प्रस्रवणाकुलः [067.013]
गन्धर्वैः किंनरैर्यक्षैः [067.013]
सिद्धचारणपन्नगैः [067.013]
विद्याधरैः सपत्नीकैः [067.*(92)]
संयतैश्च तपस्विभिः [067.*(92)]
मृगैर्द्वीपिद्विजैश्चैव [067.014]
वृतः सौवर्णराजतैः [067.014]
पुंनागैः कर्णिकारैश्च [067.014]
पुष्पितैरुपशोभितः [067.014]
चूतनीपकदम्बैश्च [067.015]
चन्दनागरुचम्पकैः [067.015]
शालैस्तालैस्तमालैश्च [067.015]
कुटजैश्चार्जुनैस्तथा [067.015]
एवं बहुविधैर्वृक्षैः [067.016]
सर्वतः समलंकृतः [067.016]
नानाधातूज्ज्वलैः शृङ्गैः [067.016]
प्रस्रवद्भिः समन्ततः [067.016]
मृगैः शाखामृगैः सिंहैर् [067.017]
मातंगैश्च सदामदैः [067.017]
जीवंजीवकसंघुष्टं [067.017]
चकोरशिखिनादितम् [067.017]
तस्यैकं काञ्चनं शृङ्गं [067.018]
सेवते यद्दिवादरः [067.018]
नानापुष्पसमाकीर्णं [067.018]
नानागन्धसमाकुलम् [067.018]
द्वितीयं राजतं शृङ्गं [067.019]
सेवते यन्निशाकरः [067.019]
पाण्डुराम्बुदसंकाशं [067.019]
तुषारचयसंनिभम् [067.019]
वज्रेन्द्रनीलवैडूर्य- [067.020]
तेजोभिर्भासयन्नभः [067.020]
तृतीयं ब्रह्मसदनं [067.020]
प्रकृष्टं शृङ्गमुत्तमम् [067.020]
न तत्कृतघ्नाः पश्यन्ति [067.021]
न नृशंसा न नास्तिकाः [067.021]

नातप्ततपसः शैलं [067.021]
तं वै पश्यन्ति मानवाः [067.021]
तस्य सानुमतः पृष्ठे [067.022]
सरः काञ्चनपङ्कजम् [067.022]
कारण्डवसमाकीर्णं [067.022]
राजहंसोपशोभितम् [067.022]
मत्तभ्रमरसंघुष्टं [067.023]
फुल्लपङ्कजशोभितम् [067.023]
कुमुदोत्पलकल्हार- [067.023]
पुण्डरीकोपशोभितम् [067.023]
उत्पलैः शतपत्त्रैश्च [067.024]
काञ्चनैः समलंकृतम् [067.024]
पत्त्रैर्मणिदलप्रख्यैः [067.024]
पुष्पैः काञ्चनसंनिभैः [067.024]
गुल्मैः कीचकवेणूनां [067.024]
समन्तात्परिवारितम् [067.024]
तस्मिन्सरसि दुष्टात्मा [067.025]
विरूपो ऽन्तर्जलाशयः [067.025]
आसीद्ग्राहो गजेन्द्राणां [067.025]
दुराधर्षो महाबलः [067.025]
अथ दन्तोज्ज्वलमुखः [067.026]
कदाचिद्गजयूथपः [067.026]
आजगामासिताभ्राभः [067.026]
करेणुपरिवारितः [067.026]
मदस्रावी महारौद्रः [067.027]
पादचारीव पर्वतः [067.027]
वासयन्मदगन्धेन [067.027]
गिरिमैरावतोपमः [067.027]
स गजो ऽञ्जनसंकाशो [067.028]
मदाच्चलितमानसः [067.028]
गन्धहस्तीति विख्यातः [067.*(94)]
सरः समभिगम्य तत् [067.*(94)]
तृषितः स जलं प्राप्य [067.*(94)]
कुसुमाकरशीतलम् [067.*(94)]
अपिबत्सहसा राजन् [067.*(94)]
करेणुपरिवारितः [067.*(94)]
सलीलं पङ्कजवने [067.028]
यूथमध्यगतो ऽव्रजत् [067.028]
गृहीतस्तेन रौद्रेण [067.029]
ग्राहेणाव्यक्तमूर्तिना [067.029]
पश्यन्तीनां करेणूनां [067.029]
क्रोशन्तीनां च दारुणम् [067.029]
क्रियते पङ्कजवने [067.*(95)]
ग्राहेणातिबलीयसा [067.*(95)]
गजश्चाकर्षते तीरं [067.*(96)]
ग्राहश्चाकर्षते जलम् [067.*(96)]
तयोर्द्वन्द्व महायुद्धं [067.*(96)]
दिव्यवर्षसहस्रिकम् [067.*(96)]
वारुणैः संयतः पाशैर् [067.030]
निःप्रयत्नगतिः कृतः [067.030]
वेष्ट्यमानः सुघोरैस्तु [067.030]
पाशैर्नागो दृढैस्तथा [067.030]
विस्फुर्ज्य च यथाशक्ति [067.031]
विक्रुश्य च महारवान् [067.031]
व्यथितः संनिरुत्साहो [067.031]
गृहीतो घोरकर्मणा [067.031]
परमापदमापन्नो [067.032]
मनसाचिन्तयद्धरिम् [067.032]
स तु नागवरः श्रीमान् [067.032]
नारायणपरायणः [067.032]
तमेव परमं देवं [067.033]
गतः सर्वात्मना तदा [067.033]
एकाग्रं चिन्तयामास [067.033]
विशुद्धेनान्तरात्मना [067.033]
जन्मजन्मान्तराभ्यासाद् [067.034]
भक्तिमान्गरुडध्वजे [067.034]
आद्यं देवं महात्मानं [067.034]
पूजयामास केशवम् [067.034]
नवमेघप्रतीकाशं [067.035]
शङ्खचक्रगदाधरम् [067.035]
सहस्रशुभनामानम् [067.035]
आदिदेवमजं परम् [067.035]
दिग्बाहुं सर्वमूर्धानं [067.*(98)]
भूपादं गगनोदरम् [067.*(98)]
आदित्यचन्द्रनयनं [067.*(98)]
समग्रं लोकसाक्षिणम् [067.*(98)]
भगवन्तं प्रसन्नो ऽहं [067.*(99)]
विष्णुमप्रतिमौजसम् [067.*(99)]
प्रगृह्य पुष्कराग्रेण [067.036]
काञ्चनं कमलोत्तमम् [067.036]
आपद्विमोक्षमन्विच्छन् [067.036]
गजः स्तोत्रमुदैरयत् [067.036]
ओं नमो मूलप्रकृतये [067.*(100),001]
अजिताय महात्मने [067.*(100),001]

अनाश्रिताय देवाय [067.*(100),002]
निःस्पृहाय नमो नमः [067.*(100),002]
नम आद्याय बीजाय [067.*(100),003]
शिवाय च प्रशान्ताय [067.*(100),003]
आर्षेयाय प्रवर्तिने [067.*(100),004]
निश्चलाय यशस्विने [067.*(100),004]
अनन्तराय चैकाय [067.*(100),005]
सनातनाय पूर्वाय [067.*(100),005]
अव्यक्ताय नमो नमः [067.*(100),006]
पुराणाय नमो नमः [067.*(100),006]
नमो गुह्याय गूढाय [067.*(100),007]
गुणायागुणवर्तिने [067.*(100),008]
अतर्क्यायाप्रमेयाय [067.*(100),009]
अनन्ताय नमो नमः [067.*(100),010]
नमो देवातिदेवाय [067.*(100),011]
अप्रभाय नमो नमः [067.*(100),012]
नमो जगत्प्रस्थिताय [067.*(100),013]
गोविन्दाय नमो नमः [067.*(100),013]
नमो ऽस्तु पद्मनाभाय [067.*(100),014]
सांख्ययोगोद्भवाय च [067.*(100),014]
विश्वेश्वराय देवाय [067.*(100),015]
शिवाय हरये नमः [067.*(100),015]
नमो ऽस्तु तस्मै देवाय [067.*(100),016]
निर्गुणाय गुणात्मने [067.*(100),016]
नारायणाय विश्वाय [067.*(100),017]
देवानां परमात्मने [067.*(100),017]
नमो नमः कारणवामनाय [067.037]
नारायणायामितविक्रमाय [067.037]
श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय [067.037]
नमो ऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय [067.037]
आद्याय वेदनिलयाय महोदराय [067.038]
सिंहाय दैत्यनिधनाय चतुर्भुजाय [067.038]
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिचारणसंस्तुताय [067.038]
देवोत्तमाय वरदाय नमो ऽच्युताय [067.038]
नागेन्द्रभोगशयनासनसुप्रियाय [067.039]
गोक्षीरहेमशुकनीलघनोपमाय [067.039]
पीताम्बराय मधुकैटभनाशनाय [067.039]
विश्वाय चारुमुकुटाय नमो ऽक्षराय [067.*(101)]
भक्तिप्रियाय वरदीप्तसुदर्शनाय [067.039]
नाभिप्रजातकमलस्थचतुर्मुखाय [067.040]
क्षीरोदकार्णवनिकेतयशोधनाय [067.040]
नानाविचित्रमुकुटाङ्गदभूषणाय [067.040]
सर्वेश्वराय वरदाय नमो वराय [067.040]
विश्वात्मने परमकारणकारणाय [067.041]
फुल्लारविन्दविमलायतलोचनाय [067.041]
देवेन्द्रदानवपरीक्षितपौरुषाय [067.041]
योगेश्वराय विजयाय नमो वराय [067.041]
लोकायनाय त्रिदशायनाय [067.042]
ब्रह्मायनायात्मभवायनाय [067.042]
धर्मायनायैकजलायनाय [067.042]
महावराहाय सदा नतो ऽस्मि [067.042]
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं [067.043]
नारायणं कारणमादिदेवम् [067.043]
युगान्तशेषं पुरुषं पुराणं [067.043]
तं वासुदेवं शरणं प्रपद्ये [067.043]
योगेश्वरं चारुविचित्रमौलिम् [067.*(104)]
आज्ञेयमौख्यं प्रकृतेः परस्थम् [067.*(104)]
क्षेत्रज्ञमात्मप्रभवं वरेण्यं [067.*(104)]
तं वासुदेवं शरणं प्रपद्ये [067.*(104)]
अदृश्यमच्छेद्यमनादिमध्यं [067.044]
महर्षयो ब्रह्मविदः सुरेशम् [067.044]
वदन्ति यं वै पुरुषं सनातनं [067.044]
तं वासुदेवं शरणं प्रपद्ये [067.044]
यदक्षरं ब्रह्म वदन्ति सर्वगं [067.045]
निशाम्य यं मृत्युमुखात्प्रमुच्यते [067.045]
तमीश्वरं तृप्तमनोपमैर्गुणैः [067.045]
परायणं विष्णुमुपैमि शाश्वतम् [067.045]
कार्यं क्रियाकारणमप्रमेयं [067.046]
हिरण्यनाभं वरपद्मनाभम् [067.046]
महाबलं वेदनिधिं सुरोत्तमं [067.046]
व्रजामि विष्णुं शरणं जनार्दनम् [067.046]
विचित्रकेयूरमहार्हनिष्कं [067.047]
रत्नोत्तमालंकृतसर्वगात्रम् [067.047]
पीताम्बरं काञ्चनभक्तिचित्रं [067.047]
मालाधरं केशवमभ्युपैमि [067.047]
भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठं [067.048]
योगात्मानं सांख्यविदां वरिष्ठम् [067.048]
आदित्यचन्द्राश्विवसुप्रभावं [067.048]
प्रभुं प्रपद्ये ऽच्युतमात्मभूतम् [067.048]
श्रीवत्साङ्कं महादेवं [067.049]
वेदगुह्यमनुत्तमम् [067.049]
प्रपद्ये सूक्ष्ममचलं [067.049]
भक्तानामभयप्रदम् [067.049]
प्रभवं सर्वलोकानां [067.050]

निर्गुणं परमेश्वरम् [067.050]
प्रपद्ये मुक्तसंगानां [067.050]
यतीनां परमां गतिम् [067.050]
भगवन्तं सुराध्यक्षम् [067.051]
अक्षरं पुष्करेक्षणम् [067.051]
शरण्यं शरणं भक्त्या [067.051]
प्रपद्ये ब्राह्मणप्रियम् [067.051]
त्रिविक्रमं त्रिलोकेशम् [067.052]
आद्यमेकमनामयम् [067.052]
भूतात्मानं महात्मानं [067.052]
प्रपद्ये मधुसूदनम् [067.052]
आदिदेवमजं शम्भुं [067.*(105)]
व्यक्ताव्यक्तं जनार्दनम् [067.*(105)]
क्षेत्रज्ञं पुरुषं यज्ञं [067.053]
त्रिगुणातीतमव्ययम् [067.053]
नारायणमणीयांसं [067.053]
प्रपद्ये परमेश्वरम् [067.053]
एकाय लोकत्रयाय [067.054]
परतः परमात्मने [067.054]
नमः सहस्रशिरसे [067.054]
अनन्ताय महात्मने [067.054]
वरेण्यमनघं देवम् [067.055]
ऋषयो वेदपारगाः [067.055]
कीर्तयन्ति च यं सर्वे [067.055]
तं प्रपद्ये सनातनम् [067.055]
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष [067.056]
भक्तानामभयप्रद [067.056]
सुब्रह्मण्य नमस्ते ऽस्तु [067.056]
त्राहि मां शरणागतम् [067.056]
भक्तिं तस्यानुसंचिन्त्य [067.057]
नागस्यामोघसंस्तवम् [067.057]
प्रीतिमानभवद्राजञ् [067.057]
शङ्खचक्रगदाधरः [067.057]
सांनिध्यं कल्पयामास [067.057]
तस्मिन्सरसि माधवः [067.057]
ग्राहग्रस्तं गजं तं च [067.058]
संगृह्य सलिलाशयात् [067.058]
उज्जहाराप्रमेयात्मा [067.058]
तरसैवारिसूदनः [067.058]
स्थलस्थं दारयामास [067.059]
ग्राहं चक्रेण माधवः [067.059]
मोक्षयामास च गजं [067.059]
पाशेभ्यः शरणागतम् [067.059]
स हि देवलशापेन [067.060]
हूहू गन्धर्वसत्तमः [067.060]
गजत्वमगमत्कृष्णान् [067.060]
मोक्षं प्राप्य दिवं गतः [067.060]
शापाद्विमुक्तः सद्यश्च [067.060]
गजो गन्धर्वतां गतः [067.060]
ग्राहो ऽपि यक्षतां यातो [067.061]
यः कृष्णेन निपातितः [067.061]
तस्यापि शापमोक्षो ऽसौ [067.061]
जैगीषव्यकृतो ऽभवत् [067.061]
प्रीतिमांस्त्राति गोविन्दः [067.062]
सद्यः संसारसागरात् [067.062]
क्रुद्धो ऽपि निघ्नन्देवत्वम् [067.062]
अरातीनां प्रयच्छति [067.062]
तौ च स्वं स्वं वपुः प्राप्य [067.063]
प्रणिपत्य जनार्दनम् [067.063]
गन्धर्वराट्तथा यक्षः [067.063]
परां निर्वृतिमागतौ [067.063]
इदं चैव महाबाहो [067.064]
देवदेवो ऽभ्यभाषत [067.064]
दृष्ट्वा मुक्तौ गजग्रहौ [067.064]
भगवान्मधुसूदनः [067.064]
यो ग्राहं नागराजं च [067.065]
मां चैव प्रणिधानवान् [067.065]
स्मरिष्यति सरश्चेदं [067.065]
युवयोर्मोक्षणं तथा [067.065]
गुल्मं कीचकवेणूनां [067.066]
तं च शैलवरं तथा [067.066]
अश्वत्थं भास्करं गङ्गां [067.066]
नैमिषारण्यमेव च [067.066]
संस्मरिष्यन्ति ये मर्त्याः [067.067]
सम्यक्क्षोष्यन्ति वापि ये [067.067]
न ते दुःस्वप्नपापस्य [067.067]
भोक्तारो मत्परिग्रहात् [067.067]
सर्वपापैः प्रमोक्ष्यन्ते [067.068]
कल्याणानां च भागिनः [067.068]
भविष्यन्ति तथा पुण्यां [067.068]
गतिं यास्यन्ति मानवाः [067.068]
दुःस्वप्नं च नृणां तेषां [067.068]
सुस्वप्नं च भविष्यति [067.068]
कौर्मं मात्स्यं च वाराहं [067.069]

वामनं तार्क्ष्यमेव च [067.069]
नारसिंहं तथा रूपं [067.069]
सृष्टिसंहारकारकम् [067.069]
एतानि प्रातरुत्थाय [067.070]
संस्मरिष्यन्ति ये नराः [067.070]
सर्वपापविनिर्मुक्तास् [067.070]
ते यान्ति परमां गतिम् [067.070]
एवमुक्त्वा तु राजेन्द्र [067.071]
देवदेवो जनार्दनः [067.071]
अस्पृशद्गजगन्धर्वं [067.071]
ग्राहयक्षं च तं तदा [067.071]
तेन स्पृष्टावुभौ सद्यो [067.072]
दिव्यमाल्याम्बरान्वितौ [067.072]
विमाने ऽभिमते प्राप्य [067.072]
जग्मतुस्त्रिदशालयम् [067.072]
ततो देवपतिः कृष्णो [067.073]
मोक्षयित्वा गजोत्तमम् [067.073]
ऋषिभिः स्तूयमानो हि [067.073]
गुह्यैर्वेदपदाक्षरैः [067.073]
गतः स भगवान्विष्णुर् [067.073]
दुर्विज्ञेयगतिः प्रभुः [067.073]
गजेन्द्रमोक्षणं दृष्ट्वा [067.074]
सर्वे चेन्द्रपुरोगमाः [067.074]
ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा [067.074]
सर्वे प्राञ्जलयो ऽभवन् [067.074]
ववन्दिरे महात्मानं [067.*(107)]
प्रभुं नारायणं हरिम् [067.*(107)]
विस्मयोत्फुल्लनयनाः [067.*(107)]
प्रजापतिपुरःसराः [067.*(107)]
य इदं शृणुयान्नित्यं [067.*(107)]
प्रातरुत्थाय मानवः [067.*(107)]
प्राप्नुयात्परमां सिद्धिं [067.*(107)]
दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति [067.*(107)]
गजेन्द्रमोक्षणं पुण्यं [067.075]
सर्वपापप्रमोचनम् [067.075]
श्रावयेत्प्रातरुत्थाय [067.075]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [067.075]
श्रद्धया हि कुरुश्रेष्ठ [067.076]
स्मृतेन कथितेन च [067.076]
गजेन्द्रमोक्षणेनेह [067.076]
दीर्घमायुरवाप्नुयात् [067.076]
मया ते कथितं दिव्यं [067.077]
पवित्रं पापनाशनम् [067.077]
कीर्तयस्व महाबाहो [067.077]
महादुःस्वप्ननाशनम् [067.077]
कीर्त्यमानं च विप्रेभ्यः [067.*(108)]
शृणु भक्त्या यथोदितम् [067.*(108)]
गजेन्द्रमोक्षणं श्रुत्वा [067.078]
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः [067.078]
भीष्माद्भगीरथीपुत्रात् [067.078]
पूजयामास केशवम् [067.078]
ये चापि पाण्डुपुत्रस्य [067.079]
समीपस्था द्विजोत्तमाः [067.079]
ते ऽपि भीष्मस्य पार्श्वस्थं [067.079]
वासुदेवं प्रणेमिरे [067.079]
वरं वरेण्यं वरपद्मनाभं [067.080]
नारायणं ब्रह्मनिधिं सुरेशम् [067.080]
तं देवगुह्यं पुरुषं पुराणं [067.080]
ववन्दिरे ब्रह्मविदां वरिष्ठम् [067.080]
एतत्पुण्यं महाराज [067.081]
नराणां पापकर्मणाम् [067.081]
दुःस्वप्नदर्शने घोरे [067.081]
श्रुत्वा पापात्प्रमुच्यते [067.081]
भक्तिमान्पुण्डरीकाक्षे [067.081]
गजो दुःखाद्विमोचितः [067.081]
तथा त्वमपि राजेन्द्र [067.082]
प्रपद्य शरणं हरिम् [067.082]
विमुक्तः सर्वपापेभ्यः [067.082]
प्राप्स्यसे परमां गतिम् [067.082]
महामते महाप्राज्ञ [068.001]
सर्वशास्त्रविशारद [068.001]
अक्षीणकर्मबन्धस्तु [068.001]
पुरुषो द्विजसत्तम [068.001]
मरणे यज्जपञ्जप्यं [068.002]
यच्च भावं अनुस्मरन् [068.002]
परं पदमवाप्नोति [068.002]
तन्मे वद महामुने [068.002]
श्रीवत्साङ्कं जगद्बीजम् [068.003]
अनन्तं लोकभावनम् [068.003]
पुरा नारायणं देवं [068.003]
नारदः पर्यपृच्छत [068.003]
भगवन्भूतभव्येश [068.004]
श्रद्धानैर्जितेन्द्रियैः [068.004]
कथं भक्तैर्विचिन्त्यो ऽसि [068.004]

मरणे प्रत्युपस्थिते [068.004]
किं वा जप्यं जपेन्नित्यं [068.005]
कल्यमुत्थाय मानवः [068.005]
स्वपन्विबुध्यन्ध्यायंश्च [068.005]
तन्मे ब्रूहि सनातन [068.005]
श्रुत्वा तस्य तु देवर्षेर् [068.006]
वाक्यं वाक्यविशारदः [068.006]
प्रोवाच भगवान्विष्णुर् [068.006]
नारदं जगतो गतिः [068.006]
हन्त ते कथयिष्यामि [068.007]
मुने दिव्यामनुस्मृतिम् [068.007]
मरणे यामनुस्मृत्य [068.007]
प्राप्नोति परमां गतिम् [068.007]
ओंकारमादितः कृत्वा [068.008]
मामनुस्मृत्य मन्मनाः [068.008]
एकाग्रप्रयतो भूत्वा [068.008]
इदं मन्त्रमुदीरयेत् [068.008]
अव्यक्तं शाश्वतं देवम् [068.009]
अनन्तं पुरुषोत्तमम् [068.009]
प्रपद्ये प्राञ्जलिर्विष्णुम् [068.009]
अच्युतं परमेश्वरम् [068.009]
पुराणं परमं विष्णुम् [068.010]
अद्भुतं लोकभावनम् [068.010]
प्रपद्ये पुण्डरीकाक्षम् [068.010]
ईशं भक्तानुकम्पिनम् [068.010]
लोकनाथं प्रपन्नो ऽस्मि [068.011]
अक्षरं परमं पदम् [068.011]
भगवन्तं प्रपन्नो ऽस्मि [068.011]
भूतभव्यभवत्प्रभुम् [068.011]
स्रष्टारं सर्वभूतानाम् [068.012]
अनन्तबलपौरुषम् [068.012]
पद्मनाभं हृषीकेशं [068.012]
पपद्ये सत्यमव्ययम् [068.012]
हिरण्यगर्भं भूगर्भम् [068.013]
अमृतं विश्वतोमुखम् [068.013]
आभास्वरमनाद्यन्तं [068.013]
प्रपद्ये भास्करद्युतिम् [068.013]
सहस्रशिरसं देवं [068.014]
वैकुण्ठं ताक्ष्र्यवाहनम् [068.014]
प्रपद्ये सूक्ष्ममचलं [068.014]
वरेण्यमभयप्रदम् [068.014]
नारायणं नरं हंसं [068.015]
योगात्मानं सनातनम् [068.015]
शरण्यं सर्वलोकानां [068.015]
प्रपद्ये ध्रुवमीश्वरम् [068.015]
यः प्रभुः सर्वलोकानां [068.016]
येन सर्वमिदं ततम् [068.016]
चराचरगुरुर्देवः [068.016,*(110)]
स नो विष्णुः प्रसीदतु [068.016,*(110)]
यस्माज्जातः पुरा ब्रह्मा [068.017]
पद्मयोनिः पितामहः [068.017]
प्रसीदतु स नो विष्णुः [068.017]
पिता माता पितामहः [068.017]
यः पुरा प्रलये प्राप्ते [068.018]
नष्टे लोके चराचरे [068.018]
एकस्तिष्ठति योगात्मा [068.018]
स नो विष्णुः प्रसीदतु [068.018]
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च [068.*(109)]
द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च [068.*(109)]
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां [068.*(109)]
स नो विष्णुः प्रसीदतु [068.*(109)]
पर्जन्यः पृथिवी सस्यं [068.019]
कालो धर्मः क्रिया फलम् [068.019]
गुणाकरः स नो बभ्रुर् [068.019]
वासुदेवः प्रसीदतु [068.019]
योगावास नमस्तुभ्यं [068.020]
सर्वावास वरप्रद [068.020]
यज्ञगर्भ महाभाग [068.020]
पञ्चयज्ञ नमो ऽस्तु ते [068.020]
चतुर्मूर्ते जगद्धाम [068.021]
लक्ष्म्यावास वरप्रद [068.021]
सर्वावास नमस्ते ऽस्तु [068.021]
साक्षिभूत जगत्पते [068.021]
अजेय खण्डपरशो [068.022]
विश्वमूर्ते वृषाकपे [068.022]
त्रिगर्ते पञ्चकालज्ञ [068.022]
नमस्ते ज्ञानसागर [068.022]
अव्यक्तादण्डमुत्पन्नम् [068.023]
अव्यक्ताद्यः परः प्रभुः [068.023]
यस्मात्परतरं नास्ति [068.023]
तमस्मि शरणं गतः [068.023]
चिन्तयन्तो हि यं नित्यं [068.024]
ब्रह्मेशानादयः प्रभुम् [068.024]
निश्चयं नाधिगच्छन्ति [068.024]

तमस्मि शरणं गतः [068.024]
जितेन्द्रिया महात्मानो [068.025]
ज्ञानध्यानपरायणाः [068.025]
यं प्राप्य न निवर्तन्ते [068.025]
तमस्मि शरणं गतः [068.025]
एकांशेन जगत्सर्वं [068.026]
यो ऽवष्टभ्य विभुः स्थितः [068.026]
अग्राह्यो निर्गुणः शास्ता [068.026]
तमस्मि शरणं गतः [068.026]
दिवाकरस्य सौम्यं हि [068.027]
मध्ये ज्योतिरवस्थितम् [068.027]
क्षेत्रज्ञमिति यं प्राहुः [068.027]
स महात्मा प्रसीदतु [068.027]
अव्यक्तमनवस्थानो [068.028]
दुर्विज्ञेयः सनातनः [068.028]
आस्थितः प्रकृतिं भुङ्क्ते [068.028]
स महात्मा प्रसीदतु [068.028]
क्षेत्रज्ञः पञ्चधा भुङ्क्ते [068.029]
प्रकृतिं बहुभिर्गुणैः [068.029]
मनोगुणांश्च यो भुङ्क्ते [068.029]
स महात्मा प्रसीदतु [068.029]
सांख्या योगाश्च ये चान्ये [068.030]
सिद्धाश्चैव महर्षयः [068.030]
यं विदित्वा विमुच्यन्ते [068.030]
स महात्मा प्रसीदतु [068.030]
नमस्ते सर्वतोभद्र [068.031]
सर्वतोऽक्षिशिरोमुख [068.031]
निर्विकार नमस्ते ऽस्तु [068.031]
साक्षिभूत हृदि स्थित [068.031]
अतीन्द्रिय नमस्तुभ्यं [068.031]
लिङ्गेभ्यस्त्वं प्रमीयसे [068.031]
ये तु त्वां नाभिजानन्ति [068.032]
संसारे संसरन्ति ते [068.032]
रागद्वेषविनिर्मुक्तं [068.032]
लोभमोहविवर्जितम् [068.032]
अशरीरं शरीरस्थं [068.032]
समं सर्वेषु देहिषु [068.032]
अव्यक्तं बुद्ध्यहंकारौ [068.033]
महाभूतेन्द्रियाणि च [068.033]
त्वयि तानि न तेषु त्वं [068.033]
तेषु त्वं तानि न त्वयि [068.033]
स्रष्टा भोक्तासि कूटस्थो [068.034]
गुणानां प्रभुरीश्वरः [068.034]
अकर्ता हेतुरहितः [068.034]
प्रभुः स्वात्मन्यवस्थितः [068.034]
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष [068.035]
पुनरेव नमो ऽस्तु ते [068.035]
ईश्वरो ऽसि जगन्नाथ [068.035]
किमतः परमुच्यते [068.035]
भक्तानां यद्धितं देव [068.035]
तद्ध्याय त्रिदशेश्वर [068.035]
मा मे भूतेषु संयोगः [068.036]
पुनर्भवतु जन्मनि [068.036]
अहंकारेण बुद्ध्या वा [068.036]
तथा सत्त्वादिभिर्गुणैः [068.036]
मा मे धर्मो ह्यधर्मो वा [068.037]
पुनर्भवतु जन्मनि [068.037]
विषयैरिन्द्रियैर्वापि [068.037]
मा मे भूयात्समागमः [068.037]
पृथिवीं यातु मे घ्राणं [068.038]
यातु मे रसना जलम् [068.038]
चक्षुर्हुताशनं यातु [068.038]
स्पर्शो मे यातु मारुतम् [068.038]
शब्दो ह्याकाशमभ्येतु [068.039]
मनो वैकारिकं तथा [068.039]
अहंकारश्च मे बुद्धिं [068.039]
त्वयि बुद्धिः समेतु च [068.039]
वियोगः सर्वकरणैर् [068.040]
गुणैर्भूतैश्च मे भवेत् [068.040]
सत्त्वं रजस्तमश्चैव [068.040]
प्रकृतिं प्रविशन्तु मे [068.040]
निष्केवलं पदं चैव [068.041]
प्रयामि परमं तव [068.041]
एकीभावस्त्वयैवास्तु [068.041]
मा मे जन्म भवेत्पुनः [068.041]
नमो भगवते तस्मै [068.042]
विष्णवे प्रभविष्णवे [068.042]
त्वन्मनस्त्वद्गतपृआणस् [068.042]
त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः [068.042]
त्वामेवानुस्मरे देव [068.042]
मरणे प्रत्युपस्थिते [068.042]
पूर्वदेहकृता ये मे [068.043]
व्याधयस्ते विशन्तु माम् [068.043]
आर्दयन्तु च दुःखानि [068.043]

प्रविमुञ्चामि यदृणम् [068.043]
उपतिष्ठन्तु मे रोगा [068.044]
ये मया पूर्वसंचिताः [068.044]
अनृणो गन्तुमिच्छामि [068.044]
तद्विष्णोः परमं पदम् [068.044]
अहं भगवतस्तस्य [068.045]
मम चासौ सुरेश्वरः [068.045]
तस्याहं न प्रणश्यामि [068.045]
स च मे न प्रणश्यति [068.045]
नमो भगवते तस्मै [068.046]
येन सर्वमिदं ततम् [068.046]
तमेव च प्रपन्नो ऽस्मि [068.046]
मम यो यस्य चाप्यहम् [068.046]
इमामनुस्मृतिं नित्यं [068.047]
वैष्णवीं पापनाशनीम् [068.047]
स्वपञ्जाग्रत्पठेद्यस्तु [068.047]
त्रिसंध्यं वापि यः स्मरेत् [068.047]
मरणे चाप्यनुप्राप्ते [068.048]
यस्त्विमां समनुस्मरेत् [068.048]
अपि पापसमाचारः [068.048]
सो ऽपि याति परां गतिम् [068.048]
अर्चयन्नपि यो देवं [068.049]
गृहे वापि बलिं ददेत् [068.049]
जुह्वदग्निं स्मरेद्वापि [068.049]
लभते स परां गतिम् [068.049]
पौर्णमास्याममावास्यां [068.050]
द्वादश्यां च विशेषतः [068.050]
श्रावयेच्छ्रद्दधानंस्तु [068.050]
ये चान्ये मामुपाश्रिताः [068.050]
नम इत्येव यो ब्रूयान् [068.051]
मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः [068.051]
तस्य स्युरक्षया लोकाः [068.051]
श्वपाकस्यापि नारद [068.051]
किं पुनर्ये यजन्ते मां [068.052]
साधवो विधिपूर्वकम् [068.052]
ध्यायन्ति च यथान्यायं [068.052]
ते यान्ति परमां गतिम् [068.052]
अश्वमेधसहस्राणां [068.053]
यः सहस्रं समाचरेत् [068.053]
नासौ तत्पदमाप्नोति [068.053]
मद्भक्तैर्यदवाप्यते [068.053]
इष्टं दत्तं तपो ऽधीतं [068.054]
व्रतानि नियमाश्च ये [068.054]
सर्वमेतद्विनाशान्तं [068.054]
ज्ञानस्यान्तो न विद्यते [068.054]
तस्मात्प्रदेयं साधुभ्यो [068.055]
धर्म्यं सत्त्वाभयंकरम् [068.055]
दानादीन्यन्तवन्तीह [068.055]
मद्भक्तो नान्तमश्नुते [068.055]
यो दद्याद्भगवज्ज्ञानं [068.056]
कुर्याद्वा धर्मदेशनाम् [068.056]
कृत्स्नां वा पृथिवीं दद्यान् [068.056]
न तु तुल्यं कथंचन [068.056]
कान्तारवनदुर्गेषु [068.057]
कृच्छ्रेष्वापत्सु संभ्रमे [068.057]
दस्युभिः संनिरुद्धश्च [068.057]
नामभिर्मां प्रकीर्तयेत् [068.057]
वराहो रक्षतु जले [068.058]
विषमेषु च वामनः [068.058]
रामो रामश्च रामश्च [068.*(111)]
त्रायन्तां दस्युदोषतः [068.*(111)]
अटव्यां नारसिंहस्तु [068.058]
सर्वतः पातु केशवः [068.058]
बद्धः परिकरस्तेन [068.059]
मोक्षाय गमनं प्रति [068.059]
सकृदुच्चारितं येन [068.059]
हरिरित्यक्षरद्वयम् [068.059]
जन्मान्तरसहस्राणि [068.*(112)]
तपोज्ञानसमाधिभिः [068.*(112)]
नराणां क्षीणपापानां [068.*(112)]
कृष्णे भक्तिः प्रजायते [068.*(112)]
गत्वा गत्वा निवर्तन्ते [068.*(112)]
चन्द्रसूर्यादयो ग्रहाः [068.*(112)]
अद्यापि न निवर्तन्ते [068.*(112)]
द्वादशाक्षरचिन्तकाः [068.*(112)]
न वासुदेवात्परमस्ति मङ्गलं [068.*(112)]
न वासुदेवात्परमं पवित्रम् [068.*(112)]
न वासुदेवात्परमस्ति दैवतं [068.*(112)]
न वासुदेवं प्रणिपत्य सीदति [068.*(112)]
तस्मान्मामेव देवर्षे [068.060]
ध्यायस्वातन्द्रितः सदा [068.060]
अवाप्स्यसि ततः सिद्धिं [068.060]
पदं द्रक्ष्यसि च ध्रुवम् [068.060]
एवं स देवदेवेन [068.061]

नारदः प्रतिबोधितः [068.061]
चकार केशवे भक्तिं [068.061]
तस्मात्त्वं कुरु भूपते [068.061]
यः पठेत्परया भक्त्या [068.*(113)]
स गच्छेद्विष्णुसाम्यताम् [068.*(113)]
एतत्पुण्यं पापहरं [068.*(113)]
धन्यं दुःस्वप्ननाशनम् [068.*(113)]
पापं प्रणश्यते येन [069.001]
पुण्यं येन विवर्धते [069.001]
यज्जपन्सुगतिं याति [069.001]
शृण्वंश्च मम तद्वद [069.001]
कश्चिदासीद्द्विजद्रोग्धा [069.002]
पिशुनः क्षत्रियाधमः [069.002]
परपीडारुचिर्दुष्टः [069.002]
स्वभावादेव निर्घृणः [069.002]
परिभूताः सदा तेन [069.003]
पितृदेवद्विजातयः [069.003]
परदारेषु चैवास्य [069.003]
बभूवाभिरतं मनः [069.003]
स त्वायुषि परिक्षीणे [069.004]
जज्ञे घोरो निशाचरः [069.004]
तेन वै कर्मदोषेण [069.004]
स्वेन पापकृतां वरः [069.004]
क्रूरैरेव ततो वृत्तिं [069.005]
राक्षसत्वे विशेषतः [069.005]
चकार कर्मभिः पापः [069.005]
सर्वप्राणिविहिंसकः [069.005]
तस्य पापरतस्यैवं [069.006]
जग्मुर्वर्षशतानि वै [069.006]
तेन वै कर्मदोषेण [069.006]
नान्या वृत्तिररोचत [069.006]
यद्यत्पश्यति सत्त्वं स [069.007]
तत्तदादाय राक्षसः [069.007]
चखाद पुरुषव्याघ्र [069.007]
बाहुगोचरमागतम् [069.007]
एवं तस्यातिदुष्टस्य [069.008]
कुर्वतः प्राणिनां वधम् [069.008]
जगाम सुमहान्कालः [069.008]
परिणामं तथा वयः [069.008]
स ददर्श तपस्यन्तं [069.009]
तापसं संश्रितव्रतम् [069.009]
ऊर्ध्वबाहुं महाभागं [069.009]
कृतरक्षं समन्ततः [069.009]
तं दृष्ट्वा स तु दुर्बुद्धिर् [069.010]
ब्राह्मणं राक्षसाधमः [069.010]
समभ्यधावद्वेगेन [069.010]
समादातुं चिखादिषुः [069.010]
तेन रक्षा च या दिक्षु [069.011]
ब्राह्मणेनाभवत्कृता [069.011]
तया निरस्तं तद्रक्षो [069.011]
निपपाताविदूरतः [069.011]
भगवन्कीदृशीं रक्षां [069.012]
स चकार द्विजोत्तमः [069.012]
यया निर्धूतवीर्यो ऽसौ [069.012]
निरस्तो रजनीचरः [069.012]
एकाग्रचित्तो गोविन्दे [069.013]
तज्जपंस्तत्परायणः [069.013]
तपश्चचार विप्रो ऽसौ [069.013]
प्रविष्टो विष्णुपञ्जरम् [069.013]
विष्णुपञ्जरमिच्छामि [069.014]
श्रोतुं धर्मभृतां वर [069.014]
सदा सर्वभयेभ्यस्तु [069.014]
रक्षा या परमाभवत् [069.014]
त्रिपुरं जघ्नुषः पूर्वं [069.015]
ब्रह्मणा विष्णुपञ्जरः [069.015]
शंकरस्य कुरुश्रेष्ठ [069.015]
रक्षणाय निरूपितः [069.015]
वागीशेन तु शक्रस्य [069.016]
बलं हन्तुं प्रयास्यतः [069.016]
तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि [069.016]
तन्निबोध महीपते [069.016]
विष्णुः प्राच्यां स्थितश्चक्री [069.017]
विष्णुर्दक्षिणतो गदी [069.017]
प्रतीच्यां शार्ङ्गधृग्विष्णुर् [069.017]
विष्णुः खड्गी ममोत्तरे [069.017]
हृषीकेशो विकोणेषु [069.018]
तच्छिद्रेषु जनार्दनः [069.018]
क्रोडरूपी हरिर्भूमौ [069.018]
नरसिंहो ऽम्बरे मम [069.018]
क्षुरान्तममलं चक्रं [069.019]
भ्रमत्येतत्सुदर्शनम् [069.019]
अस्यांशुमाला दुःप्रेक्षा [069.019]
हन्तु प्रेतनिशाचरान् [069.019]
गदा चेयं सहस्रार्चिर् [069.020]

उद्भमत्पावकोल्बणा [069.020]
रक्षोभूतपिशाचानां [069.020]
डाकिणीनां च नाशनी [069.020]
शार्ङ्गविस्फूर्जितं चैव [069.021]
वासुदेवस्य मद्रिपून् [069.021]
तिर्यङ्मनुष्यकूष्माण्ड- [069.021]
प्रेतादीन्हन्त्वशेषतः [069.021]
खड्गधाराज्वलज्ज्योत्स्ना- [069.022]
निर्धूता ये समाहताः [069.022]
ते यान्तु सौम्यतं सद्यो [069.022]
गरुडेनेव पन्नगाः [069.022]
ये कूष्माण्डास्तथा यक्षा [069.023]
ये दैत्या ये निशाचराः [069.023]
प्रेता विनायकाः क्रूरा [069.023]
मनुष्या जम्भकाः खगाः [069.023]
सिंहादयो ये पशवो [069.024]
दन्दसूकाश्च पन्नगाः [069.024]
सर्वे भवन्तु ते सौम्याः [069.024]
कृष्णशङ्खरवाहताः [069.024]
चित्तवृत्तिहरा ये मे [069.025]
ये जनाः स्मृतिहारकाः [069.025]
बलौजसां च हर्तारश् [069.025]
छायाविभ्रंशकाश्च ये [069.025]
ये चोपभोगहर्तारो [069.026]
ये च लक्षणनाशकाः [069.026]
कूष्माण्डास्ते प्रणश्यन्तु [069.026]
विष्णुचक्ररयाहताः [069.026]
बुद्धिस्वास्थ्यं मनःस्वास्थ्यं [069.027]
स्वास्थ्यमैन्द्रियकं तथा [069.027]
ममास्तु देवदेवस्य [069.027]
वासुदेवस्य कीर्तनात् [069.027]
पृष्ठे पुरस्तान्मम दक्षिणोत्तरे [069.028]
विकोणगश्चास्तु जनार्दनो हरिः [069.028]
तदीड्यमीशानमनन्तमीश्वरं [069.028]
जनार्दनं प्रणिपतितो न सीदति [069.028]
यथा परं ब्रह्म हरिस्तथा परं [069.029]
जगत्स्वरूपश्च स एव केशवः [069.029]
ऋतेन तेनाच्युतनामकीर्तनात् [069.029]
प्रणाशमेतु त्रिविधं ममाशुभम् [069.029]
इत्यसावात्मरक्षार्थं [070.001]
न्यस्तवान्विष्णुपञ्जरम् [070.001]
तेनासाध्यः स दुष्टानां [070.001]
बभूव नृप रक्षसाम् [070.001]
एतयारक्षया रक्षो [070.002]
निर्धूतं भुवि पातितम् [070.002]
जप्यावसाने विप्रो ऽसौ [070.002]
ददर्श विगतौजसम् [070.002]
दृष्ट्वा च कृपयाविष्टः [070.003]
समाश्वास्य निशाचरम् [070.003]
पप्रच्छागमने हेतुं [070.003]
तं चाचष्ट यथातथम् [070.003]
कथयित्वा च तत्सर्वं [070.003]
राक्षसः पुनरब्रवीत् [070.003]
प्रसीद विप्रवर्य त्वं [070.004]
निर्विण्णस्यातिपापिनः [070.004]
पापप्रशमनायालम् [070.004]
उपदेशं प्रयच्छ मे [070.004]
बहूनि पापानि मया [070.005]
कृतानि बहवो हताः [070.005]
कृताः स्त्रियश्च मे बह्व्यो [070.005]
विधवा हतपुत्रिकाः [070.005]
अनागसां च सत्त्वानाम् [070.005]
अनेकानां क्षयः कृतः [070.005]
सो ऽहमिच्छामि विप्रर्षे [070.006]
प्रसादात्तव सुव्रत [070.006]
पापस्यास्य क्षयं कर्तुं [070.006]
कुरु मे धर्मदेशनाम् [070.006]
कथं क्रूरस्वभावस्य [070.007]
सततस्तव निशाचर [070.007]
सहसैव समायाता [070.007]
जिज्ञासा धर्मवर्त्मनि [070.007]
त्वामनुमागतः क्षिप्तो [070.008]
रक्षया कृतया त्वया [070.008]
तत्संस्पर्शाच्च मे ब्रह्मन् [070.008]
साध्वेतन्मनसि स्थितम् [070.008]
का सा रक्षा न तां वेद्मि [070.009]
वेद्मि नास्याः परायणम् [070.009]
किंत्वस्याः संगमासाद्य [070.009]
निर्वेदं प्रापितं परम् [070.009]
स कृपां कुरु धर्मज्ञ [070.010]
मय्यनुक्रोशमावह [070.010]
यथा पापापनोदो मे [070.010]
भवत्यार्य तथा कुरु [070.010]
इत्येवमुक्तः स मुनिः [070.011]

सदयस्तेन रक्षसा [070.011]
प्रत्युवाच महाभाग [070.011]
विमृश्य सुचिरं तदा [070.011]
यत्त्वमात्थोपदेशार्थं [070.012]
निर्विण्णः स्वेन कर्मणा [070.012]
युक्तमेतन्न पापानां [070.012]
निवृत्तेरुपकारकम् [070.012]
करिष्ये यातुधानानां [070.013]
न त्वहं धर्मदेशनाम् [070.013]
तांस्त्वं पृच्छ द्विजान्सौम्य [070.013]
ये वै प्रवचने रताः [070.013]
एवमुक्त्वा ययौ विप्रश् [070.014]
चिन्तामाप च राक्षसः [070.014]
कथं पापापनोदः स्याद् [070.014]
इत्यसौ व्याकुलेन्द्रियः [070.014]
न तदा खादते सत्त्वान् [070.015]
क्षुधा संपीडितो ऽपि सन् [070.015]
षष्ठे षष्ठे तदा काले [070.015]
जन्तुमेकमभक्षयत् [070.015]
स कदाचित्क्षुधाविष्टः [070.016]
पर्यटन्विपिने वने [070.016]
ददर्शाथ फलाहारम् [070.016]
अग्रतः कौशिकं द्विजम् [070.016]
तं जग्राह च भक्षार्थं [070.017]
षष्ठे काले बुभुक्षितः [070.017]
गुरोरर्थे फलाहारम् [070.017]
आगतं ब्रह्मचारिणम् [070.017]
गृहीतो रक्षसा तेन [070.018]
स तदा मुनिदारकः [070.018]
निराशो जीविते प्राह [070.018]
सामपूर्वं निशाचरम् [070.018]
भो भद्रमुख यत्कार्यं [070.019]
गृहीतो ऽहमिह त्वया [070.019]
तद्ब्रवीहि यथातत्त्वम् [070.019]
अयमस्म्यनुशाधि माम् [070.019]
षष्ठे काले ममाहारः [070.020]
क्षुधितस्य त्वमागतः [070.020]
निःशूकस्यातिपापस्य [070.020]
निर्घृणस्य द्विजद्रुहः [070.020]
यद्यवश्यं त्वयाध्याहं [070.021]
भक्षणीयो निशाचर [070.021]
आयास्यामि तदद्यैव [070.021]
निवेद्य गुरवे फलम् [070.021]
गुरुमूले तदागत्य [070.022]
यत्फलग्रहणं कृतम् [070.022]
ममात्र निष्ठां प्राप्तस्य [070.022]
तत्पापाय निवेदितम् [070.022]
स त्वं मुहूर्तमात्रं माम् [070.023]
अत्रैव प्रतिपालय [070.023]
निवेद्य गुरवे यावद् [070.023]
इहागच्छाम्यहं फलम् [070.023]
षष्ठे काले न मे ब्रह्मन् [070.024]
कश्चिद्ग्रहणमागतः [070.024]
प्रमुच्यते निबोधैतद् [070.024]
इति मे पापजीविकाम् [070.024]
एक एवात्र मोक्षस्य [070.025]
तव हेतुः शृणुष्व तम् [070.025]
मुञ्चाम्यहमसंदिग्धं [070.025]
यदि तत्कुरुते भवान् [070.025]
गुरोर्यन्न विरोधाय [070.026]
यन्न धर्मोपरोधकम् [070.026]
तत्करिष्याम्यहं रक्षो [070.026]
यन्न व्रतहरं मम [070.026]
मया निसर्गतो ब्रह्मञ् [070.027]
जातिदोषाद्विशेषतः [070.027]
निर्विवेकेन पापेन [070.027]
पापं कर्म सदा कृतम् [070.027]
आ बाल्यान्मम पापेषु [070.028]
न पुण्येषु रतं मनः [070.028]
तत्पापसंचयान्मोक्षं [070.028]
प्राप्नुयां येन तद्वद [070.028]
यानि पापानि कर्माणि [070.029]
बालत्वाच्चरितानि मे [070.029]
दुष्टां योनिमिमां प्राप्य [070.029]
तन्मुक्तिं कथय द्विज [070.029]
यद्येतद्द्विजपुत्र त्वं [070.030]
ममाख्यास्यस्यशेषतः [070.030]
तत्क्षुधार्तात्समार्तस्त्वं [070.030]
नियतं मोक्षमाप्स्यसि [070.030]
न चैतत्पापशीलो ऽहम् [070.031]
अद्य त्वां क्षुत्पिपासितः [070.031]
षष्ठे काले नृशंसात्मा [070.031]
भक्षयिष्यामि निर्घृणः [070.031]
एवमुक्तो मुनिसुतस् [070.032]

तेन घोरेण रक्षसा [070.032]
चिन्तामवाप महतीम् [070.032]
अशक्तस्तदुदीरितुम् [070.032]
विमृश्य सुचिरं विप्रः [070.033]
शरणं जातवेदसम् [070.033]
जगाम ज्ञानदानाय [070.033]
संशयं परमं गतः [070.033]
यदि शुश्रूषितो वह्निर् [070.034]
गुरोः शुश्रूषणादनु [070.034]
व्रतानि वा सुचीर्णानि [070.034]
सप्तार्चिः पातु मां ततः [070.034]
न मातरं न पितरं [070.035]
गौरवेण यथा गुरुम् [070.035]
यथाहमवगच्छामि [070.035]
तथा मां पातु पावकः [070.035]
यथा गुरुं न मनसा [070.036]
कर्मणा वचसापि वा [070.036]
अवजानाम्यहं तेन [070.036]
पातु सत्येन पावकः [070.036]
इत्येवं शपथान्सत्यान् [070.037]
कुर्वतस्तस्य तत्पुनः [070.037]
सप्तार्चिषा समादिष्टा [070.037]
प्रादुरासीत्सरस्वती [070.037]
सा चोवाच द्विजसुतं [070.037]
राक्षसग्रहणाकुलम् [070.037]
मा भैर्द्विजसुताहं त्वां [070.038]
मोक्षयाम्यतिसंकटात् [070.038]
यदस्य रक्षसः श्रेयो [070.039]
जिह्वाग्रे ऽहं स्थिता तव [070.039]
तत्सर्वं कथयिष्यामि [070.039]
ततो मोक्षमवाप्स्यसि [070.039]
अदृश्या रक्षसा तेन [070.040]
प्रोक्तवेत्थं तं सरस्वती [070.040]
अदर्शनमिता सो ऽपि [070.040]
द्विजः प्राह निशाचरम् [070.040]
श्रूयतां तव यच्छ्रेयस् [070.041]
तथान्येषां च पापिनाम् [070.041]
समस्तपापशुद्ध्यर्थं [070.041]
पुण्योपचयदं च यत् [070.041]
प्रातरुत्थाय सततं [070.042]
मध्याह्ने ऽह्नः क्षये ऽपि वा [070.042]
अयं शस्तः सदा जापः [070.042]
सर्वपापोपशान्तिदः [070.042]
हरिं कृष्णं हृषीकेशं [070.043]
वासुदेवं जनार्दनम् [070.043]
प्रणतो ऽस्मि जगन्नाथं [070.043]
स मे पापं व्यपोहतु [070.043]
विश्वेश्वरमजं विष्णुम् [070.044]
अप्रमेयपराक्रमम् [070.044]
प्रणतो ऽस्मि प्रजापालं [070.044]
स मे पापं व्यपोहतु [070.044]
विष्णुमच्युतमीशानम् [070.045]
अनन्तमपराजितम् [070.045]
प्रणतो ऽस्मि महात्मानं [070.045]
स मे पापं व्यपोहतु [070.045]
चराचरगुरुं नाथं [070.046]
गोविन्दं शेषशायिनम् [070.046]
प्रणतो ऽस्मि परं देवं [070.046]
स मे पापं व्यपोहतु [070.046]
गोवर्धनधरं धीरं [070.047]
गोब्राह्मणहिते स्थितम् [070.047]
प्रणतो ऽस्मि गदापाणिं [070.047]
स मे पापं व्यपोहतु [070.047]
शङ्खिनं चक्रिणं शान्तं [070.048]
शार्ङ्गिणं स्रग्धरं परम् [070.048]
प्रणतो ऽस्मि पतिं लक्ष्म्याः [070.048]
स मे पापं व्यपोहतु [070.048]
दामोदरमुदाराक्षं [070.049]
पुण्डरीकाक्षमव्ययम् [070.049]
प्रणतो ऽस्मि स्तुतं स्तुत्यैः [070.049]
स मे पापं व्यपोहतु [070.049]
नारायणं नरं शौरिं [070.050]
माधवं मधुसूदनम् [070.050]
प्रणतो ऽस्मि धराधारं [070.050]
स मे पापं व्यपोहतु [070.050]
केशवं केशिहन्तारं [070.051]
कंसारिष्टनिसूदनम् [070.051]
प्रणतो ऽस्मि चतुर्बाहुं [070.051]
स मे पापं व्यपोहतु [070.051]
श्रीवत्सवक्षसं श्रीशं [070.052]
श्रीधरं श्रीनिकेतनम् [070.052]
प्रणतो ऽस्मि श्रियः कान्तं [070.052]
स मे पापं व्यपोहतु [070.052]
यमीशं सर्वभूतानां [070.053]

ध्यायन्ति यतयो ऽक्षरम् [070.053]
वासुदेवमनिर्देश्यं [070.053]
तमस्मि शरणं गतः [070.053]
समस्तालम्बनेभ्यो ऽयं [070.054]
संहृत्य मनसो गतिम् [070.054]
ध्यायन्ति वासुदेवाख्यं [070.054]
तमस्मि शरणं गतः [070.054]
सर्वगं सर्वभूतं च [070.055]
सर्वस्याधातमीश्वरम् [070.055]
वासुदेवं परं ब्रह्म [070.055]
तमस्मि शरणं गतः [070.055]
परमात्मानमव्यक्तं [070.056]
यं प्रयान्ति सुमेधसः [070.056]
कर्मक्षये ऽक्षयं देवं [070.056]
तमस्मि शरणं गतः [070.056]
पुण्यपापविनिर्मुक्ता [070.057]
यं प्रविश्य पुनर्भवम् [070.057]
न योगिनः प्राप्नुवन्ति [070.057]
तमस्मि शरणं गतः [070.057]
ब्रह्मा भूत्वा जगत्सर्वं [070.058]
सदेवासुरमानुषम् [070.058]
यः सृजत्यच्युतो देवस् [070.058]
तमस्मि शरणं गतः [070.058]
ब्रह्मत्वे यस्य वक्त्रेभ्यश् [070.059]
चतुर्वेदमयं वपुः [070.059]
सूतं प्रभो पुरा जज्ञे [070.059]
तमस्मि शरणं गतः [070.059]
ब्रह्मरूपधरं देवं [070.060]
जगद्योनिं जनार्दनम् [070.060]
स्रष्टृत्वे संस्थितं सृष्टौ [070.060]
प्रणतो ऽस्मि सनातनम् [070.060]
यः पाति सृष्टं च विभुः [070.061]
स्थितावसुरसूदनः [070.061]
तमादिपुरुषं विष्णुं [070.061]
प्रणतो ऽस्मि सनातनम् [070.061]
धृता मही हता दैत्याः [070.062]
परित्रातास्तथामराः [070.062]
येन तं विष्णुमाद्येशं [070.062]
प्रणतो ऽस्मि सनातनम् [070.062]
यज्ञैर्यजन्ति यं विप्रा [070.063]
यज्ञेशं यज्ञभावनम् [070.063]
तं यज्ञपुरुषं विष्णुं [070.063]
प्रणतो ऽस्मि सनातनम् [070.063]
वर्णाश्रमान्स्थितावाद्यो [070.064]
यः स्थापयति वर्त्मनि [070.064]
तमादिपुरुषं विष्णुं [070.064]
प्रणतो ऽस्मि सनातनम् [070.064]
कल्पान्ते रुद्ररूपो यः [070.065]
संहरत्यखिलं जगत् [070.065]
तमादिपुरुषं विष्णुं [070.065]
प्रणतो ऽस्मि जनार्दनम् [070.065]
पातालवीथीभूरादींस् [070.066]
तथा लोकान्बिभर्ति यः [070.066]
तमन्तपुरुषं विष्णुं [070.066]
प्रणतो ऽस्मि जनार्दनम् [070.066]
संभक्षयित्वा सकलं [070.067]
यथा सृष्टमिदं जगत् [070.067]
यो नृत्यत्यतिरौद्रात्मा [070.067]
प्रणतो ऽस्मि जनार्दनम् [070.067]
सुरासुराः पितृगणा [070.068]
यक्षगन्धर्वराक्षसाः [070.068]
यस्यांशभूता देवस्य [070.068]
सर्वगं तं नमाम्यहम् [070.068]
समस्तदेवाः सकला [070.069]
मानुषाणां च जातयः [070.069]
यस्यांशभूता देवस्य [070.069]
सर्वगं तं नमाम्यहम् [070.069]
वृक्षगुल्मादयो यस्य [070.070]
तथा पशुमृगादयः [070.070]
एकांशभूता देवस्य [070.070]
सर्वगं तं नमाम्यहम् [070.070]
यस्मान्नान्यत्परं किंचिद् [070.071]
यस्मिन्सर्वं महात्मनि [070.071]
यः सर्वमव्ययो ऽनन्तः [070.071]
सर्वगं तं नमाम्यहम् [070.071]
यथा सर्वेषु भूतेषु [070.072]
स्थावरेषु चरेषु च [070.072]
विष्णुरेव तथा पापं [070.072]
ममाशेषं प्रणश्यतु [070.072]
यथा विष्णुमयं सर्वं [070.073]
यत्सर्वेन्द्रियगोचरम् [070.073]
यच्च ज्ञानपरिच्छेद्यं [070.073]
पापं नश्यतु मे तथा [070.073]
प्रवृत्तं च निवृत्तं च [070.074]

कर्म विष्णुमयं यथा [070.074]
अनेकजन्मकर्मोत्थं [070.074]
पापं नश्यतु मे तथा [070.074]
यन्निशायां तथा प्रातर् [070.075]
यच्च मध्यापराह्णयोः [070.075]
संध्ययोश्च कृतं पापं [070.075]
कर्मणा मनसा गिरा [070.075]
तिष्ठता व्रजता यच्च [070.076]
शय्यासनगतेन च [070.076]
कृतं यदशुभं कर्म [070.076]
कायेन मनसा गिरा [070.076]
अज्ञानतो ज्ञानतो वा [070.077]
वासुदेवस्य कीर्तनात् [070.077]
तत्सर्वं विलयं यातु [070.077]
तोयस्थं लवणं यथा [070.077]
परदारपरद्रव्य- [070.078]
वाञ्छाद्रोहोद्भवं च यत् [070.078]
परिपीडोद्भवं निन्दां [070.078]
कुर्वतो यन्महात्मनाम् [070.078]
यच्च भोज्ये तथा पेये [070.079]
यच्च कण्डूयनादिषु [070.079]
तद्यातु विलयं तोये [070.079]
यथा लवणभाजनम् [070.079]
यद्बाल्ये यच्च कौमारे [070.080]
यत्पापं यौवने मम [070.080]
वयःपरिणतौ यच्च [070.080]
यच्च जन्मान्तरेषु मे [070.080]
तन्नारायणगोविन्द- [070.081]
हरिकृष्णेशकीर्तनात् [070.081]
प्रयातु विलयं तोये [070.081]
यथा लवणभाजनम् [070.081]
विष्णवे वासुदेवाय [070.082]
हरये केशवाय च [070.082]
जनार्दनाय कृष्णाय [070.082]
नमो भूयो नमो नमः [070.082]
इदं सारस्वतं स्तोत्रम् [070.083]
अशेषाघविनाशनम् [070.083]
पठतां शृण्वतां चैव [070.083]
सर्वपापविनाशनम् [070.083]
इदं यः प्रातरुत्थाय [070.084]
प्रणिपत्य जनार्दनम् [070.084]
जपत्येकमनाः पापं [070.084]
समस्तं स व्यपोहति [070.084]
यस्तु संवत्सरं पूर्णं [070.085]
सायं प्रातः समाहितः [070.085]
जपत्येतन्नरः पुण्यं [070.085]
कृत्वा मनसि केशवम् [070.085]
शारीरं मानसं वाग्जं [070.086]
ज्ञानतो ऽज्ञानतो ऽपि वा [070.086]
कृतं तेन तु यत्पापं [070.086]
सप्त जन्मान्तराणि वै [070.086]
महापातकमल्पं वा [070.087]
तथा यच्चोपपातकम् [070.087]
सकलं नाशयत्येतत् [070.087]
तथान्यत्पुण्यमृच्छति [070.087]
विप्राय सुविशिष्टाय [070.088]
तिलपात्राणि षोडश [070.088]
अहन्यहनि यो दद्यात् [070.088]
पठत्येतच्च तत्समम् [070.088]
अविप्लुतमतिश्चान्ते [070.089]
संप्राप्य स्मरणं हरेः [070.089]
विष्णुलोकमवाप्नोति [070.089]
सत्यमेतन्मयोदितम् [070.089]
यथैनं पठति नित्यं [070.*(114)]
स्तवं सारस्वतं पुमान् [070.*(114)]
अपि पापसमायुक्तो [070.*(114)]
मोक्षं प्राप्नोत्यसावपि [070.*(114)]
यथैतत्सत्यमुक्तं मे [070.090]
नात्राल्पमपि वै मृषा [070.090]
राक्षसग्रस्तसर्वाङ्गं [070.090]
तथा मामेष मुञ्चतु [070.090]
एवमुच्चारिते मुक्तः [070.091]
स तदा तेन रक्षसा [070.091]
अकामेन द्विजो भूयस् [070.091]
तमाह रजनीचरम् [070.091]
एतद्भद्रमुखाख्यातं [070.092]
तव पातकनाशनम् [070.092]
विष्णोः सारस्वतं स्तोत्रं [070.092]
यज्जगाद सरस्वती [070.092]
हुताशनेन प्रहिता [070.093]
मम जिह्वाग्रसंस्थिता [070.093]
जगादेमं स्तवं विष्णोः [070.093]
सर्वपापप्रशान्तिदम् [070.093]
अनेनैव जगन्नाथं [070.094]

त्वमाराधय केशवम् [070.094]
ततः पापापनोदं तु [070.094]
स्तुते प्राप्स्यसि केशवे [070.094]
अहर्निशं हृषीकेशं [070.095]
स्तवेनानेन राक्षस [070.095]
स्तौहि भक्तिं परां कृत्वा [070.095]
ततः पापाद्विमोक्ष्यसे [070.095]
स्तुतो हि सर्वपापानि [070.096]
नाशयिष्यत्यसंशयम् [070.096]
भक्त्या राक्षसशार्दूल [070.096]
सर्वपापहरो हरिः [070.096]
ततः प्रणम्य तं विप्रं [070.097]
प्रसाद्य च निशाचरः [070.097]
शालग्रामं महाराज [070.097]
तदैव तपसे ययौ [070.097]
तत्राहर्निशमेवैतज् [070.098]
जपञ्जप्यं नराधिप [070.098]
देवक्रियारतिर्भूत्वा [070.098]
तपस्तेपे स राक्षसः [070.098]
आराध्य च जगन्नाथं [070.099]
स तत्र पुरुषोत्तमम् [070.099]
सर्वपापविनिर्मुक्तो [070.099]
विष्णुलोकमवाप्तवान् [070.099]
तथा त्वमपि राजर्षे [070.100]
सर्वपापप्रशान्तिदम् [070.100]
आराधय हृषीकेशं [070.100]
जपन्सारस्वतं स्तवम् [070.100]
य एतत्परमं स्तोत्रं [070.101]
वासुदेवस्य मानवः [070.101]
पठिष्यति स सर्वेभ्यः [070.101]
पापेभ्यो मोक्षमाप्स्यति [070.101]
ब्रह्मन्नसारे संसारे [071.001]
रोगादिव्याप्तमानसः [071.001]
शब्दादिलुब्धः पुरुषः [071.001]
किं कुर्वन्नावसीदति [071.001]
स्वे महिम्नि स्थितं देवम् [071.002]
अप्रमेयमजं विभुम् [071.002]
शोकमोहविनिर्मुक्तं [071.002]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.002]
अप्राणचितिकं ब्रह्म [071.003]
वेदान्तेषु प्रकाशितम् [071.003]
आद्यं पुरुषमीशानं [071.003]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.003]
अशनाद्यैरसंस्पृष्टं [071.004]
सेवितं योगिभिः सदा [071.004]
सर्वदोषविनिर्मुक्तं [071.004]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.004]
धामत्रयविनिर्मुक्तं [071.005]
सुप्रभातं सुनिर्मलम् [071.005]
निष्कलं शाश्वतं देवं [071.005]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.005]
क्षराक्षरविनिर्मुक्तं [071.006]
जन्ममृत्युविवर्जितम् [071.006]
अभयं सत्यसंकल्पं [071.006]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.006]
अमृतं साधनं साध्यं [071.007]
यं पश्यन्ति मनीषिणः [071.007]
ज्ञेयाख्यं परमात्मानं [071.007]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.007]
अतुलं सुखधर्माणं [071.008,*(115)]
व्योमदेहं सनातनम् [071.008,*(115)]
धर्माधर्मविनिर्मुक्तं [071.008,*(115)]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.008,*(115)]
व्यासाद्यैर्मुनिभिः सर्वैर् [071.009]
ध्यानयोगपरायणैः [071.009]
अर्चितं भावकुसुमैर् [071.009]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [071.009]
विष्ण्वष्टकमिदं पुण्यं [071.010]
योगिनां प्रीतिवर्धनम् [071.010]
यः पठेत्परया प्रीत्या [071.010]
स गच्छेद्विष्णुसात्म्यताम् [071.010]
एतत्पुण्यं पापहरं [071.011]
धन्यं दुःस्वप्ननाशनम् [071.011]
पठतां शृण्वतां चैव [071.011]
विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् [071.011]
कुर्वन्भक्तिं हृषीकेशे [072.001]
मानवो भृगुनन्दन [072.001]
निर्वाणं समवाप्नोति [072.001]
यादृशं तद्वदस्व मे [072.001]
दृश्यन्ते पुरुषा भक्तिम् [072.002]
उद्वहन्तो जनार्दने [072.002]
तथाप्यनेकदेहार्ति- [072.002]
मनस्तापातुरा मुने [072.002]
स्मृतमात्रः सुरेन्द्रस्य [072.003]

यो ऽर्तिहा मधुसूदनः [072.003]
तस्यापि कर्माभिरता [072.003]
दुःखभाजः कथं नराः [072.003]
कैश्च दानैर्जगत्स्वामी [072.004]
स्वामी नारायणो नृणाम् [072.004]
उपकाराय भक्तानां [072.004]
जायते स महामुने [072.004]
त्वद्युक्तो ऽयमनुप्रश्नो [072.005]
महाराज शृणुष्व तम् [072.005]
यथा पृष्टमिदं सम्यक् [072.005]
कथ्यमानं यथाखिलम् [072.005]
पृथिवीं रत्नसंपूर्णां [072.006]
यः कृष्णाय प्रयच्छति [072.006]
तस्याप्यन्यमनस्कस्य [072.006]
सुलभो न जनार्दनः [072.006]
नाराध्यते ऽच्युतो दानैर् [072.007]
न होमैर्भाववर्जितैः [072.007]
ऐकात्म्यं पुरुषैर्याति [072.007]
तन्मयैरेव माधवः [072.007]
श्रूयते च पुराख्यातो [072.008]
राजोपरिचरो वसुः [072.008]
इयाज सुबहून्यज्ञान् [072.008]
श्रद्धापूतेन चेतसा [072.008]
स विप्रशापाद्राजर्षिः [072.009]
कस्मिंश्चित्कारणान्तरे [072.009]
आकाशचारी सहसा [072.009]
प्रविवेश रसातलम् [072.009]
रसातलमनुप्राप्तस् [072.010]
तथापि जगतः प्रभुम् [072.010]
तुष्टाव तन्मयो भूत्वा [072.010]
दिव्यैर्मन्त्रैर्जनार्दनम् [072.010]
देवानामेष यज्ञांशैर् [072.011]
यज्वी पक्षविवर्धनः [072.011]
चेदिराडिति दैत्यानां [072.011]
मतिरासीद्रसातले [072.011]
अनेन विविधैर्यज्ञैस् [072.012]
तर्पितस्त्रिदशेश्वरः [072.012]
जघान दैत्यान्वध्यो ऽयं [072.012]
प्राप्तो ऽस्मद्गोचरं रिपुः [072.012]
इति संमन्त्र्य ते दैत्याश् [072.013]
चेदिराजजिघांसवः [072.013]
तत्समीपमनुप्राप्ता [072.013]
गृहीतविविधायुधाः [072.013]
परमामर्षसंयुक्तास् [072.014]
ततस्ते चेदिपुङ्गवम् [072.014]
हन्तुं न शेकुः शस्त्रैस्तु [072.014]
यत्नवन्तो ऽपि पार्थिवम् [072.014]
स चापि वसुरासीनः [072.015]
केशवार्पितमानसः [072.015]
जजाप मन्त्रमोंकारं [072.015]
प्रणवं द्वादशाक्षरम् [072.015]
ददर्श च स विश्वेशं [072.016]
ध्यानावस्थितमानसः [072.016]
कृत्वान्यविषयत्यागि [072.016]
चित्तमत्यन्तनिश्चलम् [072.016]
प्रागीशमक्षरं ध्यानं [072.017]
ज्ञानं ज्ञेयं जगद्गुरुम् [072.017]
संचिन्त्य वासुदेवाख्यम् [072.017]
अनिर्देश्यं परायणम् [072.017]
ततो ऽन्तर्यामिरुपेण [072.018]
प्राकृतेन च संस्थितम् [072.018]
ब्रह्मविष्णुशिवानां च [072.018]
स्वरूपैः संस्थितं त्रिधा [072.018]
पुनश्च देवगन्धर्व- [072.019]
सिद्धादिमनुजादिषु [072.019]
स्थावरान्तेषु भूतेषु [072.019]
सर्वेष्वेव समास्थितम् [072.019]
दिक्ष्वम्बरधराभूभृत्- [072.020]
तोयवाय्वनलादिषु [072.020]
दृश्यादृश्येषु चैवेशं [072.020]
चिन्तयामास पार्थिवः [072.020]
सर्वत्र दृष्ट्वा तं देवम् [072.021]
आत्मन्यपि च सर्वगम् [072.021]
सर्वं च तन्मयं दृष्ट्वा [072.021]
विरराम समाधितः [072.021]
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु [072.022]
पूर्ववत्स नराधिपः [072.022]
विनिवेश्य ततो ऽपश्यद् [072.022]
असुरानुद्यतायुधान् [072.022]
तान्स दृष्ट्वा गृहीतार्घ्य [072.023]
एकैकस्यैव पार्थिवः [072.023]
पाद्यपूर्वेण विधिना [072.023]
पूजयामास भक्तिमान् [072.023]
प्रसादं कुरु भद्रं वो [072.024]

भगवाञ्जगतः पतिः [072.024]
वासुदेवो भवान्प्राप्तो [072.024]
ममानुग्रहकाम्यया [072.024]
इत्येवं चेदिराजो ऽसाव् [072.025]
एकैकस्य च दानवान् [072.025]
पूजयामास पाद्यादि [072.025]
निवेद्य वचसा तथा [072.025]
ते ऽपि तं चेदिराजानं [072.026]
पप्रच्छुरसुरास्तदा [072.026]
क्व वासुदेवो ऽत्र वयं [072.026]
प्राप्ता दाक्षायणीसुताः [072.026]
इत्येवं वदतो दैत्यान् [072.027]
स जगाद पुनर्वसुः [072.027]
प्रणामनम्रो राजेन्द्र [072.027]
सर्वदर्शी महामतिः [072.027]
वासुदेवो जगत्सर्वं [072.028]
यच्चेङ्गं यच्च नेङ्गति [072.028]
ब्रह्मादिषु तृणान्तेषु [072.028]
स एवैको जगद्गुरुः [072.028]
अहं भवन्तो देवाद्या [072.029]
मनुष्याः पशवश्च ये [072.029]
ते ऽपि देवा जगद्धातुर् [072.029]
व्यतिरिक्ता न केशवात् [072.029]
तेनैव माया वितता [072.030]
वैष्णवी भिन्नदर्शनी [072.030]
तया स्वाङ्गेषु देवो ऽसौ [072.030]
प्रदर्शयति सर्वशः [072.030]
तद्यूयमहमन्ये च [072.031]
यच्च स्थावरजङ्गमम् [072.031]
वासुदेवात्मकं सर्वम् [072.031]
इति मत्वा नमो ऽस्तु वः [072.031]
इत्युक्तास्तेन ते दैत्या [072.032]
न शक्ता मनुजेश्वरम् [072.032]
यत्नवन्तो ऽपि तं हन्तुं [072.032]
प्रययुः स्वानथालयान् [072.032]
ततः पुरोहितं सर्वे [072.033]
काव्यं नीतिविशारदम् [072.033]
समेत्य ते यथावृत्तं [072.033]
सर्वमस्मै न्यवेदयन् [072.033]
अस्माकमत्यन्तरिपुर् [072.034]
अयं प्राप्तो रसातलम् [072.034]
देवानामुपकृद्ब्रह्मन् [072.034]
यज्वा चेदिपतिर्वसुः [072.034]
अस्मत्पक्षक्षयायैष [072.035]
देवानां पक्षवर्धनः [072.035]
तत्र यत्प्रतिपत्तव्यं [072.035]
तन्नो ब्रूहि महामते [072.035]
स्वगोचरमरिः प्राप्तः [072.036]
शत्रुपक्षोपकारकः [072.036]
न हन्तव्य इतीदं को [072.036]
नीतिमान्प्रवदिष्यति [072.036]
तस्मात्प्रगृह्य दिव्यानि [072.037]
सर्वास्त्राण्यमरार्दनाः [072.037]
निपातयत तं गत्वा [072.037]
चेदिराजं स्वगोचरे [072.037]
सर्वमेतन्महाभाग [072.038]
तस्मिन्नस्माभिरुद्यतैः [072.038]
कृतं न शकितो हन्तुं [072.038]
निर्यत्नो ऽपि हि पार्थिवः [072.038]
किं तद्योगफलं तस्य [072.039]
किं वा जपफलं मुने [072.039]
तपसो वा मुनिश्रेष्ठ [072.039]
विस्तरात्तद्वदस्व नः [072.039]
नित्यं संचिन्तयत्येष [072.040]
योगयुक्तो जनार्दनम् [072.040]
सास्य रक्षा परा मन्ये [072.040]
को हिनस्त्यच्युताश्रयम् [072.040]
कीर्तितः संस्मृतो ध्यातः [072.041]
पूजितः संस्तुतस्तथा [072.041]
ऐहिकामुष्मिकीं रक्षां [072.041]
करोति भगवान्हरिः [072.041]
यद्दुर्लभं यदप्राप्यं [072.042]
मनसो यन्न गोचरे [072.042]
तदप्यप्रार्थितं ध्यातो [072.042]
ददाति मधुसूदनः [072.042]
शरीरारोग्यमर्थांश्च [072.043]
भोगांश्चैवानुषङ्गिकान् [072.043]
ददाति ध्यायतां नित्यम् [072.043]
अपवर्गप्रदो हरिः [072.043]
यदिदं चेदिराजानं [072.044]
हन्तुमिच्छथ दानवाः [072.044]
तदस्य केशवाच्चित्तम् [072.044]
उपायेनापनीयताम् [072.044]
ततस्ते तद्वचः श्रुत्वा [072.045]

दानवाः कुरुपुङ्गव [072.045]
ब्रह्मरूपप्रतिच्छन्ना [072.045]
जग्मुर्यत्र स्थितो वसुः [072.045]
ददृशुस्ते महात्मानं [072.046]
प्रणतं चेदिपुङ्गवम् [072.046]
कृतपूजं जगद्धातुर् [072.046]
वासुदेवस्य पार्थिवम् [072.046]
संस्तुतावुद्यतं शान्तं [072.047]
सर्वत्र समदर्शिनम् [072.047]
कृष्णार्पितमनोवृत्तिं [072.047]
जानुभ्यामवनिंगतम् [072.047]
ततः संशृण्वतां तेषां [072.048]
तुष्टाव मधुसूदनम् [072.048]
तन्नामस्मरणोद्भूत- [072.048]
पुलकश्चेदिपुङ्गवः [072.048]
जगाद यं स राजर्षिः [072.049]
स्तवं कृष्णस्य शौनक [072.049]
शृण्वतां दानवेन्द्राणां [072.049]
तन्मे पापहरं वद [072.049]
शृणु यद्देवदेवस्य [072.050]
विष्णोरद्भुतकर्मणः [072.050]
स्तोत्रं जगाद राजासौ [072.050]
रसातलतलं गतः [072.050]
स्तौमि देवमजं नित्यं [072.051]
परिणामविवर्जितम् [072.051]
अवृद्धिक्षयमीशानम् [072.051]
अच्युतं परतः परम् [072.051]
कल्पनाकृतनामानम् [072.052]
अनिर्देश्यमजं विभुम् [072.052]
मूलहेतुमहेतुं त्वां [072.052]
वासुदेवं नमाम्यहम् [072.052]
परमार्थपरैरीशश् [072.053]
चिन्त्यते यः प्रजाकरैः [072.053]
तं वासुदेवमीशेशं [072.053]
नमाम्यद्य गुणं परम् [072.053]
यस्मादिदं यत्र चेदम् [072.054]
इदं यो विश्वमव्ययम् [072.054]
तं वासुदेवममलं [072.054]
नमामि परमेश्वरम् [072.054]
ज्ञेयं ज्ञातारमजरं [072.055]
भोक्तारं प्रकृतेः प्रभुम् [072.055]
पुरुषस्वरूपिणं देवं [072.055]
नतो ऽस्मि पुरुषं परम् [072.055]
प्रधानादिविशेषान्त- [072.056]
स्वरूपमजमव्ययम् [072.056]
स्थूलसूक्ष्ममयं सर्वं- [072.056]
व्यापिनं तं नमाम्यहम् [072.056]
स्रष्टा पालयिता चान्ते [072.057]
यश्च संहारकारकः [072.057]
त्रयीमयं तं त्रिगुणं [072.057]
नतो ऽस्मि पुरुषोत्तमम् [072.057]
आब्रह्मस्थावरान्ते च [072.058]
यो जगत्यत्र संस्थितः [072.058]
व्यक्तरूपी च तं देवं [072.058]
नतो ऽहं विष्णुमव्ययम् [072.058]
नमो नमो ऽस्तु ते देव [072.059]
जगतामीश्वरेश्वर [072.059]
परमार्थ पराचिन्त्य [072.059]
विधातः परमेश्वर [072.059]
त्वमादिरन्तो मध्यं च [072.060]
जगतो ऽस्य जगत्पते [072.060]
जगत्त्वयि जगच्च त्वं [072.060]
जगत्त्वत्तो जगन्मय [072.060]
तवाग्निरासं वसुधाङ्घ्रियुग्मं [072.061]
नभः शिरश्चन्द्ररवी च नेत्रे [072.061]
समस्तलोका जठरं भुजाश्च [072.061]
दिशश्चतस्रो भगवन्नमस्ते [072.061]
यद्भूगतं यद्गगनान्तराले [072.062]
यद्वा नभस्यखिललोकगं च [072.062]
यत्स्थूलं सूक्ष्मं परतस्ततो ऽपि [072.062]
यदस्ति यन्नास्ति च तत्त्वमीश [072.062]
वेदाश्च वेद्यं च भगवाननन्तो [072.063]
वेदान्तवेद्यश्च समस्तहेतो [072.063]
वदन्ति तत्त्वा मुनयः परेशं [072.063]
त्वयि प्रसन्ने परमार्थदृश्ये [072.063]
नमो हृषीकेश तवाप्रमेय [072.064]
नमश्च तुभ्यं परमार्थसार [072.064]
विष्णो नमस्ते ऽस्तु परापरेश [072.064]
कृष्णाच्युतानन्त जगन्निवास [072.064]
नमो ऽस्तु तुभ्यं परमेश्वराय [072.065]
नमस्तथान्तःकारणस्थिताय [072.065]
प्रधानभूताय नमश्च तुभ्यम् [072.065]
व्यक्तस्वरूपेण च संस्थिताय [072.065]
संहृत्य विश्वं जलशायिने नमो [072.066]

नमश्च ते कैटभसूदनाय [072.066]
स्वनाभिपद्मोदरशायिने च [072.066]
ब्रह्मस्वरूपोपनताय चैव [072.066]
स्रष्ट्रे नमः पालयित्रे स्थितौ च [072.067]
सर्वेश तुभ्यं पुरुषोत्तमाय [072.067]
रुद्राय चान्ते क्षयहेतवे ते [072.067]
नतो ऽस्मि संहारकराय विष्णो [072.067]
जय प्रपन्नार्तिहराप्रमेय [072.068]
जयाग्निवस्वश्विमय प्रजेश [072.068]
रुद्रेन्द्रचन्द्रस्तुत देवदेव [072.068]
जयामराणामरिशातनाय [072.068]
जितं त्वया सर्वग सर्वसारं [072.069]
सर्वात्मभूताखिल वेदवेद्य [072.069]
जितं जिताक्षामलचित्तदृश्य [072.069]
चराचराधार धराधरेड्य [072.069]
यज्ञाश्रयो यज्ञपुमानशेष [072.070]
देवेश मर्त्यासुरयज्ञभोक्तः [072.070]
त्वमीड्यमानो ऽभिमतं ददासि [072.070]
धराधरेशाच्युत वासुदेव [072.070]
नमस्ते देवदेव त्वं [072.071]
यथा पास्यखिलं जगत् [072.071]
स्थितौ तथा समस्तेभ्यो [072.071]
दोषेभ्यो मां समुद्धर [072.071]
कृष्णाच्युत हृषीकेश [072.072]
सर्वभूतेश केशव [072.072]
महात्मंस्त्राहि मां भक्तं [072.072]
वासुदेव प्रसीद मे [072.072]
इति स्तोत्रावसाने तं [072.073]
चेदिराजं ततो ऽसुराः [072.073]
जहसुः सतलाक्षेपं [072.073]
प्रोचुश्च द्विजरूपिणः [072.073]
प्राज्ञः किल प्रजापालश् [072.074]
चेदिराट्संश्रुतो भुवि [072.074]
तसस्य ज्ञानमखिलं [072.074]
विपरीतार्थमीदृशम् [072.074]
क्व वासुदेवः क्व भवान् [072.075]
इमामन्त्यां दशां गतः [072.075]
यो भवान्विप्रशापेन [072.075]
रसातलतलाश्रयः [072.075]
भविष्यति स्मृतो देवस् [072.076]
त्राता किल तवाच्युतः [072.076]
यो ऽसावाप्याय्यते विप्रैर् [072.076]
अध्वरेषु हविःस्रवैः [072.076]
यो ऽन्यत्रस्त्राणकामो वा [072.077]
यज्ञभागमभीप्सते [072.077]
स त्राता तव गोविन्दो [072.077]
भविष्यत्यतिविस्मयः [072.077]
यदा त्वं भगवद्भक्तो [072.078]
विप्रशापान्निपातितः [072.078]
तदा स वासुदेवस्ते [072.078]
क्व गतो ऽल्पश्रुतो ऽव्ययः [072.078]
न वासुदेवो न हरिर् [072.079]
न गोविन्दो न केशवः [072.079]
शापं ददत्सु विप्रेषु [072.079]
परित्राणपरो भवेत् [072.079]
स त्वमार्तप्रलापेभ्यो [072.080]
विरमाद्य यदीच्छसि [072.080]
कुबुद्धिमेतां संत्यज्य [072.080]
स्वपौरुषपरो भव [072.080]
न वयं पुण्डरीकाक्षं [072.081]
नानन्तं नाच्युतं हरिम् [072.081]
संश्रिता न च सीदामः [072.081]
स्वपौरुषमुपाश्रिताः [072.081]
यद्यस्मद्वचनं वीर [072.082]
न मोहेन विशङ्कसे [072.082]
तदाश्रयस्व स्वं वीर्यं [072.082]
परित्यज्य विमूढताम् [072.082]
इत्युदीरितमाकर्ण्य [072.083]
स तेषां चेदिपुङ्गवः [072.083]
अज्ञानपटलच्छन्नान् [072.083]
हृदयेन शुशोच तान् [072.083]
उवाच चेदिराजो वै हृदये कृतमत्सरः [072.*(116)]
अहो मोहो ऽयमेतेषाम् [072.084]
अहंकारसमुद्भवः [072.084]
येन सर्वेश्वरे विष्णाव् [072.084]
एतेषामावृता मतिः [072.084]
प्रकाशं च स तानाह [072.085]
दानवान्प्रीतिपूर्वकम् [072.085]
पापतस्तत्परित्राणं [072.085]
चिकीर्षुर्वसुधाधिपः [072.085]
मैवं भो भगवद्भक्तिं [072.086]
कुरुध्वं द्विजसत्तमाः [072.086]
संसाराब्धौ मनुष्याणाम् [072.086]
एकः पोतो जनार्दनः [072.086]

यूयं वयं तथैवान्ये [072.087]
तस्य सर्वे विभूतयः [072.087]
ब्रह्मादिस्थावरान्तं हि [072.087]
तस्य देवस्य विस्तृतिः [072.087]
सुखदुःखमयो नृणां [072.088]
विपाकः कर्मणां च यः [072.088]
संशुद्धिहेतुः स्वच्छन्दात् [072.088]
सो ऽपि विप्राः प्रवर्तते [072.088]
परीक्षां च जगन्नाथः [072.089]
करोत्यदृढचेतसाम् [072.089]
नराणामर्थविध्वंस- [072.089]
निकाशेषु जनार्दनः [072.089]
अल्पयत्नेन चायान्ति [072.090]
विमुक्तिं केशवाश्रयात् [072.090]
तद्विघाताय शक्राद्या [072.090]
यतन्ते विघ्नहेतुभिः [072.090]
यदा जनार्दने भक्तिं [072.091]
वहन्सीदति मानवः [072.091]
निर्विण्णचेताः शैथिल्यं [072.091]
मनसः कुरुते तदा [072.091]
देवानां महती शङ्का [072.092]
भक्तियुक्ता जनार्दने [072.092]
मुक्तिभाजो भविष्यन्तीत्य् [072.092]
अतस्ते परिपन्थिनः [072.092]
प्रायो भवन्ति गोविन्दे [072.093]
भक्तिव्याघातहेतवः [072.093]
विघ्नाश्चित्तविघाता हि [072.093]
विमुक्तिपरिपन्थिनः [072.093]
सत्यं शतेन विघ्नानां [072.094]
सहस्रेण तथा तपः [072.094]
विघ्नायुतेन गोविन्दे [072.094]
नृणां भक्तिर्निवार्यते [072.094]
स्वं चापि कर्म पुरुषः [072.095]
शुभाशुभमुपागतम् [072.095]
भुङ्क्ते किमत्र देवस्य [072.095]
गर्ह्यते येन केशवः [072.095]
मर्यादां च कृतां तेन [072.096]
यो भिनत्ति स मानवः [072.096]
न विष्णुभक्तो मन्तव्यः [072.096]
साधु धर्मार्चनो हरिः [072.096]
न पुष्पैर्न च धूपेन [072.097]
नोपहारानुलेपनैः [072.097]
तोषं प्रयाति गोविन्दः [072.097]
स्वकर्माभ्यर्चितो यथा [072.097]
ब्राह्मणा देवदेवेन [072.098]
मुखात्सृष्टा महात्मना [072.098]
देवानामपि संपूज्य [072.098]
भूमिदेवा द्विजोत्तमाः [072.098]
अनुवृत्तिः सदा कार्या [072.098]
तेषां वर्णैरनुव्रतैः [072.098]
ते पूज्यास्ते नमस्कार्यास् [072.099]
तोषणीयाश्च यत्नतः [072.099]
तेषु तुष्टेष्वशेषाणां [072.099]
देवानां प्रीतिरुत्तमा [072.099]
तेषां मया यदज्ञानाज् [072.100]
ज्ञानाद्वा कृतमप्रियम् [072.100]
तेनापि तुष्ट एवाहं [072.100]
विष्णोरंशा द्विजोत्तमाः [072.100]
क्रियावान्मम पोतो ऽयं [072.101]
भूतलाद्यो रसातले [072.101]
पतितस्यातिभीमे ऽस्मिन् [072.101]
दुरुत्तारे भवार्णवे [072.101]
रसातलतलोत्तारं [072.102]
न हि वाञ्छाम्यहं द्विजाः [072.102]
संसारगर्तादुत्तारं [072.102]
वृणोम्याराधनाद्धरेः [072.102]
यथाहं नाभिवाञ्छामि [072.103]
भोगानाराध्य केशवम् [072.103]
तेन सत्येन विष्णुर्मे [072.103]
सर्वदोषान्व्यपोहतु [072.103]
यथा न माता न पिता [072.104]
नात्मा न सुहृदः सुताः [072.104]
कृष्णालापात्प्रियतरास् [072.104]
तथा मां पातु केशवः [072.104]
यथा विष्णुमयं सर्वम् [072.105]
एतत्पश्याम्यहं जगत् [072.105]
तथा मम मनोदोषान् [072.105]
अशेषान्स व्यपोहतु [072.105]
जाता विष्णुविलोमेषु [072.106]
भवत्स्वपि दया मम [072.106]
यथा तेनाद्य सत्येन [072.106]
भवन्तः सन्तु तन्मयाः [072.106]
यथा नाहं भवद्द्वेषान् [072.107]
न संहर्षाद्ब्रवीम्यहम् [072.107]

कृपयैव तथा सर्वे [072.107]
भवन्तः सन्तु तन्मयाः [072.107]
यो यो न भक्तो गोविन्दे [072.108]
तत्र तत्र कृपा यथा [072.108]
ममारिवर्गे ऽपि तथा [072.108]
भक्तिर्वो ऽस्तु जनार्दने [072.108]
एवमुच्चारिते तेषां [072.109]
दैत्यानां तत्क्षणात्तथा [072.109]
तस्मिन्राजन्यभून्मैत्री [072.109]
तथान्येषु च जन्तुषु [072.109]
देवदेवे ऽप्यभूद्भक्तिर् [072.110]
भावो नष्टस्तथासुरः [072.110]
स्वरूपधारिणश्चैनं [072.110]
प्रणम्यासुरपुङ्गवाः [072.110]
प्रत्यूचुः पार्थिवं विष्णु- [072.110]
भक्तं सद्ब्रह्मचारिणम् [072.110]
चेदिभूपाल भद्रं ते [072.111]
भवतो ऽतुलविक्रम [072.111]
संसारे त्वत्समैः सङ्गः [072.111]
पुण्यभाजां प्रवर्तते [072.111]
वयं स्वजातिदोषेण [072.112]
देवपक्षविरोधिनः [072.112]
भवन्तमागता हन्तुं [072.112]
देवप्रीणनतत्परम् [072.112]
यदा न शक्तितो हन्तुम् [072.113]
अस्माभिस्त्वं निरायुधः [072.113]
विष्णुध्यानमहारक्षा- [072.113]
कक्षान्तरगतः प्रभो [072.113]
त्याजयद्भिस्तथा भक्तिं [072.114]
केशवादिति दर्शितम् [072.114]
वैफल्यमतिपुण्येषु [072.114]
विष्णुशुश्रूषणा नृणाम् [072.114]
स त्वं देवातिदेवस्य [072.115]
विष्णोरमिततेजसः [072.115]
अनुग्राह्यो यथा तेयम् [072.115]
अच्युते निश्चला मतिः [072.115]
दिष्ट्या क्रोधाभिभूतानाम् [072.116]
अस्माकं त्वन्निवर्हणे [072.116]
मतिर्जाता यतः प्राप्ता [072.116]
त्वत्सङ्गाद्दुर्लभा मतिः [072.116]
कुरुष्व च प्रसादं त्वं [072.117]
प्रणतानां नरेश्वर [072.117]
शत्रावपि कृपाशीलं [072.117]
यन्नो दुष्टमभून्मनः [072.117]
दिशां वैमल्यं विमलं [072.118]
चक्षुषश्चोपपादितम् [072.118]
भवता दुष्टतां एताम् [072.118]
आसुरीमपमार्जता [072.118]
दुष्टाः स्म वर्षपूगानि [072.119]
यद्यातानि वृथैव नः [072.119]
विषयाक्षिप्तचित्तानां [072.119]
कृष्णे भक्तिमकुर्वताम् [072.119]
कर्मभूमौ मनुष्याणां [072.120]
तदेव विफलं दिनम् [072.120]
यदच्युतकथालाप- [072.120]
ध्यानार्चारहितं गतम् [072.120]
इत्युक्त्वा ते ऽसुरा भूयः [072.121]
प्रसाद्य च तथा वसुम् [072.121]
विष्णौ भक्तिपरा यातास् [072.121]
तीव्रसंयोगिनो ऽलयन् [072.121]
स चापि चेदिराट्तस्माद् [072.122]
देवदेवेन चक्रिणा [072.122]
पातालादुद्धृतः पश्चात् [072.122]
संसारगहनादपि [072.122]
इत्येतत्सर्वमाख्यातं [072.123]
यन्मां त्वं परिपृच्छसि [072.123]
यथावसीदन्ति नरा [072.123]
भक्तिमन्तो ऽपि केशवे [072.123]
दृढा जनार्दने भक्तिर् [072.124]
यदैवाव्यभिचारिणी [072.124]
तदा कियत्स्वर्गसुखं [072.124]
सैव निर्वाणहेतुकी [072.124]
इत्येतदसुरैः सार्धं [072.125]
संवादं यः पुरा वसोः [072.125]
पठिष्यत्यखिलं भक्त्या [072.125]
स तल्लोकमुपैष्यति [072.125]
जगत्प्रभुं देवदेवम् [073.001]
अशेषेशम्जनार्दनम् [073.001]
प्रणिपत्याहमेतं त्वां [073.001]
यत्पृच्छामि तदुच्यताम् [073.001]
यैरुपायैः प्रदानैर्वा [073.002]
नराणाममरार्चितः [073.002]
प्रीतिमान्पुण्डरीकाक्षो [073.002]
भवत्याचक्ष्व तन्मम [073.002]

ये स्वधर्मे स्थिता वर्णा [073.003]
विप्राद्याः कुरुनन्दन [073.003]
विधर्मेषु न वर्तन्ते [073.003]
प्रीतिमांस्तेषु केशवः [073.003]
ब्रह्मचारिगृहस्थाद्या [073.004]
न च्यवन्त्याश्रमाच्च ये [073.004]
स्वधर्मतो हरिस्तेषां [073.004]
प्रीतिमानेव सर्वदा [073.004]
ये न दम्भेन वर्तन्ते [073.005]
नरा भूतेष्वलोलुपाः [073.005]
त्यक्तग्राम्यादिसंगाश्च [073.005]
तेषु प्रीतिः परा हरेः [073.005]
दातारो नापहर्तारः [073.006]
परस्वानाममायिनः [073.006]
ये नरास्तेषु गोविन्दः [073.006]
पुत्रेष्विव सदा हितः [073.006]
येषां नराणां न मतिर् [073.007]
जिह्वा वासत्यमुज्झति [073.007]
ते प्रिया वासुदेवस्य [073.007]
ये च द्विजपरायणाः [073.007]
कर्मणा मनसा वाचा [073.008]
ये न हिंसानुवर्तिनः [073.008]
ते नरा वासुदेवस्य [073.008]
प्रियाः पाण्डुकुलोद्वह [073.008]
सर्वदेवेषु ये विष्णुं [073.009]
सर्वभूतेष्ववस्थितम् [073.009]
मन्यन्ते वासुदेवस्य [073.009]
ते प्रियाः पुत्रवत्सदा [073.009]
ब्रह्माद्यं स्थावरान्तं च [073.010]
भूतग्रामं जनार्दनात् [073.010]
ये च पश्यन्त्यभेदेन [073.010]
ते विष्णोः सततं प्रियाः [073.010]
देववेदद्विजातीनां [073.011]
निन्दायां ये न मानवाः [073.011]
प्रीतिभाजो भवन्तीष्टास् [073.011]
ते सदा शार्ङ्गधन्विनः [073.011]
प्रियाणामथ सर्वेषां [073.012]
देवदेवस्य स प्रियः [073.012]
आपत्स्वपि सदा यस्य [073.012]
भक्तिरव्यभिचारिणी [073.012]
तस्मात्प्रियत्वं कृष्णस्य [073.013]
वाञ्छता निजधर्मजैः [073.013]
गुणैरात्मा सदा योज्यो [073.013]
न दूरे गुणिनो हरिः [073.013]
येषां न गृद्धिः पारक्ये [073.014]
दारे द्रव्ये च चेतसः [073.014]
हिंसायां च मनुष्याणां [073.014]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.014]
वेदाः प्रमाणं स्मृतयो [073.015]
येषां सन्मार्गसेविनाम् [073.015]
परोपकारसक्तानां [073.015]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.015]
कलिकल्मषदोषेण [073.016]
येषां नोपहता मतिः [073.016]
पाषण्डानुगता नैव [073.016]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.016]
येषां क्लेशो गुरोरर्थे [073.017]
देवविप्रोद्भवो ऽपि वा [073.017]
न विवित्सासमुद्भूतस् [073.017]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.017]
स्वपन्तः संस्थिता यान्तस् [073.018]
तिष्ठन्तश्च जनार्दनम् [073.018]
ये चिन्तयन्त्यविरतं [073.018]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.018]
यथात्मनि तथापत्ये [073.019]
येषां अद्रोहिणी मतिः [073.019]
समस्तसत्त्वजातेषु [073.019]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.019]
देवपूजामनुदिनं [073.020]
गुरुविप्रार्थसत्क्रियाम् [073.020]
ये कुर्वन्ति नरा विद्धि [073.020]
ते कृष्णेनावलोकिताः [073.020]
सुवर्णं रत्नमथवा [073.021]
पारक्यं विजने वने [073.021]
विलोक्य नैति यो लोभं [073.021]
तं अवैहि हरेः प्रियम् [073.021]
देवान्पितॄंस्तथापन्नान् [073.022]
अतिथीञ्जामयो ऽध्वगान् [073.022]
यो बिभर्ति विजानीहि [073.022]
तं नरं भगवत्प्रियम् [073.022]
न क्रोधमेति क्रुद्धेभ्यः [073.023]
सहते यो निराक्रियाम् [073.023]
तं विजानीहि भर्तव्यं [073.023]
देवदेवस्य शार्ङ्गिनः [073.023]

परलोकप्रतीकार- [073.024]
करणाय सदोद्यमम् [073.024]
कुर्वन्नालक्ष्यतामेति [073.024]
केशवेनावलोकितः [073.024]
नात्मसंस्तवमन्येषां [073.025]
न निन्दां चार्थलिप्सया [073.025]
करोति पुरुषव्याघ्र [073.025]
यस्य नारायणो हृदि [073.025]
सर्वभूतदयां सत्यम् [073.026]
अक्रोधं धर्मशीलताम् [073.026]
भजन्ते पुरुषा देवे [073.026]
गोविन्दे हृदये स्थिते [073.026]
न कलौ न परद्रव्ये [073.027]
परदाराश्रिता मतिः [073.027]
नराणां जायते राजन् [073.027]
गोविन्दे हृदयस्थिते [073.027]
क्षमां करोति क्रुद्धेषु [073.028]
दयां मूढेषु मानवः [073.028]
मुदं च धर्मशीलेषु [073.028]
गोविन्दे हृदये स्थिते [073.028]
यदा बिभेत्यधर्मादिर् [073.029]
धर्मादींश्च यदेच्छति [073.029]
तदा कुरुवरश्रेष्ठ [073.029]
नरः कृष्णेन वीक्षितः [073.029]
पुत्रदारगृहक्षेत्र- [073.030]
द्रव्यादेर्ममतां नरः [073.030]
नायास्यति जगन्नाथे [073.030]
हृषीकेशे पराङ्मुखे [073.030]
कलौ कृतयुगं तेषां [073.031]
क्लेशास्तेषां सुखाधिकाः [073.031]
येषां शरीरग्रहणे [073.031]
हरिशुश्रूषणे मतिः [073.031]
यदा नेच्छति पापानि [073.032]
यदा पुण्यानि वाञ्छति [073.032]
ज्ञेयस्तदा मनुष्येण [073.032]
हृदये ऽस्य हरिः स्थितः [073.032]
परमार्थे मतिः पुंसाम् [073.033]
असारे तु भवार्णवे [073.033]
कथं भवति राजेन्द्र [073.033]
विष्वक्सेन पराङ्मुखे [073.033]
श्रद्दधानो दयाशीलः [073.034]
समलोष्टाश्मकाञ्चनः [073.034]
परार्थे मानवः कृष्णे [073.034]
प्रसन्ने नृप जायते [073.034]
वहतो ऽपि सदा कृष्णे [073.035]
भक्तिमव्यभिचारिणीम् [073.035]
पाणिष्वसमदृग्बुद्धेः [073.035]
सुलभो नैव केशवः [073.035]
ये दाम्भिका भिन्नवृत्ता [073.036]
ये च धर्मध्वजोच्छ्रयाः [073.036]
दुर्लभो भगवान्देवस् [073.036]
तेषां सुयततामपि [073.036]
कामलोभाश्रितं येषां [073.037]
चित्तं क्रोधादिदूषितम् [073.037]
तेषां जन्मसहस्रे ऽपि [073.037]
न मतिः केशवाश्रया [073.037]
हेयां कृष्णाश्रयां वृत्तिं [073.038]
मन्यन्ते हेतुसंश्रिताः [073.038]
अवियोपहतज्ञाना [073.038]
ये ऽज्ञाने ज्ञानमानिनः [073.038]
वेदवादविरोधेन [073.039]
कूटयुक्तिमपाश्रिताः [073.039]
ये केशवस्तद्धृदये [073.039]
न कदाचित्प्रियातिथिः [073.039]
मानुषं तं मनुष्यत्वे [073.040]
मन्यमानाः कुबुद्धयः [073.040]
कर्माणि ये ऽस्य निन्दन्ति [073.040]
न तेषां निष्कृतिर्नृणाम् [073.040]
केचिद्वदन्ति तं देवं [073.041]
मनुष्यं चाल्पमेधसः [073.041]
तिर्यक्त्वं चापरे विष्णुं [073.041]
मायया तस्य मोहिताः [073.041]
देवत्वमपि कृष्णस्य [073.042]
यस्य निन्दा महात्मनः [073.042]
स्तुतिं तस्य कथं शक्ताः [073.042]
कर्तुमीशस्य मानवाः [073.042]
व्यापित्वं शाश्वतत्वं च [073.043]
जन्मभावविवर्जितम् [073.043]
यदास्य प्रोच्यते कास्य [073.043]
स्तुतिरर्थे तथा स्थितौ [073.043]
सर्वेश्वरेश्वरः कृष्णः [073.044]
प्रोच्यते यदि पण्डितः [073.044]
तथापि स्वल्पमेवोक्तं [073.044]
भूतार्थे कतमा स्तुतिः [073.044]

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्ते [073.045]
संसारे यस्य संस्थितिः [073.045]
निन्दापि तस्य न नृभिः [073.045]
कर्तुमीशस्य शक्यते [073.045]
यदा काणाश्च कूण्ठाश्च [073.046]
मूढो दुर्बुद्धिरातुरः [073.046]
सर्वगत्वात्स एवैकस् [073.046]
तदासौ निन्द्यते कथम् [073.046]
स्रष्टा पालयिता हर्ता [073.047]
जगतो ऽस्य जगच्च सः [073.047]
यष्टा याजयिता याज्यः [073.047]
स एव भगवान्हरिः [073.047]
दाता दानं तथादाता [073.048]
कर्ता कार्यं तथा क्रियाः [073.048]
हन्ता घातयिता हिंस्यो [073.048]
हार्यं हर्ता च यः स्वयम् [073.048]
सर्वकारणभूतस्य [073.049]
तस्येशस्य महात्मनः [073.049]
कः करोति स्तुतिं विष्णोर् [073.049]
निन्दां वा पृथिवीपते [073.049]
तस्मात्सर्वेश्वरो विष्णुर् [073.050]
न स्तोतुं न च निन्दितुम् [073.050]
शक्यते सर्वभूतत्वाच् [073.050]
चोक्षाचोक्षस्वरूपिणा [073.050]
स्तुतेः पादाद्यतो नान्यद् [073.051]
उत्कृष्टमुपलभ्यते [073.051]
तस्याप्युच्चारणेनेशो [073.051]
न स्तोतुं शक्यते हरिः [073.051]
भूतार्थवादस्तुतये [073.052]
न निन्दायै विधीयते [073.052]
यतो ऽतः सर्वभूतस्य [073.052]
का निन्दा तस्य का स्तुतिः [073.052]
येन सर्वात्मना तत्र [073.053]
हृदयं संनिवेशितम् [073.053]
अपि मौनवतस्तस्य [073.053]
सुलभो ऽयं जनार्दनः [073.053]
तस्मात्त्वं कुरुशार्दूल [073.054]
स्वधर्मपरिपालनम् [073.054]
कुरु विष्णुं च हृदये [073.054]
सर्वव्यापिनमीश्वरम् [073.054]
तन्मना भव तद्भक्तस् [073.055]
तद्याजी तं नमस्कुरु [073.055]
विष्णोरेवं प्रियत्वं त्वम् [073.055]
आशु यास्यसि पार्थिव [073.055]
यं स्तुवन्स्तव्यतामेति [073.056]
वन्द्यमानश्च वन्द्यताम् [073.056]
तमीश्वरेश्वरं विष्णुं [073.056]
हृदये संनिवेशय [073.056]
संपूज्य यं पूज्यतमो [073.057]
भवत्यत्र जगत्त्रये [073.057]
तमीश्वरेश्वरं विष्णुं [073.057]
हृदये कुरु पार्थिव [073.057]
स्ववर्णकर्माभिरतः [073.058]
कुरु चित्ते जनार्दनम् [073.058]
एष शास्त्रार्थसद्भावः [073.058]
किमुक्तैर्बहुविस्तरैः [073.058]
यस्मिन्प्रसन्नचित्तस्त्वं [073.059]
यस्मिन्कोपमुपैषि च [073.059]
तावुभावपि तद्भूतौ [073.059]
चिन्तयन्सिद्धिमेष्यसि [073.059]
यत्र यत्र स्थितं चेतः [073.060]
प्रीत्या स्नेहेन वा तव [073.060]
तं तं चिन्तय गोविन्दं [073.060]
मनसः स्थैर्यकारणात् [073.060]
स्वपन्विबुद्ध्यन्नुत्तिष्ठन् [073.061]
स्थितो भुञ्जन्पिबन्व्रजन् [073.061]
सर्वगं सर्वकर्तारं [073.061]
विष्णुं सर्वत्र चिन्तय [073.061]
यथाग्निसंगात्कनकम् [073.062]
अपदोषं प्रजायते [073.062]
संश्लिष्टं वासुदेवेन [073.062]
मनुष्याणां तथा मनः [073.062]
यज्विनो यं नमस्यन्ति [073.063]
यं नमस्यन्ति देवताः [073.063]
योगिनो यं नमस्यन्ति [073.063]
तं नमस्यं नमाम्यहम् [073.063]
भूयश्च शृणु राजेन्द्र [074.001]
यज्जगाद जनार्दनः [074.001]
नागपर्यङ्कशयने [074.001]
पृष्टः क्षीराब्धिकन्यया [074.001]
पुरा शयानं गोविन्दं [074.002]
प्रावृट्काले महोदधौ [074.002]
शेषभोगिमहाभोगे [074.002]
वीच्यम्बुकणशीतले [074.002]

वक्षःस्थलस्थिता देवी [074.003]
जगन्माता जगत्पतिम् [074.003]
अनन्यासक्तदृष्टिं च [074.*(117)]
किमप्येकाग्रमानसम् [074.*(117)]
श्रीवत्सवक्षसं लक्ष्मीः [074.003]
करसंवाहनादृता [074.003]
योगनिद्रावसानस्थम् [074.004]
अच्युतं जगतः पतिम् [074.004]
पप्रच्छ पुण्डरीकाक्षं [074.004]
पुण्डरीककरा हरिम् [074.004]
सृष्टं जगदिदं सर्वं [074.005]
बहुशश्चोपसंहृतम् [074.005]
त्वया जगत्पते चात्र [074.005]
किं कश्चिद्दयितस्तव [074.005]
देवान्मनुष्यान्गान्धर्वान् [074.006]
यक्षविद्याधरासुरान् [074.006]
सृष्ट्वा सृष्टान्निर्घृणत्वाद् [074.006]
उपसंहरते भवान् [074.006]
कश्चिद्देतेषु भूतेषु [074.007]
देवादिषु तवाच्युत [074.007]
द्वेषो ऽस्ति प्रीतिरथवा [074.007]
समः सर्वत्र वा भवान् [074.007]
समो ऽस्मि सर्वभूतेषु [074.008]
न मे द्वेष्यो ऽस्ति न प्रियः [074.008]
तथापि गुणगृह्यो ऽहं [074.008]
प्रत्येकहृदयस्थितः [074.008]
अन्तरात्मनि सर्वस्य [074.009]
लोकस्याहमवस्थितः [074.009]
पुण्यापुण्यकृतौ तेषु [074.009]
प्रीतिद्वेषौ शुभे मम [074.009]
पुण्यं प्रीत्यनुभावेन [074.010]
साधु बुद्धिषु वर्तते [074.010]
द्वेषानुभावेनापुण्यं [074.010]
फलदं तेषु भामिनि [074.010]
श्रूयतां च महाभागे [074.011]
नरेषु शुभचारिषु [074.011]
सततं येषु मे प्रीतिस् [074.011]
तथाप्रीतिर्वरानने [074.011]
प्रलयोत्पत्तितत्त्वज्ञा [074.012]
आत्मज्ञानपराश्च ये [074.012]
एते स्वकर्मणा भद्रे [074.012]
मम प्रीतिपथं गताः [074.012]
वाङ्मनःकायिकीं हिंसां [074.013]
ये न कुर्वन्ति कुत्रचित् [074.013]
सर्वमैत्रा नरा लक्ष्मि [074.013]
दयितास्ते सदा मम [074.013]
स्वकीयद्रव्यसंतुष्टा [074.014]
निवृत्ताश्चौर्यकर्मणः [074.014]
सत्यशीलदयायुक्ता [074.014]
नरा मम सदा प्रियाः [074.014]
मातृस्वसृसुतातुल्यान् [074.015]
परदारांश्च ये नराः [074.015]
मन्यन्ते ते च मे लक्ष्मि [074.015]
दृढं प्रियतमाः सदा [074.015]
न कामान्न च संरम्भान् [074.016]
न द्वेषाद्ये च भामिनि [074.016]
संत्यजन्ति स्वकं कर्म [074.016]
ते ऽतीव दयिता मम [074.016]
विश्वास्याः सर्वभूतानाम् [074.017]
अहिंस्राश्च दयालवः [074.017]
त्यक्तानृतकथा देवि [074.017]
मनुष्या दयिता मम [074.017]
धर्मलब्धांस्तु ये भोगान् [074.018]
भुञ्जते नातिकीकटाः [074.018]
परलोकाविरोधेन [074.018]
ते ममातिप्रिया नराः [074.018]
न लोभे न च कार्पण्ये [074.019]
न स्तेये न च मत्सरे [074.019]
येषां मतिर्मनुष्याणां [074.019]
ते ऽतीव दयिता मम [074.019]
धर्मलब्धेषु दारेषु [074.020]
ऋतुकालाभिगामिनः [074.020]
गृहस्थकर्माभिरता [074.020]
नरास्ते दयिता मम [074.020]
पररन्ध्रेषु जात्यन्धाः [074.021]
परदारेष्वपुंसकाः [074.021]
परापवादे ये मूका [074.021]
दयितास्ते नरा मम [074.021]
परापवादं निन्दां च [074.022]
परमर्मावघट्टनम् [074.022]
ये न कुर्वन्ति पुरुषास् [074.022]
ते देवि मम वल्लभाः [074.022]
सत्यां श्लक्ष्णां निराबाधां [074.023]
मधुरां प्रीतिदायिनीम् [074.023]

ये वाचमीरयन्ति स्म [074.023]
ते मनुष्या मम प्रियाः [074.023]
ये ब्राह्मणार्थे संत्यज्य [074.024]
सद्यः स्वमपि जीवितम् [074.024]
यतन्ते परया भक्त्या [074.024]
ते देवि दयिता मम [074.024]
साक्षाद्देवमिवायान्तं [074.025]
या पतिं नित्यमर्चति [074.025]
पादशौचादिभिर्नारी [074.025]
तस्या नाहं सुदुर्लभः [074.025]
पूर्णचन्द्रमिवोद्यतं [074.026]
भर्तारं या गृहागतम् [074.026]
हृष्टा पश्यति तां विद्धि [074.026]
दयितां योषितं मम [074.026]
ते भक्ता ये सदा विप्रान् [074.027]
पूजयन्त्यब्धिसंभवे [074.027]
यथाविभवतो भक्त्या [074.027]
स्वकर्माभिरता नराः [074.027]
श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मं [074.028]
मनसापि न ये नराः [074.028]
समुल्लङ्घ्य प्रवर्तन्ते [074.028]
ते भक्ता मम भामिनि [074.028]
ब्रह्मरूपधरस्यास्यान् [074.029]
मम वेदा विनिःसृताः [074.029]
मन्वादिरूपिणश्चैव [074.029]
समस्ताः स्मृतयः स्मृताः [074.029]
श्रुतिः स्मृतिर्ममैवाज्ञा [074.030]
तामुल्लङ्घ्य यजेच्छुभे [074.030]
सर्वस्वेनापि मां देवि [074.030]
नाप्नोत्याज्ञाविघातकृत् [074.030]
यः स्वधर्मान्न चलति [074.031]
हिंसाद्यौ यो न सज्यते [074.031]
वहतस्तस्य मद्भक्तिं [074.031]
सदैवाहं न दुर्लभः [074.031]
एतद्देवि मयाख्यातं [074.032]
यत्पृष्टो ऽहमिह त्वया [074.032]
प्रियाणां मम सर्वेषां [074.032]
शृणु यो ऽतितरं प्रियः [074.032]
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः [074.033]
शूद्रश्च वरवर्णिनि [074.033]
स्वधर्मादचलन्देवि [074.033]
दयावान्सर्वजन्तुषु [074.033]
सत्यवाच्छौचसंपन्नो [074.034]
न द्रोही न च मत्सरी [074.034]
वाङ्मनःकर्मभिः शान्तो [074.034]
दयितः सततं मम [074.034]
एवं श्रीर्देवदेवेन [074.035]
प्रागुक्ता हरिमेधसा [074.035]
तवापि हि नरश्रेष्ठ [074.035]
यथावत्कथितं मया [074.035]
संवादमेतद्देवस्य [074.036]
सह लक्ष्म्या जगत्पतेः [074.036]
यः शृणोति स पापेभ्यः [074.036]
समस्तेभ्यः प्रमुच्यते [074.036]
भूयो ऽखिलं जगद्धातुर् [075.001]
वासुदेवस्य भार्गव [075.001]
सम्यगाराधनायालं [075.001]
क्रियायोगं ब्रवीहि मे [075.001]
यत्फलं केशवस्यार्चां [075.002]
प्रतिष्ठाप्य लभेन्नरः [075.002]
यच्च देवकुलं विष्णोः [075.002]
कारयित्वा फलं लभेत् [075.002]
यद्दीपधूपपुष्पाणां [075.003]
गन्धानां च निवेदने [075.003]
ध्वजादिदाने यत्पुण्यं [075.003]
यत्पुण्यं गीतवादिते [075.003]
तथा पवित्रपठने [075.004]
जयशब्दाद्युदीरणे [075.004]
संमार्जनादौ यत्पुण्यं [075.004]
नमस्कारे प्रदक्षिणे [075.004]
शीर्णस्फुटितसंस्कार- [075.005]
करणे चापि यत्फलम् [075.005]
तन्मे विस्तरतः सर्वं [075.005]
भगवन्वक्तुमर्हसि [075.005]
यैश्चोपवासैर्भगवान् [075.006]
नरैराराध्यते हरिः [075.006]
तेषां फलं च यत्कृत्स्नं [075.006]
तन्ममाचक्ष्व विस्तरात् [075.006]
संक्षेपात्पूर्वमेवैतद् [075.007]
भवतः कथितं मया [075.007]
विस्तरेण महाराज [075.007]
श्रूयतां ब्रुवतो मम [075.007]
अदितिर्नाम देवानां [075.008]
माता परमदुश्चरम् [075.008]

तपश्चचार वर्षाणां [075.008]
सहस्रं पृथिवीपते [075.008]
आराधनाय कृष्णस्य [075.009]
वाग्यता वायुभोजना [075.009]
दैत्यैर्निराकृतान्दृष्ट्वा [075.009]
तनयान्कुरुनन्दन [075.009]
वृथापुत्राहमस्मीति [075.010]
निर्वेदात्प्रणता हरिम् [075.010]
तुष्टाव वाग्भिरिष्टाभिः [075.010]
परमार्थावबोधिनी [075.010]
शरण्यं शरणं विष्णुं [075.*(118)]
प्रणता भक्तवत्सलम् [075.*(118)]
देवदैत्यनृपश्चाप- [075.010]
व्योमवाय्वादिरूपिणम् [075.010]
नमः स्मृतार्तिनाशाय [075.011]
नमः पुष्करमालिने [075.011]
नमः परमकल्याण- [075.011]
कल्याणायादिवेधसे [075.011]
नमः पङ्कजनेत्राय [075.012]
नमः पङ्कजनाभये [075.012]
नमः पङ्कजसंभूति- [075.012]
संभवायात्मयोनये [075.012]
श्रियः कान्ताय दान्ताय [075.013]
दान्तदृश्याय चक्रिणे [075.013]
नमः शङ्खासिहस्ताय [075.013]
नमः कनकरेतसे [075.013]
तथात्मज्ञानविज्ञान- [075.014]
योगचित्तात्मयोगिने [075.014]
निर्गुणाय विशेषाय [075.014]
हरये ब्रह्मरूपिणे [075.014]
जगत्प्रतिष्ठितं यत्र [075.015]
जगता यो न दृश्यते [075.015]
नमः स्थूलातिसूक्ष्माय [075.015]
तस्मै देवाय शङ्खिने [075.015]
यं न पश्यन्ति पश्यन्तो [075.016]
जगदप्यखिलं नराः [075.016]
अपश्यद्भिर्जगद्यच्च [075.016]
दृश्यते स्वहृदि स्थितः [075.016]
बहिर्ज्योतिषि लक्ष्यो यो [075.*(119)]
लक्ष्यते ज्योतिषः परः [075.*(119)]
यस्मिन्नेतद्यतश्चैतद् [075.017]
यश्चैतदखिलं जगत् [075.017]
तस्मै समस्तजगताम् [075.017]
आधाराय नमो नमः [075.017]
आद्यः प्रजापतिपतिर् [075.018]
यः पितॄणां परः पतिः [075.018]
पतिः सुराणां यस्तस्मै [075.018]
नमः कृष्णाय वेधसे [075.018]
यः प्रवृत्तैर्निवृत्तैश्च [075.019]
कर्मभिर्विभुरिज्यते [075.019]
स्वर्गापवर्गफलदो [075.019]
नमस्तस्मै गदाधृते [075.019]
यश्चिन्त्यमानो मनसा [075.020]
सद्यः पापं व्यपोहति [075.020]
नमस्तस्मै विशुद्धाय [075.020]
परस्मै हरिमेधसे [075.020]
यं प्रविश्याखिलाधारम् [075.021]
ईशानमजमव्ययम् [075.021]
न पुनर्जन्ममरणे [075.021]
प्राप्नुवन्ति नमामि तम् [075.021]
यो यज्ञे यज्ञपरमैर् [075.022]
इज्यते यज्ञसंस्थितिः [075.022]
तं यज्ञपुरुषं विष्णुं [075.022]
नमामि प्रभुमीश्वरम् [075.022]
गीयते सर्ववेदेषु [075.023]
वेदविद्भिर्विदां गतिः [075.023]
यस्तस्मै वेदवेद्याय [075.023]
विष्णवे जिष्णवे नमः [075.023]
यतो विश्वं समुद्भूतं [075.024]
यस्मिंश्च लयमेष्यति [075.024]
विश्वोद्भवप्रतिष्ठाय [075.024]
नमस्तस्मै महात्मने [075.024]
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं [075.025]
विना येन ततामिमाम् [075.025]
मायां नालं समुत्तर्तुं [075.025]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.025]
यमाराध्य विशुद्धेन [075.*(120)]
मनसा कर्मणा गिरा [075.*(120)]
हरत्यविद्यामखिलां [075.*(120)]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.*(120)]
विषादतोषरोषाद्यैर् [075.*(120)]
यो ऽजस्रं सुखदुःखजैः [075.*(120)]
नृत्यत्यखिलभूतस्थस् [075.*(120)]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.*(120)]

यो ऽनन्तोयस्वरूपस्थो [075.026]
बिभर्त्यखिलमीश्वरः [075.026]
विश्वं विश्वपतिं विष्णुं [075.026]
तं नमामि प्रजापतिम् [075.026]
मूर्तं तमो ऽसुरमयं [075.027]
तद्वधाद्विनिहन्ति यः [075.027]
रात्रिजं सूर्यरूपी च [075.027]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.027]
कपिलादिस्वरूपस्थो [075.028]
यश्चाज्ञानमयं तमः [075.028]
हन्ति ज्ञानप्रदानेन [075.028]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.028]
यस्याक्षिणी चन्द्रसूर्यौ [075.029]
सर्वलोकशुभाशुभम् [075.029]
पश्येते कर्म सततं [075.029]
तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् [075.029]
यस्मिन्सर्वेश्वरे सर्वं [075.030]
सत्यमेतन्मयोदितम् [075.030]
नानृतं तमजं विष्णुं [075.030]
नमामि प्रभवाव्ययम् [075.030]
यथैतत्सत्यमुक्तं मे [075.031]
भूयश्चातो जनार्दनः [075.031]
सत्येन तेन सकलाः [075.031]
पूर्यन्तां मे मनोरथाः [075.031]
एवं स्तुतो ऽथ भगवान् [075.032]
वासुदेव उवाच ताम् [075.032]
अदृश्यः सर्वभूतानां [075.032]
तस्याः संदर्शने स्थितः [075.032]
मनोरथांस्त्वमदिते [075.033]
यानिच्छस्यभिपूरितान् [075.033]
तांस्तान्प्राप्स्यसि धर्मज्ञे [075.033]
मत्प्रसादादसंशयम् [075.033]
शृणुष्व च महाभागे [075.034]
वरं यस्ते हृदि स्थितः [075.034]
तं प्रयच्छामि नियतं [075.*(122)]
मात्र कार्या विचारणा [075.*(122)]
मद्दर्शनं हि विफलं [075.034]
न कदाचिद्भविष्यति [075.034]
यदि देव प्रसन्नस्त्वं [075.035]
भक्ताया भक्तवत्सल [075.035]
त्रैलोक्याधिपतिः पुत्रस् [075.035]
तदस्तु मम वासवः [075.035]
हृतराज्यो हृतश्चास्य [075.036]
यज्ञभागो महासुरैः [075.036]
त्वयि प्रसन्ने वरद [075.036]
तं प्राप्नोतु सुतो मम [075.036]
हृतं राज्यं न दुःखाय [075.037]
मम पुत्रस्य केशव [075.037]
सपत्नादायतिभ्रंशो [075.037]
बाधां नः कुरुते हृदि [075.037]
कृतः प्रसादो हि मया [075.038]
तव देवि यथेप्सितः [075.038]
स्वांशेन चैव ते गर्भे [075.038]
संभविष्यामि कश्यपात् [075.038]
तव गर्भसमुद्भूतः [075.039]
सुतस्ते ये सुरारयः [075.039]
तानहं निहनिष्यामि [075.039]
निर्वृता भव नन्दिनि [075.039]
प्रसीद देवदेवेश [075.040]
नमस्ते विश्वभावन [075.040]
नाहं त्वामुदरेणेश [075.040]
वोढुं शक्ष्यामि केशव [075.040]
यस्मिन्प्रतिष्ठितं विश्वं [075.041]
यो विश्वं स्वयमीश्वर [075.041]
तदहं नोदरेण त्वां [075.041]
वोढुं शक्ष्यामि दुर्धरम् [075.041]
सत्यमात्थ महाभागे [075.042]
मयि सर्वमिदं जगत् [075.042]
प्रतिष्ठितं न मां शक्ता [075.042]
वोढुं सेन्द्रा दिवौकसः [075.042]
किन्त्वहं सकलांल्लोकान् [075.043]
सदेवासुरमानुषान् [075.043]
जङ्गमाजङ्गमं सर्वं [075.043]
त्वां च देवि सकाश्यपाम् [075.043]
धारयिष्यामि भद्रं ते [075.043]
तव गर्भशयो ऽदिते [075.043]
न ते ग्लानिर्न ते खेदो [075.044]
गर्भस्थे भविता मयि [075.044]
दाक्षायणि प्रसादं ते [075.044]
करोम्यन्यैः सुदुर्लभम् [075.044]
गर्भस्थे मयि पुत्राणां [075.045]
तव यो ऽरिर्भविष्यति [075.045]
तेजसस्तस्य हानिं च [075.045]
करिष्ये मा व्यथां कृताः [075.045]

एवमुक्त्वा ततः सद्यो [075.046]
गतो ऽन्तर्धानमीश्वरः [075.046]
सापि कालेन तं गर्भम् [075.046]
अवाप कुरुसत्तम [075.046]
गर्भस्थिते ततः कृष्णे [075.047]
चचाल सकला क्षितिः [075.047]
चकम्पिरे महाशैला [075.047]
जग्मुः क्षोभमथाब्धयः [075.047]
यतो यतो ऽदितिर्यान्ती [075.048]
ददाति ललितं पदम् [075.048]
ततस्ततः क्षितिः खेदान् [075.048]
ननाम वसुधाधिप [075.048]
दैत्यानामपि सर्वेषां [075.049]
गर्भस्थे मधुसूदने [075.049]
बभूव तेजसो हानिर् [075.049]
यथोक्तं परमेष्ठिना [075.049]
निस्तेजसो ऽसुरान्दृष्ट्वा [076.001]
समस्तानसुरेश्वरः [076.001]
प्रह्लादमथ पप्रच्छ [076.001]
बलिरात्मपितामहम् [076.001]
तात निस्तेजसो दैत्या [076.002]
निर्दग्धा इव वह्निना [076.002]
किमेते सहसैवाद्य [076.002]
ब्रह्मदण्डहता इव [076.002]
दुरिष्टं किं नु दैत्यानां [076.003]
किं कृत्या वैरिनिर्मिता [076.003]
नाशायैषां समुद्भूता [076.003]
येन निस्तेजसो ऽसुराः [076.003]
इत्यासुरवरस्तेन [076.004]
पृष्टः पौत्रेण पार्थिव [076.004]
चिरं ध्यात्वा जगादेदम् [076.004]
असुरेन्द्रं तदा बलिम् [076.004]
चलन्ति गिरयो भूमिर् [076.005]
जहाति सहजां धृतिम् [076.005]
सद्यः समुद्राः क्षुभिता [076.005]
दैत्या निस्तेजसः कृताः [076.005]
सूर्यादयो यथा पूर्वं [076.006]
तथा गच्छन्ति न ग्रहाः [076.006]
देवानां च परा लक्ष्मीः [076.006]
कारणैरनुमीयते [076.006]
महदेतन्महाबाहो [076.007]
कारणं दानवेश्वर [076.007]
न ह्यल्पमिति मन्तव्यं [076.007]
त्वया कार्यं सुरार्दन [076.007]
इत्युक्त्वा दानवपतिं [076.008]
प्रह्लादः सो ऽसुरोत्तमः [076.008]
अत्यन्तभक्तो देवेशं [076.008]
जगाम मनसा हरिम् [076.008]
स ध्यानपथगं कृत्वा [076.009]
प्रह्लादः स्वं मनो ऽसुरः [076.009]
विचारयामास ततो [076.009]
यतो देवो जनार्दनः [076.009]
स ददर्शोदरे ऽदित्याः [076.010]
प्रह्लादो वामनाकृतिम् [076.010]
अन्तःस्थान्बिभ्रतं सप्त [076.010]
लोकानादिप्रजापतिम् [076.010]
तदन्तश्च वसून्रुद्रान् [076.011]
अश्विनौ मरुतस्तथा [076.011]
साध्यान्विश्वे तथादित्यान् [076.011]
गन्धर्वोरगराक्षसान् [076.011]
विरोचनं सतनयं [076.012]
बलिं चासुरनायकम् [076.012]
जम्भं कुजम्भं नरकं [076.012]
बाणमन्यांस्तथासुरान् [076.012]
आत्मानमुर्वीं गगनं [076.013]
वायुमम्भो हुताशनम् [076.013]
समुद्राद्रिद्रुमसरित्- [076.013]
सरांसि पशवो मृगान् [076.013]
वयोमनुष्यानखिलांस् [076.014]
तथैव च सरीसृपान् [076.014]
समस्तलोकस्रष्टारं [076.014]
ब्रह्माणं भवमेव च [076.014]
ग्रहनक्षत्रताराश्च [076.015]
दक्षाद्यांश्च प्रजापतीन् [076.015]
संपश्यन्विस्मयाविष्टः [076.015]
प्रकृतिस्थः क्षणात्पुनः [076.015]
प्रह्लादः प्राह दैत्येन्द्रं [076.016]
बलिं वैरोचनिं तदा [076.016]
वत्स ज्ञातं मया सर्वं [076.017]
यदर्थं भवतामियम् [076.017]
तेजसो हानिरुत्पन्ना [076.017]
तच्छृणु त्वमशेषतः [076.017]
देवदेवो जगद्योनिर् [076.018]
अयोनिर्जगदादिकृत् [076.018]

अनादिरादिर्विश्वस्य [076.018]
वरेण्यो वरदो हरिः [076.018]
परापराणां परमः [076.019]
परः परवतामपि [076.019]
प्रभुः प्रमाणं मानानां [076.019]
सप्तलोकगुरोर्गुरुः [076.019]
स्थितिं कर्तुं जगन्नाथः [076.*(123)]
सो ऽदित्या गर्भतां गतः [076.*(123)]
प्रभुः प्रभूणाम्परमः पराणाम् [076.020]
अनादिमध्यो भगवाननन्तः [076.020]
त्रैलोक्यमंशेन सनाथमेष [076.020]
कर्तुं महात्मादितिजो ऽवतीर्णः [076.020]
न यस्य रुद्रो न च पद्मयोनिर् [076.021]
नेन्द्रो न सूर्येन्दुमरीचिमिश्राः [076.021]
जानन्ति दैत्याधिप यत्स्वरूपं [076.021]
स वासुदेवः कलयावतीर्णः [076.021]
यो ऽसौ कलांशेन नृसिंहरूपी [076.022]
जघान पूर्वं पितरमशेषः [076.022]
यः सर्वयोगीशमनोनिवासः [076.022]
स वासुदेवः कलयावतीर्णः [076.022]
यमक्षरं वेदविदो विदित्वा [076.023]
विशन्ति तं ज्ञानविधूतपापाः [076.023]
यस्मिन्प्रविष्टा न पुनर्भवन्ति [076.023]
तं वासुदेवं प्रणमामि देवम् [076.023]
भूतान्यशेषाणि यतो भवन्ति [076.024]
यथोर्मयस्तोयनिधेरजस्रम् [076.024]
लयं च यस्मिन्प्रलये प्रयान्ति [076.024]
तं वासुदेवं प्रणमाम्यचिन्त्यम् [076.024]
न यस्य रूपं न बलं प्रभावो [076.025]
न च स्वभावः परमस्य पुंसः [076.025]
विज्ञायते सर्वपितामहाद्यैस् [076.025]
तं वासुदेवं प्रणमाम्यचिन्त्यम् [076.025]
रूपस्य चक्षुर्ग्रहणे त्वगेषा [076.026]
स्पर्शग्रहीत्री रसना रसस्य [076.026]
श्रोत्रं च शब्दग्रहणे नराणां [076.026]
घ्राणं च गन्धग्रहणे नियुक्तम् [076.026]
न घ्राणचक्षुःश्रवणादिभिर्यः [076.027]
सर्वेश्वरो वेदितुमव्ययात्मा [076.027]
शक्यस्तमीड्यं मनसैव देवं [076.027]
ग्राह्यं नतो ऽहं हरिमीशितारम् [076.027]
येनैकदंष्ट्राग्रसमुद्धृतेयं [076.028]
धराचला धारयतीह सर्वम् [076.028]
ग्रस्त्वा स शेते सकलं जगद्यस् [076.028]
तमीड्यमीशं प्रणतो ऽस्मि विष्णुम् [076.028]
अंशावतीर्णेन च येन गर्भे [076.029]
हृतानि तेजांसि महासुराणाम् [076.029]
नमामि तं देवमनन्तमीशम् [076.029]
अशेषसंसारतरोः कुठारम् [076.029]
देवो जगद्योनिरयं महात्मा [076.030]
स षोडशांशेन महासुरेन्द्र [076.030]
सुरेन्द्रमातुर्जठरं प्रविष्टो [076.030]
हृतानि वस्तेन बले वपूंषि [076.030]
तात को ऽयं हरिर्नाम [076.031]
यतो न भयमागतम् [076.031]
सन्ति मे शतशो दैत्या [076.031]
वासुदेवबलाधिकाः [076.031]
विप्रचित्तिः शिबिः शङ्कुर् [076.032]
अयःशङ्कुस्तथैव च [076.032]
अयःशिरा अश्वशिरा [076.032]
भङ्गकारो महाहनुः [076.032]
प्रतापी प्रघसः शंभुः [076.033]
कुर्कुराक्षश्च दुर्जयः [076.033]
एते चान्ये च मे सन्ति [076.033]
दैतेया दानवास्तथा [076.033]
महाबला महावीर्या [076.034]
भूभारधरणक्षमाः [076.034]
येषामेकैकशः कृष्णो [076.034]
न वीर्यार्धेन संमितः [076.034]
पौत्रस्यैतद्वचः श्रुत्वा [076.035]
प्रह्लादो दैत्यपुङ्गवः [076.035]
धिग्धिगित्याह स बलिं [076.035]
वैकुण्ठाक्षेपवादिनम् [076.035]
विनाशमुपयास्यन्ति [076.036]
मन्ये दैतेयदानवाः [076.036]
येषां त्वमीदृशो राजा [076.036]
दुर्बुद्धिरविवेकवान् [076.036]
देवदेवं महाभागं [076.037]
वासुदेवमजं विभुम् [076.037]
त्वामृते पापसंकल्पं [076.037]
को ऽन्य एवं वदिष्यति [076.037]
य एते भवता प्रोक्ताः [076.038]
समस्ता दैत्यदानवाः [076.038]
सब्रह्मकास्तथा देवाः [076.038]
स्थावरान्ताश्च भूतयः [076.038]

त्वं चाहं च जगच्चेदं [076.039]
साद्रिद्रुमनदीनदम् [076.039]
समुद्रद्वीपलोकाश्च [076.039]
यच्चेङ्गं यच्च नेङ्गति [076.039]
यस्यातिवन्द्यवन्द्यस्य [076.040]
व्यापिनः परमात्मनः [076.040]
एकांशांशकलाजन्म [076.040]
कस्तमेवं प्रवक्ष्यति [076.040]
ऋते विनाशाभिमुखं [076.041]
त्वामेकमविवेकिनम् [076.041]
दुर्बुद्धिमजितात्मानं [076.041]
वृद्धानां शासनातिगम् [076.041]
शोच्यो ऽहं यस्य वै गेहे [076.042]
जातस्तव पिताधमः [076.042]
यस्य त्वमीदृशः पुत्रो [076.042]
देवदेवावमन्यकः [076.042]
तिष्ठत्वनेकसंसार- [076.043]
संहृताघविनाशनी [076.043]
कृष्णे भक्तिरहं तावद् [076.043]
अवेक्ष्यो भवतो न किम् [076.043]
न मे प्रियतरः कृष्णाद् [076.044]
अपि देहो ऽयमात्मनः [076.044]
इति जानात्ययं लोको [076.044]
भवांश्च दितिजाधमः [076.044]
जानन्नपि प्रियतरं [076.045]
प्राणेभ्यो ऽपि हरिं मम [076.045]
निन्दां करोषि च कथम् [076.045]
अकुर्वन्गौरवं मम [076.045]
विरोचनस्तव गुरुर् [076.046]
गुरुस्तस्याप्यहं बले [076.046]
ममापि सर्वजगतां [076.046]
गुरुर्नारायणो गुरुः [076.046]
निन्दां करोषि तस्मिंस्त्वं [076.047]
कृष्णे गुरुगुरोर्गुरौ [076.047]
यस्मात्तस्मादिहैश्वर्याद् [076.047]
अचिराद्ध्रंशमेष्यसि [076.047]
मा देवो मा जगन्नाथो [076.048]
बले मासौ जनार्दनः [076.048]
भवत्वहमवेक्ष्यस्ते [076.048]
प्रीतिमानत्र मे गुरुः [076.048]
एतावन्मात्रमप्यत्र [076.049]
निन्दता जगतो गुरुम् [076.049]
नापेक्षिता वयं यस्मात् [076.049]
तस्माच्छापं ददामि ते [076.049]
यथा मे शिरसश्छेदाद् [076.050]
इदं गुरुतरं बले [076.050]
त्वयोक्तमच्युताक्षेपि [076.050]
राज्यभ्रष्टस्तथा पत [076.050]
यथा न कृष्णादपरं [076.051]
परित्राणं भवार्णवे [076.051]
तथाचिरेण पश्येयं [076.051]
भवन्तं राज्यविच्युतम् [076.051]
इति दैत्यपतिः श्रुत्वा [076.052]
गुरोर्वचनमप्रियम् [076.052]
प्रसादयामास गुरुं [076.052]
प्रणिपत्य पुणः पुनः [076.052]
प्रसीद तात मा कोपं [076.053]
कुरु मोहहते मयि [076.053]
बलावलेपमत्तेन [076.053]
मयैतद्वाक्यमीरितम् [076.053]
मोहोपहतविज्ञानः [076.054]
पापो ऽहं दितिजोत्तम [076.054]
यच्छप्तो ऽस्मि दुराचारस् [076.054]
तत्साधु भवता कृतम् [076.054]
राज्यभ्रंशं वसुभ्रंशं [076.055]
संप्राप्स्यामीति न त्वहम् [076.055]
विषण्णो ऽस्मि यथा तात [076.055]
तवैवाविनये कृते [076.055]
त्रैलोक्यराज्यमैश्वर्यम् [076.056]
अन्यद्वा नातिदुर्लभम् [076.056]
संसारे दुर्लभास्तात [076.056]
गुरवो ये भवद्विधाः [076.056]
तत्प्रसीद न मे कोपं [076.057]
कर्तुमर्हसि दैत्यप [076.057]
त्वत्कोपहेतुदुष्टो ऽहं [076.057]
परितप्ये न शापतः [076.057]
वत्स कोपेन मोहो मे [076.058]
जनितस्तेन ते मया [076.058]
शापो दत्तो विवेकश्च [076.058]
मोहेनापहृतो मम [076.058]
यदि मोहेन मे ज्ञानं [076.059]
नाक्षिप्तं स्यान्महासुर [076.059]
तत्कथं सर्वगं ज्ञानन् [076.059]
हरिं कंचिच्छापाम्यहम् [076.059]

यो ऽयं शापो मया दत्तो [076.060]
भवतो ऽसुरपुङ्गव [076.060]
भाव्यमेतेन नूनं ते [076.060]
तस्मात्त्वं मा विषीदथाः [076.060]
अद्यप्रभृति देवेशे [076.061]
भगवत्यच्युते हरौ [076.061]
भवेथा भक्तिमानीशः [076.061]
स ते त्राता भविष्यति [076.061]
शापं प्राप्य च मां वीर [076.062]
संस्मरेथाः स्मृतस्त्वया [076.062]
तथा तथा यतिष्यामि [076.062]
श्रेयसा योक्ष्यते यथा [076.062]
एवमुक्त्वा स दैत्येन्द्रो [076.063]
विरराम महामतिः [076.063]
अजायत स गोविन्दो [076.063]
भगवान्वामनाकृतिः [076.063]
अवतीर्णे जगन्नाथे [076.064]
तस्मिन्सर्वमशीशमत् [076.064]
यदासुरमभूद्दुःखं [076.064]
देवानामदितेस्तथा [076.064]
ववुर्वाताः सुखस्पर्शा [076.065]
नीरजस्कमभून्नभः [076.065]
धर्मे च सर्वभूतानां [076.065]
तदा मतिरजायत [076.065]
नोद्वेगश्चाप्यभूद्देहे [076.066]
मनुजानां जनेश्वर [076.066]
तथा हि सर्वभूतानां [076.066]
भूम्यम्बरदिवौकसाम् [076.066]
तं जातमात्रं भगवान् [076.067]
ब्रह्मा लोकपितामहः [076.067]
जातकर्मादिकाः कृत्वा [076.067]
क्रियास्तुष्टाव पार्थिव [076.067]
जयाद्येश जयाजेय [076.068]
जय सर्वात्मकात्मक [076.068]
जय जन्मजरापेत [076.068]
जयानन्त जयाच्युत [076.068]
जयाजित जयाशेष [076.069]
जयाव्यक्त स्थिते जय [076.069]
परमार्थार्थ सर्वज्ञ [076.069]
ज्ञान ज्ञेयात्मनिःसृत [076.069]
जयाशेषजगत्साक्षिञ् [076.070]
जय कर्तर्जगद्गुरोः [076.070]
जगतो जगदन्ते ऽन्त [076.070]
स्थितौ पालयिता जय [076.070]
जयाखिल जयाशेष [076.071]
जयाखिलहृदि स्थित [076.071]
जयादिमध्यान्तमय [076.071]
सर्वज्ञानमयोत्तम [076.071]
मुमुक्षुभिरनिर्देश्य [076.072]
स्वयंदृष्ट जयेश्वर [076.072]
योगिभिर्मुक्तिफलद [076.072]
दमादिगुणभूषणैः [076.072]
जयातिसूक्ष्म दुर्ज्ञेय [076.073]
जगत्स्थूल जगन्मय [076.073]
जय स्थूलातिसूक्ष्म त्वं [076.073]
जयातीन्द्रिय सेन्द्रिय [076.073]
जय स्वमायायोगस्थ [076.074]
शेषभोगशयाक्षर [076.074]
जयैकदंष्ट्राप्रान्तान्त [076.075]
समुद्धृतवसुंधर [076.074]
नृकेसरिञ्जयाराति- [076.075]
वक्षःस्थलविदारण [076.075]
सांप्रतं जय विश्वात्मन् [076.075]
मायावामन केशव [076.075]
निजमायापटच्छन्न [076.076]
जगद्धातर्जनार्दन [076.076]
जयाचिन्त्य जयानेक- [076.076]
स्वरूपैकविध प्रभो [076.076]
वर्धस्व वर्धितानेक- [076.077]
विकारप्रकृते हरे [076.077]
त्वय्येषा जगतामीश [076.077]
संस्थिता धर्मपद्धतिः [076.077]
न त्वामहं न चेशानो [076.078]
नेन्द्राद्यास्त्रिदशा हरे [076.078]
ज्ञातुमीशा न मुनयः [076.078]
सनकाद्या न योगिनः [076.078]
त्वन्मायापटसंवीते [076.079]
जगत्यत्र जगत्पते [076.079]
कस्त्वां वेत्स्यति सर्वेशं [076.079]
त्वत्प्रसादं विना नरः [076.079]
त्वमेवाराधितो यस्य [076.080]
प्रसादसुमुखः प्रभो [076.080]
स एव केवलं देव [076.080]
वेत्ति त्वां नेतरो जनः [076.080]

तदीश्वरेश्वरेशान [076.081]
विभो वर्धस्व भावन [076.081]
प्रभावायास्य विश्वस्य [076.081]
विश्वात्मन्पृथुलोचन [076.081]
एवं स्तुतो हृषीकेशः [076.082]
स तदा वामनाकृतिः [076.082]
प्रहस्य भावगम्भीरम् [076.082]
उवाचाब्जसमुद्भवम् [076.082]
स्तुतो ऽहं भवता पूर्वम् [076.083]
इन्द्राद्यैः कश्यपेन च [076.083]
मया च वः प्रतिज्ञातम् [076.083]
इन्द्रस्य भुवनत्रयम् [076.083]
भूयश्चाहं स्तुतो ऽदित्या [076.084]
तस्याश्चापि प्रतिश्रुतम् [076.084]
यथा शक्राय दास्यामि [076.084]
त्रैलोक्यं हतकण्टकम् [076.084]
सो ऽहं तथा करिष्यामि [076.085]
यथेन्द्रो जगतः पतिः [076.085]
भविष्यति सहस्राक्षः [076.085]
सत्यमेतद्ब्रवीमि ते [076.085]
ततः कृष्णाजिनं ब्रह्मा [076.086]
हृषीकेशाय दत्तवान् [076.086]
यज्ञोपवीतं भगवान् [076.086]
ददौ तस्मै बृहस्पतिः [076.086]
आषाढमददद्दण्डं [076.087]
मरीचिर्ब्रह्मणः सुतः [076.087]
कमण्डलुं वसिष्ठश्च [076.087]
कौश्यं वेदमथाङ्गिराः [076.087]
अक्षसूत्रं च पुलहः [076.087]
पुलस्त्यः सितवाससी [076.087]
उपतस्थुश्च तं वेदाः [076.088]
प्रणवस्वरभूषणाः [076.088]
शास्त्राण्यशेषाणि तथा [076.088]
सांख्ययोगोक्तयश्च याः [076.088]
स वामनो जटी दण्डी [076.089]
छत्री धृतकमण्डलुः [076.089]
सर्वदेवमयो भूप [076.089]
बलेरध्वरमभ्ययात् [076.089]
यत्र यत्र पदं भूप [076.090]
भूभागे वामनो ददौ [076.090]
ददाति भूमिर्विवरं [076.090]
तत्र तत्रातिपीडिता [076.090]
स वामनो जडगतिर् [076.091]
मृदु गच्छन्सपर्वताम् [076.091]
साब्धिद्वीपवतीं सर्वां [076.091]
चालयामास मेदिनीम् [076.091]
ततः संशयमापन्नाः [076.*(124)]
सर्वे दैतेयदानवाः [076.*(124)]
सपर्वतवनामुर्वी [077.001]
दृष्ट्वा संक्षुभितां बलिः [077.001]
पप्रच्छोशनसं शुक्रं [077.001]
प्रणिपत्य कृताञ्जलिः [077.001]
आचार्य क्षोभमायाति [077.002]
साब्धिभूभृद्धरा मही [077.002]
कस्माच्च नासुरान्भागान् [077.002]
प्रतिगृह्णन्ति वह्नयः [077.002]
इति पृष्टो ऽथ बलिना [077.003]
काव्यो वेदविदां वरः [077.003]
उवाच दैत्याधिपतिं [077.003]
चिरं ध्यात्वा महामतिः [077.003]
अवतीर्णो जगद्योनिः [077.004]
कश्यपस्य गृहे हरिः [077.004]
वामनेनेह रूपेण [077.004]
परमात्मा सनातनः [077.004]
स नूनं यज्ञमायाति [077.005]
तव दानवपुङ्गव [077.005]
तत्पदन्यासविक्षोभाद् [077.005]
इयं प्रचलिता मही [077.005]
कम्पन्ते गिरयश्चामी [077.006]
क्षुभिता मकरालयाः [077.006]
नैनं भूतपतिं भूमिः [077.006]
समर्था वोढुमीश्वरम् [077.006]
सदेवासुरगन्धर्व- [077.007]
यक्षराक्षसपन्नगा [077.007]
अनेनैव धृता भूमिर् [077.007]
आपो ऽग्निः पवनो नभः [077.007]
धारयत्यखिलान्देव- [077.007]
मनुष्यादीन्महासुर [077.007]
इयमस्य जगद्धातुर् [077.008]
माया कृष्णस्य गह्वरी [077.008]
धार्यधारकभावेन [077.008]
यया संपिण्डितं जगत् [077.008]
तत्संनिधानादसुरा [077.009]
न भागार्हाः सुरद्विषः [077.009]

भुञ्जते चासुरान्भागान् [077.009]
अमी ते न तवाग्नयः [077.009]
शुक्रस्य वचनं श्रुत्वा [077.*(125)]
हृष्टरोमाब्रवीद्बलिः [077.*(125)]
धन्यो ऽहं कृतपुण्यश्च [077.010]
यन्मे यज्ञपतिः स्वयम् [077.010]
यज्ञमभ्यागतो ब्रह्मन् [077.010]
मत्तः को ऽन्यो ऽधिकः पुमान् [077.010]
यं योगिनः सदोद्युक्ताः [077.011]
परमात्मानमव्ययम् [077.011]
द्रष्टुमिच्छन्ति देवो ऽसौ [077.011]
मदध्वरमुपैष्यति [077.011]
होता भागप्रदो यस्य [077.012]
यमुद्गाता च गायति [077.012]
तमध्वरेश्वरं विष्णुं [077.012]
मत्तः को ऽन्य उपैष्यति [077.012]
सर्वेश्वरेश्वरे विष्णौ [077.013]
ममाध्वरमुपागते [077.013]
यन्मया चार्य कर्तव्यं [077.013]
तन्ममादेष्टुमर्हसि [077.013]
यज्ञभागभुजो देवा [077.014]
वेदप्रामाण्यतो ऽसुर [077.014]
त्वया तु दानवा दैत्या [077.014]
यज्ञभागभुजः कृताः [077.014]
अयं च देवः सत्त्वस्थः [077.015]
करोति स्थितिपालनम् [077.015]
निसृष्टेश्चायमन्ते च [077.015]
स्वयमत्ति प्रजाः प्रभुः [077.015]
त्वयानुबन्धी भविता [077.016]
नूनं विष्णुः स्थितौ स्थितः [077.016]
विदित्वैतन्महाभाग [077.016]
कुरु यत्ते मनोगतम् [077.016]
त्वयास्य दैत्याधिपते [077.017]
स्वल्पके ऽपि हि वस्तुनि [077.017]
प्रतिज्ञा नैव वोढव्या [077.017]
वाच्यं साम तथाफलम् [077.017]
कृतकृत्यस्य देवस्य [077.*(126)]
देवार्थं चैव कुर्वतः [077.*(126)]
नालं दातुं धनं देवेत्य् [077.018]
एवं वाच्यं तु याचतः [077.018]
कृष्णस्य देवभूत्यर्थं [077.018]
प्रवृत्तस्य महासुर [077.018]
ब्रह्मन्कथमहं ब्रूयाम् [077.019]
अन्येनापि हि याचितः [077.019]
नास्तीति किमु देवेन [077.019]
संसाराघौघहारिणा [077.019]
व्रतोपवासैर्विविधैर् [077.020]
यः प्रतिग्राह्यते हरिः [077.020]
स चेद्वक्ष्यति देहीति [077.020]
गोविन्दः किमतो ऽधिकम् [077.020]
यदर्थमुपहाराढ्या [077.021]
दमशौचगुणान्वितैः [077.021]
यज्ञाः क्रियन्ते देवेशः [077.021]
स मां देहीति वक्ष्यति [077.021]
तत्साधु सुकृतं कर्म [077.022]
तपः सुचरितं च नः [077.022]
यन्मया दत्तमीशेशः [077.022]
स्वयमादास्यते हरिः [077.022]
नास्तीत्यहं गुरो वक्ष्ये [077.023]
तमप्यागतमीश्वरम् [077.023]
यदि तद्वञ्च्यते प्राप्ते [077.023]
नूनमस्मद्विधः फलैः [077.023]
यज्ञे ऽस्मिन्यदि यज्ञेशो [077.024]
याचते मां जनार्दनः [077.024]
निजमूर्धानमप्यद्य [077.024]
तद्दास्याम्यविचारितम् [077.024]
नास्तीति यन्मया नोक्तम् [077.025]
अन्येषामपि याचताम् [077.025]
वक्ष्यामि कथमायाते [077.025]
तदनभ्यस्तमच्युते [077.025]
श्लाघ्य एव हि धीराणां [077.026]
दानादापत्समागमः [077.026]
नाबाधाकारि यद्दानं [077.026]
तदङ्गमलवत्कथम् [077.026]
मद्राज्ये नासुखी कश्चिन् [077.027]
न दरिद्रो न चातुरः [077.027]
नातृषितो न चोद्विग्नो [077.027]
न स्रगादिविवर्जितः [077.027]
हृष्टतुष्टः सुगन्धी च [077.028]
तृप्तः सर्वसुखान्वितः [077.028]
जनः सर्वो महाभाग [077.028]
किमुताहं सदा सुखी [077.028]
एतद्विशिष्टपात्रोत्थं [077.029]
दानबीजफलं मम [077.029]

विदितं भृगुशार्दूल [077.029]
मयैतत्त्वत्प्रसादतः [077.029]
एतद्विजानतो दान- [077.030]
बीजं पतति चेद्गुरो [077.030]
जनार्दने महापात्रे [077.030]
किं न प्राप्तं ततो मया [077.030]
मत्तो दानमवाप्येशो [077.031]
यदि पुष्णाति देवताः [077.031]
उपभोगान्वयगुणं [077.031]
दानं श्लाघ्यतरं ततः [077.031]
मत्प्रसादपरो नूनं [077.032]
यज्ञेनाराधितो हरिः [077.032]
तेनाभ्येति न संदेहो [077.032]
दर्शनादुपकारकृत् [077.032]
अथ कोपेन वाभ्येति [077.033]
देवभागोपरोधिनम् [077.033]
मां निहन्तुमतो ऽपि स्याद् [077.033]
वधः श्लाघ्यतरो ऽच्युतात् [077.033]
यन्मयं सर्वमेवेदं [077.034]
नाप्राप्य यस्य विद्यते [077.034]
स मां याचितुमभ्येति [077.034]
नानुग्रहमृते हरिः [077.034]
यः सृजत्यात्मभूः सर्वं [077.035]
चेतसैवापहन्ति च [077.035]
स मां हन्तुं हृषीकेशः [077.035]
कथं यत्नं करिष्यति [077.035]
एतद्विदित्वा तु गुरो [077.036]
दानविघ्नपरेण मे [077.036]
नैव भाव्यं जगन्नाथे [077.036]
गोविन्दे समुपस्थिते [077.036]
इत्येवं वदतस्तस्य [077.037]
प्राप्तस्तत्र जगपतिः [077.037]
सर्वदेवमयो ऽचिन्त्यो [077.037]
मायावामनरूपधृक् [077.037]
तं दृष्ट्वा यज्ञवाटान्तः- [077.038]
प्रविष्टमसुराः प्रभुम् [077.038]
जग्मुः प्रभावतः क्षोभं [077.038]
तेजसा तस्य निष्प्रभाः [077.038]
जेपुश्च मुनयस्तत्र [077.039]
ये समेता महाध्वरे [077.039]
बलिश्चैवाखिलं जन्म [077.039]
मेने सफलमात्मनः [077.039]
ततः संक्षोभमापन्नो [077.040]
न कश्चित्किंचिदुक्तवान् [077.040]
प्रत्येको देवदेवेशं [077.040]
पूजयामास चेतसा [077.040]
अथासुरपतिं प्रह्वं [077.041]
दृष्ट्वा मुनिवरांश्च तान् [077.041]
देवदेवपतिः साक्षाद् [077.041]
विष्णुर्वामनरूपधृक् [077.041]
तुष्टाव यज्ञं वह्निंश्च [077.042]
यजमानमथ र्त्विजः [077.042]
यज्ञकराधिकारस्थान् [077.042]
सदस्यान्द्रव्यसंपदम् [077.042]
ततः प्रसन्नमखिलं [077.043]
वामनं प्रति तत्क्षणात् [077.043]
यज्ञवाटस्थितं वीरं [077.043]
साधु साध्वित्युदीरयन् [077.043]
स चार्घमादाय बलिः [077.044]
प्रोद्भूतपुलकस्तदा [077.044]
पूजयामास गोविन्दं [077.044]
प्राह चेदं वचो ऽसुरः [077.044]
सुवर्णरत्नसंघातं [077.045]
गजाश्वममितं तथा [077.045]
स्त्रियो वस्त्राण्यलंकारान् [077.045]
गावो ग्रामांश्च पुष्कलान् [077.045]
सर्वस्वं सकलामुर्वीं [077.046]
भवतो वा यदीप्सितम् [077.046]
तद्ददामि वृणुष्व त्वं [077.046]
ममार्थी सततं प्रियः [077.046]
इत्युक्तो दैत्यपतिना [077.047]
प्रीतिगर्वान्वितं वचः [077.047]
प्राह सस्मितगम्भीरं [077.047]
भगवान्वामनाकृतिः [077.047]
ममाग्निशरणार्थाय [077.048]
देहि राजन्पदत्रयम् [077.048]
सुवर्णग्रामरत्नादि [077.048]
तदर्थिभ्यः प्रदीयताम् [077.048]
त्रिभिः प्रयोजनं किं ते [077.049]
पदैः पदवतां वर [077.049]
शतं शतसहस्रं वा [077.049]
पदानां मार्गतां भवान् [077.049]
एतावता दैत्यपते [077.050]
कृतकृत्यो ऽस्मि मार्गताम् [077.050]

अन्येषामर्थिनां वित्तम् [077.050]
इच्छया दास्यते भवान् [077.050]
एतच्छ्रुत्वा तु गदितं [077.051]
वामनस्य महात्मनः [077.051]
वाचयामास तत्तस्मै [077.051]
वामनाय पदत्रयम् [077.051]
पाणौ तु पतिते तोये [077.052]
वामनो भूतभावनः [077.052]
सर्वदेवमयं रूपं [077.052]
दर्शयामास तत्क्षणात् [077.052]
चन्द्रसूर्यौ च नयने [077.053]
द्यौः शिरश्चरणौ क्षितिः [077.053]
पादाङ्गुल्यः पिशाचाश्च [077.053]
हस्ताङ्गुल्यश्च गुह्यकाः [077.053]
विश्वेदेवाश्च जानुस्था [077.054]
जङ्घे साध्याः सुरोत्तमाः [077.054]
यक्षा नखेषु संभूता [077.054]
रेखास्वप्सरसः स्थिताः [077.054]
दृष्टिर्धिष्ण्यान्यशेषाणि [077.055]
केशाः सूर्यांशवः प्रभो [077.055]
तारका रोमकूपाणि [077.055]
रोमाणि च महर्षयः [077.055]
बाहवो विदिशस्तस्य [077.056]
दिशः श्रोत्रं महात्मनः [077.056]
अश्विनौ श्रवणौ तस्य [077.056]
नासा वायुर्महाबलः [077.056]
प्रसादश्चन्द्रमा देवो [077.057]
मनो धर्मः समाश्रितः [077.057]
सत्यमस्याभवद्वाणी [077.057]
जिह्वा देवी सरस्वती [077.057]
ग्रीवादितिर्देवमाता [077.058]
विद्यास्तद्वलयस्तथा [077.058]
स्वर्गद्वारमभून्मैत्रं [077.058]
त्वष्टा पूषा च वै भ्रुवौ [077.058]
मुखं वैश्वानरश्चास्य [077.059]
वृषणौ तु प्रजापतिः [077.059]
हृदयं च परं ब्रह्म [077.059]
पुंस्त्वं वै कश्यपो मुनिः [077.059]
पृष्ठे ऽस्य वसवो देवा [077.060]
मरुतः सर्वसंधिषु [077.060]
सर्वसूक्तानि दशना [077.060]
ज्योतींषि विमलप्रभाः [077.060]
वक्षःस्थले तथा रुद्रो [077.061]
धैर्ये चास्य महार्णवः [077.061]
उदरे चास्य गन्धर्वा [077.061]
मरुतश्च महाबलाः [077.061]
लक्ष्मीर्मेधा धृतिः कान्तिः [077.061]
सर्वविद्याश्च वै कटिः [077.061]
सर्वज्योतींषि यानीह [077.062]
तपश्च परमं महत् [077.062]
तस्य देवातिदेवस्य [077.062]
तेजः प्रोद्भूतमुत्तमम् [077.062]
स्तनौ कुक्षौ च वेदाश्च [077.063]
जानू चास्य महामखाः [077.063]
इष्टयः पशुबन्धाश्च [077.063]
द्विजानां चेष्टितानि च [077.063]
तस्य देवमयं रूपं [077.064]
दृष्ट्वा विष्णोर्महाबलाः [077.064]
उपसर्पन्ति दैतेयाः [077.064]
पतंगा इव पावकम् [077.064]
प्रमथ्य सर्वानसुरान् [077.065]
पादहस्ततलैर्विभुः [077.065]
कृत्वा रूपं महाकायं [077.065]
स जहाराशु मेदिनीम् [077.065]
तस्य विक्रमतो भुमिं [077.066]
चन्द्रादित्यौ स्तनान्तरे [077.066]
नभो विक्रममाणस्य [077.066]
सक्थिदेशे स्थितावुभौ [077.066]
परं विक्रममाणस्य [077.067]
जानुमूले प्रभाकरौ [077.067]
विष्णोरास्ताम्महीपाल [077.067]
देवपालनकर्मणि [077.067]
जित्वा लोकत्रयं कृत्स्नं [077.068]
हत्वा चासुरपुङ्गवान् [077.068]
पुरंदराय त्रैलोक्यं [077.068]
ददौ विष्णुरुरुक्रमः [077.068]
सुतलं नाम पातालम् [077.069]
अधस्ताद्वसुधातलात् [077.069]
बलेर्दत्तं भगवता [077.069]
विष्णुना प्रभविष्णुना [077.069]
अथ दैत्येश्वरं प्राह [077.070]
विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः [077.070]
यत्त्वया सलिलं दत्तं [077.071]
गृहीतं पाणिना मया [077.071]

कल्पप्रमाणं तस्मात्ते [077.071]
भविष्यत्यायुरुत्तमम् [077.071]
वैवस्वते तथातीते [077.072]
बले मन्वन्तरे ततः [077.072]
सावर्णके च संप्राप्ते [077.072]
भवानिन्द्रो भविष्यति [077.072]
सांप्रतं देवराजाय [077.073]
त्रैलोक्यमखिलं मया [077.073]
दत्तं चतुर्युगानां वै [077.073]
साधिका ह्येकसप्ततिः [077.073]
नियन्तव्या मया सर्वे [077.074]
ये तस्य परिपन्थिनः [077.074]
तेनाहं परया भक्त्या [077.074]
पूर्वमाराधितो बले [077.074]
सुतलं नाम पातालं [077.075]
तमासाद्य मनोरमम् [077.075]
वसासुर ममादेशं [077.075]
यथावत्परिपालयन् [077.075]
तत्र दिव्यवनोपेते [077.076]
प्रासादशतसंकुले [077.076]
प्रोत्फुल्लपद्मसरसि [077.076]
स्रवच्छुद्धसरिद्वरे [077.076]
सुगन्धिधूपसंबाधे [077.077]
वराभरणभूषितः [077.077]
स्रक्चन्दनादिदिग्धाङ्गो [077.077]
नृत्यगीतमनोरमैः [077.077]
उपभुञ्जन्महाभोगान् [077.078]
विविधान्दानवेश्वर [077.078]
ममाज्ञया कालमिमं [077.078]
तिष्ठ स्त्रीशतसंवृतः [077.078]
यावत्सुरैश्च विप्रैश्च [077.079]
न विरोधं करिष्यसि [077.079]
तावदेतान्महाभोगान् [077.079]
अवाप्स्यस्यसुरोत्तम [077.079]
यदा च देवविप्राणां [077.080]
विरुद्धान्याचरिष्यसि [077.080]
बन्धिष्यन्ति तथा पाशा [077.080]
वारुणास्त्वामसंशयम् [077.080]
एतद्विदित्वा भवता [077.081]
मयाज्ञप्तमशेषतः [077.081]
न विरोधः सुरैः कार्यो [077.081]
विप्रैर्वा दैत्यसत्तम [077.081]
इत्येवमुक्तो देवेन [077.082]
विष्णुना प्रभविष्णुना [077.082]
बलिः प्राह महाराज [077.082]
प्रणिपत्य कृताञ्जलिः [077.082]
तत्रासतो मे पाताले [077.083]
भगवन्भवदाज्ञया [077.083]
किं भविष्यत्युपादानम् [077.083]
उपभोगोपपादकम् [077.083]
आप्यायितो येन देव [077.*(127)]
स्मरेयं त्वामहं सदा [077.*(127)]
दानान्यविधिदत्तानि [077.084]
श्राद्धान्यश्रोत्रियाणि च [077.084]
हुतान्यश्रद्धया यानि [077.084]
तानि दास्यन्ति ते फलम् [077.084]
अदक्षिणास्तथा यज्ञाः [077.085]
क्रियाश्चाविधिना कृताः [077.085]
फलानि तव दास्यन्ति [077.085]
अधीतान्यव्रतानि च [077.085]
बलेर्वरमिदं दत्त्वा [077.086]
शक्राय त्रिविदं तथा [077.086]
व्यापिना तेन रूपेण [077.086]
जगामादर्शनं हरिः [077.086]
शशास च यथा पूर्वम् [077.087]
इन्द्रस्त्रैलोक्यमूर्जितम् [077.087]
सिषेव च परान्कामान् [077.087]
बलिः पातालमाश्रितः [077.087]
इत्येतद्देवदेवस्य [077.088]
विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् [077.088]
वामनस्य पठेद्यस्तु [077.088]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [077.088]
बलिप्रह्रादसंवादं [077.089]
मन्त्रितं बलिशुक्रयोः [077.089]
बलिविष्ण्वोश्च कथितं [077.089]
यः स्मरिष्यति मानवः [077.089]
नाधयो व्याधयो वास्य [077.090]
न च मोहाकुलं मनः [077.090]
भविष्यति कुरुश्रेष्ठ [077.090]
पुंसस्तस्य कदाचन [077.090]
च्युतराज्यो निजं राज्यम् [077.091]
इष्टप्राप्तिं वियोगवान् [077.091]
अवाप्नोति महाभाग [077.091]
नरः श्रुत्वा कथामिमाम् [077.091]

पाताले निवसन्वीरस् [078.001]
तदा वैरोचनिर्बलिः [078.001]
कामोपभोगसंप्राप्त्या [078.001]
मुदं प्राप परां विभुः [078.001]
अलंबुषा मिश्रकेशी [078.002]
पुण्डरीकाथ वामना [078.002]
घृताची मेनका रम्भा [078.002]
ननृतुस्तस्य संनिधौ [078.002]
प्रजगुर्देवगन्धर्वा [078.003]
विश्वावसुपुरोगमाः [078.003]
तुम्बुरुश्च महाभाग [078.003]
बलिं सिद्धाः सचारणाः [078.003]
तस्मिन्संगीतगीता तु [078.004]
वीणावेणुरवाकुले [078.004]
स्रगादिभूषितो दैत्यः [078.004]
पपौ पानमनुत्तमम् [078.004]
शर्करासवमाध्विकां [078.005]
पुष्पासवफलासवम् [078.005]
दिव्याः प्रसन्नाश्च सुरास् [078.005]
तदर्हाणि मधूनि च [078.005]
परावदंशान्मधुरांल् [078.006]
लवणांस्तिक्तकाण्कटून् [078.006]
कषायांश्च महाराज [078.006]
सुमृष्टान्यपराणि च [078.006]
सुहृट्सुजनसंबन्धि- [078.007]
भृत्यवर्गसमन्वितः [078.007]
बुभुजे पातालगतस् [078.007]
तदा वैरोचनिर्बलिः [078.007]
प्रासादाः काञ्चनाः सर्वे [078.008]
सुवर्णमणिमण्डिताः [078.008]
स्फाटिकामलसोपाना [078.008]
मुक्ताहारशतोज्ज्वलाः [078.008]
तेषु सर्वेषु दैतेया [078.009]
बलेः संबन्धिबान्धवाः [078.009]
नृत्यवाद्यादिमुदिता [078.009]
बुभुजुर्विषयान्प्रियान् [078.009]
बलिश्च भगवान्दैत्यो [078.010]
दैत्योरगशतैर्वृतः [078.010]
उपगीयमानो बुभुजे [078.010]
यथेष्टं विषयान्प्रियान् [078.010]
पत्नी विन्ध्यावली नाम [078.011]
तस्य दैत्यपतेरभूत् [078.011]
सर्वलक्षणसंपूर्णा [078.011]
श्रीरिवाब्जं विनापरा [078.011]
न देवी नापि गन्धर्वी [078.012]
नाप्सरा न च मानुषी [078.012]
तस्या रूपेण सदृशी [078.012]
बभूव मनुजेश्वर [078.012]
सा तु पीनायतश्रोणी [078.013]
मृद्वङ्गी मधुरस्वरा [078.013]
घनोन्नतकुचा सुभ्रूः [078.013]
सस्मितायतलोचना [078.013]
मृद्वल्पपाणिपादाब्जा [078.014]
सुमध्या गजगामिनी [078.014]
सुकेशी सुमुखी श्यामा [078.014]
सर्वैर्योषिद्गुणैर्युता [078.014]
तनया मेरुसावर्णेर् [078.015]
दौहित्री मृगमोकिनः [078.015]
वपुषा रूपसंपदा [078.*(128)]
पौतना मृगलोचना [078.*(128)]
पत्नी सहस्रद्वितये [078.015]
प्रधाना तस्य साभवत् [078.015]
तया तु रमतस्तस्य [078.016]
रमणीये रसातले [078.016]
शक्तिरासीदनुदिनं [078.016]
विवेकप्रतिलोमिनी [078.016]
कदाचिद्रमतस्तस्य [078.017]
दैत्यराजस्य पार्थिव [078.017]
तीक्ष्णांशुर्मध्यमां वीथीं [078.017]
ययौ वैषुवतीं रविः [078.017]
यदा यदा च विषुवं [078.018]
भास्करः प्रतिपद्यते [078.018]
तदा तदा हरेश्चक्रं [078.018]
पाताले परिवर्तते [078.018]
स्रवन्ति योषितां गर्भास् [078.019]
तस्य धारांशुतापिताः [078.019]
सहसा दैत्यपत्नीनां [078.019]
यासु पुंसां समुद्भवः [078.019]
निस्तेजसो दैत्यभटा [078.019]
भवन्ति च महीपते [078.019]
तद्दृष्ट्वा सहसायान्तम् [078.020]
आदित्यशततेजसम् [078.020]
ज्वालामालासुदुःप्रेक्ष्यं [078.020]
विष्णुचक्रं सुदर्शनम् [078.020]

हाहाकृतमभूत्सर्वं [078.020]
पातालमरिसूदन [078.020]
जेपुर्ये मुनयस्तत्र [078.021]
सार्घपात्रा महोरगाः [078.021]
बभूवुः प्रणताश्चान्ये [078.021]
सिद्धगन्धर्वचारणाः [078.021]
वैक्लव्यं चागताः सर्वाः [078.021]
स्त्रियः परपुरंजय [078.021]
तद्दृष्ट्वा व्याकुलीभूतं [078.022]
पातालमसुरास्ततः [078.022]
ये तस्थुः पौरुषपरास् [078.022]
ते हताः शतनेमिना [078.022]
भ्राम्यता तेन चक्रेण [078.023]
सप्तलोकविचारिणा [078.023]
समस्तजगदाधार- [078.023]
करमुक्तेन वेगिना [078.023]
तन्निषूदितदैत्यौघं [078.024]
दैत्यस्त्रीगर्भहानिदम् [078.024]
श्रुत्वा चक्रं महाचक्रो [078.024]
निश्चक्राम गृहाद्बलिः [078.024]
आः किमेतदितीत्युक्त्वा [078.025]
स तु मद्यमहोद्धतः [078.025]
विमलं खड्गमादाय [078.025]
शतचन्द्रं च भानुमत् [078.025]
निर्यान्तमथ वेगेन [078.026]
तमुदारपराक्रमम् [078.026]
विध्यावली नाम शुभा [078.026]
दधार दयितं पतिम् [078.026]
उवाच च परिष्वज्य [078.027]
क्रोधताम्रेक्षणं बलिम् [078.027]
कल्याणी गुणदोषज्ञा [078.027]
प्रणयान्मृदुभाषिणी [078.027]
दैत्यराज न कोपस्य [078.028]
वशमागन्तुमर्हसि [078.028]
विमृश्य तज्ज्ञः सामादीन् [078.028]
प्रयुञ्जीत बलाबलम् [078.028]
किमेतत्कस्य वा कुत्र [078.029]
किंनिमित्तमिहागतम् [078.029]
चक्रमित्थं विचार्य त्वं [078.029]
क्रोधं याहि प्रशाम्य वा [078.029]
एतत्किल जगद्धातुश् [078.030]
चक्रं विष्णोः सुदर्शनम् [078.030]
प्रतिषण्मासमभ्येति [078.030]
दैत्यगर्भविनाशनम् [078.030]
पुङ्गर्भान्निखिलानेतद् [078.031]
दानवानां महासुर [078.031]
विनाशयत्यनन्तरां [078.031]
सर्वदुष्टनिबर्हणम् [078.031]
करोति दुःखमतुलं [078.032]
घातनात्प्रतिपक्षजम् [078.032]
पुरुषाणां न सर्वत्र [078.032]
संस्थिता जगतः पतेः [078.032]
मयि त्वयि तथान्यत्र [078.033]
यथा विष्णुर्व्यवस्थितः [078.033]
तस्यैतच्चक्रमायान्तं [078.033]
पुरुषः को न पूजयेत् [078.033]
यस्याधिक्षेपजा राजंस् [078.034]
तव त्रैलोक्यविच्युतिः [078.034]
तस्य चक्रं जगन्मूर्तेः [078.034]
समुपैषि रुषा कथम् [078.034]
सदृशे पुरुषे क्रोधं [078.035]
नरः कुर्वीत दैत्यप [078.035]
न तु सर्वेश्वरे विष्णौ [078.035]
यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् [078.035]
तत्प्रसीद महाभाग [078.036]
समुपैहि जगत्पतिम् [078.036]
शरण्यं शरणं विष्णुं [078.036]
यं प्रणम्य न सीदति [078.036]
यस्मिन्प्रसन्ने त्रैलोक्यं [078.037]
त्वत्तः प्राप्तः शचीपतिः [078.037]
भ्रष्टश्च यदधिक्षेपात् [078.037]
तं त्वं शरणमाव्रज [078.037]
यत्र सर्वेश्वरे सर्वं [078.038]
सर्वभूते जगत्स्थितम् [078.038]
तस्य चक्रमुपैहि त्वं [078.038]
विनयादसुराधिप [078.038]
सर्वकारणभूतस्य [078.039]
देवदेवस्य चक्रिणः [078.039]
कश्चक्रमतिवर्तेत [078.039]
मर्त्यधर्मा महासुर [078.039]
चक्रमत्र जगद्धातुः [078.040]
करोति स्थितिपालनम् [078.040]
विपक्षासुरसंभूति- [078.040]
गर्भविस्रंसनात्प्रभो [078.040]

प्रसाद्य चक्रनामानं [078.041]
गोविन्दं जगतो गुरुम् [078.041]
श्रेयसे सर्वधर्मज्ञ [078.041]
शरणं व्रज केशवम् [078.041]
संस्मरस्व च दैत्येन्द्र [078.042]
प्रह्रादं स्वपितामहम् [078.042]
भ्रष्टराज्येन भवता [078.042]
स्मर्तव्यो ऽहमिति प्रभो [078.042]
स व्याजहार भगवांस् [078.043]
तवानुग्रहकाम्यया [078.043]
संस्मर्यतां महाभाग [078.043]
सर्वधर्मभृतां वरः [078.043]
विष्णुभक्तो महाबाहुः [078.043]
स ते श्रेयो ऽभिधास्यति [078.043]
एतद्वचनमाकर्ण्य [078.044]
तदा वैरोचनिर्बलिः [078.044]
ययौ तदार्घमादाय [078.044]
विष्णोश्चक्रस्य पूजकः [078.044]
स ददर्श समायान्तम् [078.045]
अनन्तकरसङ्गिनम् [078.045]
चक्रमक्षयचक्रस्य [078.045]
विश्वस्य परिपालकम् [078.045]
सस्मार च बलिः सर्वं [078.046]
प्रह्रादवचनं नृप [078.046]
जगाद यच्च गोविन्दः [078.046]
प्रसादसुमुखः प्रभुः [078.046]
भक्तिनम्रस्ततो भूत्वा [078.047]
भूतभव्यभवत्प्रभोः [078.047]
तुष्टाव वासुदेवस्य [078.047]
चक्रमव्यक्तमूर्तिनः [078.047]
ज्वालामालाकरालान्तम् [078.048]
उद्यदिन्दुसमप्रभम् [078.048]
मध्याह्नार्कसमाभासं [078.048]
तेजसः पिण्डसंस्थितम् [078.048]
तं दृष्ट्वा तेजसा राशिम् [078.049]
उपसंगम्य चा विभुम् [078.049]
उवाच दैत्यशार्दूलः [078.049]
प्रणिपत्य कृताञ्जलिः [078.049]
अनन्तस्याप्रमेयस्य [078.050]
विश्वमूर्तेर्महात्मनः [078.050]
नमामि चक्रिणश्चक्रं [078.050]
करसङ्गि सुदर्शनम् [078.050]
सहस्रमिव सूर्याणां [078.051]
संघातं विद्युतामिव [078.051]
कालाग्निमिव यच्चक्रं [078.050]
तद्विष्णोः प्रणमाम्यहम् [078.051]
दुष्टराहुगलच्छेद- [078.052]
शोणितारुणतारकम् [078.052]
तन्नमामि हरेश्चक्रं [078.052]
शतनेमि सुदर्शनम् [078.052]
यस्यारकेषु शक्राद्या [078.053]
लोकपाला व्यवस्थिताः [078.053]
तदन्तर्वसवो रुद्रास् [078.053]
तथैव मरुतां गणाः [078.053]
धारायां द्वादशादित्याः [078.054]
समस्ताश्च हुताशनाः [078.054]
धाराजाले ऽब्धयः सर्वे [078.054]
नाभिमध्ये प्रजापतिः [078.054]
समस्तनेमिष्वखिला [078.055]
यस्य विद्याः प्रतिष्ठिताः [078.055]
यस्य रूपमनिर्देश्यम् [078.055]
अपि योगिभिरुत्तमैः [078.055]
यद्भ्रमत्सुरसङ्घानां [078.056]
तेजसः परिबृंहणम् [078.056]
दैत्यौजसां च नाशाय [078.056]
तन्नमामि सुदर्शनम् [078.056]
भ्रमन्मतमहावेग- [078.*(129)]
विभ्रान्ताखिलखेचरम् [078.*(129)]
तन्नमामि हरेश्चक्रम् [078.*(129)]
अनन्तारं सुदर्शनम् [078.*(129)]
नक्षत्रवद्वह्निकण- [078.*(130)]
व्याप्तं कृत्स्नं नभस्तलम् [078.*(130)]
तन्नमामि हरेश्चक्रं [078.*(130)]
करसङ्गि सुदर्शनम् [078.*(130)]
स्वभावतेजसा युक्तं [078.057]
यदर्काग्निमयं महत् [078.057]
विशेषतो हरेर्गत्वा [078.057]
सर्वदेवमयं करम् [078.057]
दुर्वृत्तदैत्यमथनं [078.058]
जगतः परिपालकम् [078.058]
तन्नमामि हरेश्चक्रं [078.058]
दैत्यचक्रहरं परम् [078.058]
करोतु मे सदा शर्म [078.059]
धर्मतां च प्रयातु मे [078.059]

प्रसादसुमुखे कृष्णे [078.059]
तस्य चक्रं सुदर्शनम् [078.059]
स्वभावतेजसा युक्तं [078.*(131)]
मध्याह्नार्कसमप्रभम् [078.*(131)]
प्रसीद संयुगे ऽरिणां [078.060]
सुदर्शनसुदर्शनम् [078.060]
विद्युज्ज्वालामहाकक्षं [078.060]
दहान्तर्मम यत्तमः [078.060]
जहि नो विषयग्राहि [078.061]
मनो ग्रहविचेष्टितम् [078.061]
विस्फोटयाखिलां मायां [078.061]
कुरुष्व विमलां मतिम् [078.061]
एवं संस्थूयमानं तद् [078.062]
वह्निपिण्डोपमं महत् [078.062]
बभूव प्रकटं चक्रं [078.062]
दैत्यचक्रपतेस्तदा [078.062]
ददर्श स महाबाहुः [078.063]
प्रभामण्डलदुर्दर्शम् [078.063]
अग्निज्वालागतं ताम्रं [078.063]
तप्तचक्रमिवापरम् [078.063]
भ्रमतस्तस्य चक्रस्य [078.064]
नाभिमध्ये महीपते [078.064]
त्रैलोक्यमखिलं दैत्यो [078.064]
दृष्टवान्भूर्भुवादिकम् [078.064]
मेर्वादीनखिलाञ्शैलान् [078.065]
गङ्गाद्याः सरितस्तथा [078.065]
क्षीराब्धिप्रमुखांश्चाब्धीन् [078.065]
द्वीपाञ्जम्ब्वादिसंज्ञितान् [078.065]
वैमानिकान्सगन्धर्वान् [078.066]
सूर्यादींश्च तथा ग्रहान् [078.066]
नक्षत्रतारकाकाशं [078.066]
शक्रादींश्च दिवौकसः [078.066]
रुद्रादित्यांश्च मरुतां [078.067]
साध्यानां च महीपते [078.067]
संनिधानं निरीक्ष्यासौ [078.067]
दैत्यानां विस्मितो ऽभवत् [078.067]
ततः प्रणम्यार्तिहरं सुराणाम् [078.068]
अपारसारं परमायुधं हरेः [078.068]
नमो नमस्ते ऽस्त्विति दैत्यराजः [078.068]
प्रोवाच भूयो ऽपि नमो नमस्ते [078.068]
यन्नो ऽशुभं चेतसि वायुवेग [078.069]
यन्नो ऽशुभं वाचि हुताशनोत्थ [078.069]
यच्चाशुभं कायकृतं हरेस्तद् [078.069]
वरायुधं त्वं प्रशमं नयाशु [078.069]
प्रसीद सत्कारकृतं ममाघं [078.070]
प्रयातु ते नाशमनन्तवीर्य [078.070]
सतां च सन्मार्गवतां मनांसि [078.070]
स्थिरीभवन्त्वच्युतपादयुग्मे [078.070]
एवं स्तुते ततस्तस्मिन् [079.001]
विष्णुचक्रे सुदर्शने [079.001]
पुष्पवृष्टिर्बलेर्मूर्ध्नि [079.001]
निपपातान्तरिक्षतः [079.001]
परिहृत्य च दैत्येन्द्रं [079.001]
ययौ चक्रं यथेच्छया [079.001]
भ्रमदेव च दैत्यानां [079.*(132)]
ययौ तद्भयमावहत् [079.*(132)]
ततस्तदद्भुतं दृष्ट्वा [079.002]
चक्रस्यागमनं हरेः [079.002]
पूर्ववत्स्मरणं प्राप्य [079.002]
सस्मार स्वपितामहम् [079.002]
गच्छता पूर्वमार्येण [079.003]
स्मर्तव्यो ऽहमितीरितम् [079.003]
तं स्मरिष्यामि दैत्येन्द्रं [079.003]
स नः श्रेयो ऽभिधास्यति [079.003]
इत्येतदधिसंस्मृत्य [079.004]
बलिरात्मपितामहम् [079.004]
सस्मार दैत्याधिपतिं [079.004]
प्रह्लादं भगवत्प्रियम् [079.004]
संस्मृतश्च स पातालम् [079.005]
आजगाम महामतिः [079.005]
चक्रोद्यतकरः साक्षाद् [079.005]
भगवानिव केशवः [079.005]
तमागतमथोत्थाय [079.006]
यथावत्स महामतिः [079.006]
अभिवाद्य बलिर्भक्त्या [079.006]
निवेद्यार्घमभाषत [079.006]
तातांह्रिदर्शनादद्य [079.007]
पावितो ऽस्म्यपकल्मषः [079.007]
दिवश्च्युतो ऽप्यहं मन्ये [079.007]
शक्रादात्मानमुत्तमम् [079.007]
त्रैलोक्यहरणादुग्रं [079.008]
यद्दुःखं हृदये मम [079.008]
तच्छान्तं पादसंपर्कम् [079.008]
उपेत्य भवतो मम [079.008]

इति संस्तूय दत्त्वा च [079.009]
वरासनमुदारधीः [079.009]
पर्युपासत राजेन्द्रो [079.009]
दैत्यानां स्वपितामहम् [079.009]
तमुपासीनमनघः [079.010]
प्रह्लादो दैत्यपुङ्गवः [079.010]
प्रत्युवाच महात्मानं [079.010]
बलिं वैरोचनिं नृप [079.010]
बले ब्रूहि यदर्थं ते [079.011]
स्मृतो ऽहमरिसूदन [079.011]
तवोपकारणे विद्धि [079.011]
धर्मे मां सततोद्यतम् [079.011]
तातेनाहं पुरा ज्ञप्तो [079.012]
भ्रष्टराज्येन ते बले [079.012]
संस्मर्तव्यो ऽस्म्यसंदिग्धं [079.012]
श्रेयो वक्ष्याम्यहं तदा [079.012]
सो ऽहं राज्यपरिभ्रष्टो [079.013]
विषयासक्तिहृषितः [079.013]
इन्द्रियैरवशस्तात [079.013]
यत्कार्यं तत्प्रशाधि माम् [079.013]
यदि मद्-वचनं तात [079.014]
श्रद्धधासि हितं बले [079.014]
तं देवदेवमनघं [079.014]
प्रयाहि शरणं हरिम् [079.014]
शब्दादिष्वनुरक्तानि [079.015]
तवाक्षाण्यसुराधिप [079.015]
शब्दादयश्च गोविन्दे [079.015]
सन्त्येव व्यवहारतः [079.015]
गीतकैर्गीयतां विष्णुर् [079.016]
मनोहारिभिरात्मनः [079.016]
अन्यालम्बनतश्चित्तम् [079.016]
आकृष्याधत्स्व केशवे [079.016]
गन्धानुदारान्भक्षांश्च [079.017]
स्रजो वासांसि चासुर [079.017]
प्रयच्छ देवदेवाय [079.017]
तच्छेषाण्युपयुञ्ज च [079.017]
यत्र यत्र च ते प्रीतिर् [079.018]
विषये दितिजेश्वर [079.018]
तत्तमच्युतमुद्दिश्य [079.018]
विप्रेभ्यः प्रतिपादय [079.018]
सर्वभूतेषु गोविन्दो [079.019]
बहुरूपो व्यवस्थितः [079.019]
इति मत्वा महाबाहो [079.019]
सर्वभूतहितो भव [079.019]
आत्मानमच्युतं विद्धि [079.020]
शत्रुं च रिपुमात्मनः [079.020]
इतिज्ञानवतः कोपस् [079.020]
तव कुत्र भविष्यति [079.020]
शब्दादयो ये विषया [079.021]
विषयी यश्च पुरुषः [079.021]
तदशेषं विजानीहि [079.021]
स्वरूपं परमात्मनः [079.021]
परमात्मा च भगवान् [079.022]
विष्वक्सेनो जनार्दनः [079.022]
तद्भक्तिमान्भागवतो [079.022]
नाल्पपुण्यो हि जायते [079.022]
भगवच्छासनालम्बी [079.023]
भगवच्छासनप्रियः [079.023]
भगवद्भक्तिमास्थाय [079.023]
वत्स भागवतो भव [079.023]
भगवान्भूतकृद्भव्यो [079.024]
भूतानां प्रभवो हि यः [079.024]
भावेन तं भजस्वेशं [079.024]
भवभङ्गकरं हरिम् [079.024]
भजस्व भावेन विभुं [079.025]
भगवन्तं महेश्वरम् [079.025]
ततो भागवतो भूत्वा [079.025]
भवबन्धाद्विमोक्ष्यसे [079.025]
सर्वभूते मनस्तस्मिन् [079.026]
समाधाय महामते [079.026]
प्राप्स्यसे परमाह्लाद- [079.026]
कारिणीं परमां गतिम् [079.026]
यत्रानन्दपरं ज्ञानं [079.*(133)]
सर्वदुःखविवर्जितम् [079.*(133)]
तत्र चित्तं समावेष्टुं [079.027]
न शक्नोति भवान्यदि [079.027]
तदभ्यासपरस्तस्मिन् [079.027]
कुरु योगं दिवानिशम् [079.027]
तत्राप्यसामर्थ्यवतः [079.028]
क्रियायोगो महात्मना [079.028]
ब्रह्मणा यः समाख्यातस् [079.028]
तन्मनाः सततं भव [079.028]
करोषि यानि कर्माणि [079.029]
तानि देवे जगत्पतौ [079.029]

समर्पयस्व भद्रं ते [079.029]
ततः कर्म प्रहास्यसि [079.029]
क्षीणकर्मा महाबाहो [079.030]
शुभाशुभविवर्जितः [079.030]
लयमभ्येति गोविन्दे [079.030]
तद्ब्रह्म परमं महत् [079.030]
भोक्तुमिच्छसि दैत्येन्द्र [079.031]
कर्मणामथ चेत्फलम् [079.031]
ततस्तमर्चयेशेशं [079.031]
ततः कर्मफलोदयः [079.031]
यो ऽर्थमिच्छति दैत्येन्द्र [079.032]
स समाराध्य केशवम् [079.032]
निःसंशयमवाप्नोति [079.032]
धुन्धुमारो यथा नृपः [079.032]
अत्रिगेहसमुद्भूतं [079.033]
दत्तात्रेयस्वरूपिणम् [079.033]
राज्यमाराध्य गोविन्दं [079.033]
कार्तवीर्यस्तथाप्तवान् [079.033]
धर्मं कृष्णप्रसादेन [079.034]
मुद्गलो जाजलिः कुणिः [079.034]
प्रापुरन्ये तथा कामान् [079.034]
नरेन्द्रा नहुषादयः [079.034]
जनकः सुध्वजो नाम [079.035]
जनकः समितिध्वजः [079.035]
धर्मध्वजस्तथा मुक्तिं [079.035]
केशवाराधनाद्गतः [079.035]
तथान्ये मुनयो दैत्य [079.036]
राजानश्च सहस्रशः [079.036]
प्रापुर्मुक्तिं महाभागाः [079.036]
कृत्वा भक्तिं जनार्दने [079.036]
यथा हि ज्वलितो वह्निस् [079.037]
तमोहानिं तदर्थिनाम् [079.037]
शीतहानिं तथान्येषां [079.037]
स्वेदं स्वेदाभिलाषिणाम् [079.037]
करोति क्षुधितानां च [079.038]
भोज्यपाकं तथोत्कटम् [079.038]
तथैव कामान्भूतेशः [079.038]
स ददाति यथेप्सितान् [079.038]
तदेतदखिलं ज्ञात्वा [079.039]
यत्तवेष्टं शृणुष्व तत् [079.039]
कल्पद्रुमादिव हरेर् [079.039]
यत्ते मनसि वर्तते [079.039]
एतत्प्रह्लादवचनं [079.040]
निशाम्य दितिजेश्वरः [079.040]
प्रत्युवाच महाभागं [079.040]
प्रणिपत्य पितामहम् [079.040]
संप्राप्तस्यामृतस्येव [079.041]
तव वाक्यस्य नास्ति मे [079.041]
तृप्तिरेतदहं तात [079.041]
श्रोतुमिच्छामि विस्तरात् [079.041]
अक्षीणकर्मा पुरुषो [079.042]
मरणे समुपस्थिते [079.042]
कीदृशं लोकमायाति [079.042]
यः संस्मरति केशवम् [079.042]
यथा च वासुदेवस्य [079.043]
स्मरणं तात मानवैः [079.043]
मुमूर्षुभिः प्रकर्तव्यं [079.043]
तन्ममाचक्ष्व विस्तरात् [079.043]
किं जप्यं कीदृशं रूपं [079.044]
स्मर्तव्यं च हरेस्तदा [079.044]
कथं ध्येयं च विद्वद्भिस् [079.044]
तदाचक्ष्व यथातथम् [079.044]
साधु वत्स त्वया प्रश्नः [079.045]
सुगुह्यो ऽयमुदाहृतः [079.045]
तपसां तात सर्वेषां [079.045]
तपो नानशनात्परम् [079.045]
कथ्यते च महाबाहो [079.046]
संवादो ऽयं पुरातनः [079.046]
भगीरथस्य राजर्षेर् [079.046]
ब्रह्मणश्च प्रजापतेः [079.046]
अतीत्यामरलोकं च [079.047]
गवां लोकं च मानद [079.047]
ऋषिलोकं च यो ऽगच्छद् [079.047]
भगीरथ इति श्रुतः [079.047]
तं दृष्ट्वा स वचः प्राह [079.048]
ब्रह्मा लोकपितामहः [079.048]
कथं भगीरथागास्त्वम् [079.048]
इमं देशं दुरासदम् [079.048]
न हि देवा न गन्धर्वा [079.049]
न मनुष्या भगीरथ [079.049]
आयान्त्यतप्ततपसः [079.049]
कथं वै त्वमिहागतः [079.049]
निःशङ्कमन्नमददं ब्राह्मणेभ्यः [079.050]
शतं सहस्राणि सदैव दायम् [079.050]

ब्राह्मणं व्रतं नित्यमास्थाय विद्वन् [079.050]
न त्वेवाहं तस्य फलादिहागाम् [079.050]
दशैकरात्रान्दश पञ्चरात्रान् [079.051]
एकादशैकादशकांस्तथैव [079.051]
ज्योतिष्टोमानां च शतं यदिष्टं [079.051]
फलेन तेनापि न चागतो ऽहम् [079.051]
यच्चावसं जाह्नवीतीरनित्यः [079.052]
शतं समास्तप्यमानस्तपो ऽहम् [079.052]
प्रदाय तत्राश्वतरीसहस्रं [079.052]
फलेन तस्यापि न चागतो ऽहम् [079.052]
दश धेनुसहस्राणि [079.053]
मणिरत्नविभूषिताः [079.053]
दशार्बुदानि चाश्वानाम् [079.053]
अयुतानि च विंशतिः [079.053]
पुष्करेषु द्विजातिभ्यः [079.053]
प्रादां गाश्च सहस्रशः [079.053]
सुवर्णचन्द्रोत्तमधारिणीनां [079.054]
कन्योत्तमानामददं स्रग्विणीनाम् [079.054]
षष्टिं सहस्राणि विभूषितानां [079.054]
जाम्बूनदैराभरणैर्न तेन [079.054]
दशार्बुदान्यददं गोसवे यास्त्व् [079.055]
एकैकशो दश गा लोकनाथ [079.055]
समानवत्साः पयसा समन्विताः [079.055]
सुवर्णकांस्योपदुहा न तेन [079.055]
अहन्यहनि विप्रेषु [079.056]
एकैकं त्रिंशतो ऽददम् [079.056]
गृष्टीनां क्षीरदात्रीणां [079.056]
रोहिणीनां शतानि च [079.056]
दोग्ध्रीणां वै गवां चैव [079.057]
प्रयुतानि दशैव तु [079.057]
प्रादां दशगुणं ब्रह्मन् [079.057]
न च तेनाहमागतः [079.057]
कोटीश्च काञ्चनस्याष्टौ [079.058]
प्रादां ब्रह्मन्दश त्वहम् [079.058]
एकैकस्मिन्क्रतौ तेन [079.058]
फलेनाहं न चागतः [079.058]
वाजिनां श्यामकर्णानां [079.059]
हरितानां पितामह [079.059]
प्रादां हेमस्रजां ब्रह्मन् [079.059]
कोटीर्दश च सप्त च [079.059]
ईषादन्तान्महाकायान् [079.060]
काञ्चनस्रग्विभूषितान् [079.060]
पत्नीवतः सहस्राणि [079.060]
प्रायच्छं दश सप्त च [079.060]
अलंकृतानां देवेश [079.061]
दिव्यैः कनकभूषणैः [079.061]
रथानां काञ्चनाङ्गानां [079.061]
सहस्राण्यददं दश [079.061]
सप्त चान्यानि युक्तानां [079.061]
वाजिभिः समलंकृतैः [079.061]
दक्षिणावयवाः केचिद् [079.062]
देवैर्ये संप्रकीर्तिताः [079.062]
वाजपेयेषु दशसु [079.062]
प्रादां तेनापि नागतः [079.062]
शक्रतुल्यप्रभावानाम् [079.063]
ईज्यया विक्रमेण च [079.063]
सहस्रं निष्ककण्ठानां [079.063]
प्रददन्दक्षिणामहम् [079.063]
विजित्य नृपतीन्सर्वान् [079.064]
मखैरिष्ट्वा पितामह [079.064]
अष्टाभ्यो राजसूयेभ्यो [079.064]
न च तेनाहमागतः [079.064]
स्रोतश्च यावद्गङ्गायां [079.065]
छिन्नमासीज्जगत्पते [079.065]
दक्षिणाभिः प्रवृत्ताभिर् [079.065]
मम नागं च तत्कृते [079.065]
वाजिनां च सहस्रे द्वे [079.066]
सुवर्णमणिभूषिते [079.066]
वारणानां शतं चाहम् [079.066]
एकैकस्य त्रिधाददम् [079.066]
वरं ग्रामशतं चाहम् [079.066]
एकैकस्य त्रिधाददम् [079.066]
तपस्वी नियताहारः [079.067]
शममास्थाय वाग्यतः [079.067]
दीर्घकालं हिमवति [079.067]
गङ्गायाश्च दुरुत्सहाम् [079.067]
मूर्ध्ना धारां महादेवः [079.068]
शिरसा यामधारयत् [079.068]
न तेनाप्यहमागच्छं [079.068]
फलेनेह पितामह [079.068]
शम्याक्षेपैरयजं देवदेव [079.069]
तथा क्रतूनामयुतैश्चापि यत्तः [079.069]
त्रयोदशद्वादशाहैश्च देव [079.069]
सपुण्डरीकैर्न च तेषां फलेन [079.069]

अष्टौ सहस्राणि ककुद्मिनामहं [079.070]
शुक्लर्षभाणामददं ब्राह्मणेभ्यः [079.070]
पत्नीश्चैषामददं निष्ककण्ठीस् [079.070]
तेषां फलेनेह न चागतो ऽस्मि [079.070]
हिरण्यरत्नचितान् [079.071]
अददं रत्नपर्वतान् [079.071]
धनधान्यसहस्रांश्च [079.071]
ग्रामाञ्शतसहस्रशः [079.071]
शतं शतानां गृष्टीनाम् [079.072]
अददं चाप्यतन्द्रितः [079.072]
इष्ट्वानेकैर्महायज्ञैर् [079.072]
ब्राह्मणेभ्यो धनेन च [079.072]
एकादशाहैरयजं सुदक्षिणैर् [079.073]
द्विर्द्वादशाहैरश्वमेधैश्च देव [079.073]
बृहद्भिर्द्वादशाहैश्च [079.*(135)]
अश्वमेधैः पितामह [079.*(135)]
अर्कायणैः षोडशभिश्च ब्रह्मंस् [079.073]
तेषां फलेनेह न चागतो ऽस्मि [079.073]
निष्कामकं चाप्यददं योजनानां [079.074]
द्विर्विस्तीर्णं काञ्चनपादपानाम् [079.074]
वनं चूतानां रत्नविभूषितानाम् [079.074]
न चैव तेषामागतो ऽहं फलेन [079.074]
तुरायणं तु व्रतमप्रधृष्यम् [079.075]
अक्रोधनो ऽकरवं त्रिंशतो ऽब्दान् [079.075]
शतं गवामष्ट शतानि चाहं [079.075]
दिने दिने प्राददं ब्राह्मणेभ्यः [079.075]
पयस्विनीनां अथ रोहिणीनां [079.076]
तथैव चाप्यनडुहां लोकनाथ [079.076]
प्रादान्नित्यं ब्राह्मणेभ्यः सुरेश [079.076]
नेहागतस्तेन फलेन चाहम् [079.076]
त्रिंशतं विधिवद्वह्नीन् [079.077]
अयजं यच्च नित्यशः [079.077]
अष्टाभिः सर्वमेधैश्च [079.077]
नृमेधैर्द्विगुणैस्तथा [079.077]
दशभिर्विश्वजिद्भिश्च [079.078]
स्तोभैरष्टादशोत्तरैः [079.078]
न चैव तेषां देवेश [079.078]
फलेनाहमिहागमम् [079.078]
सरव्यां बाहुदायां च [079.079]
गयायामथ नैमिषे [079.079]
गवां शतानामयुतम् [079.079]
अददं न च तेन वै [079.079]
उत्क्रान्तिकाले गोविन्दं [079.080]
स्मरन्ननशनस्थितः [079.080]
त्यक्तवानस्मि यद्देहं [079.080]
तेनेदवप्राप्तवान्फलम् [079.080]
एवमेतदितीत्याह [079.081]
ब्रह्मा लोकपितामहः [079.081]
भगीरथं महीपालं [079.081]
पुण्यलोकनिवासिनम् [079.081]
तदेतदुक्तं तपसां [079.082]
समस्तानां महामते [079.082]
गुणैरनशनं ब्रह्मा [079.082]
प्रधानतरमब्रवीत् [079.082]
त्यजत्यनशनस्थो हि [079.083]
प्राणान्यः संस्मरन्हरिम् [079.083]
स याति विष्णुसालोक्यं [079.083]
यावदिन्द्राश्चतुर्दश [079.083]
अतीतानागतानीह [079.084]
कुलानि पुरुषर्षभ [079.084]
पुनात्यनशनं कुर्वन् [079.084]
सप्त सप्त च सप्त च [079.084]
श्लोकाश्चात्र महाबाहो [079.085]
श्रूयन्ते यान्भगीरथः [079.085]
जगाद ब्रह्मणो लोकम् [079.085]
उपेतः पृथिवीपतिः [079.085]
ब्रह्म ब्रह्ममयं विष्णोर् [079.086]
यः पदं परमात्मनः [079.086]
संस्मरंस्त्यजति प्राणान् [079.086]
स विष्णुं प्रविशत्यजम् [079.086]
यः क्षीणकर्मा भोगेन [079.087]
तपसा वापि संस्मरन् [079.087]
करोति कालं कालेन [079.087]
न परिच्छेद्यते हि सः [079.087]
अक्षीणकर्मा मरणे [079.088]
संस्मरन्देवमच्युतम् [079.088]
यथा त्वमेव देवानां [079.088]
लोके भोगानुपाश्नुते [079.088]
क्षुतिते ऽपि कुले कश्चिज् [079.089]
जायेयं कर्मणः क्षये [079.089]
मनुष्यो येन सर्वेशं [079.089]
चिन्तयेयं सदा हरिम् [079.089]
तच्चिन्तयाधुनाशेष- [079.090]
पुण्यपापविवर्जितः [079.090]

मरणे तन्मनस्तत्र [079.090]
लयमेत्य तमाप्नुयात् [079.090]
कर्मभूमौ समस्तानां [079.091]
कर्मणामुत्तमोत्तमम् [079.091]
यदन्तकाले पुरुषैः [079.091]
स्मर्यते पुरुषोत्तमः [079.091]
इत्येतानाह राजर्षिः [079.092]
श्लोकानाद्यो भगीरथः [079.092]
विष्णुसंस्मरणात्प्राप्य [079.092]
लोकाननशने मृतः [079.092]
एवमत्यन्तशस्तानां [079.093]
कर्मणामसुरेश्वर [079.093]
नान्यदुत्कृष्टमुद्दिष्टं [079.093]
तज्ज्ञैरनशनात्परम् [079.093]
तस्याहं लक्षणं वक्ष्ये [079.094]
यच्च जप्यं मुमूर्षुभिः [079.094]
यादृग्रूपश्च भगवांश् [079.094]
चिन्तनीयो जनार्दनः [079.094]
आसन्नमात्मनः कालं [079.095]
ज्ञात्वा प्राज्ञो महासुर [079.095]
निर्धूतमलदोषश्च [079.095]
स्नातो नियतमानसः [079.095]
समभ्यर्च्य हृषीकेशं [079.096]
पुष्पधूपादिभिस्ततः [079.096]
प्रणिपातैः स्तवैः पुण्यैर् [079.096]
ध्यानयोगैश्च पूजयेत् [079.096]
दत्त्वा दानं च विप्रेभ्यो [079.097]
विकलादिभ्य एव च [079.097]
सभाप्रपाब्राह्मणौक- [079.097]
देवौकाद्युपयोगि च [079.097]
बन्धुपुत्रकलत्रौक- [079.098]
क्षेत्रधान्यधनादिषु [079.098]
मित्रवर्गे च दैत्येन्द्र [079.098]
ममत्वं विनिवर्तयेत् [079.098]
मित्रानमित्रान्मध्यस्थान् [079.099]
परान्स्वांश्च पुनः पुनः [079.099]
अभ्यर्थनोपचारेण [079.099]
क्षामयेत्कुकृतं स्वकम् [079.099]
ततश्च प्रयतः कुर्याद् [079.100]
उत्सर्गं सर्वकर्मणाम् [079.100]
शुभाशुभानां दैत्येन्द्र [079.100]
वाक्यं चेदमुदाहरेत् [079.100]
परित्यजाम्यहं भोगांस् [079.101]
त्यजामि सुहृदो ऽखिलान् [079.101]
भोजनादि मयोत्सृष्टम् [079.101]
उत्सृष्टमनुलेपनम् [079.101]
स्रग्भूषणादिकं गेयं [079.102]
दानमादानमेव च [079.102]
होमादयः पदार्था ये [079.102]
याश्च नित्यक्रिया मम [079.102]
नैमित्तिकास्तथा काम्या [079.103]
वर्णधर्मास्तथोज्झिताः [079.103]
गुणधर्मादयो धर्मा [079.103]
याश्च काश्चिन्मम क्रियाः [079.103]
पद्भ्यां कराभ्यां विहरन् [079.104]
कुर्वन्वा कर्म न त्वहम् [079.104]
करिष्ये प्राणिनां पीडां [079.104]
प्राणिनः सन्तु निर्भयाः [079.104]
नभसि प्राणिनो ये तु [079.105]
ये जले ये च भूतले [079.105]
क्षितेरन्तरगा ये च [079.105]
ये च पाषाणसंपुटे [079.105]
ये धान्यादिषु वस्त्रेषु [079.106]
शयनेष्वासनेषु च [079.106]
ते स्वपन्तु विबुध्यन्तु [079.106]
सुखं मत्तो भयं विना [079.106]
न मे ऽस्ति बान्धवः कश्चिद् [079.107]
विष्णुं मुक्त्वा जगद्गुरुम् [079.107]
मित्रपक्षे च मे विष्णुर् [079.107]
अधश्चोर्ध्वं तथाग्रतः [079.107]
पार्श्वतो मूर्ध्नि पृष्ठे च [079.108]
हृदये वाचि चक्षुषि [079.108]
श्रोत्रादिषु च सर्वेषु [079.108]
मम विष्णुः प्रतिष्ठितः [079.108]
इति सर्वं समुत्सृज्य [079.109]
ध्यात्वा सर्वत्र चाच्युतम् [079.109]
वासुदेवेत्यविरतं [079.109]
नाम देवस्य कीर्तयन् [079.109]
दक्षिणाग्रेषु दर्भेषु [079.110]
शयीत प्राच्छिरास्ततः [079.110]
उदच्छिरा वा दैत्येन्द्र [079.110]
चिन्तयञ्जगतः पतिम् [079.110]
विष्णुं जिष्णुं हृषीकेशं [079.111]
केशवं मधुसूदनम् [079.111]

नारायणं नरं कृष्णं [079.111]
वासुदेवं जनार्दनम् [079.111]
वाराहं यज्ञपुरुषं [079.112]
पुण्डरीकाक्षमच्युतम् [079.112]
वामनं श्रीधरं श्रीशं [079.112]
नृसिंहमपराजितम् [079.112]
पद्मनाभमजं शौरिम् [079.113]
दामोदरमधोक्षजम् [079.113]
सर्वेश्वरेश्वरं शुद्धम् [079.113]
अनन्तं राममीश्वरम् [079.113]
चक्रिणं गदिनं शार्ङ्गिं [079.114]
शङ्खिनं गरुडध्वजम् [079.114]
किरीटकौस्तुभधरं [079.114]
प्रणमाम्यहमव्ययम् [079.114]
अहमत्र जगन्नाथे [079.115]
मयि चास्तु जनार्दनः [079.115]
आवयोरन्तरं मास्तु [079.115]
समीरनभसोरिव [079.115]
अयं विष्णुरयं शौरिर् [079.116]
अयं कृष्णः पुरो मम [079.116]
नीलोत्पलदलश्यामः [079.116]
पद्मपत्त्रोपमेक्षणः [079.116]
एष पश्यतु मामीशः [079.117]
पश्याम्यहमधोक्षजम् [079.117]
यतो न व्यतिरिक्तो ऽहं [079.117]
यन्मयो ऽहं यदाश्रयः [079.117]
इत्थं जपन्नेकमनाः [079.118]
स्मरन्सर्वेश्वरं हरिम् [079.118]
आसीनः सुखदुःखेषु [079.118]
समो मित्राहितेषु च [079.118]
ओं नमो वासुदेवायेत्य् [079.119]
एतद्वा सततं वदन् [079.119]
यद्वोदीरयितुं नाम [079.119]
समर्थस्तदुदीरयन् [079.119]
ध्यायेत देवदेवस्य [079.119]
रूपं विष्णोर्मनोरमम् [079.119]
प्रशान्तनेत्रभ्रूवक्रं [079.120]
शङ्खचक्रगदाधरम् [079.120]
श्रीवत्सवक्षसं चैव [079.120]
चतुर्बाहुं किरीटिनम् [079.120]
पीताम्बरधरं विष्णुं [079.121]
चारुकेयूरधारिणम् [079.121]
चिन्तयेच्च तदा रूपं [079.121]
मनः कृत्वैकनिश्चयम् [079.121]
यादृशे वा मनः स्थैर्यं [079.122]
रूपे बध्नाति चक्रिणः [079.122]
तदेव चिन्तयन्नाम [079.122]
वासुदेवेति कीर्तयेत् [079.122]
इत्तं जपन्स्मरन्वेत्थं [079.123]
स्वरूपं परमात्मनः [079.123]
आ प्राणोपरमाद्वीरस् [079.123]
तच्चित्तस्तत्परायणः [079.123]
निर्विकल्पेन मनसा [079.124]
यः स्मरेत्पुरुषोत्तमम् [079.124]
सर्वपातकयुक्तो ऽपि [079.124]
पुरुषः पुरुषर्षभ [079.124]
प्रयाति देवदेवेशे [079.124]
लयमीड्यतमे ऽच्युते [079.124]
यथाग्निस्तृणजालानि [079.125]
दहत्यनिलसंगतः [079.125]
तथानशनसंकल्पः [079.125]
पुंसां पापमसंशयम् [079.125]
विष्णोः संस्मरणे प्राप्य [079.*(136)]
लोकमनशने मृतः [079.*(136)]
एवमत्यन्तशस्तानां [079.*(136)]
कर्मणामसुरेश्वर [079.*(136)]
नास्ति सत्यात्परो धर्मो [079.126]
नास्त्यधर्म तथानृतात् [079.126]
नास्ति विद्यासमं चक्षुस् [079.126]
तपो नानशनात्परम् [079.126]
नास्ति ज्ञानसमं दानं [079.127]
न संतोषसमं सुखम् [079.127]
न चैवेर्ष्यासमं दुःखं [079.127]
तपो नानशनात्परम् [079.127]
नास्त्यरोगसमं धन्यं [079.128]
नास्ति गङ्गासमा सरित् [079.128]
नास्ति विष्णुसमं ध्येयं [079.128]
तपो नानशनात्परम् [079.128]
उत्क्रान्तिकाले भूतानां [079.129]
मुह्यन्ते चित्तवृत्तयः [079.129]
जराव्याधिविधीनानां [079.129]
किमु व्याध्यादिदोषतः [079.129]
अत्यन्तवयसा वृद्धया [079.130]
व्याधिना चातिपीडितः [079.130]

यदि स्थातुं न शक्नोति [079.130]
क्षितिस्थे दर्भसंस्तरे [079.130]
तत्किमन्यो ऽप्युपायो ऽस्ति [079.131]
न वानशनकर्मणि [079.131]
विफल्यं येन नाप्नोति [079.131]
तन्मे ब्रूहि पितामह [079.131]
नात्र भूमिर्न च कुशाः [079.132]
संस्तरश्च न कारणम् [079.132]
चित्तस्यालम्बनीभूतो [079.132]
विष्णुरेवात्र कारणम् [079.132]
भुञ्जन्नभुञ्जन्गाच्छंश्च [079.133]
स्वपंस्तिष्ठन्नथापि वा [079.133]
उत्क्रान्तिकाले गोविन्दं [079.133]
संस्मरंस्तन्मयो भवेत् [079.133]
किं जपैः किं भुवा कृत्यं [079.134]
किं कुशैर्दैत्यसत्तम [079.134]
तथापि कुर्वतो यस्य [079.134]
हृदये न जनार्दनः [079.134]
तस्मात्प्रधानमन्त्रोक्तं [079.135]
वासुदेवस्य कीर्तनम् [079.135]
तन्मयत्वेन दैत्येन्द्र [079.135]
तस्योपायश्च विस्तरः [079.135]
इत्येतत्कथितं सर्वं [079.136]
पृष्टो ऽहं यत्त्वया बले [079.136]
उत्क्रान्तिकाले स्मरणं [079.136]
किं भूयः कथयामि ते [079.136]
क्रियायोगस्त्वया पूर्वं [080.001]
ममोक्तो यः पितामह [080.001]
तमहं श्रोतुमिच्छामि [080.001]
फलं चास्य यथातथम् [080.001]
देवार्चां देवतागारे [080.002]
तन्मयत्वेन पूजयम् [080.002]
यथावच्चेतसो भूमिं [080.002]
करोति नियतो हि सः [080.002]
तपसा ब्रह्मचर्येण [080.003]
पुण्यस्वाध्यायसंस्तवैः [080.003]
क्रियायोगः स विद्वद्भिर् [080.003]
योगिनां समुदाहृतः [080.003]
तत्राहं श्रोतुमिच्छामि [080.004]
क्रियायोगस्थितो नरः [080.004]
यत्फलं समवाप्नोति [080.004]
कारयित्वा हरेर्गृहम् [080.004]
देवार्चां कारयित्वा वा [080.005]
यत्पुण्यं पुरुषो ऽश्नुते [080.005]
संपूजयित्वा विधिवद् [080.005]
अनुलिप्य च यत्फलम् [080.005]
कानि माल्यानि शस्तानि [080.006]
कानि नार्हन्ति केशवे [080.006]
के धूपाः कृष्णदयिताः [080.006]
के वर्ज्याश्च जगत्पतेः [080.006]
उपहारे फलं कीम्स्यात् [080.007]
किं फलं गीतवादिते [080.007]
घृतक्षीरादिना यच्च [080.007]
स्नापिते केशवे फलम् [080.007]
यच्चोपलेपने तात [080.008]
फलमभ्युक्षिते च यत् [080.008]
वासुदेवगृहे सर्वं [080.008]
तदशेषं वदस्व मे [080.008]
साधु वत्स यदेतत्त्वं [080.009]
वासुदेवस्य पृच्छसि [080.009]
शुश्रूषणविधौ पुण्यं [080.009]
तदिहैकमनाः शृणु [080.009]
ब्रह्मणा किल देवानाम् [080.010]
ऋषीणां च महात्मनाम् [080.010]
शुश्रूषणफलं विष्णोः [080.010]
प्रोक्तं दैत्यपते पुरा [080.010]
तेभ्यः सकाशान्मनुना [080.011]
प्राप्तं स्वारोचिषेण तु [080.011]
स्वारोचिषः स्वपुत्राय [080.011]
दत्तवानृतचक्षुषे [080.011]
ऋतचक्षुश्च भर्गवे [080.012]
शुक्रस्तस्मादवाप च [080.012]
ममाख्यातं च शुक्रेण [080.012]
यथावत्सुमहात्मना [080.012]
शुश्रूषवे महाभाग [080.013]
दैत्याचार्येण धीमता [080.013]
तदेतच्छ्रूयतां तात [080.013]
क्रियायोगाश्रितं फलम् [080.013]
ज्ञानयोगस्तु संयोगश् [080.014]
चित्तस्यैवात्मना तु यः [080.014]
यस्तु बाह्यार्थसापेक्षः [080.014]
स क्रियायोग उच्यते [080.014]
परमं कारणं योगो [080.015]
विमुक्तेर्दितिकेश्वर [080.015]

क्रियायोगश्च योगस्य [080.015]
परमं तात साधनम् [080.015]
यत्त्वेतद्भवता पृष्टं [080.016]
फलमन्विच्छता फलम् [080.016]
देवालयादिकरणे [080.016]
तदिहैकमनाः शृणु [080.016]
यस्तु देवालयं विष्णोर् [080.017]
दार्वं शैलमयं तथा [080.017]
कारयेन्मृन्मयं वापि [080.017]
शृणु तस्य बले फलं [080.017]
अहन्यहनि यज्ञेन [080.018]
यजतो यन्महाफलम् [080.018]
प्राप्नोति तत्फलं विष्णोर् [080.018]
यः कारयति मन्दिरम् [080.018]
कुलानां शतमागामि [080.019]
समतीतं तथा शतम् [080.019]
कारयन्भगवद्धाम [080.019]
नयत्यच्युतलोकताम् [080.019]
सप्तजन्मकृतं पापं [080.020]
स्वल्पं वा यदि वा बहु [080.020]
विष्णोरालयविन्यास- [080.020]
प्रारम्भादेव नश्यति [080.020]
सप्तलोकमयो विष्णुस् [080.021]
तस्य यः कुरुते गृहम् [080.021]
प्रतिष्ठां समवाप्नोति [080.021]
स नरः सप्तलौकिकीम् [080.021]
प्रशस्तदेशभूभागे [080.022]
यः शस्तं भवनं हरेः [080.022]
कारयत्यक्षयांल्लोकान् [080.022]
स नरः प्रतिपद्यते [080.022]
इष्टकाचयविन्यासो [080.023]
यावन्त्यृक्षाणि तिष्ठति [080.023]
तावद्वर्षसहस्राणि [080.023]
तत्कर्तुर्दिवि संस्थितिः [080.023]
प्रतिमां लक्षणवतीं [080.024]
यः कारयति मानवः [080.024]
केशवस्य स तल्लोकम् [080.024]
अक्षयं प्रतिपद्यते [080.024]
षष्टिं वर्षसहस्राणां [080.025]
सहस्राणि स मोदते [080.025]
स्वर्गौकसां निवासेषु [080.025]
प्रत्येकमरिसूदन [080.025]
प्रतिष्ठाप्य हरेरर्चां [080.026]
सुप्रशस्ते निवेशने [080.026]
पुरुषः कृतकृत्यत्वान् [080.026]
नैनं श्वोमरणं तपेत् [080.026]
ये भविष्यन्ति ये ऽतीता [080.027]
आकल्पात्पुरुषाः कुले [080.027]
तांस्तारयति संस्थाप्य [080.027]
देवस्य प्रतिमां हरेः [080.027]
अनुशस्ताः किल पुरा [080.028]
यमेन यमकिंकराः [080.028]
पाशोद्यतायुधा दैत्य [080.028]
प्रजासंयमने रताः [080.028]
विहरध्वं यथान्यायं [080.029]
नियोगो मे ऽनुपाल्यताम् [080.029]
नाज्ञाभङ्गं करिष्यन्ति [080.029]
भवतां जन्तवः क्वचित् [080.029]
केवलं ये जगद्धातुम् [080.030]
अनन्तं समुपाश्रिताः [080.030]
भवद्भिः परिहर्तव्यास् [080.030]
तेषां नास्त्यत्र संस्थितिः [080.030]
ये तु भागवता लोके [080.031]
तच्चित्तास्तत्परायणाः [080.031]
पूजयन्ति सदा विष्णुं [080.031]
ते वस्त्याज्याः सुदूरतः [080.031]
यस्तिष्ठन्प्रस्वपन्गच्छंस् [080.032]
तत्तिष्ठन्स्खलिते क्षुते [080.032]
संकीर्तयति गोविन्दं [080.032]
ते वस्त्याज्याः सुदूरतः [080.032]
नित्यनैमित्तिकैर्देवं [080.033]
ये यजन्ति जनार्दनम् [080.033]
नावलोक्य भवद्भिस्ते [080.033]
तत्तेजो हन्ति वो गतिम् [080.033]
ये धूपपुष्पवासोभिर् [080.034]
भूषणैश्चापि वल्लभैः [080.034]
अर्चयन्ति न ते ग्राह्या [080.034]
नराः कृष्णाश्रयोद्धताः [080.034]
उपलेपनकर्तारः [080.035]
संमार्जनपराश्च ये [080.035]
कृष्णालये परित्याज्यं [080.035]
तेषां त्रिपुरुषं कुलम् [080.035]
येन चायतनं विष्णोः [080.036]
कारितं तत्कुलोद्भवम् [080.036]

पुंसां शतं नावलोक्यं [080.036]
भवद्भिर्दुष्टचक्षुषा [080.036]
येनार्चा भगवद्भक्त्या [080.037]
वासुदेवस्य कारिता [080.037]
नरायुतं तत्कुलजं [080.037]
भवतां शासनातिगम् [080.037]
भवतां भ्रमतामत्र [080.038]
विष्णुसंश्रयमुद्रया [080.038]
विनाज्ञाभङ्गकृन्नैव [080.038]
भविष्यति नरः क्वचित् [080.038]
वत्स वैवस्वतस्यैताः [080.039]
श्रुत्वा गाथा मरीचिना [080.039]
पुरुकुत्साय कथिताः [080.039]
पार्थिवेन्द्राय धीमते [080.039]
एतां महाफलां यो ऽर्चां [080.040]
विष्णोह् कारयते नरः [080.040]
तवाख्यातं महाबाहो [080.040]
गृहकारयितुश्च यत् [080.040]
यज्ञा नराणां पापौघ- [080.041]
क्षालकाः सर्वकामदाः [080.041]
तथैवेज्यो जगद्धातुः [080.041]
सर्वयज्ञमयो हरिः [080.041]
स्थापितां प्रतिमां विष्णोः [081.001]
सम्यक्संपूज्य मानवः [081.001]
यं यं प्रार्थयते कामं [081.001]
तं तमाप्नोत्यसंशयम् [081.001]
यः स्नापयति देवस्य [081.002]
घृतेन प्रतिमां हरेः [081.002]
प्रस्थे प्रस्थे द्विजाग्र्याणां [081.002]
स ददाति गवां शतम् [081.002]
गवां शतस्य विप्राणां [081.003]
यद्दत्तस्य भवेत्फलम् [081.003]
घृतप्रस्थेन तद्विष्णोर् [081.003]
लभेत्स्नानोपयोगिना [081.003]
भूरिद्युम्नेन संप्राप्ता [081.004]
सप्तद्वीपा वसुंधरा [081.004]
घृताढकेन गोविन्द- [081.004]
प्रतिमास्नापनात्किल [081.004]
प्रतिमासं सिताष्टम्यां [081.005]
घृतेन जगतः पतिम् [081.005]
स्नापयित्वा समस्तेभ्यः [081.005]
पापेभ्यो विप्रमुच्यते [081.005]
द्वादश्यां पञ्चदश्यां च [081.006]
गव्येन हविषा हरेः [081.006]
स्नापनं दैत्यशार्दूल [081.006]
महापातकनाशनम् [081.006]
ज्ञानतो ऽज्ञानतो वापि [081.007]
यत्पापं कुरुते नरः [081.007]
तत्क्षालयति संध्यायां [081.007]
घृतेन स्नापयन्हरिम् [081.007]
सर्वयज्ञमयो विष्णुर् [081.008]
हव्यानां परमं घृतम् [081.008]
तयोरशेषपापानां [081.008]
क्षालकः संगमो ऽसुर [081.008]
येषु क्षीरवहा नद्यो [081.009]
ह्रदाः पायसकर्दमाः [081.009]
तांल्लोकान्पुरुषा यान्ति [081.009]
क्षीरस्नानकरा हरेः [081.009]
आह्लादं निर्वृतिं स्वास्थ्यम् [081.010]
आरोग्यं चारुरूपताम् [081.010]
सप्त जन्मान्यवाप्नोति [081.010]
क्षीरस्नानकरो हरेः [081.010]
दध्यादीनां विकाराणां [081.011]
क्षीरतः संभवो यथा [081.011]
तथैवाशेषकामानां [081.011]
क्षीरस्नापनतो हरेः [081.011]
यथा च विमलं ज्ञानं [081.012]
यथा निर्वृतिकारकम् [081.012]
तथास्य निर्मलं ज्ञानं [081.012]
भवत्यतिफलप्रदम् [081.012]
ग्रहानुकूलतां पुष्टिं [081.013]
प्रियत्वं चाखिले जने [081.013]
करोति भगवान्विष्णुः [081.013]
क्षीरस्नापनतोषितः [081.013]
सर्वो ऽस्य स्निग्धतामेति [081.014]
दृष्टमात्रः प्रसीदति [081.014]
घृतक्षीरेण देवेशे [081.014]
स्नापिते मधुसूदने [081.014]
अत्राप्युदाहरन्तीमं [081.015]
संवादं केशवाश्रितम् [081.015]
शाण्डिल्या सह कैकेय्याः [081.015]
सुमनायाः सुरालये [081.015]
स्वर्गे ऽतिशोभनां दृष्ट्वा [081.016]
कैकेयीं पतिना सह [081.016]

ब्राह्मणी शाण्डिली नाम [081.016]
पर्यपृच्छत विस्मिता [081.016]
शतशः सन्ति कैकेयि [081.017]
देवाः स्वर्गनिवासिनः [081.017]
देवपत्न्यस्तथैवैताः [081.017]
सिद्धाः सिद्धाङ्गनास्तथा [081.017]
न तेषामीदृशो गन्धो [081.018]
न कान्तिर्न सुरूपता [081.018]
न वाससां च शोभेयं [081.018]
यथा ते पतिना सह [081.018]
नैवाभरणजातानि [081.019]
तेषां भ्राजन्ति वै तथा [081.019]
यथा तव यथा पत्युस् [081.019]
तव स्वर्गनिवासिनः [081.019]
स्वस्थता चेतसश्चेयं [081.020]
युवयोरतिरिच्यते [081.020]
शक्राद्यानामपीसानां [081.020]
क्षयातिशयवर्जितः [081.020]
तपःप्रभावो दानं वा [081.021]
कर्म वा होमसंज्ञितम् [081.021]
युवयोर्यन्ममाचक्ष्व [081.021]
तत्सर्वं वरवर्णिनि [081.021]
यज्ञैर्यज्ञेश्वरो विष्णुर् [081.022]
आवाभ्यां यत्तु तोषितः [081.022]
स्वर्गप्राप्तिरियं तस्य [081.022]
कर्मणः फलमुत्तमम् [081.022]
सुरूपतां मनःप्रीति [081.023]
पश्यतां चारुवेषताम् [081.023]
यत्पृच्छसि महाभागे [081.023]
तदप्येषा वदामि ते [081.023]
तीर्थोदकैस्तथा स्नानैः [081.024]
स्नापितो ऽयं जनार्दनः [081.024]
तेन कान्तिरतीत्यैतान् [081.024]
देवांस्त्रिभुवनेश्वरान् [081.024]
मनःप्रसादः सौम्यत्वं [081.025]
शारीरा या च निर्वृतिः [081.025]
यत्प्रियत्वं च सर्वस्य [081.025]
तद्भृतस्नानजं फलम् [081.025]
यान्यभीष्टानि वासांसि [081.026]
यच्चाभीष्टं विभूषणम् [081.026]
रत्नानि यान्यभीष्टानि [081.026]
यत्प्रियं चानुलेपनम् [081.026]
ये धूपा यानि माल्यानि [081.027]
दयितान्यभवंस्तदा [081.027]
मम भर्तुस्तथैवास्य [081.027]
मम राज्यं प्रशासतः [081.027]
तानि सर्वाणि सर्वज्ञे [081.028]
सर्वकर्तरि केशवे [081.028]
दत्तानि तत्समुत्थो ऽयं [081.028]
गन्धभूषात्मको गुणः [081.028]
आहारा दयिता ये च [081.029]
पवित्राश्च निवेदिताः [081.029]
ते लोककर्त्रे क्षुणाय [081.029]
तृप्तिस्तद्गुणसंभवा [081.029]
स्वर्गकामेन मे भर्त्रा [081.030]
मया च शुभदर्शने [081.030]
कृतमेतदतो नाभूद् [081.030]
आवयोर्भवसंक्षयः [081.030]
ये त्वकामां नराः सम्यग् [081.031]
एतत्कुर्वन्ति शोभने [081.031]
तेषां ददाति विश्वेशो [081.031]
भगवान्मुक्तिमच्युतः [081.031]
एवमभ्यर्च्य गोविन्दं [081.032]
सर्वभूतेश्वरेश्वरम् [081.032]
प्राप्नोत्यभिमतान्कामान् [081.032]
दैत्याह सुमना यथा [081.032]
चन्दनागरुकर्पूर- [081.033]
कुङ्कुमोशीरपद्मकैः [081.033]
अनुलिप्तो हरिर्भक्त्या [081.033]
वरान्भोगान्प्रयच्छति [081.033]
कालेयकं तुङ्गकं च [081.034]
पद्मचन्दनमेव च [081.034]
नृणां भवन्ति रोगाय [081.034]
दत्तानि पुरुषोत्तमे [081.034]
तस्मादेभिर्न गोविन्दः [081.035]
पूजनीयो महासुर [081.035]
यान्यात्मनः सदेष्टानि [081.035]
तानि शस्तान्युपाकुरु [081.035]
तथैव शुभगन्धा ये [081.036]
धूपास्ते जगतः पतेः [081.036]
वासुदेवस्य धर्मज्ञैर् [081.036]
निवेद्या दानवेश्वर [081.036]
न शल्लकीजं नाक्षौलं [081.037]
न शुक्तासवसंभृतम् [081.037]

दद्यात्कृष्णाय धर्मज्ञो [081.037]
धूपानाराधनोद्यतः [081.037]
मालती मल्लिका चैव [081.038]
यूथिकाथातिमुक्तका [081.038]
पाटला करवीरश्च [081.038]
जवा पारन्तिरेव च [081.038]
कुब्जकस्तगरश्चैव [081.039]
कर्णिकारः कुरण्टकः [081.039]
चम्पको रोतकः कुन्दो [081.039]
बाणो वर्वरमालिकाः [081.039]
अशोकतिलका रोध्रास् [081.040]
तथा चैवाटरूषकः [081.040]
अमी पुष्पप्रकारास्तु [081.040]
शस्ताः केशवपूजने [081.040]
बिल्वपत्रं शमीपत्रं [081.041]
पत्रं भृङ्गारकस्य च [081.041]
तमालपत्रं च बले [081.041]
सदैव भगवत्प्रियम् [081.041]
तुलसीकालतुलसी- [081.042]
पत्रं भृङ्गरजस्य च [081.042]
केतकीपत्रपुष्पं च [081.042]
सद्यस्तुष्टिकरं हरेः [081.042]
पद्मान्यम्बुसमुत्थानां [081.043]
रक्तनीले तथोत्पले [081.043]
सितोत्पलं च कृष्णस्य [081.043]
दयितानि सदासुर [081.043]
नार्कं नोन्मत्तकं कांचित् [081.044]
तथैव गिरिकर्णिकाम् [081.044]
न कण्टकारिकापुष्पम् [081.044]
अच्युताय निवेदयेत् [081.044]
कौटजं शाल्मलीपुष्पं [081.045]
शैरीषं च जनार्दने [081.045]
निवेदिते भयं रोगं [081.045]
निःस्वतां च प्रयच्छति [081.045]
येषां न प्रतिषेधो ऽस्ति [081.046]
गन्धवर्णान्वितानि च [081.046]
तानि पुष्पाणि देयानि [081.046]
विष्णवे प्रभविष्णवे [081.046]
सुगन्धैश्च सुरामांसी- [081.047]
कर्पूरागरुचन्दनैः [081.047]
तथान्यैश्च शुभैर्द्रव्यैर् [081.047]
अर्चयेज्जगतः पतिम् [081.047]
दुकूलपटुकौशेय- [081.048]
वार्क्षकर्पासिकादिभिः [081.048]
वासोभिः पूजयेद्विष्णुं [081.048]
दैतेयेन्द्रात्मनः प्रियैः [081.048]
भक्ष्याणि यान्यभीष्टानि [081.049]
भोज्यान्यभिमतानि च [081.049]
फलं च वल्लभं यत्स्यात् [081.049]
तत्तद्देयं जनार्दने [081.049]
सुवर्णमणिमुक्तादि [081.050]
यच्चान्यदतिवल्लभम् [081.050]
तत्तद्देवातिदेवाय [081.050]
केशवाय निवेदयेत् [081.050]
आत्मानं केशवं मत्वा [081.051]
यद्यत्तस्यैव रोचते [081.051]
तत्तदव्यक्तरूपाय [081.051]
केशवाय निवेदयेत् [081.051]
चक्रवर्ती महावीर्यो [082.001]
मान्धाता युवनाश्वजः [082.001]
शशास स महाबाहुः [082.001]
सप्तद्वीपां वसुंधराम् [082.001]
अगायन्त च या गाथा [082.002]
ये पुराणविदो जनाः [082.002]
मान्धातरि महाबाहो [082.002]
यौवनाश्वे समाश्रिताः [082.002]
यावत्सूर्य उदेति स्म [082.003]
यावच्च प्रतितिष्ठति [082.003]
सर्वं तद्यौवनाश्वस्य [082.003]
मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते [082.003]
स यौवनगतः संराट् [082.004]
सप्तद्वीपवतीं महीम् [082.004]
शशास धर्मेण पुरा [082.004]
चक्रवर्ती महाबलः [082.004]
नान्यायकृन्न चाशक्तो [082.005]
न दरिद्रो न कीकटः [082.005]
तस्याभूत्पुरुषो राज्ये [082.005]
सम्यग्धर्मानुशासिनः [082.005]
चतस्रो गतयस्तस्य [082.006]
यौवनाश्वस्य धीमतः [082.006]
बभूवुरप्रतिहता [082.006]
हतारातिबलस्य वै [082.006]
तस्य भक्तिरतीवाभून् [082.007]
निसर्गादेव भूपतेः [082.007]

वासुदेवे जगद्धाम्नि [082.007]
सर्वकारणकारणे [082.007]
तस्य र्द्धिं महिमानं च [082.008]
विलोक्य पृथिवीपतेः [082.008]
न केवलं जनस्याभूत् [082.008]
तस्याप्यत्यन्तविस्मयः [082.008]
स चिन्तयामास नृपः [082.009]
समृद्ध्या विस्मितस्तया [082.009]
कथं स्यात्सम्पदेषा मे [082.009]
पुनरप्यन्यजन्मनि [082.009]
एवं सुबहुशो राजा [082.010]
दैत्येन्द्र सुमहाबलः [082.010]
चिन्तयन्नपि तन्मूलं [082.010]
न चासीन्निश्चयान्वितः [082.010]
यदा न निश्चयं राजा [082.011]
स ययौ युवनाश्वजः [082.011]
तदा पप्रच्छ धर्मज्ञान् [082.011]
स विप्रान्समुपागतान् [082.011]
वसिष्ठप्रमुखान्वत्स [082.012]
विविक्तान्तःपुरस्थितः [082.012]
प्रणिपत्य महाबाहुर् [082.012]
गृहीतासनसत्क्रियान् [082.012]
यदि सानुग्रहा बुद्धिर् [082.013]
भवतां मयि सत्तमाः [082.013]
तदहं प्रष्टुमिच्छामि [082.013]
किंचित्तद्वक्तुमर्हथ [082.013]
समेत्याखिलविज्ञानं [082.014]
सम्यग्धौतान्तरात्मभिः [082.014]
भवद्भिर्यद्यहं न स्यां [082.014]
विमलस्तन्महाद्भुतम् [082.014]
यद्यथा तन्मया पृष्टा [082.015]
भवन्तो मत्प्रसाधिताः [082.015]
वक्तुमर्हन्ति विद्वांसः [082.015]
सर्वस्यैवोपकारिणः [082.015]
यस्ते मनसि संदेहस् [082.016]
तं पृच्छाद्य महीपते [082.016]
गदिष्यामो यथान्यायं [082.016]
यत्ते सांशयिकं हृदि [082.016]
वयं हि नरशार्दूल [082.017]
भवता परितोषिताः [082.017]
सम्यक्प्रजाः पालयता [082.017]
सप्तद्वीपे महीतले [082.017]
सुतुष्टो ब्राह्मणो ऽश्नीयाच् [082.018]
छिन्द्याद्वा धर्मसंशयम् [082.018]
हितं वोपदिशेद्धर्मम् [082.018]
अहिताद्वा निवर्तयेत् [082.018]
विवक्षुमथ भूपालं [082.019]
भार्या तस्यैव धीमतः [082.019]
प्रणामपूर्वमाहेदं [082.019]
विनयात्प्रणयान्वितम् [082.019]
न स्त्रीणामवनीपाल [082.020]
वक्तुमीदृग्गिहेश्यते [082.020]
तथापि भूपते वक्ष्ये [082.020]
संपदीदृक्सुदुर्लभा [082.020]
भूयो ऽपि संशयं प्रष्टुम् [082.021]
अलमीश भवानृषीन् [082.021]
न त्वहं पुरुषव्याघ्र [082.021]
सदान्तःपुरचारिणी [082.021]
स प्रसादं यदि भवान् [082.022]
करोति मम पार्थिव [082.022]
तन्मदीयमृषीन्प्रष्टुं [082.022]
संशयं पार्थिवार्हसि [082.022]
ब्रूहि सुभ्रु मतं यत्ते [082.023]
प्रष्टव्या यन्मया द्विजाः [082.023]
भूयो ऽहमात्मसंदेहं [082.023]
प्रक्ष्याम्येतान्द्विजोत्तमान् [082.023]
श्रूयन्ते पृथिवीपाल [082.024]
नृप ये च पुरातनाः [082.024]
तेषां न संपद्भूपाल [082.024]
यथा तव किलाभवत् [082.024]
तदीदृक्संपदां धाम [082.025]
त्वमशेषक्षितीश्वरः [082.025]
येन कर्मविपाकेन [082.025]
तद्वदन्तु महर्षयः [082.025]
अहं च भवतो भार्या [082.026]
सर्वसीमन्तिनी भुवि [082.026]
विधिना केन तपसा [082.026]
नियुक्ता भवतो गृहे [082.026]
अतीव कर्मणा येन [082.026]
तद्विज्ञाने कुतूहलम् [082.026]
तारतम्यतयेशित्वम् [082.027]
अन्येष्वपि हि विद्यते [082.027]
निरस्तातिशयत्वेन [082.027]
नूनं नाल्पेन कर्मणा [082.027]

तदन्यजन्मचरितं [082.028]
नरनाथ निजं भवान् [082.028]
मुनीन्पृच्छतु या चाहं [082.028]
यन्मया च पुरा कृतम् [082.028]
स तथोक्तस्तया राजा [082.029]
पत्न्या विस्मितमानसः [082.029]
मुनीनां पुरतो भार्यां [082.029]
प्रशंसन्वाक्यमब्रवीत् [082.029]
साधु देवि मतं यन्मे [082.030]
त्वया तदिदमीरितम् [082.030]
सत्यं मुनिवचः पुंसाम् [082.030]
अर्धं वै गृहिणी यथा [082.030]
ममाप्येतदभिप्रेतम् [082.031]
इमान्प्रष्टुं महामुनीन् [082.031]
यत्त्वयाभिहितं भद्रे [082.031]
मत्स्वभावानुयातया [082.031]
सो ऽहमेतन्महाभागे [082.032]
प्रक्ष्याम्येतान्महामुनीन् [082.032]
नैषामविदितं किंचित् [082.032]
त्रिषु लोकेषु विद्यते [082.032]
एवमुक्त्वा प्रियां भार्यां [082.033]
प्रणिपत्य च तानृषीन् [082.033]
यथावदेतदखिलं [082.033]
पप्रच्छासुरसत्तम [082.033]
भगवन्तो ममाशेषं [082.034]
प्रसादाहृतचेतसः [082.034]
कथयन्तु यथावृत्तं [082.034]
यन्मया सुकृतं कृतम् [082.034]
को ऽहमासं पुरा विप्राः [082.035]
किं च कर्म मया कृतम् [082.035]
किं वानया सुचार्वङ्ग्या [082.035]
मम पत्न्या कृतं द्विजाः [082.035]
येनावयोरियं स्फीतिर् [082.036]
मर्त्यलोके सुदुर्लभा [082.036]
चत्वारश्चाप्रतिहता [082.036]
गतयो मम गच्छतः [082.036]
अशेषा भूभृतो वश्याः [082.037]
कोशस्यान्तो न विद्यते [082.037]
बलं चैवाप्रतिहतं [082.037]
शरीरारोग्यमुत्तमम् [082.037]
अतिभाति च मे कान्त्या [082.038]
भार्येयमखिलं जगत् [082.038]
ममापि वपुषस्तेजो [082.038]
न कश्चित्सहते द्विजाः [082.038]
सो ऽहमिच्छामि विज्ञातुं [082.039]
तथैवेयमनिन्दिता [082.039]
निजानुष्ठानमखिलं [082.039]
यस्याशेषमिदं फलम् [082.039]
इति प्रष्टा नरेन्द्रेण [082.040]
समस्तास्ते तपोधनाः [082.040]
वसिष्ठं चोदयामासुः [082.040]
कथ्यतामिति भूभृतः [082.040]
चोदितः सो ऽपि धर्मज्ञैर् [082.041]
मैत्रावरुणिरात्मवान् [082.041]
योगमास्थाय सुचिरं [082.041]
यथावद्यतमानसः [082.041]
ज्ञातवान्नृपतेस्तस्य [082.041]
पूर्वदेहविचेष्टितम् [082.041]
स तमाह मुनिर्भूपं [082.042]
विदितार्थो महासुर [082.042]
मान्धातारं महाबुद्धिं [082.042]
सपत्नीकमिदं वचः [082.042]
शृणु भूपाल सकलं [082.043]
यस्येदं कर्मणः फलम् [082.043]
तव राज्यादिकं सुभ्रूर् [082.043]
येयं चासीन्महीपते [082.043]
त्वमासीः शूद्रजातीयः [082.044]
परहिंसापरायणः [082.044]
वाक्क्रूरो दण्डपारुष्यो [082.044]
निःस्नेहः सर्वजन्तुषु [082.044]
तथेयं भवतो भार्या [082.045]
पूर्वमप्यायतेक्षणा [082.045]
द्वेष्या बभूव तच्चित्ता [082.045]
तव शुश्रूषणे रता [082.045]
पतिव्रता महाभागा [082.046]
भर्त्स्यमानाप्यनिष्ठुरा [082.046]
त्वद्वाक्यादनु सर्वेषु [082.046]
वीरकर्मसु चोद्यता [082.046]
नैष्ठुर्यादसहायस्य [082.047]
त्यज्यमानस्य बन्धुभिः [082.047]
क्षयं जगाम यो ऽर्थो ऽभूत् [082.047]
संचितः प्रपितामहैः [082.047]
तस्मिन्क्षीणे कृषिपरस् [082.048]
त्वमासीः पृथिवीपते [082.048]

सापि कर्मविपाकेन [082.048]
कृषिर्विफलतां गता [082.048]
ततो निःस्वं परिक्षीणं [082.049]
परेषां भृत्यतां गतम् [082.049]
तत्याज साध्वी वेयं त्वां [082.049]
त्यज्यमानापि पार्थिव [082.049]
अनया च समं साध्व्या [082.050]
विष्णोरावसथे त्वया [082.050]
कृतं शुश्रूषणं वीर [082.050]
परिव्राड्ब्रह्मचारिणाम् [082.050]
भग्नेहः सर्वकामेभ्यस् [082.051]
तन्मयस्त्वं तदर्पणः [082.051]
अनन्यगतिरेकस्थस् [082.051]
तस्मिन्नायतने हरेः [082.051]
तद्वृत्तिलिप्सुः शुश्रूषां [082.052]
जनरञ्जनहेतुकः [082.052]
कृतवान्योगिनां वीर [082.052]
कृष्णस्य जगतः पतेः [082.052]
वासुदेवाजिरे नित्यं [082.053]
कृतं संमार्जनं त्वया [082.053]
तथैवाभ्युक्षणं वीर [082.053]
नित्यं चैवानुलेपनम् [082.053]
पत्न्यानया च धर्मज्ञ [082.053]
यष्मच्चित्तानुवृत्तया [082.053]
अहन्यहनि तत्कर्म [082.054]
युवयोर्नृप कुर्वतोः [082.054]
तत्र चैतन्मयत्वेन [082.054]
पापहानिरजायत [082.054]
विष्णोः कार्यं मया कार्यं [082.055]
योगिशुश्रूषणं तथा [082.055]
न प्रभातं प्रभातं तु [082.055]
चिन्तेयमभवन्निशि [082.055]
एवमायतनं रम्यम् [082.056]
इत्येवं च सुखावहम् [082.056]
स्थैर्यं न चैवमेतत्स्याद् [082.056]
इत्यासीत्ते मनः सदा [082.056]
योगिनां सुखदं त्वेवं [082.057]
कर्मैवं नैवमित्यपि [082.057]
तव चित्तमभूत्तत्र [082.057]
योगिकर्मण्यहर्निशम् [082.057]
एवं तन्मनसस्तत्र [082.058]
कृतोद्योगस्य पार्थिव [082.058]
भृत्यावसायिनः सम्यग् [082.058]
यथोक्ताधिककारिणः [082.058]
स्मरतः पुण्डरीकाक्षं [082.059]
कार्येणातिदृढात्मनः [082.059]
निःशेषमुपशान्तं तत् [082.059]
पापं योगिनिषेवणात् [082.059]
ततो ऽधिकं पुरस्तस्माद् [082.060]
आदरादनुलेपनम् [082.060]
संमार्जनं च बहुशः [082.060]
सपत्निकेन ते कृतम् [082.060]
तत्रागतश्च सौवीरः [082.061]
पुरुजिन्नाम भूपतिः [082.061]
महासैन्यपरीवारः [082.061]
प्रभूतगजवाहनः [082.061]
सर्वसंपदुपेतं तं [082.062]
सर्वाभरणभूषितम् [082.062]
वृतं भार्यासहस्रेण [082.062]
दृष्ट्वा स्रक्चन्दनोज्ज्वलम् [082.062]
स्पृहा कृता त्वया तत्र [082.062]
चारुमौलिनि पार्थिवे [082.062]
सर्वकामप्रदं कर्म [082.063]
देवदेवस्य कुर्वता [082.063]
तेनैतदखिलं राज्यम् [082.063]
अशेषद्वीपवत्तव [082.063]
तेजश्चैवाधिकं यत्ते [082.064]
तथैतच्छृणु पार्थिव [082.064]
योगप्रभावोपलब्धं [082.064]
कथयाम्यखिलं तव [082.064]
तत्रैवावसथे दीपः [082.065]
प्रशान्तः स्नेहसंक्षयात् [082.065]
निजभोजनतैलेन [082.065]
पुनः प्रज्वालितस्त्वया [082.065]
अनया चोत्तरीयान्त- [082.066]
चीरवर्त्युपबृंहितः [082.066]
तव पत्न्या स जज्वाल [082.066]
कान्तिरस्यास्ततो ऽधिका [082.066]
तवाप्यखिलभूपाल- [082.067]
मनःक्षोभकरं ततः [082.067]
तेजो नरेन्द्र न स्याच्च [082.067]
किमाराध्य जनार्दनम् [082.067]
एवं नरेन्द्र शूद्रत्वाद् [082.068]
विष्णुकर्मपरायणः [082.068]

तन्मयत्वेन संप्राप्तो [082.068]
महिमानमनुत्तमम् [082.068]
किं पुनर्यो नरो भक्त्या [082.069]
विष्णुशुश्रूषणादृतः [082.069]
करोति सततं पूजां [082.069]
निष्कामो नान्यमानसः [082.069]
स त्वमृद्धिमिमां लब्ध्वा [082.070]
सर्वलोकेश्वरेश्वरम् [082.070]
पूजयाच्युतमीशेशं [082.070]
तमाराध्य न सीदति [082.070]
पुष्पैर्धूपैस्तथा गन्धैर् [082.071]
दीपवस्त्रानुलेपनैः [082.071]
आराधयाच्युतं तद्वद् [082.071]
वेश्मसंमार्जनादिभिः [082.071]
यद्यदिष्टतमं किंचिद् [082.072]
यद्यदत्यन्तदुर्लभम् [082.072]
तत्तद्दात्त्वा जगद्धात्रे [082.072]
वैकुण्ठाय न सीदति [082.072]
सुगन्धागरुकर्पूर- [082.073]
चन्दनाक्षोदकुंकुमैः [082.073]
वासोभिर्विविधैर्धूपैः [082.073]
पुष्पस्रग्चामरैर्ध्वजैः [082.073]
अन्नोपहारैर्विविधैर् [082.074]
घृतक्षीराभिषेचनैः [082.074]
गीतवादितनृत्याद्यैस् [082.074]
तोषयस्वाच्युतं नृप [082.074]
पुण्यरात्रिषु गोविन्दं [082.075]
नृत्यगीतरवोज्ज्वलैः [082.075]
भूप जागरणैर्भक्त्या [082.075]
तोषयाच्युतमव्ययम् [082.075]
एवं संतोष्यते भक्त्या [082.076]
भगवान्भवभङ्गकृत् [082.076]
भूप भागवतैर्भूत- [082.076]
भव्यकृत्केशवो नरैः [082.076]
येषां न वित्तं तैर्भक्त्या [082.077]
मार्जनाद्युपलेपनैः [082.077]
तोषितो भगवान्विष्णुर् [082.077]
ददात्यभिमतं फलम् [082.077]
देवकर्मासमर्थाणां [082.078]
प्राणिनां स्मृतिसंस्तवैः [082.078]
तोषितो ऽभिमतान्कामान् [082.078]
प्रयच्छति जनार्दनः [082.078]
नैष वित्तैर्न रत्नौघैः [082.079]
पुष्पधूपानुलेपनैः [082.079]
सद्भावेनैव गोविन्दस् [082.079]
तोषमायाति संस्मृतः [082.079]
त्वयैकाग्रमनस्केन [082.080]
गृहसंमार्जनादिकम् [082.080]
कृत्वाल्पमीदृशं प्राप्तं [082.080]
राज्यमत्यन्तदुर्लभम् [082.080]
प्राप्तोपकरणो यस्त्वम् [082.081]
एकाग्रमतिरच्युतम् [082.081]
तोषयिष्यसि नेन्द्रो ऽपि [082.081]
भविता तेन ते समः [082.081]
तस्मात्त्वमनया देव्या [082.082]
सहात्यन्तविनीतया [082.082]
केशवाराधने यत्नं [082.082]
कुरु धर्मभृतां वर [082.082]
ततः प्राप्स्यसि भक्त्यैव [082.*(137)]
यत्तपोभिः सुदुर्लभम् [082.*(137)]
एतन्मुनेर्वसिष्ठस्य [083.001]
निशाम्य वचनं नृपः [083.001]
भार्यासहायः स तदा [083.001]
संप्रहृष्टतनूरुहः [083.001]
कृतकार्यमिवात्मानं [083.002]
मन्यमानो ऽसुरोत्तम [083.002]
उवाच प्रणतो भूत्वा [083.002]
मान्धाता वारुणिं वचः [083.002]
यथामरत्वं संप्राप्य [083.003]
यथा वा ब्रह्म शाश्वतम् [083.003]
परं निर्वाणमाप्नोति [083.003]
तथाहं वचसा तव [083.003]
कृतकृत्यः सुखी चास्मि [083.004]
निर्वृतिं परमां गतः [083.004]
अज्ञानतमसाछन्ने [083.004]
यत्प्रदीपस्त्वयैधितः [083.004]
अहमेषा च तन्वङ्गी [083.005]
विभूतिभ्रंसभीरुकौ [083.005]
आढ्यावापादितौ ब्रह्मन्न् [083.005]
इहाद्य वचसा तव [083.005]
संपदां कथितं बीजम् [083.006]
आवयोर्भवता मुने [083.006]
तदुप्तावुद्यतावावां [083.006]
विजानीहि द्विजोत्तम [083.006]

न रत्नैर्न च वित्तौघैर् [083.007]
न च पुष्पानुलेपनैः [083.007]
आराध्यते जगन्नाथो [083.007]
भावशून्यैर्जनार्दनः [083.007]
बाह्यार्थनिरपेक्षैश्च [083.008]
मनसैव मनोगतिः [083.008]
निःस्वैराराध्यते देवो [083.008]
विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः [083.008]
सर्वमेतन्मया ज्ञातं [083.009]
यत्त्वमात्थ महामुने [083.009]
यत्त्वां पृच्छामि तन्मे त्वं [083.009]
प्रसादसुमुखो वद [083.009]
कानि व्रतानि यैर्देवो [083.010]
नरैः स्त्रीभिश्च केशवः [083.010]
तोषमाराधितो ऽभ्येति [083.010]
कैश्च दानैर्महामुने [083.010]
रहस्यानि च देवस्य [083.011]
प्रीतये यानि चक्रिणः [083.011]
तान्यशेषाणि मे ब्रूहि [083.011]
कृष्णाराधनकाङ्क्षिणः [083.011]
शृणु भूपाल यैर्विष्णुर् [083.012]
नरैराराध्यते व्रतैः [083.012]
नारीभिश्चातिघोरे ऽस्मिन् [083.012]
पतिताभिर्भवार्णवे [083.012]
समभ्यर्च्य जगन्नाथं [083.013]
वासुदेवं समाधिना [083.013]
एकमश्नाति यो भक्तं [083.013]
द्वितीयं ब्राह्मणात्मकम् [083.013]
करोति केशवप्रीत्यै [083.013]
कार्त्तिकं मासमात्मवान् [083.013]
पूर्वे वयसि यत्तेन [083.014]
ज्ञानतो ऽज्ञानतो ऽपि वा [083.014]
पापमाचरितं तस्मान् [083.014]
मुच्यते नात्र संशयः [083.014]
अनेनैव विधानेन [083.015]
मार्गशीर्षे ऽपि माधवम् [083.015]
समभ्यर्च्यैकभक्तं वै [083.015]
वर्णिभ्यो यः प्रयच्छति [083.015]
भगवत्प्रीणनार्थाय [083.015]
फलं तस्य शृणुष्व मे [083.015]
मध्ये वयसि यत्पापं [083.016]
योषिता पुरुषेण वा [083.016]
कृतं तस्माच्च तेनोक्तो [083.016]
विमोक्षः परमात्मना [083.016]
तथा चैवैकभक्तं वै [083.017]
वर्णाग्रेभ्यः प्रयच्छति [083.017]
पुण्डरीकाक्षमभ्यर्च्य [083.017]
पौषमासे महीपते [083.017]
तत्प्रीणनाय यत्पापं [083.018]
वार्द्धिके तेन वै कृतम् [083.018]
स तस्मान्मुच्यते राजन् [083.018]
पुमान्योषिदथापि वा [083.018]
त्रैमासिकव्रतमिदं [083.019]
यः करोति नरेश्वर [083.019]
स विष्णुप्रीणनात्पापैर् [083.019]
लघुभिर्विप्रमुच्यते [083.019]
द्वितीये वत्सरे राजन् [083.020]
मुच्यते चोपपातकैः [083.020]
तद्वत्तृतीये ऽपि कृतं [083.020]
महापातकनाशनम् [083.020]
व्रतमेतन्नरैः स्त्रीभिस् [083.021]
त्रिभिर्मासैरनुष्ठितम् [083.021]
त्रिभिः संवत्सरैरेव [083.021]
प्रददाति फलं नृणाम् [083.021]
त्रिभिर्मासैस्त्रिरवस्थास् [083.022]
त्रिविधात्पातकान्नृप [083.022]
त्रीणि नामानि देवस्य [083.022]
मोचयन्ति त्रिवार्षिकैः [083.022]
यतस्ततो व्रतमिदं [083.023]
त्रिक्रमं समुदाहृतम् [083.023]
सर्वपापप्रशमनं [083.023]
केशवाराधनं परम् [083.023]
शृणुष्व च महीपाल [084.001]
व्रतं विष्णुपदत्रयम् [084.001]
सर्वपापप्रशमनं [084.001]
यज्जगाद पुरा हरिः [084.001]
प्राचेतसाय दक्षाय [084.002]
दक्षश्चाह विवस्वते [084.002]
विवस्वानलसिध्राय [084.002]
अलसिध्रो ऽसिताय च [084.002]
असितेन समाख्यातम् [084.003]
अल्पायासं महाफलम् [084.003]
तदिदं श्रूयतां सम्यग् [084.003]
व्रतं विष्णुपदत्रयम् [084.003]

दक्षः प्रजापतिः पूर्वं [084.004]
विष्णुमाराध्य पृष्टवान् [084.004]
बहुशस्तु विपन्नायां [084.004]
सृष्टावरिनिसूदन [084.004]
भगवन्सर्वकर्तृत्वं [084.005]
ममादिष्टं स्वयंभुवा [084.005]
ब्रह्मणा देवदेवेश [084.005]
तवादेशेन केशव [084.005]
विपन्ना च जगन्नाथ [084.006]
मम सृष्टिः कृता कृता [084.006]
पूर्वकर्मविपाकेन [084.006]
व्याकुलश्चास्मि चेतसा [084.006]
यथा च देव मुच्येय [084.007]
अस्मात्संसारसंकटात् [084.007]
विषयासङ्गविषमात् [084.007]
तन्ममाज्ञापयाच्युत [084.007]
इत्येवमुक्तो दक्षेण [084.008]
देवदेवो जनार्दनः [084.008]
आचष्ट दुःखक्षयदं [084.008]
व्रतं विष्णुपदत्रयम् [084.008]
सर्वारम्भविनिष्पत्ति- [084.009]
कारकं पापनाशनम् [084.009]
संसारोच्छेदकं धीरैर् [084.009]
आचीर्णं स्थिरबुद्धिभिः [084.009]
तदहं तव राजेन्द्र [084.010]
व्रतानामुत्तमोत्तमम् [084.010]
कथयामि समाचष्ट [084.010]
यथा पूर्वं ममासितः [084.010]
आषाढे मासि पूर्वासु [084.011]
तथाषाढासु पार्थिव [084.011]
समभ्यर्च्य जगन्नाथम् [084.011]
अच्युतं नियतः शुचिः [084.011]
पुष्पैर्हृद्यैस्तथा धूपैर् [084.012]
गन्धैः सागरुचन्दनैः [084.012]
यथाविभवतश्चान्यैर् [084.012]
अन्नैर्वासोभिरेव च [084.012]
क्षीरस्नेहस्थितं तद्वत् [084.013]
पैष्टं विष्णुपदद्वयम् [084.013]
समभ्यर्च्य यथान्यायं [084.013]
केशवस्याग्रतो न्यसेत् [084.013]
यवांश्च दद्याद्विप्राय [084.014]
भूगतिः प्रीयतामिति [084.014]
नक्तं भुञ्जीत राजेन्द्र [084.014]
हविष्यान्नं सुसंस्कृतम् [084.014]
तथोत्तरास्वाषाढासु [084.015]
श्रावणे मासि मानवः [084.015]
तथैवाभ्यर्च्य गोविन्दं [084.015]
तद्वद्विष्णुपदद्वयम् [084.015]
विप्राय च यवान्दद्यात् [084.016]
प्रीणयित्वा च भूगतिम् [084.016]
नक्तं भूञ्जीत राजेन्द्र [084.016]
नरो योषिदथापि वा [084.016]
प्राप्ते भाद्रपदे मासि [084.017]
पूर्वभद्रपदासु च [084.017]
तथैवाभ्यर्च्य गोविन्दं [084.017]
तद्वद्विष्णुपदद्वयम् [084.017]
विप्राय च यवान्दत्त्वा [084.018]
प्रीणयित्वा भुवोगतिम् [084.018]
भुञ्जीत गोरसप्रायं [084.018]
नरो योषिदथापि वा [084.018]
तद्वदाश्वयुजे दानं [084.019]
तद्वद्गोविन्दपूजनम् [084.019]
पदद्वयस्य पूजां च [084.019]
प्रीणनं च भुवोगतेः [084.019]
तथैव नक्तं भुञ्जीत [084.020]
गोरसं मौनमास्थितः [084.020]
स्त्री वा राजेन्द्र पूर्वासु [084.020]
तथा भद्रपदासु वै [084.020]
फाल्गुने फल्गुनी पूर्वा [084.021]
भवती ह यदा नृप [084.021]
त्रिविक्रमं तदा देवं [084.021]
पूर्वोक्तविधिनार्चयेत् [084.021]
पदद्वयं च देवस्य [084.022]
सम्यगभ्यर्च्य पार्थिव [084.022]
हिरण्यं दक्षिणां दत्त्वा [084.022]
स्वर्गतिः प्रीयतामिति [084.022]
नक्तं भुञ्जीत राजेन्द्र [084.023]
वह्निपाकविवर्जितम् [084.023]
एष एवोत्तरायोगे [084.023]
चैत्रे मासे विधिः स्मृतः [084.023]
एतज्जगाद गोविन्दः [084.024]
पुरा दक्षाय पृच्छते [084.024]
सर्वपापहरं पुण्यं [084.024]
व्रतं विष्णुपदत्रयम् [084.024]

यथोक्तमेतद्यो भक्तो [084.025]
करोति नृपसत्तम [084.025]
सर्वकामानवाप्नोति [084.025]
केशवस्य वचो यथा [084.025]
अपुत्रो लभते पुत्रम् [084.026]
अपतिर्लभते पतिम् [084.026]
समागमं प्रोषितैश्च [084.026]
तथा प्राप्नोति बान्धवैः [084.026]
द्रव्यमैश्वर्यमारोग्यं [084.027]
सौभाग्यं चारुरूपताम् [084.027]
प्राप्नुवन्त्यखिलानेतान् [084.027]
पूजयित्वा पदत्रयम् [084.027]
यान्यान्कामान्नरः स्त्री वा [084.028]
हृदयेनाभिवाञ्छन्ति [084.028]
तांस्तांश्चाप्नोति निष्कामो [084.028]
विष्णुलोकं च गच्छति [084.028]
पूर्वं कृत्वापि पापानि [084.029]
नरः स्त्री वा नराधिप [084.029]
पदत्रयव्रतं चीर्त्वा [084.029]
मुच्यते सर्वकिल्बिषैः [084.029]
विष्णोराराधनार्थाय [085.001]
यानि दानानि सत्तम [085.001]
देयानि तान्यशेषाणि [085.001]
ममाचक्ष्व द्विजोत्तम [085.001]
येन चैव विधानेन [085.002]
दानं पुंसः सुखावहम् [085.002]
प्रीणनाय च कृष्णस्य [085.002]
तन्ममाख्याहि विस्तरात् [085.002]
कृतोपवासः संप्राश्य [085.003]
पञ्चगव्यं नरेश्वर [085.003]
घृतक्षीराभिषेकं च [085.003]
कृत्वा विष्णोः समाहितः [085.003]
समभ्यर्च्य च गोविन्दं [085.004]
पुष्पादिभिररिंदम [085.004]
उदङ्मुखीमर्चयित्वा [085.004]
तथा गृष्टिं पयस्विनीम् [085.004]
सपुत्रां वस्त्रसंवीतां [085.005]
सितयज्ञोपवीतिनीम् [085.005]
स्वर्णशृङ्गीं शुभाकारां [085.005]
हिरण्योपरिसंस्थिताम् [085.005]
हिरण्यं वाचयित्वाग्रे [085.006]
ब्राह्मणायोपपादयेत् [085.006]
इमां त्वं प्रतिगृह्णीष्व [085.006]
गोविन्दः प्रीयतामिति [085.006]
सम्यगुच्चार्य तं विप्रं [085.007]
गोविन्दं नृप कल्पयेत् [085.007]
अनुव्रजेच्च गच्छन्तं [085.007]
पदान्यष्टौ नराधिप [085.007]
अनेन विधिना धेनुं [085.008]
यो विप्राय प्रयच्छति [085.008]
गोविन्दप्रीणनाद्राजन् [085.008]
विष्णुलोकं च गच्छति [085.008]
सप्तावरांस्तथा पूर्वान् [085.009]
सप्तात्मानं च मानवः [085.009]
सप्तजन्मकृतात्पापान् [085.009]
मोचयत्यवनीपते [085.009]
पदे पदे च यज्ञस्य [085.010]
गोसवस्य स मानवः [085.010]
फलमाप्नोति राजेन्द्र [085.010]
दक्षायैवं जगौ हरिः [085.010]
सर्वकामसमृद्धस्य [085.011]
सर्वकालेषु पार्थिव [085.011]
भवत्यघौघापहरा [085.011]
यावदिन्द्राश्चतुर्दश [085.011]
सर्वेषामेव पापानां [085.012]
कृतानामविजानता [085.012]
प्रायश्चित्तमिदं शस्तम् [085.012]
अनुतापोपवृंहितम् [085.012]
इक्ष्वाकुनैषा राजेन्द्र [085.013]
पूर्वं दत्ता महात्मना [085.013]
ततः स लोकानमलान् [085.013]
प्राप्तवानवनीपतिः [085.013]
तथैवान्यैर्महीपालैर् [085.014]
द्विजवैश्यादिभिस्तथा [085.014]
लोकाः कामदुघाः प्राप्ता [085.014]
दत्त्वेदृग्विधिना नृप [085.014]
तिलधेनुं प्रवक्ष्यामि [086.001]
केशवप्रीणनाय या [086.001]
दत्ता भवति यश्चास्या [086.001]
नरेन्द्र विधिरुत्तमः [086.001]
फलमाप्नोति राजेन्द्र [086.*(139)]
तद्वद्वा विधिवत्तदा [086.*(139)]
यां दत्त्वा ब्रह्महा गोघ्नः [086.002]
पितृघ्नो गुरुतल्पगः [086.002]

आगारदाही गरदः [086.002]
सर्वपापरतो ऽपि वा [086.002]
महापातकयुक्तो यो [086.003]
युक्तो यश्चोपपातकैः [086.003]
स मुच्यते ऽखिलैः पापैर् [086.003]
विष्णुलोकं स गच्छति [086.003]
स्वनुलिप्ते महीपृष्टे [086.004]
वस्त्राजिनसमावृते [086.004]
धेनुं तिलमयीं कृत्वा [086.004]
सर्वरत्नैः समन्विताम् [086.004]
सुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां [086.005]
गन्धघ्राणवतीं शुभाम् [086.005]
मृष्टान्नजिह्वां कुर्वीत [086.005]
गुडास्यां सूत्रकम्बलाम् [086.005]
इक्षुपादां ताम्रपृष्ठां [086.006]
कुर्यान्मुक्ताफलेक्षणाम् [086.006]
प्रशस्तपत्रश्रवणां [086.006]
फलदन्तवतीं शुभाम् [086.006]
स्रग्दामपुच्छां कुर्वीत [086.007]
नवनीतस्तनान्विताम् [086.007]
फलैर्मनोहरैर्भक्षैर् [086.007]
मणिमुक्ताफलान्विताम् [086.007]
तिलद्रोणेन कुर्वीत [086.007]
आढकेन तु वत्सकम् [086.007]
शुभवस्त्रयुगच्छन्नां [086.008]
चारुच्छत्रसमन्विताम् [086.008]
ईदृक्संस्थानसंपन्नां [086.008]
कृत्वा श्राद्धसमन्वितः [086.008]
कांस्योपदोहनां दद्यात् [086.008]
केशवः प्रीयतामिति [086.008]
सम्यगुच्चार्य विधिना [086.009]
दत्त्वैतेन नराधिप [086.009]
सर्वपापविनिर्मुक्तः [086.009]
पितरं सपितामहम् [086.009]
प्रपितामहं तथा पूर्वं [086.010]
पुरुषाणां चतुष्टयम् [086.010]
आत्मानं तनयं पौत्रं [086.010]
तदधस्तु चतुष्टयम् [086.010]
तारयत्यवनीपाल [086.010]
तिलधेनुप्रदो नरः [086.010]
यश्च गृह्णाति विधिवत् [086.011]
तस्याप्येवंविधान्कुलान् [086.011]
चतुर्दश तथा चैव [086.011]
ददतश्चानुमोदकाः [086.011]
दीयमानां प्रपश्यन्ति [086.012]
तिलधेनुं च ये नराः [086.012]
ते ऽप्यशेषाघनिर्मुक्ताः [086.012]
प्रयान्ति परमां गतिम् [086.012]
प्रशान्ताय सुशीलाय [086.013]
तथामत्सरिणे बुधः [086.013]
तिलधेनुं नरो दद्याद् [086.013]
वेदस्नाताय धर्मिणे [086.013]
त्रिरात्रं यस्तिलाहारस् [086.014]
तिलधेनुं प्रयच्छति [086.014]
दत्त्वैकरात्रं च पुनस् [086.014]
तिलानत्ति नरेश्वर [086.014]
दातुर्विशुद्धपापस्य [086.015]
तस्य पुण्यवतो नृप [086.015]
चान्द्रायणादभ्यधिकं [086.015]
शस्तं तत्तिलभक्षणम् [086.015]
तिलाभावे तथा दद्याद् [087.001]
घृतधेनुं यतव्रतः [087.001]
कल्पयित्वा यथान्यायं [087.001]
तिलधेन्वा यतव्रतः [087.001]
येन भूप विधानेन [087.001]
तदिहैकमनाः शृणु [087.001]
वासुदेवं जगन्नाथं [087.002]
पुरुषेशमजं विभुम् [087.002]
सर्वपापनिहन्तारं [087.002]
घृतक्षीराभिषेचनात् [087.002]
संपूज्य पूर्ववत्पुष्प- [087.002]
गन्धधूपादिभिर्नरः [087.002]
अहोरात्रोषितो भूत्वा [087.003]
तत्परः प्रयतः शुचिः [087.003]
परमेशमथो नाम्ना [087.003]
अभिष्टूय घृतार्चिषा [087.003]
गव्यस्य सर्पिषः कुम्भं [087.004]
पुष्पमाल्यादिभूषितम् [087.004]
कांस्योपधानसंयुक्तं [087.004]
सितवस्त्रयुगेन च [087.004]
हिरण्यगर्भसहितं [087.004]
मणिविद्रुममुक्तिकैः [087.004]
इक्षुयष्टिमयान्पादान् [087.005]
खुरान्रौप्यमयांस्तथा [087.005]

सौवर्णे चाक्षिणी कुर्याच् [087.005]
शृङ्गे चागरुकाष्ठजे [087.005]
सप्तधान्यमये पार्श्वे [087.006]
पत्त्रोर्णानि च कम्बलम् [087.006]
कुर्यात्तुरुष्ककर्पूरौ [087.006]
घ्राणं फलमयान्स्तनान् [087.006]
मणिरत्नसुवर्णानां [087.*(140)]
सम्यक्कल्पनया कृताम् [087.*(140)]
तद्वच्छर्करया जिह्वां [087.007]
गुडक्षीरमयं मुखम् [087.007]
क्षौमसूत्रेण लाङ्गूलं [087.007]
रोमाणि सितसर्षपैः [087.007]
ताम्रपात्रमयं पृष्ठं [087.007]
कुर्याच्छूद्वासमन्वितः [087.007]
ईदृक्स्वरूपां संकल्प्य [087.008]
घृतधेनुं नराधिप [087.008]
तद्वत्कल्पनया धेन्वा [087.008]
घृतवत्सं प्रकल्पयेत् [087.008]
तं च विप्रं महाभाग [087.009]
मनसैव घृतार्चिषम् [087.009]
कल्पयित्वा ततस्तस्मै [087.009]
प्रयतः प्रतिपादयेत् [087.009]
एतां ममोपकाराय [087.010]
घृह्णीष्व त्वं द्विजोत्तम [087.010]
प्रीयतां मम देवेशो [087.010]
घृताऋचिः पुरुषोत्तमः [087.010]
इत्युदाहृत्य विप्राय [087.010]
दद्याद्धेनुं नरोत्तम [087.010]
मणिमुक्तासुवर्णानां [087.*(141)]
सम्यक्कल्पनया कृताम् [087.*(141)]
दत्त्वैकरात्रं स्थित्वा च [087.011]
घृताहारो नराधिप [087.011]
मुच्यते सर्वपापेभ्यस् [087.011]
तथा दानफलं शृणु [087.011]
घृतक्षीरवहा नद्यो [087.012]
यत्र पायसकर्दमाः [087.012]
तेषु लोकेषु लोकेश [087.012]
स पुण्येषूपजायते [087.012]
पितुरूर्ध्वेन ये सप्त [087.013]
पुरुषाः सप्त ये ऽप्यधः [087.013]
तांस्तेषु नृप लोकेषु [087.013]
स नयत्यस्तकल्मषः [087.013]
सकामानामियं व्युष्टिः [087.014]
कथिता नृपसत्तम [087.014]
विष्णुलोकं नरा यान्ति [087.014]
निष्कामा घृतधेनुदाः [087.014]
घृतमग्निर्घृतं सोमस् [087.015]
तन्मयाः सर्वदेवताः [087.015]
घृतं प्रयच्छता दत्ता [087.015]
भवन्त्यखिलदेवताः [087.015]
जलधेनुं प्रवक्ष्यामि [088.001]
प्रीयते दत्तया यया [088.001]
देवदेवो हृषीकेशः [088.001]
सर्वेशः सर्वभावनः [088.001]
जलकुम्भं नरव्याघ्र [088.002]
सुवर्णरजतान्वितम् [088.002]
रत्नगर्भमशेषैस्तु [088.002]
ग्राम्यैर्धान्यैः समन्वितम् [088.002]
सितवस्त्रयुगच्छन्नं [088.003]
दूर्वापल्लवशोभितम् [088.003]
कुष्ठं मांसीमुशीरं च [088.003]
वालकामलकैर्युतम् [088.003]
प्रियङ्गुपात्रसहितं [088.004]
सितयज्ञोपवीतिनम् [088.004]
सच्छत्त्रं सौपानत्कं [088.004]
दर्भविस्तरसंस्थितम् [088.004]
चतुर्भिः संवृतं भूप [088.005]
तिलपात्रैश्चतुर्दिशम् [088.005]
स्थगितं दधिपात्रेण [088.005]
घृतक्षौद्रवता मुखे [088.005]
उपोषितः समभ्यर्च्य [088.006]
वासुदेवं जनेश्वरम् [088.006]
पुष्पधूपोपहारैस्तु [088.006]
यथाविभवमादृतः [088.006]
संकल्प्य जलधेनुं च [088.007]
कुम्भं समभिपूज्य च [088.007]
पूजयेद्वत्सकं तद्वत् [088.007]
कृतं जलमयं बुधः [088.007]
एवं संपूज्य गोविन्दं [088.008]
जलधेनुं सवत्सकाम् [088.008]
सितवस्त्रधरः शान्तो [088.008]
वीतरागो विमत्सरः [088.008]
दद्याद्विप्राय राजेन्द्र [088.009]
प्रीत्यर्थं जलशायिनः [088.009]

जलशायी जगद्योनिः [088.009]
प्रीयतां मम केशवः [088.009]
इति चोच्चार्य भूनाथ [088.010]
विप्राय प्रतिपाद्यताम् [088.010]
अपक्वान्नाशिना स्थेयम् [088.010]
अहोरात्रमतःपरम् [088.010]
अनेन विधिना दत्त्वा [088.011]
जलधेनुं जनाधिप [088.011]
सर्वाह्लादानवाप्नोति [088.011]
ये दिव्या ये च मानुषाः [088.011]
शरीरारोग्यमाबाधा- [088.012]
प्रशमः सार्वकामिकः [088.012]
नृणां भवति दत्तायां [088.012]
जलधेन्वां न संशयः [088.012]
अत्रापि श्रूयते भूप [088.013]
पुद्गलेन महात्मना [088.013]
जातिस्मरेण यद्गीतम् [088.013]
इहाभ्येत्य पुरा किल [088.013]
स पुद्गलः पुरा विप्रो [088.014]
यमलोकगतो मुनिः [088.014]
ददर्श यातना घोराः [088.014]
पापकर्मकृतां किल [088.014]
दीप्ताग्नितीक्ष्णशस्त्रोत्थाः [088.015]
क्वाथतैलगतास्तथा [088.015]
उष्णक्षारनदीपाता [088.015]
भैरवाः पुरुषर्षभ [088.015]
व्रणाः क्षारनिपातोग्राः [088.016]
कुम्भीपाकमहाभयाः [088.016]
ता दृष्ट्वा यातना विप्रश् [088.016]
चकार परमां कृपाम् [088.016]
आह्लादं ते तदा जग्मुः [088.017]
पापास्तदनुकम्पिताः [088.017]
तं दृष्ट्वा नारकाः केचित् [088.017]
केचित्तदवलोकिनः [088.017]
तदा स्वस्थं विलोक्यैव [088.018]
मुनिर्नारकमण्डलम् [088.018]
धर्मराजं स पप्रच्छ [088.018]
तेषां प्रशमकारणम् [088.018]
तस्मै चाचष्ट राजेन्द्र [088.019]
तदा वैवस्वतो यमः [088.019]
आह्लादहेतुं विप्राय [088.019]
पृच्छते पृथिवीपते [088.019]
तवानुभावादेतेषां [088.020]
नारकाणां द्विजोत्तम् [088.020]
संप्रवृत्तो ऽयमाह्लादः [088.020]
कारणं यच्छृणुष्व तत् [088.020]
त्वयाभ्यर्च्य जगन्नाथं [088.021]
सर्वेशं जलशायिनम् [088.021]
जलधेनुः पुरा दत्ता [088.021]
विधिवन्मुनिपुङ्गव [088.021]
अस्मात्तु जन्मनो ऽतीते [088.022]
तृतीये द्विज जन्मनि [088.022]
तस्य दानस्य ते व्युष्टिर् [088.022]
इयमाह्लाददायिनी [088.022]
येन त्वं तपसा युक्तो [088.023]
मानवानामगोचरम् [088.023]
संप्राप्तो ऽसि महाप्रज्ञ [088.023]
सर्वशास्त्रविशारद [088.023]
ये त्वां पश्यन्ति शृण्वन्ति [088.024]
ये च ध्यायन्ति पापिनः [088.024]
शृणोषि यांस्त्वं विप्रेन्द्र [088.024]
यांश्च ध्यायसि पश्यसि [088.024]
निर्वृतिः परमा तेषां [088.025]
सर्वाह्लादप्रदायिनी [088.025]
सद्यो भवति मात्र त्वं [088.025]
द्विजेन्द्र कुरु विस्मयम् [088.025]
आह्लादहेतुजननं [088.026]
नास्ति विप्रेन्द्र तादृशम् [088.026]
जलधेनुर्यथा नृणां [088.026]
जन्मान्येकोनसप्ततिः [088.026]
न दाघो न क्लमो नार्तिर् [088.027]
न मोहो विप्र जायते [088.027]
अपि जन्मसहस्रेषु [088.027]
जलधेनुप्रदायिनाम् [088.027]
एकजन्मकृतं वाञ्छा [088.028]
त्रिजन्मोत्थं समाहृता [088.028]
सप्तजन्मकृतं पापं [088.028]
हन्ति दत्ताम्बुगौर्नृणाम् [088.028]
स त्वं गच्छ गृहीत्वार्घम् [088.029]
अस्मत्तो द्विजसत्तम [088.029]
येषां समाश्रयः कृष्णो [088.029]
न नियम्या हि ते मया [088.029]
कृष्णः संपूजितो यैस्तु [088.030]
ये कृष्णार्थमुपोषिताः [088.030]

यैश्च नित्यं स्मृतः कृष्णो [088.030]
न ते मद्विषयोपगाः [088.030]
नमः कृष्णाच्युतानन्त [088.031]
वासुदेवेत्युदीरितम् [088.031]
यैर्भावभावितैर्विप्र [088.031]
न ते मद्विषयोपगाः [088.031]
दानं ददद्भिर्यैरुक्तम् [088.032]
अच्युतः प्रीयतामिति [088.032]
श्रद्धापुरःसरैर्विप्र [088.032]
न ते मद्विषयोपगाः [088.032]
उत्तिष्ठद्भिः स्वपद्भिश्च [088.033]
व्रजद्भिश्च जनार्दनः [088.033]
यैः संस्मृतो द्विजश्रेष्ठ [088.033]
न ते मद्विषयोपगाः [088.033]
क्षुतस्खलितभीत्यादाव् [088.034]
असहद्भिश्च वेदनाम् [088.034]
कृष्णेत्युदीरितं यैश्च [088.034]
न ते मद्विषयोपगाः [088.034]
सर्वाबाधासु ये कृष्णं [088.035]
स्मरन्त्युच्चारयन्ति च [088.035]
तद्भावभाविता विप्र [088.035]
न ते मद्विषयोपगाः [088.035]
स एव धाता सर्वस्य [088.036]
तन्नियोगकरा वयम् [088.036]
जनसंयमनोद्युक्ताः [088.036]
सो ऽस्मत्संयमनो हरिः [088.036]
इत्थं निशाम्य वचनं [088.037]
यमस्य वदतो मुनिम् [088.037]
ऊचुस्ते नारकाः सर्वे [088.037]
वह्निशस्त्रास्त्रभीरवः [088.037]
नमः कृष्णाय हरये [088.038]
विष्णवे जिष्णवे नमः [088.038]
हृषीकेशाय देवाय [088.038]
जगद्धात्रे ऽच्युताय च [088.038]
नमः पङ्कजनेत्राय [088.039]
नमः पङ्कजनाभये [088.039]
जनार्दनाय श्रीशाय [088.039]
श्रीपते पीतवाससे [088.039]
गोविन्दाय नमो नित्यं [088.040]
नमश्चोदधिशायिने [088.040]
नमः करालवक्त्राय [088.040]
नृसिंहायातिनादिने [088.040]
शार्ङ्गिणे सितखड्गाय [088.041]
शङ्खचक्रगदाधृते [088.041]
नमो वामनरूपाय [088.041]
क्रान्तलोकत्रयाय च [088.041]
वराहरूपाय तथा [088.042]
नमो यज्ञाङ्गधारिणे [088.042]
व्याप्ताशेषदिगन्ताय [088.042]
शान्ताय परमात्मने [088.042]
वासुदेव नमस्तुभ्यं [088.043]
नमः कैटभसूदन [088.043]
केशवाय नमो व्यापिन् [088.043]
नमस्ते ऽस्तु महीधर [088.043]
नमो ऽस्तु वासुदेवायेत्य् [088.044]
एवमुच्चारिते ततः [088.044]
शस्त्राणि कुण्ठतां जग्मुर् [088.044]
अनलश्चाप्यशीशमत् [088.044]
अभज्यन्त च यन्त्राणि [088.045]
समुत्पेतुरयोमुखाः [088.045]
संशुष्काः क्षारसरितः [088.045]
पतितः कूटशाल्मलिः [088.045]
प्रकाशतामसीतत्त्वं [088.046]
नरकश्चागतस्तु सः [088.046]
विवान्बभञ्ज पवनो ऽप्य् [088.046]
असिपत्रवनं ततः [088.046]
निरुत्साहा जडधियो [088.047]
बभूवुर्यमकिंकराः [088.047]
आसन्गन्धाम्बुवाहिन्यः [088.047]
पूयशोणितनिम्नगाः [088.047]
ववौ सुगन्धी पवनो [088.048]
मनःप्रीतिकरस्ततः [088.048]
वेणुवीणास्वनयुतान् [088.048]
गीतशब्दांश्च शुश्रुवुः [088.048]
तं तादृशमथालक्ष्य [088.049]
नृप वैवस्वतो यमः [088.049]
नरकस्य विपर्यासं [088.049]
संक्षुब्धहृदयस्ततः [088.049]
ददर्श नारकान्सद्यो [088.050]
दिव्यस्त्रगनुलेपनान् [088.050]
जाज्वल्यमानांस्तेजोभिर् [088.050]
अमलाम्बरवाससः [088.050]
नमो नमो ऽस्तु कृष्णाय [088.051]
गोविन्दायाव्ययात्मने [088.051]

वासुदेवाय देवाय [088.051]
विष्णवे प्रभविष्णवे [088.051]
इत्येवं वादिनस्तत्र [088.052]
प्रजासंयमनो यमः [088.052]
क्षीणपापचयांस्तांस्तु [088.052]
पाद्यार्घ्यादिभिरर्चयन् [088.052]
पूजयित्वा च तानाह [088.053]
स कृष्णाय कृताञ्जलिः [088.053]
समाहितमना भूत्वा [088.053]
धर्मराजो नरेश्वर [088.053]
विष्णोर्देवातिदेवस्य [088.054]
जगद्धातुः प्रजापतेः [088.054]
प्रणामं ये ऽपि कुर्वन्ति [088.054]
तेषामपि नमो नमः [088.054]
सर्वस्य सर्वसंस्थस्य [088.055]
सर्वाधारस्य योगिनः [088.055]
ये विष्णोः प्रणतास्तेभ्यो [088.055]
नमः सद्यः पुनः पुनः [088.055]
तस्य यज्ञवराहस्य [088.056]
विष्णोरमिततेजसः [088.056]
प्रणामं ये ऽपि कुर्वन्ति [088.056]
तेषामपि नमो नमः [088.056]
एवं ते संस्तुतास्तेन [088.057]
धर्मराजेन नारकाः [088.057]
विमानानि समारूढा [088.057]
नृत्तगान्धर्ववन्ति वै [088.057]
पुद्गलो ऽपि महाबुद्धिर् [088.058]
दृष्ट्वैतदखिलं नृप [088.058]
जातिस्मरो ऽभवद्भूप [088.058]
कण्वगोत्रे महामुनिः [088.058]
संस्मृत्य यमवाक्यानि [088.059]
विष्णोर्माहात्म्यमेव च [088.059]
जलधेन्वाश्च माहात्म्यं [088.059]
संस्मृत्यैतदगायत [088.059]
अहो दुरुत्तरा विष्णोर् [088.060]
मायेयमतिगह्वरी [088.060]
यया मोहितचित्तस्तं [088.060]
न वेत्ति परमेश्वरम् [088.060]
जीवो वाञ्छति कीटत्वं [088.061]
यूकामत्कुणयोनितः [088.061]
तस्माच्च शलभादीनां [088.061]
योनिं तस्माच्च पक्षिणाम् [088.061]
ततश्च पशुतां प्राप्य [088.062]
नरत्वमभिवाञ्छति [088.062]
विमुक्तिहेतुकी धन्या [088.062]
नरयोनिः कृतात्मनाम् [088.062]
न प्राप्नुवन्ति संसारे [088.063]
विभ्रान्तमनसो गतिम् [088.063]
जीवा मानुष्यतामन्ये [088.063]
जन्मनामयुतैरपि [088.063]
विष्णुमायापरीतास्ते [088.*(142)]
प्राप्यापि न तरन्ति ये [088.*(142)]
तदीदृग्दुर्लभं प्राप्य [088.064]
मुक्तिद्वारमचेतसः [088.064]
पतन्ति भूयः संसारे [088.064]
विष्णुमायाविमोहिताः [088.064]
दुस्तरापि तु साध्यासौ [088.065]
माया कृष्णस्य मोहनी [088.065]
छिद्यते यामनोन्यस्ते [088.065]
मुधैव हि जनार्दने [088.065]
असंत्यज्य च गार्हस्थ्यम् [088.066]
अतप्त्वैव तथा तपः [088.066]
छिन्दन्ति वैष्णवीं मायां [088.066]
केशवार्पितमानसाः [088.066]
अविरोधेन विषयाम् [088.067]
भुञ्जन्विष्णुव्यपाश्रयः [088.067]
कृत्वा मनस्तरत्येतां [088.067]
विष्णोर्मायां सुदुस्तराम् [088.067]
ईदृग्बहुफलां भक्तिं [088.068]
सर्वधातरि केशवे [088.068]
मायया तस्य देवस्य [088.068]
न कुर्वन्ति विमोहिताः [088.068]
मुधैवोक्तं मुधायातं [088.069]
मुधा तद्विधिचेष्टितम् [088.069]
मुधैव जन्म तन्नष्टं [088.069]
यत्र नाराधितो हरिः [088.069]
आराधितो हि यः पुंसाम् [088.070]
ऐहिकामुष्मिकं फलम् [088.070]
ददाति भगवान्देवः [088.070]
कस्तं न प्रतिपूजयेत् [088.070]
संवत्सरास्तथा मासा [088.071]
विफला दिवसाश्च ते [088.071]
नराणां विषयान्धानां [088.071]
येषु नाराधितो हरिः [088.071]

यो न वित्तर्द्धिविभवैर् [088.072]
न वसोभिर्न भूषणैः [088.072]
तुष्यते हृदयेनैव [088.072]
कस्तमीशं न पूजयेत् [088.072]
जलधेन्वाश्च माहात्म्यं [088.073]
निशाम्यापीदृशं नराः [088.073]
तां न यच्छन्ति ये तेषां [088.073]
विवेकः कुत्र तिष्ठति [088.073]
कर्मभूमौ हि मानुष्यं [088.074]
जन्मनामयुतैरपि [088.074]
स्वर्गापवर्गफलदं [088.074]
कदाचित्प्राप्यते नरैः [088.074]
संप्राप्य तन्न यैर्विष्णुस् [088.075]
तोषितो नाम्बुधेनुका [088.075]
दत्ता च सम्यक्ते मुष्टा [088.075]
जन्मनि सुबहूनि भोः [088.075]
ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष [088.076]
दृष्टलोकद्वयो ऽस्मि भोः [088.076]
आराधयत गोविन्दं [088.076]
जलधेनुं प्रयच्छत [088.076]
दुःसहो नारको वह्निर् [088.077]
अविषह्याश्च यातनाः [088.077]
ज्ञानं ममैतदालम्ब्य [088.077]
कृष्णे भवत सुस्थिराः [088.077]
अदेशिके देशिको ऽहम् [088.078]
अत्र मार्गे मयोदितम् [088.078]
विमृष्य सत्यमित्येतन् [088.078]
मनः कृष्णे निवेश्यताम् [088.078]
प्रातः कृष्णेति देवेति [088.079]
गोविन्देति च जल्पताम् [088.079]
मध्याह्ने चापराह्ने च [088.079]
यो ऽवसादः स उच्यताम् [088.079]
अनेकविषयालम्बि [088.080]
यच्चित्तं तज्जनार्दने [088.080]
कुरुध्वमालम्बनवत् [088.080]
संस्मृतः पुण्यदो हि सः [088.080]
मुधैव जिह्वा कृष्णेति [088.081]
केशवेति च वक्ष्यति [088.081]
मुधा च चित्तं तद्ध्यामि [088.081]
यदि स्यात्किमतो ऽधिकम् [088.081]
मयोक्तमेतद्बहुशो [088.082]
विनष्टे तु शरीरके [088.082]
मनुष्यत्वं विना विष्णुर् [088.082]
दुर्लभो वो भविष्यति [088.082]
एताः पुद्गलगाथास्ते [088.083]
यमवाक्यं तवोदितम् [088.083]
जलधेन्वाश्च माहात्म्यं [088.083]
विष्णुसंपूजनस्य च [088.083]
व्रतानि सोपवासानि [088.084]
सर्वकामप्रदानि ते [088.084]
व्रतमन्यन्महाभाग [088.084]
सर्वकामप्रदं शृणु [088.084]
भविष्यं चापरं भूप [089.001]
ममैतच्छ्रोतुमर्हसि [089.001]
यत्प्रक्ष्यति महीपालः [089.001]
परिक्षित्स्वपुरोहितम् [089.001]
परीक्षितः पुरोधास्तु [089.002]
द्विजो गौरमुखो नृप [089.002]
भविष्यति शमीकस्य [089.002]
शिष्यः परमसंमतः [089.002]
स च राजा जगद्धातुर् [089.003]
देवदेवस्य शार्ङ्गिनः [089.003]
सदैवाराधने यत्नं [089.003]
भक्तियुक्तः करिष्यति [089.003]
पुरोधसं गौरमुखं [089.004]
प्रणिपत्य स पार्थिवः [089.004]
प्रक्ष्यत्याराधनार्थाय [089.004]
देवदेवस्य चक्रिणः [089.004]
भगवन्भवभीतो ऽहम् [089.005]
अभवाय ततो भवान् [089.005]
आराधयितुमिच्छामि [089.005]
सर्वेच्छापूरकं हरिं [089.005]
संकुरुष्व महाभाग [089.006]
प्रसादं मम सुव्रत [089.006]
कृष्णाराधनकामस्य [089.006]
मनसो देशिको भव [089.006]
आराधनेन येनेशो [089.007]
जगतामीश्वरेश्वरः [089.007]
विष्णुराराध्यते पुंभिः [089.007]
संसाराब्धिपरिक्षतैः [089.007]
तन्ममोपदिश ब्रह्मन् [089.008]
प्रसादप्रवणं मनः [089.008]
कृत्वा सदैवार्तिमतां [089.008]
शरण्यं शरणं गुरुः [089.008]

एवं स तेन भूपाल [089.009]
भूपालेन र्षिपुङ्गवः [089.009]
केशवाराधनार्थाय [089.009]
सम्यक्पृष्टः प्रवक्ष्यति [089.009]
नमस्कृत्य जगद्धात्रे [089.010]
देवदेवाय शार्ङ्गिने [089.010]
परमेशसुरेशाय [089.010]
हृषीकेशाय वेधसे [089.010]
वरार्थिनाममोघाय [089.011]
परस्मै हरिमेधसे [089.011]
सर्वकल्याणभूताय [089.011]
शङ्खचक्रगदाधृते [089.011]
वरासिचर्मावितते [089.012]
क्रूरशान्तात्ममूर्तये [089.012]
यद्यद्भूतोपकाराय [089.012]
तत्तद्रूपविकारिणे [089.012]
परमाण्वन्तपर्यन्त- [089.013]
सहस्रांशाणुमूर्तये [089.013]
जठरान्तायुताशान्त- [089.013]
स्थितब्रह्माण्डधारिणे [089.013]
श्वेतादिदीर्घह्रस्वादि- [089.014]
कठिनादिविकल्पना [089.014]
योगिचिन्त्ये जगद्धाम्नि [089.014]
यत्र नास्त्यखिलात्मनि [089.014]
तमजं शाश्वतं नित्यं [089.015]
परिणामविवर्जितम् [089.015]
योगिभिश्चिन्त्यते मूर्तिर् [089.015]
यत्र तत्राखिलात्मनि [089.015]
तत्र तत्रात्मनो नित्यं [089.016]
परिणामविवर्जितम् [089.016]
प्रणम्य जगतामीशम् [089.016]
अनन्तं परतः परम् [089.016]
परं पराणां स्रष्टारं [089.017]
पुराणं पुरुषं प्रभुम् [089.017]
वरं वरेण्यं वरदं [089.017]
स्थूलसूक्ष्मस्वरूपिणम् [089.017]
अशेषजगतां मूलम् [089.018]
अनादिनिधनस्थितिम् [089.018]
परापरस्वरूपस्थम् [089.018]
अविकारस्वरूपिणम् [089.018]
यस्योपचारतः स्वर्गं [089.019]
स्वरूपं व्यतिरिच्यते [089.019]
ज्ञानज्ञेयस्य मुनिभिर् [089.019]
ज्ञानविद्भिर्महात्मभिः [089.019]
तस्मै पार्थिवमुख्याय [089.020]
रघुवर्यमहात्मने [089.020]
श्रूयतां स मुनिश्रेष्ठो [089.020]
यद्वक्ष्यति परीक्षिते [089.020]
देवकी नाम राजेन्द्र [089.021]
देवकस्याभवत्सुता [089.021]
अनपत्या तपस्तेपे [089.021]
पुत्रार्थं किल भामिनी [089.021]
भार्या सा वसुदेवस्य [089.022]
सत्यधर्मपरायणा [089.022]
न चातुष्यत गोविन्दस् [089.022]
ततस्तामाह भार्गवः [089.022]
किमर्थं तप्यते भद्रे [089.023]
तपः परमदुश्चरम् [089.023]
को ऽर्थस्तवाभिलषितो [089.023]
गन्तुं कुत्र तवेप्सितम् [089.023]
अपुत्राहं द्विजश्रेष्ठ [089.024]
पत्युर्मे नास्ति संततिः [089.024]
साहमाराध्य गोविन्दं [089.024]
पुत्रमिच्छामि शोभनम् [089.024]
तपस्तावत्करिष्यामि [089.025]
परमेण समाधिना [089.025]
यावदाराधितो विष्णुर् [089.025]
दास्यत्यभिमतं मम [089.025]
गोविन्दाराधने यत्नो [089.026]
यदि ते कुलनन्दिनि [089.026]
तदिदं व्रतमास्थाय [089.026]
तोषयाशु जनार्दनम् [089.026]
प्रथमे कार्त्तिकस्याह्नि [089.027]
संप्राप्ते देवकात्मजे [089.027]
पञ्चगव्यजलस्नातः [089.027]
पञ्चगव्यकृताशनः [089.027]
बाणपुष्पैः समभ्यर्च्य [089.028]
वासुदेवमजं विभुम् [089.028]
दत्त्वा च चन्दनं धूपं [089.028]
परमान्नं निवेदयेत् [089.028]
घृतेन वाचयेद्विप्रं [089.028]
गृह्णीयाच्च ततो व्रतम् [089.028]
अद्यप्रभृत्यहं मासं [089.029]
विरतः प्राणिनां वधात् [089.029]

असत्यवचनात्स्तैन्यान् [089.029]
मधुमांसादिभक्षणात् [089.029]
स्वपन्विबुध्यन्गच्छंश्च [089.030]
स्मरिष्याम्यहमच्युतम् [089.030]
परापवादपैशून्यं [089.030]
परपीडाकरं तथा [089.030]
सच्छास्त्रदेवतायज्वि- [089.031]
निन्दामन्यस्य वा भुवि [089.031]
न वक्ष्यामि जगत्यस्मिन् [089.031]
पश्यन्सर्वगत हरिम् [089.031]
इत्यन्यच्चापि शक्नोति [089.032]
यन्निर्वोढुं यशस्विनि [089.032]
कुर्वीत नियमं तस्य [089.032]
त्यागो धर्माय यस्य च [089.032]
कृत्वैवं पुरतो विष्णोर् [089.033]
निवृत्तिं पापतः शुभे [089.033]
नैवेद्यं स्वयमश्नीयान् [089.033]
मौनी नित्यमुदङ्मुखः [089.033]
मार्गशीर्षे तथा मासि [089.034]
जातिपुष्पैर्जनार्दनम् [089.034]
समभ्यर्च्य शुभे धूपं [089.034]
चन्दनं संनिवेद्य च [089.034]
परमान्नं च देवाय [089.035]
विप्राय च पुनर्घृतम् [089.035]
दत्त्वा तथैव गृह्णीयान् [089.035]
नियमं चास्य रोचते [089.035]
तथैव नक्तं भुञ्जीत [089.036]
नैवेद्यं कुलनन्दिनि [089.036]
सर्वेष्वेव तु मासेषु [089.036]
पञ्चगव्यादिकं समम् [089.036]
पुष्पधूपोपहारेषु [089.037]
विशेषो दक्षिणासु च [089.037]
स्नानप्राशनयोः साम्यं [089.037]
तथा वै नक्तभोजने [089.037]
अर्चयेत्प्रतिमासं च [089.038]
यैः पुष्पैस्तानि मे शृणु [089.038]
ये च धूपाः प्रदातव्या [089.038]
नैवेद्यान्नं च यद्यदा [089.038]
बाणस्य जातिकुसुमैस् [089.039]
तथैव च कुरुण्ठकैः [089.039]
कुन्दातिमुक्तकै रक्त- [089.039]
करवीरैश्च देवकि [089.039]
श्वेतैस्ततो मालिकया [089.040]
तथा मल्लिकया ततः [089.040]
दधिपिण्ड्याथ केतक्या [089.040]
पद्मरक्तोत्पलेन च [089.040]
क्रमेणाभ्यर्चितो विष्णुर् [089.040]
ददाति मनसेप्सितम् [089.040]
कार्त्तिके मार्गशीर्षे च [089.041]
धूपः पौषे च चन्दनम् [089.041]
माघफाल्गुनचैत्रेषु [089.041]
दद्याद्विष्णोस्तथागरुम् [089.041]
वैशाखादिषु मासेषु [089.042]
त्रिषु देवकि भक्तितः [089.042]
कर्पूरं देवदेवाय [089.042]
गुग्गुलं श्रावणादिषु [089.042]
कार्त्तिकादिषु मासेषु [089.043]
परमान्नं शुभे त्रिषु [089.043]
कासारं माघपूर्वेषु [089.043]
यवान्नं च ततस्त्रिषु [089.043]
घृतं तिलाञ्जलघटान् [089.044]
हिरण्यमथवाजिनम् [089.044]
प्रतिमासं तथा दद्याद् [089.044]
ब्राह्मणाय शुभव्रते [089.044]
यथोक्तं नियमानां च [089.045]
ग्रहणं प्रतिमासिकम् [089.045]
कुर्वञ्जगत्पतिर्विष्णुः [089.045]
प्रीयतामिति मानवः [089.045]
योषिदप्यमलप्रज्ञे [089.046]
व्रतमेतद्यथाविधि [089.046]
करोति या सा सकलान् [089.046]
अवाप्नोति मनोरथान् [089.046]
व्रतेनाराधितो विष्णुर् [089.047]
अनेन जगतः पतिः [089.047]
ददात्यभिमतान्कामान् [089.047]
अल्पकालेन भामिनि [089.047]
धन्यं यशस्यमायुष्यं [089.048]
सौभाग्यारोग्यदं तथा [089.048]
व्रतमेतत्प्रियतमं [089.048]
व्रतेभ्यो ऽव्यक्तजन्मनः [089.048]
व्रतेनानेन शुद्धानाम् [089.049]
अब्देनैकेन केशवः [089.049]
सुखदृश्यो न संदेहो [089.049]
दीपेनैवाग्रतः स्थितः [089.049]

कायवाङ्मनसो शुद्धिं [089.050]
करोत्येतन्महाव्रतम् [089.050]
शुद्धानां चामलो देवो [089.050]
दृश्य एव जनार्दनः [089.050]
तस्मिन्नेकाग्रचित्तानां [089.051]
प्राणिनां वरवर्णिनि [089.051]
विप्रा एव प्रयत्नेन [089.051]
मुक्तिभाजो विभूतयः [089.051]
यथा कल्पतरुं प्राप्य [089.052]
यद्यदिच्छति चेतसा [089.052]
तत्तत्फलमवाप्नोति [089.052]
तथा संप्राप्य तं विभुम् [089.052]
शुद्धिव्रतमिदं तस्मान् [089.053]
महापातकनाशनम् [089.053]
आराधनाय कृष्णस्य [089.053]
कुरु देवकि पावनम् [089.053]
तस्मिंश्चीर्णे हृषीकेशस् [089.054]
तुभ्यं दास्यति दर्शनम् [089.054]
दृष्टे चाभिमतं यत्ते [089.054]
तदशेषं भविष्यति [089.054]
देवकी भार्गवस्यैतच् [090.001]
श्रुत्वा वाक्यं नराधिप [090.001]
शुद्धिकामा चचाराथ [090.001]
सर्वकामप्रदं व्रतम् [090.001]
व्रतेनाराधितस्तेन [090.002]
तदा देव्या जनार्दनः [090.002]
ददौ दर्शनमीशेशः [090.002]
शङ्खचक्रगदाधरः [090.002]
दृष्टे तस्मिन्नशेषेशे [090.003]
जगद्धातरि केशवे [090.003]
कृत्वा प्रणाममाहेदं [090.003]
भक्तिनम्राथ देवकी [090.003]
जगतामीश्वरेशेश [090.004]
ज्ञान ज्ञेय भवाव्यय [090.004]
समस्तदेवतादेव [090.004]
वासुदेव नमो ऽस्तु ते [090.004]
प्रधानपुंसोरजयोर् [090.005]
यः कारणमकारणम् [090.005]
अविशेष्यमजं रूपं [090.005]
तव तस्मै नमो ऽस्तु ते [090.005]
त्वं प्रधानं पुमांश्चैव [090.006]
कारणाकारणात्मकः [090.006]
सदसच्चाखिलं देव [090.006]
केनोक्तेन तव स्तवः [090.006]
प्रसीद देव देवानाम् [090.007]
अरिशातन वामन [090.007]
लोभाभिभूता यदहं [090.007]
वरयामि प्रयच्छ तत् [090.007]
अदितिस्त्वं महाभागे [090.008]
भुवं प्राप्ता सुरारणि [090.008]
भर्ता च ते कश्यपो ऽयं [090.008]
देयस्तव वरो मया [090.008]
अपुत्रास्मि न मे भर्तुर् [090.009]
अस्ति केशव संततिः [090.009]
प्रसीद देहि मे पुत्रम् [090.009]
अरिदुर्धारपौरुषम् [090.009]
भविष्यत्यचिराद्देवि [090.010]
मदंशेन सुतस्तव [090.010]
हन्तव्या दानवास्तेन [090.010]
सद्धर्मपरिपन्थिनः [090.010]
त्वामहं जगद्धातारम् [090.011]
उदारोरुपराक्रमम् [090.011]
धारयिष्यामि गर्भेण [090.011]
कथमच्युत शंस मे [090.011]
तवोदरे ऽवतारं वै [090.012]
पुरापि बलिबन्धने [090.012]
कुर्वता विधृताः सप्त [090.012]
लोकास्त्वं चात्ममायया [090.012]
तथा सांप्रतमप्येतांल् [090.013]
लोकान्सस्थाणुजङ्गमान् [090.013]
धारयिष्याम्यथात्मानं [090.013]
त्वां च देवकि लीलया [090.013]
इत्येवमुक्त्वा तां देवीं [090.014]
देवकीं भगवान्प्रभुः [090.014]
तिरोबभूव गोविन्दो [090.014]
भूर्भुवःप्रभवो विभुः [090.014]
अवाप च ततो गर्भं [090.015]
देवकी वसुदेवतः [090.051]
अजायत च विश्वेशः [090.015]
स्वेनाङ्गेन जनार्दनः [090.015]
नीलोत्पलदलश्यामं [090.016]
ताम्रायतविलोचनम् [090.016]
चतुर्बाहुमुदाराङ्गं [090.016]
श्रीवत्साङ्कितवक्षसम् [090.016]

तं जातं देवकी देवं [090.017]
निधानं सर्वतेजसाम् [090.017]
प्रणिपत्याभितुष्टाव [090.017]
संप्रस्तुतपयोधरा [090.017]
अबालो बालरूपेण [090.018]
येनेश त्वमिहास्थितः [090.018]
त्वद्रूपं प्रणिपत्याहं [090.018]
यद्ब्रवीमि निबोध तत् [090.018]
नमस्ते सर्वभूतेश [090.019]
नमस्ते मधुसूदन [090.019]
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष [090.019]
नमस्ते ऽस्तु जनार्दन [090.019]
नमस्ते शार्ङ्गचक्रासि- [090.020]
गदापरिघपाणये [090.020]
उपेन्द्रायाप्रमेयाय [090.020]
हृषीकेशाय वै नमः [090.020]
नमो ऽस्तु ते ऽणुरूपाय [090.021]
बृहद्रूपाय वै नमः [090.021]
अशेषभूतरूपाय [090.021]
तथारूपाय ते नमः [090.021]
अनिर्देश्यविशेषाय [090.022]
तुभ्यं सर्वात्मने नमः [090.022]
सर्वेश्वराय सर्वाय [090.022]
सर्वभूताय ते नमः [090.022]
नमो ऽस्तु ते वासुदेव [090.023]
नमो ऽस्तु कमलेक्षण [090.023]
अशेषभूतरूपाय [090.*(144)]
तथाभूताय ते नमः [090.*(144)]
नमो ऽस्तु ते ऽश्वरूपाय [090.*(144)]
तथारूपाय ते नमः [090.*(144)]
अनिर्देश्यविशेषाय [090.*(144)]
तुभ्यं सर्वात्मने नमः [090.*(144)]
नमो ऽस्तु ते वासुदेव [090.*(144)]
नमस्ते पुष्करेक्षण [090.*(144)]
नमो ऽस्तु ते सदाचिन्त्य [090.023]
योगिचिन्त्य जगत्पते [090.023]
विष्णो नमो ऽस्तु ते कृष्ण [090.024]
नमस्ते पुरुषोत्तम [090.024]
नमो नारायण हरे [090.024]
नमस्ते ऽस्तु सदाच्युत [090.024]
नमो नमस्ते गोविन्द [090.025]
नमस्ते गरुडध्वज [090.025]
श्रीश श्रीवत्स योगीश [090.025]
श्रीकान्तेश नमो ऽस्तु ते [090.025]
नीलोत्पलदलश्याम [090.026]
दंष्ट्रोद्धृतवसुंधर [090.026]
हिरण्याक्षरिपो देव [090.026]
नमस्ते यज्ञसूकर [090.026]
नृसिंह जय विश्वात्मन् [090.027]
दैत्योरःस्थलदारक [090.027]
नमो नमस्ते ऽस्तु सदा [090.027]
विक्षेपध्वस्ततारक [090.027]
मायावामनरूपाय [090.028]
तुभ्यं देव नमो नमः [090.028]
त्रिविक्रम नमस्तुभ्यं [090.028]
त्रैलोक्यक्रान्ति दुर्जय [090.028]
ऋग्यजुःसामभूताय [090.029]
वेदाहरणकर्मणे [090.029]
प्रणवोद्गीतवचसे [090.029]
महाश्वशिरसे नमः [090.029]
निःक्षत्रियोर्वीकरण [090.030]
विकरालपराक्रम [090.030]
जामदग्न्य नमस्तुभ्यं [090.030]
कार्तवीर्यासुतस्कर [090.030]
पौलस्त्यकुलनाशाय [090.031]
साधुमार्गविचारिणे [090.031]
नलसेतुकृते तुभ्यं [090.031]
नमो राघवरूपिणे [090.031]
सांप्रतं मत्प्रसन्नाय [090.032]
संभूताय ममोदरे [090.032]
स्वमायाबालरूपाय [090.032]
नमः कृष्णाय वै हरे [090.032]
यावन्ति तव रूपाणि [090.033]
यावत्यश्च विभूतयः [090.033]
नमामि कृष्ण सर्वेभ्यस् [090.033]
तेभ्यस्ताभ्यश्च सर्वदा [090.033]
स्वरूपचेष्टितं यत्ते [090.034]
यद्देवत्वे विचेष्टितम् [090.034]
यच्च तिर्यङ्मनुष्यत्वे [090.034]
चेष्टितं तन्नमाम्यहम् [090.034]
परमेश परेशेश [090.035]
तिर्यगीश नरेश्वर [090.035]
सर्वेश्वरेश्वरेशेश [090.035]
नमस्ते पुरुषोत्तम [090.035]

एवं स्तुतस्तया देव्या [090.036]
देवक्या मधुसूदनः [090.036]
बालरूपी जगादैवं [090.036]
वसुदेवस्य शृण्वतः [090.036]
सम्यगाराधितेनोक्तं [090.037]
यत्प्रसन्नेन वै शुभे [090.037]
तत्कृतं सकलं भूयो [090.037]
यद्वृणोषि ददामि तत् [090.037]
अवतारे तथैवास्मिन् [090.038]
वर्षाणामधिकं शतम् [090.038]
स्थास्यामि नरतां प्राप्तो [090.038]
दुष्टदैत्यनिबर्हणः [090.038]
तत्त्वं वरय भद्रं ते [090.039]
वरं यन्मनसेच्छसि [090.039]
दास्याम्यहमसंदिग्धं [090.039]
यद्यपि स्यात्सुदुर्लभम् [090.039]
यदि देव प्रसन्नस्त्वं [090.040]
प्रददासि ममेप्सितम् [090.040]
वृणोमि तदहं नित्यं [090.040]
तव केशव दर्शनम् [090.040]
तवेद्दृग्रूपमालोक्य [090.041]
हार्दप्रस्नुतलोचना [090.041]
नालं वियोगं संसोढुं [090.041]
तवाहं मधुसूदन [090.041]
दाक्षायणी त्वमदितिः [090.042]
संभूता वसुधातले [090.042]
नित्यमेव जगद्धात्रि [090.042]
प्रसादं ते करोम्यहम् [090.042]
षष्ठे षष्ठे तदा पक्षे [090.043]
दिने ऽस्मिन्नेव भामिनि [090.043]
त्वं मां द्रक्ष्यस्यसंदिग्धं [090.043]
प्रसादस्ते कृतो मया [090.043]
अनेनैव महाभागे [090.044]
बालरूपेण संवृतः [090.044]
तव दर्शनमेष्यामि [090.044]
यत्र ते स्नेहवन्मनः [090.044]
तस्मिन्काले च लोकास्त्वां [090.045]
पूजयिष्यन्ति देवकि [090.045]
मां च पुष्पादिभिर्देवि [090.045]
तवोत्सङ्गव्यवस्थितम् [090.045]
संपूजितो ऽहं लोकानां [090.046]
तस्मिन्काले सुतोषितः [090.046]
प्रदास्यामि जगद्धात्रि [090.046]
यथाभिलषितं वरम् [090.046]
अपुत्राणां वरान्पुत्रान् [090.047]
अधनानां तथा धनम् [090.047]
शुभान्दारानदाराणां [090.047]
सरोगाणामरोगताम् [090.047]
सुगतिं गतिकामानां [090.048]
विद्यां विद्यार्थिनामपि [090.048]
प्रदास्यसि महाभागे [090.048]
मत्प्रसादोपवृंहिता [090.048]
प्रसादिता हि मर्त्यानां [090.049]
यत्त्वं दास्यसि शोभने [090.049]
तत्तेषां मत्प्रसादेन [090.049]
भविष्यति न दुर्लभम् [090.049]
त्वामभ्यर्च्योपचारेण [090.050]
स्नापयित्वा घृतेन माम् [090.050]
सर्वकामानवाप्स्यन्ति [090.050]
काले षट्पक्षसंज्ञिते [090.050]
त्वदङ्कस्थं च मां बालं [090.*(145)]
संस्मरिष्यन्ति भक्तितः [090.*(145)]
प्रतिमासं च ते पूजाम् [090.051]
अष्टम्यां यः करिष्यति [090.051]
मम चैवाखिलान्कामान् [090.051]
संप्राप्नोत्यपकल्मषः [090.051]
एवं पूर्वं हृषीकेशो [090.052]
देवक्याः प्रददौ वरम् [090.052]
तस्मात्कृष्णाष्टमी पुंसाम् [090.052]
अशेषाघौघहारिणी [090.052]
तस्यां हि पूजितः कृष्णो [090.053]
देवकी च समाधिना [090.053]
पापापनोदं कुरुते [090.053]
ददाति च मनोरथान् [090.053]
तदेष पुष्टिकामानां [090.054]
नृणां पुण्यार्थिनामपि [090.054]
उपवासो महीपाल [090.054]
शस्तः केशवतोषदः [090.054]
श्रावणे शुक्लपक्षे तु [091.001]
द्वादश्यां प्रीयते नृप [091.001]
गोप्रदानेन गोविन्दो [091.001]
यत्पूर्वं कथितं तव [091.001]
पौषशुक्ले तु तद्वच्च [091.002]
द्वादश्यां घृतधेनुकाम् [091.002]

घृतार्चिः प्रीणनायालं [091.002]
प्रदद्यात्फलदायिनीम् [091.002]
तथैव माघद्वादश्यां [091.003]
प्रदत्ता तिलगौर्नृप [091.003]
केशवं प्रीणयत्याशु [091.003]
सर्वकामान्प्रयच्छति [091.003]
ज्यैष्ठे मासि सिते पक्षे [091.004]
द्वादश्यां जलधेनुका [091.004]
दत्ता यथावद्विधिना [091.004]
प्रीणयत्यम्बुशायिनम् [091.004]
लवणं मार्गशीर्षे तु [091.005]
कृष्णमभ्यर्च्य यो नरः [091.005]
प्रयच्छति द्विजाग्र्याय [091.005]
स सर्वरसदायकः [091.005]
सर्वभोगमहाभोगान् [091.006]
भ्राजिष्मन्तो मनोरमान् [091.006]
लोकानवाप्नोति नृप [091.006]
प्रसन्ने गरुडध्वजे [091.006]
पौषमासे तु यो दद्याद् [091.007]
घृतं विप्राय पार्थिव [091.007]
समभ्यर्च्याच्युतं सो ऽपि [091.007]
सर्वकामानवाप्नुयात् [091.007]
माघमासे तु संपूज्य [091.008]
माधवं ब्राह्मणाय यः [091.008]
प्रयच्छति तिलांल्लोकान् [091.008]
संप्राप्नोत्यभिवाञ्छितान् [091.008]
फाल्गुने पुण्डरीकाक्षं [091.009]
यः समभ्यर्च्य यच्छति [091.009]
सप्तधान्यं नरश्रेष्ठ [091.009]
स सर्वस्येश्वरो भवेत् [091.009]
चैत्रे चित्राणि वस्त्राणि [091.010]
यः प्रयच्छति केशवम् [091.010]
पूजयित्वा स वै भोगान् [091.010]
विचित्रांल्लभते नरः [091.010]
वैशाखे विष्णुमभ्यर्च्य [091.011]
यवगोधूमदो नरः [091.011]
लोकानैन्द्रान्समासाद्य [091.011]
मोदते विगतज्वरः [091.011]
दुर्निवर्त्यमहं मन्ये [091.*(146)]
चञ्चलं हि मनो यतः [091.*(146)]
ज्यैष्ठे ऽभ्यर्च्य हृषीकेशम् [091.012]
उदकुम्भप्रदो हि यः [091.012]
स परां निर्वृतिं याति [091.012]
सप्त जन्मान्तराणि वै [091.012]
आषाढमासे च हरिं [091.013]
यः समभ्यर्च्य यच्छति [091.013]
विप्राय चन्दनं सो ऽपि [091.013]
परमाह्लादभाजनम् [091.013]
यो नृसिंहं समभ्यर्च्य [091.014]
ब्राह्मणाय प्रयच्छति [091.014]
श्रावणे नवनीतं तु [091.014]
स स्वर्गं सुकृती व्रजेत् [091.014]
छत्त्रं च यो भाद्रपदे [091.015]
वासुदेवाभिपूजकः [091.015]
प्रयच्छति द्विजाग्र्याय [091.015]
स च्छत्त्राधिपतिर्भवेत् [091.015]
गुडशर्करया युक्तं [091.016]
मोदकं च प्रयच्छति [091.016]
तथैवाश्वयुजे ऽभ्यर्च्य [091.016]
यो ऽनन्तं सो ऽमरो भवेत् [091.016]
नारायणं समभ्यर्च्य [091.017]
यः प्रयच्छति कार्त्तिके [091.017]
दीपकं विप्रगेहेषु [091.017]
विमानं सो ऽधिरोहति [091.017]
काम्यान्येतान्यशेषाणि [091.018]
यः संपूज्य जगत्पतिम् [091.018]
दानानि यच्छति नरः [091.018]
स संपूर्णमनोरथः [091.018]
सर्वश्रेष्ठः समस्तानां [091.018]
बन्धूनामाश्रयो भवेत् [091.018]
एवं सर्वाणि दानानि [091.019]
प्रीणनायाच्युतस्य यः [091.019]
प्रयच्छति स सर्वेषां [091.019]
फलानां भुवि भाजनम् [091.019]
तस्मान्नरेन्द्र विप्रेभ्यः [091.020]
प्रीणनाय जगद्गुरोः [091.020]
प्रयच्छैतानि दानानि [091.020]
यच्चान्यद्दयितं तव [091.020]
यदीच्छसि पुनः प्राप्तुं [091.021]
भूतिमभ्रंशनीं नृप [091.021]
तदाराधय गोविन्दं [091.021]
नान्यथा स्युर्विभूतयः [091.021]
एवं वसिष्ठेन तदा [091.022]
मान्धाता नृप बोधितः [091.022]

सह पत्न्या महीपालः [091.022]
परितोषं परं ययौ [091.022]
जगाद च मुदा युक्तः [091.023]
प्रणिपत्य पुरोहितम् [091.023]
सह पत्न्या नरश्रेष्ठः [091.023]
समुत्थाय वरासनात् [091.023]
धिग्धिग्वृथैव यातानि [091.024]
ममैतानि दिनान्यहो [091.024]
अनासज्य मनः कृष्णे [091.024]
विषयासक्तचेतसः [091.024]
ता निशास्ते च दिवसास् [091.025]
ते र्तवस्ते च वत्सराः [091.025]
नराणां सफला येषु [091.025]
चिन्तितो भगवान्हरिः [091.025]
चिन्त्यमानः समस्तानां [091.026]
पापानां हाणिदो हि सः [091.026]
समुत्सृज्याखिलं चिन्त्यं [091.026]
सो ऽच्युतः किं न चिन्त्यते [091.026]
कष्टं मुष्टो ऽस्मि शिष्टेषु [091.027]
विद्यमानेषु मन्त्रिषु [091.027]
पराङ्मुखानां गोविन्दे [091.027]
यत्प्राप्तं परमं वयः [091.027]
एवं विनिन्द्य सो ऽत्मानां [091.028]
मान्धाता पृथिवीपतिः [091.028]
चकाराराधने यत्नं [091.028]
देवदेवस्य शार्ङ्गिणः [091.028]
तमाराध्य च विश्वेशम् [091.029]
उपेन्द्रमसुरेश्वर [091.029]
प्राप सिद्धिं परां पूर्वं [091.029]
दक्षः प्राचेतसो यथा [091.029]
तथा त्वमपि राजेन्द्र [091.030]
सर्वभावेन केशवम् [091.030]
समाराधय गोविन्दं [091.030]
तमाराध्य न सीदति [091.030]
एवं स दैत्यराजेन्द्रः [091.031]
प्रह्लादेनावबोधितः [091.031]
बलिराराधने यत्नं [091.031]
चक्रे चक्रभृतस्तदा [091.031]
पुष्पोपहारैर्धूपैश्च [091.032]
तथा चैवानुलेपनैः [091.032]
वासोभिर्भूषणैः सम्यग् [091.032]
ब्राह्मणानां च तर्पणैः [091.032]
जपैर्होमैर्व्रतैश्चैव [091.033]
यथोक्तं पुरुषर्षभ [091.033]
सह पत्न्या तथैव त्वं [091.033]
समाराधय केशवम् [091.033]
भगवंश्चञ्चलं चित्तं [092.001]
मनुष्याणामहर्निशम् [092.001]
विषयासङ्गदुर्दुष्टं [092.001]
पापायैव प्रवर्तते [092.001]
मौनेन वाचिकं पापं [092.002]
पुंभिर्ब्रह्मन्निवर्त्यते [092.002]
शारीरमप्यकरणात् [092.002]
सुनिवर्त्यं मतं मम [092.002]
यत्त्वेतन्मानसं पापं [092.003]
मनुष्यैस्तन्महामते [092.003]
दुर्निवर्त्यमहं मन्ये [092.003]
चञ्चलं हि मनो यतः [092.003]
तदहं श्रोतुमिच्छामि [092.004]
मनुष्यैर्दुर्विचिन्तितैः [092.004]
यत्स्मर्तव्यं च जप्यं च [092.004]
मानसाघप्रशान्तये [092.004]
त्वद्युक्तो ऽयमनुप्रश्नः [092.005]
साध्वेतद्भवतोदितम् [092.005]
चञ्चलत्वाद्धि चित्तानां [092.005]
मानसं बहु पातकम् [092.005]
भूमौ तृणमसंख्यातं [092.006]
यथा च दिवि तारकाः [092.006]
तथा पापमसंख्येयं [092.006]
चेतसा क्रियते तु यत् [092.006]
परदारपरद्रव्य- [092.007]
परहिंसासु मानसम् [092.007]
अहर्निशं मनुष्याणां [092.007]
सातत्येन प्रवर्तते [092.007]
यद्यस्योपशमो राजन् [092.008]
भुवि न क्रियते नृभिः [092.008]
तन्नास्ति नरकोत्तारो [092.008]
वर्षकोटीशतैरपि [092.008]
तदस्य प्रशमायालं [092.009]
प्रायश्चित्तं नराधिप [092.009]
शृणुष्व येन चित्तोत्थं [092.009]
सद्यः पापं व्यपोहति [092.009]
ओं नमो वासुदेवाय [092.010]
पुरुषाय महात्मने [092.010]

हिरण्यरेतसे ऽचिन्त्य- [092.010]
स्वरूपायातिवेधसे [092.010]
विष्णवे जिष्णवे नित्यं [092.011]
शान्तायानघरूपिणे [092.011]
सर्वस्थित्यन्तकरण- [092.011]
व्रतिने पीतवाससे [092.011]
नारायणाय विश्वाय [092.012]
विश्वेशायेश्वराय च [092.012]
नमः कमलकिञ्जल्क- [092.012]
सुवर्णमुकुटाय च [092.012]
केशवायातिसूक्ष्माय [092.013]
ब्रह्ममूर्तिमते नमः [092.013]
नमः परमकल्याण- [092.013]
कल्याणायात्मयोनये [092.013]
जनार्दनाय देवाय [092.014]
श्रीधराय सुमेधसे [092.014]
महात्मने वरेण्याय [092.014]
नमः पङ्कजनाभये [092.014]
स्मृतमात्राघघाताय [092.015]
कृष्णायाक्लिष्टकर्मणे [092.015]
नमो नताय नम्रेशैर् [092.015]
अशेषैर्वासवादिभिः [092.015]
नमो मायाविने तुभ्यं [092.016]
हरये हरिमेधसे [092.016]
हिरण्यगर्भगर्भाय [092.016]
जगतः कारणात्मने [092.016]
गोविन्दायादिभूताय [092.017]
श्रादीनां महात्मने [092.017]
नमो भूतात्मभूताय [092.017]
आत्मने परमात्मने [092.017]
अच्युताय नमो नित्यम् [092.018]
अनन्ताय नमो नमः [092.018]
दामोदराय शुचये [092.018]
यज्ञेशाय नमो नमः [092.018]
नमो मायापटच्छन्न- [092.019]
जगद्धाम्ने महात्मने [092.019]
हृषीकेशाय चेशाय [092.019]
सर्वभूतात्मरूपिणे [092.019]
दयालवे नमो नित्यं [092.020]
कपिलाय सुमेधसे [092.020]
संसारसागरोत्तार- [092.020]
ज्ञानपोतप्रदायिने [092.020]
अकुण्ठमतये धात्रे [092.021]
सर्गस्थित्यन्तकर्मणि [092.021]
करालसौम्यरूपाय [092.021]
वैकुण्ठाय नमो नमः [092.021]
यथा हि वासुदेवेति [092.022]
प्रोक्ते नश्यति पातकम् [092.022]
तथा विलयमभ्येतु [092.022]
ममैतद्दुर्विचिन्तितम् [092.022]
यथा न विष्णुभक्तेषु [092.023]
पापमाप्नोति संस्थितिम् [092.023]
तथा विनाशमभ्येतु [092.023]
ममैतद्दुर्विचिन्तितम् [092.023]
स्मृतमात्रो यथा विष्णुः [092.024]
सर्वं पापं व्यपोहति [092.024]
तथा प्रणाशमभ्येतु [092.024]
ममैतद्दुर्विचिन्तितम् [092.024]
यथा सर्वत्रगो विष्णुस् [092.025]
तत्र सर्वं च संस्थितम् [092.025]
उपयातु तथा नाशं [092.025]
ममाघं चित्तसंभवम् [092.025]
पापं प्रणाशं मम संप्रयातु [092.026]
यन्मानसं यच्च करोमि वाचा [092.026]
शारीरमप्याचरितं च यन्मे [092.026]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.026]
प्रयान्तु दोषा मम नाशमाशु [092.027]
रागादयः कारणकारणेशे [092.027]
विज्ञानदीपामलमार्गदृश्ये [092.027]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.027]
भवन्तु भद्राणि समस्तदोषाः [092.028]
प्रयान्तु नाशं जगतो ऽखिलस्य [092.028]
मयाद्य भक्त्या परमेश्वरेशे [092.028]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.028]
ये भूतले ये दिवि ये ऽन्तरिक्षे [092.029]
रसातले प्राणिगणाश्च केचित् [092.029]
भवन्तु ते सिद्धियुजो मयाद्य [092.029]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.029]
पुष्यन्तु मैत्रीं विरमन्तु रागाद् [092.030]
उज्झन्तु लोभं क्षमिणो भवन्तु [092.030]
आब्रह्मवृक्षान्तरगा मयाद्य [092.030]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.030]
ये प्राणिनः कुत्रचिदत्र सन्ति [092.031]
ब्रह्माण्डमध्ये परतश्च केचित् [092.031]

ते यान्तु सिद्धिं परमां मयाद्य [092.031]
स्मृते जगद्धातरि वासुदेवे [092.031]
अज्ञानिनो ज्ञानविदो भवन्तु [092.032]
प्रशान्तिभाजः सततोग्रचित्ताः [092.032]
कुर्वन्तु भक्तिं परमामनन्ते [092.032]
मत्स्तोत्रतुष्टस्य हरेः प्रसादात् [092.032]
शृण्वन्ति ये मे पठतस्तथान्ये [092.033]
पश्यन्ति ये मामिदमीरयन्तम् [092.033]
देवासुराद्या मनुजास्तिरश्चो [092.033]
भवन्तु ते ऽप्यच्युतयोगभाजः [092.033]
ये चापि मूका विकलेन्द्रियत्वाच् [092.034]
शृण्वन्ति नो नैव विलोकयन्ति [092.034]
पश्वादयः कीटपिपीलिकाश्च [092.034]
भवन्तु ते ऽप्यच्युतयोगभाजः [092.034]
नामस्वनन्तस्य च कीर्तितेषु [092.035]
यदत्र पुण्यं जगतः प्रसूतेः [092.035]
तेनाविवेकोपहतात्मबोधा [092.035]
भवन्तु पुंसां मतयः सुशीलाः [092.035]
ये दुःखितास्ते सुखिनो भवन्तु [092.036]
द्वेषान्विता मैत्रगुणोपपन्नाः [092.036]
सत्यार्जवाद्यास्त्वनृता विमाया [092.036]
मत्संस्तवाराधितकृष्णदृष्टाः [092.036]
नश्यन्तु दुःखानि जगत्यपैतु [092.037]
लोभादिको दोषगुणः प्रजाभ्यः [092.037]
यथात्मनि भ्रातरि चात्मजे च [092.037]
तथा जनस्यास्तु जने ऽपि हार्दम् [092.037]
संसारवैद्ये ऽखिलदोषहानि- [092.038]
विचक्षणे निर्वृतिहेतुभूते [092.038]
संसारबन्धाः शिथिलीभवन्तु [092.038]
हृदि स्थिते सर्वजनस्य विष्णौ [092.038]
एतत्पठन्पार्थिव सर्वपापैर् [092.039]
विमुच्यते विष्णुपरः सदैव [092.039]
प्राप्नोति सिद्धिं विपुलं महर्द्धिम् [092.039]
न चाप्यनर्थेषु मतिं करोति [092.039]
उद्दिश्य सत्त्वानि च यानि यानि [092.040]
स्तोत्रं पठन्ते कृपया मनुष्याः [092.040]
सर्वाणि तान्यप्रतिघा भवन्ति [092.040]
प्रयान्ति सिद्धिं भगवत्प्रसादात् [092.040]
तस्मात्त्वयैतत्सततं निशासु [092.041]
दिनेषु चैवेश्वर माधवस्य [092.041]
संकीर्तनं कार्यमशेषपाप- [092.041]
विमोक्षहेतोरभवाय चैव [092.041]
इति सकलजनोपकारकारी [092.042]
हरिचरणाब्जविनिष्टशुद्धबुद्धिः [092.042]
पठति खलु महीप यो मनुष्यः [092.042]
स लयमुपैति हरौ हृताखिलाघः [092.042]
इदं च शृणु भूपाल [093.001]
नश्यते दुर्विचिन्तितम् [093.001]
येनोपायेन वै पुंसां [093.001]
योषितां वाप्यसंशयम् [093.001]
परदारपरद्रव्य- [093.002]
जीवहिंसादिके सदा [093.002]
प्रवर्तते नृणां चित्तं [093.002]
तदेतदभिसंस्मरेत् [093.002]
विष्णवे विष्णवे नित्यं [093.003]
विष्णवे विष्णवे नमः [093.003]
जिष्णवे जिष्णवे सर्वं [093.003]
जिष्णवे जिष्णवे नमः [093.003]
नमामि विष्णुं बुद्धिस्थम् [093.004]
अहंकार-गतं हरिम् [093.004]
चित्तस्थमीशमव्यक्तम् [093.004]
अनन्तमपराजितम् [093.004]
विष्णुमीड्यमशेषेशम् [093.004]
अनादिनिधनं विभुम् [093.004]
विष्णुश्चित्तगतो यन्मे [093.005]
विष्णुर्बुद्धिगतश्च यत् [093.005]
यच्चाहंकारगो विष्णुर् [093.005]
यद्विष्णुर्मयि संस्थितः [093.005]
करोति कर्तृभूतो ऽसौ [093.006]
स्थावरस्य चरस्य च [093.006]
तत्पापं नाशमायातु [093.006]
तस्मिन्नेव विचिन्तिते [093.006]
ध्यातो हरति यः पापं [093.007]
स्वप्ने दृष्टः शुभावहः [093.007]
तमुपेन्द्रमहं विष्णुं [093.007]
प्रणतो ऽर्तिहरं हरिम् [093.007]
जगत्यस्मिन्निराधारे [093.008]
मज्जमाने तमस्यधः [093.008]
हस्तावलम्बदं विष्णुं [093.008]
प्रणतो ऽस्मि परात्परम् [093.008]
सर्वेश्वरेश्वर विभो [093.009]
परमात्मन्नधोक्षज [093.009]
हृषीकेश हृषीकेश [093.009]
हृषीकेश नमो ऽस्तु ते [093.009]

नृसिंहानन्त गोविन्द [093.010]
भूतभावन केशव [093.010]
दुरुक्तं दुष्कृतं ध्यातं [093.010]
प्रशमाग्र्य नमो ऽस्तु ते [093.010]
यन्मया चिन्तितं दुष्टं [093.011]
स्वचित्तवशवर्तिना [093.011]
नरकावहमत्युग्रं [093.011]
तच्छमं नय केशव [093.011]
ब्रह्मण्यदेव गोविन्द [093.012]
परमार्थ परायण [093.012]
जगन्नाथ जगद्धातः [093.012]
पापं प्रशमयाच्युत [093.012]
यच्चापराह्णे पूर्वाह्णे [093.013]
मध्याह्ने च तथा निशि [093.013]
कायेन मनसा वाचा [093.013]
कृतं पापमजानता [093.013]
जानता वा हृषीकेश [093.014]
पुण्डरीकाक्ष माधव [093.014]
नामत्रयोच्चारणतस् [093.014]
तत्प्रयातु मम क्षयम् [093.014]
शारीरं मे हृषीकेश [093.015]
पुण्डरीकाक्ष मानसम् [093.015]
पापं प्रशमयाद्य त्वं [093.015]
वाक्कृतं मम माधव [093.015]
यद्व्रजन्यत्स्वपन्भुञ्जन् [093.016]
यदुत्तिष्ठन्यदास्थितः [093.016]
कृतवांश्चापि यच्चाहं [093.016]
कायेन मनसा गिरा [093.016]
महत्स्वल्पमतिस्थूलं [093.017]
कुयोनिनरकावहम् [093.017]
तद्यातु प्रशमं सर्वं [093.017]
वासुदेवस्य कीर्तनात् [093.017]
परं ब्रह्म परं धाम [093.018]
पवित्रं परमं च यत् [093.018]
तस्मिन्संकीर्तिते विष्णोः [093.018]
पदे पापं प्रणश्यतु [093.018]
सूरयो यत्प्रवेक्ष्यन्ति ह्य् [093.019]
अपुनर्भवकाङ्क्षिणः [093.019]
ममाखिलं दह त्वं हि [093.019]
तद्विष्णोः परमं पदम् [093.019]
यत्प्राप्य न निन्वर्तन्ते [093.020]
गन्धस्पर्शादिवर्जितम् [093.020]
पापं प्रणाशयत्वद्य [093.020]
तद्विष्णोः परमं पदम् [093.020]
सदसद्यत्तथा व्यक्ता- [093.021]
व्यक्तरूपमजाजरम् [093.021]
प्रणमामि जगद्धाम [093.021]
तद्विष्णोः परमं पदम् [093.021]
शारीरे मानसे चैव [093.022]
पापे वाग्जे च पार्थिव [093.022]
कृते सम्यङ्नरो भक्त्या [093.022]
पठेच्छ्रद्धासमन्वितः [093.022]
मुच्यते सर्वपापेभ्यः [093.022]
कृष्णनामप्रकीर्तनात् [093.022]
उच्चार्यमाने चैतस्मिन् [093.023]
देवदेवस्य संस्तवे [093.023]
विलयं पापमायाति [093.023]
भाण्डमाममिवाम्भसि [093.023]
तस्मात्संचिन्तिते पापे [093.024]
समनन्तरमेव ते [093.024]
जप्तव्यमेतत्पापस्य [093.024]
प्रशमाय महीपते [093.024]
संसारार्णवमग्नेन [094.001]
पुरुषेण महामुने [094.001]
विषयासक्तचित्तेन [094.001]
यत्कार्यं तद्वदस्व मे [094.001]
भ्राम्यतां संकटे दुर्गे [094.002]
संसारे विषयैषिणाम् [094.002]
स्वकर्मभिर्मनुष्याणाम् [094.002]
उपकारकमुच्यताम् [094.002]
क्षीणे मनस्यनायत्ते [094.003]
वृद्धे लोभादिके गणे [094.003]
शरणं यन्मनुष्याणां [094.003]
तदाचक्ष्व महामुने [094.003]
संसाराणवपोताय [094.004]
हरये हरिमेधसे [094.004]
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि [094.004]
नराणामुपकारकम् [094.004]
सम्यगाराधितो भक्त्या [094.005]
वेदभारगुरोर्गुरुः [094.005]
कृष्णद्वैपायनः प्राह [094.005]
यच्छिष्याय सुमन्तवे [094.005]
पुरा किल दुराचारो [094.006]
दुर्बुद्धिरजितेन्द्रियः [094.006]

क्षत्रबन्धुरभूत्पापः [094.006]
परमर्मावघङ्ककः [094.006]
मातापित्रोरशुश्रूषुर् [094.007]
द्रोग्धा बन्धुजनस्य च [094.007]
गुरुदेवद्विजातीनां [094.007]
निन्दासु सततोद्यतः [094.007]
मोष्टा विश्वसतां नित्यम् [094.008]
अप्रीतिः प्रीतिमिच्छताम् [094.008]
ऋजूनामनृजुः क्षुद्रः [094.008]
परहिंसापरायणः [094.008]
स बान्धवैः परित्यक्तस् [094.009]
तथान्यैः साधुवृत्तिभिः [094.009]
अवृत्तिमानविश्वास्यो [094.009]
मृगयाजीवनो ऽभवत् [094.009]
अहन्यहनि चक्राङ्गान् [094.010]
एणकादींस्तथा मृगान् [094.010]
हत्वात्मपोषणं चक्रे [094.010]
व्याधवृत्तिरतो ऽधमः [094.010]
एतया तस्य दुष्टस्य [094.011]
कुवृत्त्या पापचेतसः [094.011]
जगाम सुमहान्कालः [094.011]
कुर्वतो दारपोषणम् [094.011]
एकदा तु मुनिस्तेन [094.012]
निदाघे विजने वने [094.012]
मृगयामटता दृष्टो [094.012]
वर्त्मनः प्रच्युतः पथि [094.012]
क्षुत्क्षामकण्ठः सुश्रान्तः [094.013]
शुष्कजिह्वास्यतालुकः [094.013]
तृट्परीतो ऽतिविभ्रान्तः [094.013]
कांदिग्भूतो ऽल्पचेतनः [094.013]
श्वासायासश्लथैरङ्गैः [094.014]
कृच्छ्रादात्मानमुद्वहन् [094.014]
सूर्यांशुतापात्प्रगलत्- [094.014]
स्वेदार्द्रचरणो नृप [094.014]
तस्मिन्दृष्टे ततस्तस्य [094.015]
क्षत्रबन्धोरजायत [094.015]
कारुण्यं दारुणस्यापि [094.015]
व्याधवृत्तिपरिग्रहात् [094.015]
तमुपेत्य च भूपाल [094.016]
क्षत्रबन्धुः स तापसम् [094.016]
उवाच विप्रप्रवरं [094.016]
विमार्गे वर्तते भवान् [094.016]
नैष पन्था द्विजश्रेष्ठ [094.017]
विपिनो ऽयं महाटविः [094.017]
मामन्वेहि त्वरायुक्तो [094.017]
मा विपत्तिं समेष्यसि [094.017]
निशाम्य तद्वचः श्रान्तः [094.018]
क्षत्रबन्धोर्महानुनिः [094.018]
अनुवव्राज राजेन्द्र [094.018]
जलाशाजनितोद्यमः [094.018]
किंचिद्भूभागमासाद्य [094.019]
ददर्श च महामुनिः [094.019]
हंसकारण्डवाकीर्णं [094.019]
प्रोत्फुल्लनलिनं सरः [094.019]
सारसाभिरुतं रम्यं [094.020]
सूपतीर्थमकर्दमम् [094.020]
पद्मोत्पलयुतं चारु [094.020]
पूर्णं स्वच्छेन वारिणा [094.020]
सुशीतवनषण्डैश्च [094.021]
समन्तात्परिवेष्टितम् [094.021]
तत्क्षणात्तृट्परीतानां [094.021]
चक्षुषो ह्लादकारिणम् [094.021]
दृष्ट्वैव स मुनिस्तत्र [094.022]
तदामलजलं सरः [094.022]
सूर्यांशुतप्तो घर्मार्तो [094.022]
निपपात तदम्भसि [094.022]
तत्राश्वास्य कृताह्लादः [094.023]
पपौ वारि नराधिप [094.023]
उज्जीवयन्मुनिवरो [094.023]
जिह्वातालु शनैः शनैः [094.023]
सो ऽपि क्षत्रियदायादो [094.024]
मुनित्राणपरायणः [094.024]
विहाय सशरं चापम् [094.024]
उज्जहार बिसान्यथ [094.024]
ददौ च तस्मै राजेन्द्र [094.025]
क्षुधिताय तपस्विने [094.025]
ययौ च तृप्तिं विप्रो ऽपि [094.025]
बिसनालाम्बुभक्षणात् [094.025]
तमाश्वस्तं कृताहारम् [094.026]
उपविष्टं सुशीतले [094.026]
न्यग्रोधशाखासंछन्ने [094.026]
निष्पङ्के सरसस्तटे [094.026]
संवाहयामास च तं [094.026]
क्षत्रबन्धुः शनैः शनैः [094.026]

पादजङ्घोरुपृष्टेषु [094.027]
तेन संवाहितो मुनिः [094.027]
जहौ श्रममित्रघ्न [094.027]
वाक्यं चेदमुवाच ह [094.027]
कस्त्वं भद्रमुखाद्येह [094.028]
मम प्राणपरिक्षये [094.028]
हस्तावलम्बदो धात्रा [094.028]
जनितो विपिने वने [094.028]
विभ्रष्टमार्गो मूढो ऽहं [094.029]
क्षुत्पिपासाश्रमातुरः [094.029]
त्रातस्त्वया महाभाग [094.029]
कस्त्वमत्र वने ऽजने [094.029]
क्षुत्पिपासाश्रमार्तस्य [094.030]
यस्त्राणं विपिने वने [094.030]
करोति पुरुषव्याघ्र [094.030]
तस्य लोका मधुश्च्युतः [094.030]
स त्वं ब्रूहि महाभाग [094.031]
ममाभ्युद्धारकारकः [094.031]
येषां प्रख्यातयशसां [094.031]
समुत्पन्नः कुले भवान् [094.031]
हर्यश्वस्य कुले जातः [094.032]
पुत्रश्चित्ररथस्य च [094.032]
विमतिर्नाम नाम्नाहं [094.032]
हन्तुमभ्यागतो मृगान् [094.032]
पित्रर्थं मृगयेयं ते [094.033]
लक्ष्यार्थं वा महामते [094.033]
आहारार्थमुताहो ऽत्र [094.033]
मृगया व्यसनं तु ते [094.033]
वृत्तिरेषा मम ब्रह्मन् [094.034]
परित्यक्तस्य बान्धवैः [094.034]
भृत्यैरन्यैश्च नष्टे ऽर्थे [094.034]
निर्धनस्यामिषाशिनः [094.034]
किमर्थं त्वं परित्यक्तो [094.035]
भृत्यस्वजनबन्धुभिः [094.035]
पातकी कीकटः क्षुद्रैर् [094.035]
उपजप्तः परेण वा [094.035]
इत्युक्तः सो ऽभवन्मौनी [094.036]
पश्यन्दोषं नृपात्मनि [094.036]
अदुष्टांश्चात्मनो भृत्यान् [094.036]
विचिन्त्यातीव दुर्मनाः [094.036]
अवेक्ष्य तं साध्वसिनं [094.037]
क्षत्रबन्धुं महामुनिः [094.037]
ध्यात्वा चिरमथापश्यत् [094.037]
क्षत्रबन्धुं स्वदोषिणम् [094.037]
संत्यक्तबन्धुलोके च [094.038]
तस्मिन्दुर्वृत्तचेतसि [094.038]
कृपां चकार स मुनिः [094.038]
क्षत्रबन्धौ दयापरः [094.038]
उवाच च मुनिर्भूयः [094.039]
क्षत्रबन्धुं कृपालुकः [094.039]
उपकारिणमुग्रेण [094.039]
कर्मणा तं विदूषितम् [094.039]
अपि शक्नोषि संयन्तुम् [094.040]
अकार्यप्रसृतं मनः [094.040]
प्राणि पीडानिवृत्तिं च [094.040]
कर्तुं क्रोधादिसंयमम् [094.040]
अपि मैत्रीं जने कर्तुं [094.041]
शक्नोषि त्वं मुधैव या [094.041]
ऐहिकामुष्मिकी वीर [094.041]
क्रियमाणा महाफला [094.041]
न शक्नोमि क्षमां कर्तुं [094.042]
न मैत्रीं मम चेतसि [094.042]
प्राणिनामवधाद्ब्रह्मन् [094.042]
नास्ति दारादिपोषणम् [094.042]
अनायत्तं च मे चित्तं [094.043]
विषयानेव धावति [094.043]
तदप्राप्तौ च सर्वेषां [094.043]
क्रोधादीनां समुद्भवः [094.043]
सो ऽहं न मैत्रीं न क्षान्तिं [094.044]
न हिंसादिविवर्जनम् [094.044]
कर्तुं शक्नोमि यत्कार्यं [094.044]
तदन्यदुपदिश्यताम् [094.044]
तेनैवमुक्तो विप्रो ऽसौ [094.045]
तमुपेक्ष्यममन्यत [094.045]
तथाप्यतिकृपालुत्वात् [094.045]
क्षत्रबन्धुमभाषत [094.045]
यद्येतदखिलं कर्तुं [094.046]
न शक्नोषि ब्रवीहि मे [094.046]
स्वल्पमन्यन्मयोक्तं हि [094.046]
करिष्यति भवान्यदि [094.046]
अशक्यमुक्तं भवता [094.047]
चञ्चलत्वाद्धि चेतसः [094.047]
वाक्षरीरविनिष्पाद्यं [094.047]
यच्छक्यं तदुदीरय [094.047]

उत्तिष्ठता प्रस्वपता [094.048]
प्रस्थितेन गमिष्यता [094.048]
गोविन्देति सदा वाच्यं [094.048]
क्षुतप्रस्खलितादिषु [094.048]
कार्यं वर्त्मनि मूढानां [094.049]
क्षेममार्गे ऽवतारणम् [094.049]
हितं च वाच्यं पृष्टेन [094.049]
शत्रूणामपि जानता [094.049]
एतत्तवोपकाराय [094.050]
भविष्यत्यनुपालितम् [094.050]
यद्यन्यदुपसंहर्तुं [094.050]
न शक्नोषि महीपते [094.050]
इत्युक्त्वा प्रययौ विप्रस् [094.051]
तेन वर्त्मनि दर्शिते [094.051]
सो ऽपि तच्छासनं सर्वं [094.051]
क्षत्रबन्धुश्चकार ह [094.051]
गोविन्देति क्षुते गच्छन् [094.052]
प्रस्थानस्खलितादिषु [094.052]
उदीरयन्नवापाग्र्यां [094.052]
रतिं तत्र शनैः शनैः [094.052]
ततः कालेन महता [094.053]
क्षत्रबन्धुर्ममार वै [094.053]
अजायत च विप्रस्य [094.053]
कुले जातिस्मरो नृप [094.053]
तस्य संस्मरतो जातीः [094.054]
शतशो ऽथ सहस्रशः [094.054]
निर्वेदः सुमहाञ्जज्ञे [094.054]
संसारे ऽत्रातिदुःखदे [094.054]
स चिन्तयामास जगत् [094.054]
सर्वमेतदचेतनम् [094.054]
अहमेको ऽत्र संज्ञावान् [094.055]
गोविन्दोदीरितं हि यत् [094.055]
यच्चाध्वनि विमूढानां [094.055]
कृतं वर्त्मावतारणम् [094.055]
हितमुक्तं च पृष्टेन [094.055]
तस्य जातिस्मृतिः फलम् [094.055]
सो ऽहं जातिस्मरो भूयः [094.056]
करिष्याम्यतिसंकटे [094.056]
तदा संसारचक्रे ऽस्मिन् [094.056]
येन प्राप्स्यामि निर्वृतिम् [094.056]
यस्योच्चारणमात्रेण [094.057]
जाता जातिस्मृतिर्मम [094.057]
तमेवाराधयिष्यामि [094.057]
जगतामीश्वरं हरिम् [094.057]
यन्मयं परमं ब्रह्म [094.058]
तदव्यक्तं च यन्मयम् [094.058]
यन्मयं व्यक्तमप्येतद् [094.058]
भविष्यामि हि तन्मयः [094.058]
यद्यनाराधिते विष्णौ [094.059]
ममैतज्जन्म यास्यति [094.059]
ध्रुवं बन्धवतो मुक्तिर् [094.059]
नैव जातूपपद्यते [094.059]
अहो दुःखमहो दुःखम् [094.060]
अहो दुःखमतीव हि [094.060]
स्वरूपमतिघोरस्य [094.060]
संसारस्यातिदुर्लभम् [094.060]
विण्मूत्रपूयकलिले [094.061]
गर्भवासे ऽतिपीडनात् [094.061]
अशुचावतिबीभत्से [094.061]
दुःखमत्यन्तदुःसहम् [094.061]
दुःखं च जायमानानां [094.062]
गात्रभङ्गादिपीडनात् [094.062]
वातेन प्रेर्यमाणानां [094.062]
मूर्छाकार्यतिभीतिदम् [094.062]
बालत्वे निर्विवेकानां [094.063]
भूतदेवात्मसंभवम् [094.063]
यौवने वार्द्धके चैव [094.063]
मरणे चातिदारुणम् [094.063]
शीतोष्णतृष्णाक्षुद्रोग- [094.064]
ज्वरादिपरिवारितः [094.064]
सर्वदैव पुमानास्ते [094.064]
यावज्जन्मान्तसंस्थितिः [094.064]
दुःखातिशयभूतं हि [094.065]
यदन्ते वासुखं नृणाम् [094.065]
तस्यानुमानं नैवास्ति [094.065]
कार्येणैवानुमीयते [094.065]
कृष्यमाणस्य पुरुषैर् [094.066]
यद्यमस्यातिदुःसहम् [094.066]
दुःखं तत्संस्मृतिप्राप्तं [094.066]
करोति मम वेपथुम् [094.066]
कुम्भीपाके तप्तकुम्भे [094.067]
महारौरवरौरवे [094.067]
कालसूत्रे महायन्त्रे [094.067]
शूकरे कूटशाल्मलौ [094.067]

असिपत्रवने दुःखम् [094.068]
अप्रतिष्ठे च यन्महत् [094.068]
विडालवक्त्रे च तथा [094.068]
तमस्युग्रे च दुःसहम् [094.068]
शस्त्राग्नियन्त्रवेगेषु [094.069]
शीतोष्णादिषु दारुणम् [094.069]
ततश्च मुक्तस्य पुनर् [094.069]
योनिसंक्रमणेषु यत् [094.069]
गर्भस्थस्य च यद्दुःखम् [094.070]
अतिदुःसहमुल्वणम् [094.070]
पुनश्च जायमानस्य [094.070]
जन्म यौवनजं च यत् [094.070]
दुःखान्येतान्यसह्यानि [094.071]
संसारान्तर्विवर्तिभिः [094.071]
पुरुषैरनुभूयन्ते [094.071]
सुखभ्रान्तिविमोहितैः [094.071]
न वै सुखकला काचित् [094.072]
तत्रास्त्यत्यन्तदुःखदे [094.072]
संसारसंकटे तीव्रे [094.072]
उपेतानां कदाचन [094.072]
विषयासक्तचित्तानां [094.073]
मनुष्याणां कदा मतिः [094.073]
संसारोत्तारणे वाञ्छां [094.073]
करिष्यति हि चञ्चला [094.073]
गोविन्दनाम्ना सततं [094.074]
समुच्चारणसंभवम् [094.074]
जातिस्मरत्वमेतन्नः [094.074]
किं वृथैव प्रयास्यति [094.074]
सो ऽहं मुक्तिप्रदानार्थम् [094.075]
अनन्तमजमव्ययम् [094.075]
तच्चित्तस्तन्मयो भूत्वा [094.075]
तोषयिष्यामि केशवम् [094.075]
आत्मानमात्मनैवं स [094.076]
प्रोक्त्वा जातिस्मरो द्विजः [094.076]
तुष्टाव वाग्भिरिष्टाभिः [094.076]
प्रणतः पुरुषोत्तमम् [094.076]
प्रणिपत्याक्षरं विश्वं [094.077]
विश्वहेतुं निरञ्जनम् [094.077]
यत्प्रार्थयाम्यविकलं [094.077]
सकलं तत्प्रयच्छतु [094.077]
कर्तारमकृतं विष्णुं [094.078]
सर्वकारणकारणम् [094.078]
अणोरणीयांसमजं [094.078]
सर्वव्यापिनमीश्वरम् [094.078]
परात्परतरं यस्मान् [094.079]
नास्ति सर्वेश्वरात्परम् [094.079]
तं प्रणम्याच्युतं देवं [094.079]
प्रार्थयामि यदस्तु तत् [094.079]
सर्वेश्वराच्युतानन्त [094.080]
परमात्मञ्जनार्दन [094.080]
संसाराब्धिमहापोत [094.080]
समुद्धर महार्णवात् [094.080]
व्योमानिलाग्न्यम्बुधरास्वरूप [094.081]
तन्मात्रसर्वेन्द्रियबुद्धिरूप [094.081]
अन्तःस्थितात्मन्परमात्मरूप [094.081]
प्रसीद सर्वेश्वर विश्वरूप [094.081]
तमादिरन्तो जगतो ऽस्य मध्यम् [094.082]
आदेस्त्वमादिः प्रलयस्य चान्तः [094.082]
त्वत्तो भवत्येतदशेषमीश [094.082]
त्वय्येव चान्ते लयमभ्युपैति [094.082]
प्रदीपवर्त्यन्तगतो ऽग्निरल्पो [094.083]
यथातिकक्षे विततं प्रयाति [094.083]
तद्वद्विसृष्टेरमरादिभिन्नैर् [094.083]
विकाशमायासि विभूतिभेदैः [094.083]
यथा नदीनां बहवो ऽम्बुवेगाः [094.084]
समन्ततो ऽब्धिं भगवन्विशन्ति [094.084]
त्वय्यन्तकाले जगदच्युतेदं [094.084]
तथा लयं गच्छति सर्वभूते [094.084]
त्वं सर्वमेतद्बहुधैक एव [094.085]
जगत्पते कार्यमिवाभ्युपेतम् [094.085]
यदस्ति यन्नास्ति च तत्त्वमेव [094.085]
हरे त्वदन्यद्भगवन्किमस्ति [094.085]
किंत्वीश माया भवतो निजेयम् [094.086]
आविष्कृताविष्कृतलोकसृष्टे [094.086]
ययाहमेषो ऽन्यतमो ममेति [094.086]
मदीयमस्याभिवदन्ति मूढाः [094.086]
तया विमूढेन मयाभनाभ [094.087]
न यत्कृतं तत्क्वचिदस्ति किंचित् [094.087]
भूम्यम्बराग्निसलिलेषु देव [094.087]
जाग्रत्सुषुप्तादिषु दुःखितेन [094.087]
न सन्ति तावन्ति जलान्यपीड्य [094.088]
सर्वेषु नाथाब्धिषु सर्वकालम् [094.088]
स्तन्यानि यावन्ति मयातिघोरे [094.088]
पीतानि संसारमहासमुद्रे [094.088]

संपच्छिलानां हिमवन्महेन्द्र- [094.089]
कैलासमेर्वादिषु नैव तादृक् [094.089]
देहान्यनेकान्यनुगृह्णतो मे [094.089]
प्राप्तास्थिसंपन्महति यथेश [094.089]
त्वय्यर्पितं नाथ पुनः पुनर्मे [094.090]
मनः समाक्षिप्य सुदुर्धरो ऽपि [094.090]
रागो हि वश्यं कुरुते ततो ऽनु [094.090]
लोभादयः किं भगवन्करोमि [094.090]
एकाग्रतामूल्यबलेन लभ्यं [094.091]
भवौषधं त्वं भगवन्किलैकः [094.091]
मनः परायत्तमिदं भवे ऽस्मिन् [094.091]
संसारदुःखात्किमहं करोमि [094.091]
न सन्ति ते देव भुवि प्रदेशा [094.092]
न येषु जातो ऽस्मि तथा विनष्टः [094.092]
अत्ता मया येषु न जन्तवश्च [094.092]
संभक्षितो यैश्च न जन्तुसंघैः [094.092]
सिंहेन भूत्वा बहवो मयात्ता [094.093]
व्याघ्रेण भूत्वा बहवो मयात्ताः [094.093]
तथान्यरूपैर्बहवो मयात्ताः [094.093]
संभक्षितो ऽहं बहुभिस्ततश्च [094.093]
उत्क्रान्तिदुःखान्यतिदुःसहानि [094.094]
सहस्रशो यान्यनुसंस्मरामि [094.094]
तैः संस्मृतैस्तत्क्षणमेव देव [094.094]
तद्व्यथा मे हृदयं प्रयाति [094.094]
ततश्च दुःखान्यनिवारणानि [094.095]
यन्त्राग्निशस्त्रौघसमुद्भवानि [094.095]
भवन्ति यान्यच्युत नारकानां [094.095]
तान्येव तेषामुपमानमात्रम् [094.095]
दुःखान्यसह्यानि च गर्भवासे [094.096]
विण्मूत्रमध्ये ऽतिनिपीडितस्य [094.096]
भवन्ति यानि च्यवतश्च गर्भात् [094.096]
तेषां स्वरूपं गदितुं न शक्यम् [094.096]
दुःखानि बालेषु महन्ति नाथ [094.097]
कौमारके यौवनिनश्च पुंसः [094.097]
ज्वरातिसाराक्षिरुगादिकानि [094.097]
समस्तदुःखालय एव वृद्धः [094.097]
करोति कर्माच्युत तत्क्षणेन [094.098]
पापं नरः कायमनोवचोभिः [094.098]
यस्याब्दलक्षैरपि नान्तमेति [094.098]
शस्त्रादियन्त्राग्निनिपीडनेषु [094.098]
दुःखानि यानीष्टवियोगजानि [094.099]
भवन्ति संसारविहारभाजाम् [094.099]
प्रत्येकशस्तेषु नरा विनाशम् [094.099]
इच्छन्त्यसूनां ममताभिभूताः [094.099]
शोकाभिभूतस्य ममाश्रु देव [094.100]
यावत्प्रमाणं न जलं पयोदा [094.100]
तावत्प्रमाणं न जलं पयोदा [094.100]
मुञ्चन्त्यनेकैरपि वर्षलक्षैः [094.100]
मन्ये धरित्री परमाणुसंख्याम् [094.101]
उपैति पित्रोर्गणनामशेषम् [094.101]
मित्राण्यमित्राण्यनुजीविबन्धून् [094.101]
संख्यातमीशो ऽस्मि न देवदेव [094.101]
सो ऽहं भृशार्तः करुणां कुरु त्वं [094.102]
संसारगात्रे पतितस्य विष्णो [094.102]
महात्मनां संश्रयमभ्युपेतो [094.102]
नैवावसीदत्यतिदुर्गतो ऽपि [094.102]
परायणं रोगवतां हि वैद्यो [094.103]
महाब्धिमग्नस्य च नौर्नरस्य [094.103]
बालस्य मातापितरौ सुघोर- [094.103]
संसारखिन्नस्य हरे त्वमेकः [094.103]
प्रसीद सर्वेश्वर सर्वभूत [094.104]
सर्वस्य हेतो परमार्थसार [094.104]
मामुद्धरास्मादुरुदुःखपङ्कात् [094.104]
संसारगर्तात्स्वपरिग्रहेण [094.104]
धर्मात्मनामविकलां त्वयि नाथ भक्तिं [094.105]
श्रद्धावतां सततमुद्वहतां वरेण्य [094.105]
कार्यं कियन्मम विमूढधियो ऽधमस्य [094.105]
भूत्वा कृपालुरमलामज देहि बुद्धिम् [094.105]
ज्ञात्वा ययाखिलमसारमसारमेव [094.106]
भूतेन्द्रियादिकमपारममुक्तिमूलम् [094.106]
मायान्तरेयमचलां तव विश्वरूप [094.106]
संमोहितं सकलमेव जगद्ययैतत् [094.106]
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदश्विदिवाकराद्या [094.107]
ज्ञातुं न यं परमगुह्यतमं समर्थाः [094.107]
न त्वामलं स्तुतिपथेष्वहमीशितारं [094.107]
स्तोष्यामि मोहकलुषाल्पमतिर्मनुष्यः [094.107]
यस्मादिदं भवति यत्र जगत्तथेदं [094.108]
यस्मिंल्लयं व्रजति यश्च जगत्स्वरूपः [094.108]
तं सर्गसंस्थितिविनाशनिमित्तभूतं [094.108]
स्तोतुं भवन्तमलमीश न कश्चिदस्ति [094.108]
मूढो ऽयमल्पमतिरल्पसुचेष्टितो ऽयं [094.109]
क्लिष्टं मनो ऽस्य विषयैर्न मयि प्रसङ्गि [094.109]
इत्थं कृपां कुरु मयि प्रणते किलेश [094.109]
त्वां स्तोतुमम्बुजभवो ऽपि हि देव नेशः [094.109]

यस्योदरे सकल एव महीध्रचन्द्र- [094.110]
देवेन्द्ररुद्रमरुदश्विदिवाकराग्नि- [094.110]
भूम्यम्बुवायुगगनं जगतां समुहां [094.110]
स्तोष्यामि तं स्तुतिपदैः कतमैर्भवन्तम् [094.110]
यस्याग्निरुद्रकमलोद्भववासवाद्यैः [094.111]
स्वांशावतारकरणेषु सदाङ्घ्रियुग्मम् [094.111]
अभ्यर्च्यते वद हरे स कथं मयाद्य [094.111]
संपूजितः परमुपैष्यसि तोषमीश [094.111]
न स्तोतुमच्युत भवन्तमहं समर्थो [094.112]
नैवार्चनैरलमहं तव देव योग्यः [094.112]
चित्तं च न त्वयि समाहितमीश दोषैर् [094.112]
आक्षिप्यते कथय किं नु करोमि पापः [094.112]
तत्त्वं प्रसीद भगवन्कुरु मय्यनाथे [094.113]
विष्णो कृपां परमकारुणिकः किल त्वम् [094.113]
संसारसागरनिमग्नमनन्त दीनम् [094.113]
उद्धर्तुमर्हसि हरे पुरुषोत्तमो ऽसि [094.113]
इत्थं तेन नरव्याघ्र [094.114]
स्तुतो भक्तिमता ततः [094.114]
संसारबन्धभीतेन [094.114]
कृष्णः प्रत्यक्षतां ययौ [094.114]
स तं प्रत्यक्षमीशानम् [094.115]
अनन्तमपराजितम् [094.115]
देवदेवमुवाचेदम् [094.115]
अनादिनिधनं हरिम् [094.115]
शिरसा धरणीं गत्वा [094.116]
यतवाक्कायमानसः [094.116]
परापरेश्वरं विष्णुं [094.116]
जिष्णुमाद्यमनोपमम् [094.116]
दिव्याक्षरपदानन्त [094.117]
प्रसन्नो भगवान्यदि [094.117]
तद्देव देहि दीनाय [094.117]
मह्यमेकमिमं वरम् [094.117]
वरं वरय मत्तस्त्वं [094.118]
यत्ते मनसि वर्तते [094.118]
वरार्थिनां द्विजश्रेष्ठ [094.118]
नाफलं मम दर्शनम् [094.118]
जन्मसंपच्चिता देव [094.119]
पापसंपन्ममाखिला [094.119]
प्रयातु नाशमीशेश [094.119]
त्वत्प्रसादादधोक्षज [094.119]
भक्तिभावपरेणाद्य [094.120]
मन्मयेन द्विजोत्तम [094.120]
यः स्तुतो ऽस्मि क्षयं पापं [094.120]
तेनैवाखिलमागतम् [094.120]
अस्मत्तो वरयेहाद्य [094.121]
द्विजवर्यापरं वरम् [094.121]
मयि भक्तिमतामत्र [094.121]
लोके किंचिन्न दुर्लभम् [094.121]
धन्यो ऽस्मि सर्वनाथेन [094.122]
यत्कृतो मय्यनुग्रहः [094.122]
तदेकमेव त्वत्तो ऽहं [094.122]
वरमिच्छामि केशव [094.122]
निर्धूतसर्वपापेभ्यो [094.123]
नाथ पुण्यक्षयान्मम [094.123]
त्वत्परस्यास्तु गोविन्द [094.123]
मा पुनर्देहसंभवः [094.123]
यदक्षरं यदचलं [094.124]
व्यापि सूक्ष्मं च यत्परम् [094.124]
विशेषारविशेषं च [094.124]
गच्छेयं तत्पदं तव [094.124]
एवं भविष्यतीत्युक्त्वा [094.125]
प्रसादसुमुखस्ततः [094.125]
भूपाल तं द्विजश्रेष्ठं [094.125]
गतो ऽन्तर्धानमीश्वरः [094.125]
तत्प्रसादाद्द्विजः सो ऽपि [094.126]
तन्मयस्तद्व्यपाश्रयः [094.126]
प्रक्षीणकर्मबन्धस्तु [094.126]
प्रयातः परमं पदम् [094.126]
एवमक्षीणपापो ऽपि [094.127]
जगतामीश्वरेश्वरम् [094.127]
व्यपाश्रितो हरिं याति [094.127]
पापमुक्तः परं पदम् [094.127]
एतत्त्वया नाव्रतिने [094.128]
न चाशुश्रूषवे परम् [094.128]
आख्येयं राजशार्दूल [094.128]
यश्च नार्चयते हरिम् [094.128]
विष्णुभक्ताय दान्ताय [094.129]
व्रतिने पुण्यशीलिने [094.129]
कथनीयमिदं भूप [094.129]
रहस्यं परमं हरेः [094.129]
बहुशो भवता प्रोक्तं [095.001]
सांप्रतं च यदीरितम् [095.001]
श्रोतुमिच्छामि विप्रेन्द्र [095.001]
तद्विष्णोः परमं पदम् [095.001]

यत्स्वरूपं यदाधारं [095.002]
यत्प्रमाणं यदात्मकम् [095.002]
सर्वधातुः पदं तन्मे [095.002]
श्रोतुमिच्छा प्रवर्तते [095.002]
साध्वेतद्भवता पृष्टं [095.003]
पृष्टमात्मज्ञानसमाश्रितम् [095.003]
तत्कथ्यमानमेकाग्रः [095.003]
शृणु विष्णोः परं पदम् [095.003]
यत्तद्ब्रह्म यतः सर्वं [095.004]
यद्सर्वं सर्वसंस्थितिः [095.004]
अग्राह्यकमनिर्देश्यं [095.004]
तदेव भगवत्पदम् [095.004]
तत्स्वरूपं च राजेन्द्र [095.005]
शृणुष्वेह समाहितः [095.005]
विष्णोः पदस्याव्ययस्य [095.005]
ब्रह्मणो गदतो मम [095.005]
प्रधानादिविशेषान्तं [095.006]
यदेतत्पठ्यते जगत् [095.006]
चराचरस्य तस्याद्यं [095.006]
परं ब्रह्म विलक्षणम् [095.006]
जन्मस्वप्नादिरूपादि- [095.007]
दुःखादिरहितं च यत् [095.007]
नोपचर्यमनिर्देश्यं [095.007]
स्वप्रतिष्ठं च तत्परम् [095.007]
क्षीणक्लेशास्तु संसार- [095.008]
विमुक्तिपथमाश्रिताः [095.008]
योगिनस्तत्प्रपश्यन्ति [095.008]
समर्था नैव चोदितुम् [095.008]
तत्सर्वं सर्वभावस्थं [095.009]
विशेषेण विवर्जितम् [095.009]
पश्यतामप्यनिर्देश्यं [095.009]
यतो वाग्विषये न तत् [095.009]
कुर्वन्त्यालम्बनत्वेन [095.010]
यत्प्राप्त्यर्थं च देवताः [095.010]
ब्रह्म प्रकाशते तेषां [095.010]
तद्वरेणैव सर्वगम् [095.010]
प्रधानादिविशेषान्तं [095.011]
यत्रैतदखिलं जगत् [095.011]
तस्यानन्तस्य कः शक्तः [095.011]
प्रमाणं गदितुं नरः [095.011]
सूक्ष्माणां तत्परं सूक्ष्मं [095.012]
स्थूलानां तन्महत्तरम् [095.012]
सर्वव्याप्यपि राजेन्द्र [095.012]
दूरस्थं चान्तिके च तत् [095.012]
पराङ्मुखानां गोविन्दे [095.013]
विषयाक्रान्तचेतसाम् [095.013]
तेषां तत्परमं ब्रह्म [095.013]
दूराद्दूरतरे स्थितम् [095.013]
न प्राप्नुवन्ति गच्छन्तो [095.014]
यतो जन्मायुतैरपि [095.014]
संसाराध्वनि राजेन्द्र [095.014]
ततो दूरतरे हि तत् [095.014]
तन्मयत्वेन गोविन्दे [095.015]
य नरा न्यस्तचेतसः [095.015]
विषयत्यागिनस्तेषां [095.015]
विज्ञेयं च तदन्तिके [095.015]
सर्वतः पाणिपादान्तं [095.016]
सर्वतो ऽक्षिशिरोमुखम् [095.016]
सर्वतः श्रुतिमल्लोके [095.016]
सर्वमावृत्य तिष्ठति [095.016]
सर्वेन्द्रियगुणाभासं [095.017]
सर्वेन्द्रियविवर्जितम् [095.017]
असक्तं सर्वभृच्चैनन् [095.017]
निर्गुणं गुणभोक्तृ च [095.017]
अविभक्तं च भूतेषु [095.018]
विभक्तमिव च स्थितम् [095.018]
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं [095.018]
ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च [095.018]
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस् [095.019]
तमसः परमुच्यते [095.019]
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं [095.019]
हृदि सर्वस्यधिष्ठितम् [095.019]
तच्चाद्यो जगतामीशः [095.020]
परेशः परमेश्वरः [095.020]
परापरस्वरूपेण [095.020]
विष्णुः सर्वहृदि स्थितः [095.020]
यज्ञेशं यज्ञपुरुषं [095.021]
केचिदिच्छन्ति तत्परम् [095.021]
केचिद्विष्णुं हरिं केचित् [095.021]
केचित्केशवसंज्ञितम् [095.021]
केचिद्गोविन्दनामानं [095.022]
पुण्डरीकाक्षमच्युतम् [095.022]
केचिज्जनार्दनं त्वन्ये [095.022]
वदन्ति पुरुषोत्तमम् [095.022]

केचिद्विरिञ्चिं ब्राह्मणम् [095.023]
अब्जयोनिं तथापरे [095.023]
शर्वमीशमजं रुद्रं [095.023]
शूलिनं चापरे नृप [095.023]
वरुणं केचिदादित्यम् [095.024]
इन्द्रमग्निमथापरे [095.024]
यमं धनेशमपरे [095.024]
सोममन्ये प्रजापतिम् [095.024]
हिरण्यगर्भं कपिलं [095.025]
क्षेत्रज्ञं कालमीश्वरम् [095.025]
स्वभावमन्तरात्मानम् [095.025]
आत्मानं बुद्धिरूपिणम् [095.025]
वदन्ति नामभिश्चान्यैर् [095.025]
अनामानमरूपिणम् [095.025]
श्रूयतां तु नरव्याघ्र [095.026]
वेदवेदान्तनिश्चयः [095.026]
यज्ञेशो यज्ञपुरुषो [095.026]
पुण्डरीकाक्षसंज्ञितः [095.026]
तद्विष्णोः परमं ब्रह्म [095.027]
यतो नावर्तते पुनः [095.027]
स एव रुद्रश्चन्द्रो ऽग्निः [095.027]
सूर्यो वैश्रवणो यमः [095.027]
ब्रह्मा प्रजापतिः कालः [095.028]
स्वभावो बुद्धिरेव च [095.028]
क्षेत्रज्ञाख्यस्तथैवान्याः [095.028]
संज्ञाभिः प्रोच्यते बुधैः [095.028]
संज्ञा तु तस्य नैवास्ति [095.029]
न रूपं नापि कल्पना [095.029]
स सर्वभूतानुगतः [095.029]
परमात्मा सनातनः [095.029]
आख्यातं भवता ब्रह्मन्न् [096.001]
एतद्ब्रह्म सनातनम् [096.001]
यस्मादुत्पद्यते कृत्स्नं [096.001]
जगदेतच्चराचरम् [096.001]
किंतु कौतुकमत्रास्ति [096.002]
मम भार्गवनन्दन [096.002]
तदहं श्रोतुमिच्छामि [096.002]
त्वत्तः संदेहमुत्तमम् [096.002]
यदेतद्भवताख्यातं [096.003]
ब्रह्म ब्रह्मविदां वर [096.003]
परिणामो न तस्यास्ति [096.003]
निर्गुणं सर्वगं यतः [096.003]
सनातनात्सर्वगतात् [096.004]
परिणामविवर्जितात् [096.004]
कथं संजायते कृत्स्नं [096.004]
तस्मादपगुणादपि [096.004]
द्विविधं कारणं भूप [096.005]
निबोध गदतो मम [096.005]
निमित्तकारणं पूर्वं [096.005]
द्वितीयं परिणामि च [096.005]
यथा कुम्भस्य करणे [096.006]
कुलालः प्रथमं नृप [096.006]
कारणं परिणामाख्यं [096.006]
मृद्द्रव्यमपरं स्मृतम् [096.006]
धर्माधर्मादयस्तद्वज् [096.007]
जगत्सृष्टेर्महीपते [096.007]
कारणं परिणामाख्यं [096.007]
निमित्ताख्यं तु तत्परम् [096.007]
कारणं कालगगने [096.008]
यथा संनिधिमात्रतः [096.008]
अविकारितया ब्रह्म [096.008]
तथा सृष्टेनरेश्वर [096.008]
अज्ञानपटलाच्छन्नैर् [096.009]
एकदेशात्मवृत्तिभिः [096.009]
अनात्मवेदिभिर्जीवैर् [096.009]
निजकर्मनिबन्धनैः [096.009]
कुर्वद्भिर्नृपते कर्म [096.010]
कर्तृत्वमुपचारतः [096.010]
क्रियते सर्वभूतस्य [096.010]
सर्वगस्याव्ययात्मनः [096.010]
यतः संबन्धवानेभिर् [096.011]
अशेषैः प्राणिभिः प्रभुः [096.011]
कर्तृत्वमुपचारेण [096.011]
ततस्तस्यापि भूपते [096.011]
भेदाभेदस्वरूपेण [096.012]
तत्र ब्रह्म व्यवस्थितम् [096.012]
तयोः स्वरूपं नृपते [096.012]
श्रूयतामुभयोरपि [096.012]
अनादिसंबन्धवत्या [096.013]
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रविद्यया [096.013]
व्याप्तः पश्यत्यभेदेन [096.013]
ब्रह्म तद्ध्यात्मनि स्थितम् [096.013]
पश्यत्वात्मानमन्यत्र [096.014]
यावद्वै परमात्मनः [096.014]

तावत्संभ्राम्यते जन्तुर् [096.014]
मोहितो निजकर्मणा [096.014]
संक्षीनाशेषकर्मा तु [096.015]
परं ब्रह्म प्रपश्यति [096.015]
अभेदेनात्मनः शुद्धं [096.015]
शुद्धत्वादक्षयो ऽक्षयम् [096.015]
भेदश्च कर्मजनितः [096.016]
क्षेत्रज्ञपरमात्मनोः [096.016]
संक्षीणकर्मबन्धस्य [096.016]
न भेदो ब्रह्मणा सह [096.016]
उपास्योपास्यकतया [096.*(147)]
भेदो यैरपि कथ्यते [096.*(147)]
तौ हि शुद्ध्यर्थमिच्छन्ति [096.*(147)]
मलानां तदुपासनम् [096.*(147)]
परो ऽसावपरेणात्मा [096.*(147)]
संत्यक्तममतेन तु [096.*(147)]
उपास्यते तदा सो ऽपि [096.*(147)]
तद्भावं प्रतिपद्यते [096.*(147)]
कर्मिणां कर्मभेदेन [096.017]
भेदादेवादयो यतः [096.017]
कर्मक्षयादशेषाणां [096.017]
भेदानां संक्षयस्ततः [096.017]
अविद्या तु क्रिया सर्वा [096.018]
विद्या ज्ञानं प्रचक्षते [096.018]
कर्मणा जायते जन्तुर् [096.018]
विद्यया तु विमुच्यते [096.018]
अद्वैतं परमार्थो हि [096.019]
द्वैतं तद्भेद उच्यते [096.019]
उभयं ब्रह्मणो रूपं [096.019]
द्वैताद्वैतविभेदतः [096.019]
तयोः स्वरूपं वदतो [096.019]
निबोध मम पार्थिव [096.019]
देवतिर्यङ्मनुष्याख्यस् [096.020]
तथैव नृप तारकः [096.020]
चतुर्विधो हि भेदो यो [096.020]
मिथ्याज्ञाननिबन्धनः [096.020]
अहमन्यो ऽपरश्चायम् [096.021]
अमी चात्र तथापरे [096.021]
विज्ञानमेतत्तद्द्वैतं [096.021]
यदन्यच्छ्रूयतां परम् [096.021]
ममेत्यहमितिप्रज्ञा- [096.022]
वियुक्तमविकल्पवत् [096.022]
अविकारमनाख्येयम् [096.022]
अद्वैतमपि भूपते [096.022]
अभेदेन तवाख्यातं [096.023]
यदेतद्ब्रह्म शाश्वतम् [096.023]
ज्ञानज्ञेयैक्यसद्भावं [096.023]
तदेवाद्वैतसंज्ञितम् [096.023]
यश्च द्वैते प्रपञ्चः स्यान् [096.024]
निवर्त्योभयचेतसः [096.024]
मनोवृत्तिमयं द्वैतम् [096.024]
अद्वैतं परमार्थतः [096.024]
मनसो वृत्तयस्तस्माद् [096.025]
धर्माधर्मनिमित्तजाः [096.025]
निरोधव्यास्तन्निरोधाद् [096.025]
द्वैतं नैवोपपद्यते [096.025]
मनोदृश्यमिदं द्वैतं [096.026]
यत्किंचित्सचराचरम् [096.026]
मनसो ह्यमतीभावे [096.026]
द्वैताभावात्तदाप्नुयात् [096.026]
मनो हि विषयं यद्वद् [096.027]
आदत्ते तद्वदेव तत् [096.027]
भवत्यपास्तविषयं [096.027]
ग्राहिधर्मे च जायते [096.027]
अग्राहि तच्च विधृतं [096.028]
योगिनां विषयं प्रति [096.028]
निरोधे योगसामर्थ्याद् [096.028]
ब्रह्मग्राह्येव जायते [096.028]
ग्राह्यं च परमं ब्रह्म [096.029]
योगिचित्तस्य पार्थिव [096.029]
समुज्झितग्राह्यवृत्तिर् [096.029]
अमलस्य मलं महत् [096.029]
क्षीणक्लेशास्तु संसार- [096.030]
विमुक्तिपथमाश्रिताः [096.030]
ये ऽपि कर्माणि कुर्वन्ति [096.*(148)]
भगवन्तमपाश्रिताः [096.*(148)]
क्रियायोगपरा राजन् [096.*(148)]
कामाकाङ्क्षाविवर्जिताः [096.*(148)]
ब्रह्मनिष्ठा ध्यानपरा [096.*(148)]
ब्रह्मण्येव व्यवस्थिताः [096.*(148)]
ते ऽपि तद्भावमायान्ति [096.*(148)]
विमुक्तिपथमाश्रिताः [096.*(148)]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [096.030]
समर्था नैव चोदितुम् [096.030]

कर्मणो भावना येयं [096.031]
सा ब्रह्मपरिपन्थिनी [096.031]
कर्मभावनया तुल्यं [096.031]
विज्ञानमुपपद्यते [096.031]
तादृग्भवतो विज्ञप्तिर् [096.032]
यादृशी कर्मभावना [096.032]
क्षये तस्याः परं ब्रह्म [096.032]
स्वयमेव प्रकाशते [096.032]
एवमेतन्मया भूप [096.033]
यथावत्कथितं तव [096.033]
द्वैताद्वैतस्वरूपेण [096.033]
यथा ब्रह्म व्यवस्थितम् [096.033]
यथावत्कर्मनिष्ठानां [096.*(149)]
तत्प्राप्तिः कथितं तथा [096.*(149)]
स्वरूपं ब्रह्मणश्चोक्तम् [096.034]
उभयत्रापि ते पृथक् [096.034]
वासुदेवमयस्यान्यत् [096.034]
किं भूयः कथयामि ते [096.034]
आख्यातं भगवन्सम्यक् [097.001]
परं ब्रह्म त्वया मम [097.001]
विष्णुरेव जगद्धाता [097.001]
योगिनां वर्तते यतः [097.001]
उपायस्तस्य यः प्राप्तो [097.002]
विष्णोरीशस्य भार्गव [097.002]
अद्वैतद्वैतरूपस्य [097.002]
तन्मे विस्तरतो वद [097.002]
येन जन्मजरामृत्यु- [097.003]
महाग्राहभवार्णवम् [097.003]
त्वद्वाक्यनावमारुह्य [097.003]
मुक्तितीरमवाप्नुयाम् [097.003]
तन्मम ब्रूहि तत्त्वेन [097.*(150)]
प्राप्नुयां येन तत्पदम् [097.*(150)]
बन्धः कर्ममयो ह्यत्र [097.004]
यथामुक्तिविघातकृत् [097.004]
तस्यापगमने यत्नः [097.004]
कार्यः संसारभीरुणा [097.004]
सुवर्णादिमहादान- [097.005]
पुण्यतीर्थावगाहनैः [097.005]
शारीरैश्च तथा क्लेशैः [097.005]
शास्त्रोक्तैस्तच्छमो भवेत् [097.005]
देवतास्तुतिसच्छास्त्र- [097.006]
श्रवणैः पुण्यदर्शनैः [097.006]
गुरुशुश्रूषणाच्चैव [097.006]
पापबन्धः प्रणश्यति [097.006]
प्रपाकूपतडागानि [097.007]
देवतायतनानि च [097.007]
कारयन्पुरुषव्याघ्र [097.007]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.007]
योगिनामथ शुश्रूषां [097.008]
तथैवावसथान्नृप [097.008]
कुर्वन्पूर्ताश्रितं चान्यत् [097.008]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.008]
विष्णुः कृष्णो वासुदेवो [097.009]
गोविन्दः पुष्करेक्षणः [097.009]
इत्यादि व्याहरन्नित्यं [097.009]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.009]
विश्वो विश्वेश्वरो विश्व- [097.010]
विधाता धाम शाश्वतम् [097.010]
विष्णुरित्यादि च जपन् [097.010]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.010]
पद्मनाभो हृषीकेशः [097.011]
केशवो मधुसूदनः [097.011]
इत्यादि व्याहरन्नित्यं [097.011]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.011]
नारायणश्चक्रधरो [097.012]
विश्वरूपस्त्रिविक्रमः [097.012]
इत्यादि व्याहरन्नित्यं [097.012]
पापबन्धात्प्रमुच्यते [097.012]
विष्णौ प्रतिष्ठितं विश्वं [097.013]
विष्णुर्विश्वे प्रतिष्ठितः [097.013]
विष्णुर्विश्वेश्वरो विश्वम् [097.013]
इति भावात्प्रमुच्यते [097.013]
एवं संशान्तपापस्य [097.014]
पुण्यवृद्धिमतो नृप [097.014]
इच्छा प्रवर्तते पूंसो [097.014]
मुक्तिदायिषु कर्मसु [097.014]
मुक्तिदायीनि कर्माणि [097.*(151)]
निष्कामेन कृतानि तु [097.*(151)]
भवन्ति दोषक्षयकाः [097.*(151)]
पुण्यबन्धात्प्रमुच्यते [097.*(151)]
नित्यनैमित्तिकानीह [097.015]
कर्माण्युक्तानि यानि वै [097.015]
तेषां निष्कामकारणात् [097.015]
पुण्यबन्धः प्रशाम्यति [097.015]

अनेकजन्मसंसार- [097.016]
चितस्यापि दृढात्मनः [097.016]
कर्मबन्धस्य शैथिल्य- [097.016]
कारणं चापरं शृणु [097.016]
अहिंसा नातिमानित्वम् [097.017]
अदम्भित्वममत्सरम् [097.017]
तितिक्षा समदर्शित्वं [097.017]
मैत्र्यादौ दण्डसंयमः [097.017]
ऋजुत्वमिन्द्रियजयः [097.018]
शौचमाचार्यपूजनम् [097.018]
पुण्यस्तवादिपठनम् [097.018]
अपैशुन्यमकत्थनम् [097.018]
विषयान्प्रति वैराग्यम् [097.019]
अनहंकारमेव च [097.019]
अकामित्वं मनःस्थैर्यम् [097.019]
अद्रोहः सर्वजन्तुषु [097.019]
अविवादस्तथा मूढैर् [097.020]
अमूढैः प्रश्नसत्कथा [097.020]
विविक्तदेशे ऽभिरतिर् [097.020]
महाजनविवर्जनम् [097.020]
सद्भिः सहास्य सततं [097.021]
योगाभ्यासो मितोक्तिता [097.021]
स्त्रीभर्त्सोत्सवसंलाप- [097.021]
विवर्जनमवेक्षणम् [097.021]
परयोषिद्विलासानां [097.022]
काव्यालापविवर्जनम् [097.022]
गीतवादितनृत्तेषु [097.022]
मृदङ्गेष्वपरेषु च [097.022]
असक्तिर्मनसो मौनम् [097.023]
आत्मतत्त्वावलोकनम् [097.023]
तपः संतोषः सत्येषु [097.023]
स्थितिर्लोभविवर्जनम् [097.023]
तथा परिग्रहो राजन् [097.024]
मायाव्याजविवर्जनम् [097.024]
असृङ्मांसादिभूतत्वान् [097.024]
निजदेहजुगुप्सनम् [097.024]
सर्वाण्येतानि भूतानि [097.025]
विष्णुरित्यचला मतिः [097.025]
तत्रैवाशेषभूतेशे [097.025]
भक्तिरव्यभिचारिणी [097.025]
एते गुणा मयाख्याता [097.026]
मनोनिर्वृतिकारकाः [097.026]
शैथिल्यहेतवश्चैते [097.026]
कर्मबन्धस्य पूर्थिव [097.026]
एभिः शान्तिं गते चित्ते [097.027]
ध्यानाकृष्टः स्थितो हरिः [097.027]
शमं नयति कर्माणि [097.027]
सितमिश्रासितानि वै [097.027]
भूयश्च शृणु शास्त्रार्थं [097.028]
संक्षेपाद्वदतो मम [097.028]
यथा संप्राप्यते मुक्तिर् [097.028]
मनुजेन्द्र मुमुक्षुभिः [097.028]
नित्यनैमित्तिकानां तु [097.029]
निष्कामस्य हि या क्रिया [097.029]
निसिद्धानां सकामानां [097.029]
तथैवाकरणं नृप [097.029]
सर्वेश्वरे च गोविन्दे [097.030]
भक्तिरव्यभिचारिणी [097.030]
प्रयच्छति नृणां मुक्तिं [097.030]
मा ते भूदत्र संशयः [097.030]
आख्यातमेतदखिलं [098.001]
यत्पृष्टो ऽसि मया द्विज [098.001]
जायते शमकामानां [098.001]
प्रशमः कर्मणां यथा [098.001]
किंत्वत्र भवता प्रोक्ता [098.002]
प्रशान्तिः सर्वकर्मणाम् [098.002]
नात्यन्तनाशः शान्तानाम् [098.002]
उद्भवो भविता पुनः [098.002]
निजकारणमासाद्य [098.002]
स्तोकस्याग्नेर्यथा तृणम् [098.002]
तदाचक्ष्व महाभाग [098.003]
प्रसादसुमुखो मम [098.003]
संक्षयो येन भवति [098.003]
मूलोद्वर्तेन कर्मणाम् [098.003]
न कर्मणां क्षयो भूप [098.004]
जन्मनामयुतैरपि [098.004]
कर्मक्षयमृते योगाद् [098.004]
योगाग्निः क्षपयेत्परम् [098.004]
तं योगं मम विप्रर्षे [098.005]
प्रणतस्याभियाचतः [098.005]
त्वमाचक्ष्व क्षयो येन [098.005]
जायते ऽखिलकर्मणाम् [098.005]
हिरण्यगर्भो भगवान् [098.006]
अनादिर्मुनिभिः पुरा [098.006]

पृष्टः प्रोवाच यं योगं [098.006]
तं समासेन मे शृणु [098.006]
अनादिकालप्रसृता [098.007]
यथा विद्या महीपते [098.007]
तथा तत्क्षयहेतुत्वाद् [098.007]
योगो विद्यामयो ऽव्ययः [098.007]
तं परंपरया श्रुत्वा [098.008]
मुनयो ऽत्र दयालवः [098.008]
प्रकाशयन्ति भूतानाम् [098.008]
उपकारचिकीर्षवः [098.008]
देवा महर्षयो राजंस् [098.009]
तथा राजर्षयो ऽखिलाः [098.009]
श्रेयोऽर्थिनः पुरा जग्मुः [098.009]
शरणं कपिलं किल [098.009]
ते तमूचुर्भवान्नित्यं [098.010]
दयालुः सर्वजन्तुषु [098.010]
सो ऽस्मानुद्धर संमग्नान् [098.010]
इतः संसारकर्दमात् [098.010]
यच्छ्रेयः सर्ववर्णानां [098.011]
स्त्रीणामप्युपकारकम् [098.011]
यस्मात्परतरं नान्यच् [098.011]
श्रेयस्तद्ब्रूहि नः प्रभो [098.011]
आदावन्ते च मध्ये च [098.012]
नृणां यदुपकारकम् [098.012]
अपि कीटपतंगानां [098.012]
तन्नः श्रेयः परं वद [098.012]
इत्युक्तः कपिलः सर्वैर् [098.013]
देवैर्देवर्षिभिस्तथा [098.013]
नास्ति योगात्परं श्रेयः [098.013]
किंचिदित्युक्तवान्पुरा [098.013]
यथा जन्मायुतैः क्लेशाः [098.014]
स्थैर्यं चेतस्युपागताः [098.014]
तच्छान्तये तथा योगो [098.014]
बहुजन्मार्जितो भवेत् [098.014]
स एवाभ्यसतां नृणां [098.015]
तीव्रसंवेगिचेतसाम् [098.015]
आसन्नतां प्रयात्याशु [098.015]
विष्णुः संन्यस्तकर्मणाम् [098.015]
ब्राह्मणक्षत्रियविशां [098.016]
स्त्रीशूद्रस्य च पावनम् [098.016]
शान्तये कर्मणां नान्यद् [098.016]
योगादस्ति हि मुक्तये [098.016]
अभ्यस्तं जन्मभिर्नैकैः [098.017]
शुभजातिभवेषु यत् [098.017]
योगस्वरूपं तत्तेषां [098.017]
स्त्रीशूद्रत्वे व्यवस्थितम् [098.017]
योगाभ्यासो नृणां येषां [098.018]
नास्ति जन्मान्तराहृतः [098.018]
योगस्य प्राप्तये तेषां [098.018]
शूद्रवैश्यादिकः क्रमः [098.018]
स्त्रीत्वाच्छूद्रत्वमभ्येति [098.019]
ततो वैश्यत्वमाप्नुयात् [098.019]
ततश्च क्षत्रियो विप्रः [098.019]
क्रियाहीनस्ततो भवेत् [098.019]
अनूचानस्तथा यज्वी [098.020]
कर्मन्यासी ततः परम् [098.020]
ततो ज्ञानित्वमभ्येत्य [098.020]
योगी मुक्तिं क्रमाल्लभेत् [098.020]
येषां तु जातिमात्रेण [098.021]
योगाभ्यासस्तिरोहितः [098.021]
आस्ते तत्रैव मुच्यन्ते [098.021]
जातिहेतौ क्षयंगते [098.021]
असत्कर्म कृतं पूर्वम् [098.022]
असज्जातिप्रदायि यत् [098.022]
तस्मिन्योगाग्निना दग्धे [098.022]
तस्य जातेर्बलं कुतः [098.022]
यथा वातेरितः कक्षं [098.023]
दहत्यूर्ध्वशिखो ऽनलः [098.023]
सर्वकर्माणि योगाग्निर् [098.023]
भस्मसात्कुरुते तथा [098.023]
यथा दग्धतुषं बीजम् [098.024]
अबीजत्वान्न जायते [098.024]
योगदग्धैस्तथा क्लेशैर् [098.024]
नात्मा संजायते पुनः [098.024]
अदृष्टा दृष्टतत्त्वानां [098.025]
योगिनां योगविच्युतिः [098.025]
येषां भवति योगित्वं [098.025]
प्राप्नुवन्तीह ते पुनः [098.025]
सज्जातिप्रापकं कर्म [098.026]
कृतं तेन तदात्मना [098.026]
जातिं प्रयान्ति विप्राद्या [098.026]
योगकर्मानुरञ्जिताः [098.026]
तत्राप्यनेकजन्मोत्थ- [098.027]
योगाभ्यासानुरञ्जिताः [098.027]

तेनैवाभ्यासयोगेन [098.027]
ह्रियन्ते तत्त्वविद्यया [098.027]
जैगीषव्यो यथा विप्रो [098.028]
यथा चैवासितादयः [098.028]
हिरण्यनाभो राजन्यस् [098.028]
तथा वै जनकादयः [098.028]
पूर्वाभ्यस्तेन योगेन [098.029]
तुलाधारादयो विशः [098.029]
संप्राप्ताः परमां सिद्धिं [098.029]
शूद्राः पैलवकादयः [098.029]
मैत्रेयी सुलभा गार्गी [098.030]
शाण्डिली च तपस्विनी [098.030]
स्त्रीत्वे प्राप्ताः परां सिद्धिम् [098.030]
अन्यजन्मसमाधितः [098.030]
धर्मव्याधादयो ऽप्यन्ये [098.031]
पूर्वाभ्यासाज्जुगुप्सिते [098.031]
वर्णावरत्वे संप्राप्ताः [098.031]
संसिद्धिं श्रवणी तथा [098.031]
पूर्वाभ्यस्तं च तत्तेषां [098.032]
योगज्ञानं महात्मनाम् [098.032]
सुप्तोत्थितप्रत्ययवद् [098.032]
उपदेशादिना विना [098.032]
तस्माद्योगः परं श्रेयो [098.033]
विमुक्तिफलदो हि यः [098.033]
विमुक्तौ सुखमत्यन्तं [098.033]
संमोहस्त्वितरत्सुखम् [098.033]
एतत्ते सर्वमाख्यातं [098.034]
मया मनुजकुञ्जर [098.034]
श्रेयः परतरं योगात् [098.034]
किंचिदन्यन्न विद्यते [098.034]
कथितं योगमाहात्म्यं [099.001]
भवता मुनिसत्तम [099.001]
स्वरूपं तु न मे प्रोक्तं [099.001]
श्रोतुमिच्छामि तद्व्यहम् [099.001]
द्वैविध्यं नृप योगस्य [099.002]
परं चापरमेव च [099.002]
तच्छृणुष्व वदाम्येष [099.002]
वाच्यं शुश्रूषतां सताम् [099.002]
यो दद्याद्भगवज्ज्ञानं [099.003]
कुर्याद्वा धर्मदेशनाम् [099.003]
कृत्स्नां वा पृथिवीं दद्यान् [099.003]
न तत्तुल्यं कथंचन [099.003]
क्षयिष्णून्यपराणीह [099.004]
दानानि मनुजाधिप [099.004]
एकमेवाक्षयं शस्तं [099.004]
ज्ञानदानमनुत्तमम् [099.004]
दानान्येकफलानीह [099.005]
त्रैलोक्ये ददता सताम् [099.005]
ज्ञानं प्रयच्छता सम्यक् [099.005]
किं न दत्तं भवेन्नृप [099.005]
ज्ञानान्यन्यान्यसाराणि [099.006]
शिल्पिनीव नरेश्वर [099.006]
एकमेव परं ज्ञानं [099.006]
यद्योगप्राप्तिकारकम् [099.006]
अहं वक्ता भवाञ्श्रोता [099.007]
वाच्यो योगो विमुक्तिदः [099.007]
प्राणिनामुपकाराय [099.007]
संपदेषा गुणाधिका [099.007]
परेण ब्रह्मणा सार्धम् [099.008]
एकत्वं यन्नृपात्मनः [099.008]
स एव योगो विख्यातः [099.008]
किमन्यद्योगलक्षणम् [099.008]
अपरं च परं चैव [099.009]
द्वौ योगौ पृथिवीपते [099.009]
तयोः स्वरूपं वक्ष्यामि [099.009]
तदिहैकमनाः शृणु [099.009]
सत्तामात्रं परं ब्रह्म [099.010]
विष्ण्वाख्यमविशेषणम् [099.010]
दुर्विचिन्त्यं यतः पूर्वं [099.010]
तत्प्राप्त्यर्थमथोच्यते [099.010]
वातालीचञ्चलं चित्तम् [099.011]
अनालम्बनमस्थिति [099.011]
सूक्ष्मत्वाद्ब्रह्मणो राजन् [099.011]
अग्राह्यग्राह्यधर्मिणः [099.011]
सम्यगभ्यस्यतो ऽजस्रम् [099.012]
उपवृंहितशक्तिमत् [099.012]
जन्मान्तरशतैर्वापि [099.012]
ब्रह्मग्राह्यभिजायते [099.012]
यद्यन्तराय दोषेण [099.013]
नापकर्षो नराधिप [099.013]
योगिनो योगरूढस्य [099.013]
तालाग्रात्पतनं यथा [099.013]
ज्ञानं प्रयच्छतां सम्यक् [099.*(152)]
किं वदतु भवेन्नृप [099.*(152)]

तदाप्नोति परं ब्रह्म [099.014]
क्लेशेन महता नृप [099.014]
जन्माभ्यासान्तरोत्थेन [099.014]
विज्ञानेन समेधितः [099.014]
विष्णवाख्यं ब्रह्म दुष्प्रापं [099.015]
विषयाकृष्टचेतसा [099.015]
मनुष्येणेति तत्प्राप्ताव् [099.015]
उपायमपरं शृणु [099.015]
सुरूपां प्रतिमां विष्णोः [099.016]
प्रसन्नवदनेक्षणाम् [099.016]
कृत्वात्मनः प्रीतिकरीं [099.016]
सुवर्णरजतादिभिः [099.016]
तस्याश्च लक्षणं भूप [099.017]
शृणुष्व गदतो मम [099.017]
यद्द्रव्या यत्स्वरूपा च [099.017]
कर्तव्या ध्यानकर्मणि [099.017]
सुवर्णरूप्यताम्रैस्तु [099.018]
आरकूटमयीं तथा [099.018]
शैलदारुमृदा वापि [099.018]
लेख्यजां वापि कारयेत् [099.018]
कार्यस्तु विष्णुर्भगवान् [099.019]
सौम्यरूपश्चतुर्भुजः [099.019]
सलिलाध्मातमेघाभः [099.019]
श्रीमाञ्श्रीवत्सभूषितः [099.019]
आबद्धमकुटः स्रग्वी [099.020]
हारभारार्पितोदरः [099.020]
स्वक्षेण चारुचिपुकः [099.020]
सुललाटेन सुभ्रुणा [099.020]
स्वोष्ठेन सुकपोलेन [099.021]
वदनेन विराजता [099.021]
कण्ठेन शुभलेखेन [099.021]
वराभरणधारिणा [099.021]
नानारत्नानतार्ताभ्यां [099.022]
श्रवणाभ्यामलंकृतः [099.022]
पुष्टश्लिष्टायतभुजस् [099.022]
तनुताम्रनखाङ्गुलिः [099.022]
मध्येन त्रिवलीभङ्ग- [099.023]
भूषितेन च चारुणा [099.023]
सुपादः सूरुयुगलः [099.023]
सुकटीगुल्फजानुकः [099.023]
वामपार्श्वे गदादेवी [099.024]
चक्रं देवस्य दक्षिणे [099.024]
शङ्खो वामकरे देयो [099.024]
दक्षिणे पद्म सुप्रभम् [099.024]
ऊर्ध्वदृष्टिमधोदृष्टिं [099.025]
तिर्यग्दृष्टिं न कारयेत् [099.025]
निमीलिताक्षो भगवान् [099.025]
न प्रशस्तो जनार्दनः [099.025]
सौम्या तु दृष्टिः कर्तव्या [099.025]
किंचित्प्रहसितेव च [099.025]
कार्यश्चरणविन्यासः [099.026]
सर्वतः सुप्रतिष्ठितः [099.026]
चरणान्तरसंस्था च [099.026]
बिभ्रती रूपमुत्तमम् [099.026]
कार्या वसुंधरा देवी [099.026]
तत्पादतलधारिणी [099.026]
यादृग्विधा वा मनसः [099.027]
स्थैर्यलम्भोपपादिका [099.027]
नृसिंहवामनादीनां [099.027]
तादृशीं कारयेद्बुधः [099.027]
ब्रह्म तस्यां समारोप्य [099.028]
मनसा तन्मयो भवेत् [099.028]
तामार्चयेत्तां प्रणमेत् [099.028]
तां स्मरेत्तां विचिन्तयेत् [099.028]
तामर्चयंस्तां प्रणमंस् [099.029]
तां स्मरंस्तां च चिन्तयन् [099.029]
विशत्यपास्तदोषस्तु [099.029]
तामेव ब्रह्मरूपिणीम् [099.029]
संकल्पनक्रियारूढः [099.030]
स्वरूपेण नृपात्मनः [099.030]
कुर्वीत भावनां तत्र [099.030]
तद्भावोत्पत्तिकारणात् [099.030]
नान्यत्र मनसानेया [099.030]
बुद्धिरीषदपि क्वचित् [099.030]
यमैश्च नियमैश्चैव [099.031]
पूतात्मा पृथिवीश्वर [099.031]
मूर्तिं भगवतः संयक् [099.031]
पूजयेत्तन्मयः सदा [099.031]
यमांश्च नियमांश्चैव [100.001]
श्रोतुमिच्छामि भार्गव [100.001]
यैर्धूतकल्मषो योगी [100.001]
मुक्तिभागुपजायते [100.001]
अहिंसा सत्यमस्तेयं [100.002]
ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ [100.002]

यमास्तवैते कथिता [100.002]
नियमानपि मे शृणु [100.002]
संतोषशौचस्वाध्यायास् [100.003]
तपश्चेश्वरभावना [100.003]
नियमाः कौरवश्रेष्ठ [100.003]
योगसंसिद्धिहेतवः [100.003]
एभिर्मूलगुणैः सद्भिर् [100.004]
विष्णोर्भक्तिमतस्तथा [100.004]
श्रद्दधानस्य चान्यानि [100.004]
योगाङ्गानि निबोध मे [100.004]
मध्यमप्राणमचलं [100.005]
सुखदायि शुभं शुचि [100.005]
योगसंसिद्धये भूप [100.005]
योगिनामासनं स्मृतम् [100.005]
प्राणायामस्त्रिधा वायोः [100.006]
प्राणस्य हृदि धारणम् [100.006]
कुम्भरेचकपूराख्यास् [100.006]
तस्य भेदास्त्रयो नृप [100.006]
एते निबोध मात्रास्तु [100.007]
नालम्बनगुणान्विताः [100.007]
सालम्बनश्चतुर्थो ऽन्यो [100.007]
बाह्यान्तर्विषयः स्मृतः [100.007]
इन्द्रियाणां स्वविषयाद् [100.008]
बुद्धिः प्रत्येकशस्तु यत् [100.008]
करोत्याहरणं ज्ञेयः [100.008]
प्रत्याहारः स पण्डितैः [100.008]
शुभे ह्येकत्र विषये [100.009]
चेतसो यच्च धारणम् [100.009]
निश्चलत्वात्तु सा सद्भिर् [100.009]
धारणेत्यभिधीयते [100.009]
पौनःपुन्येन तत्रैव [100.010]
विषये सैव धारणा [100.010]
ध्यानाख्या लभते राजन् [100.010]
समाधिमपि मे शृणु [100.010]
अर्थमात्रं च यद्ग्राह्ये [100.011]
चित्तमादाय पार्थिव [100.011]
अर्थस्वरूपवद्भाति [100.011]
समाधिः सो ऽभिधीयते [100.011]
कथितानि तवैतानि [100.012]
योगाङ्गानि कृतैस्तु यैः [100.012]
उत्कर्षो जायते व्यस्तैः [100.012]
समस्तैर्हेयसंक्षयः [100.012]
योगाङ्गान्यङ्गभूतानि [100.013]
ध्यानस्यैतान्यशेषतः [100.013]
ध्यानमप्यवनीपाल [100.013]
योगस्याङ्गत्वमर्छति [100.013]
ध्यानमेकव्रतानां तु [100.014]
कुशलाकुशलेषु तत् [100.014]
अर्थेष्वाशक्तिमभ्येति [100.014]
सर्वदैव नरेश्वर [100.014]
शुभाव्यावर्तितं ध्यानम् [100.015]
अविवेकस्य जायते [100.015]
संसारदुःखदं राजन्न् [100.015]
अशुभालम्बि तद्यतः [100.015]
तदेवाकृष्य दुष्टेभ्यो [100.016]
विषयेभ्यः शुभाशुभम् [100.016]
सर्वसंसारकान्तार- [100.016]
पारमभ्येति मानवः [100.016]
दुःखदाघप्रशमने [100.017]
या चिन्ताहर्निशं नृणाम् [100.017]
तद्ध्यानमविशुद्धार्थं [100.017]
सुखदानामपालने [100.017]
कथं संसारबन्धो ऽयम् [100.018]
अस्मान्मुक्तिः कथं त्विति [100.018]
मनोवृत्तिर्मनुष्याणां [100.018]
ध्यानमेतच्छुभं द्विधा [100.018]
शुद्धमप्येतदखिलं [100.019]
लोभकार्यतयानया [100.019]
सुखाभिलाषो यन्मुक्तौ [100.019]
बन्धुदुःखादिपीडनात् [100.019]
अवाञ्छितफलं लोभम् [100.020]
अलोभांशविवर्जितम् [100.020]
शुभाशुभफलं ध्यानम् [100.020]
अरक्तं द्विष्टमिष्यते [100.020]
दृष्टानुमानागमिकं [100.021]
ध्यानस्यालम्बनं त्रिधा [100.021]
न हि निर्विषयं ध्यानं [100.021]
मूढवृत्तिरिवेष्यते [100.021]
प्राक्स्थूलेषु पदार्थेषु [100.022]
ततः सूक्ष्मेषु पण्डितः [100.022]
ध्यानं कुर्वीत तत्पश्चात् [100.022]
परमाणौ महीपते [100.022]
ध्यानाभ्यासपरस्यैवं [100.023]
हेयालम्बनबाधने [100.023]

तच्छान्तये तद्विपक्ष- [100.023]
भावनामेव भावयेत् [100.023]
तच्चित्तस्तन्मयो ज्ञानी [100.024]
भवत्यस्मान्न दोषवत् [100.024]
कुर्वीतालम्बनं काले [100.024]
कस्मिंश्चिदपि पार्थिव [100.024]
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्त- [100.025]
जगदन्तर्व्यवस्थिताः [100.025]
प्राणिनः कर्मजनित- [100.025]
संस्कारवशवर्तिनः [100.025]
यतस्ततो न ते ध्याने [100.026]
ध्यानिनामुपकारकाः [100.026]
अविद्यान्तर्गताः सर्वे [100.026]
ते हि संसारगोचराः [100.026]
पश्चादुद्भूतबोधाश्च [100.027]
ध्याता नैवोपकारकाः [100.027]
नैसर्गिको न वै बोधस् [100.027]
तेषामप्यन्यतो यतः [100.027]
तस्मात्तदमलं ब्रह्म [100.028]
निसर्गादेव बोधवत् [100.028]
ध्येयं ध्यानविदां सम्यग् [100.028]
यद्विष्णोः परमं पदम् [100.028]
न तद्यज्ञैर्न दानेन [100.029]
न तपोभिर्न तद्व्रतैः [100.029]
पश्यन्त्येकाग्रमनसो [100.029]
ध्यानेनैव सनातनम् [100.029]
तच्च विष्णोः परं रूपम् [100.030]
अनिर्देश्यमजं स्थिरम् [100.030]
यतः प्रवर्तते सर्वं [100.030]
लयमभ्येति यत्र च [100.030]
अनिद्रमजमस्वप्नम् [100.031]
अरूपानाम शाश्वतम् [100.031]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [100.031]
ज्ञानदृश्यं सनातनम् [100.031]
निर्धूतपुण्यपापा ये [100.*(153)]
ते विशन्त्येवमीश्वरम् [100.*(153)]
तच्च सर्वगतं ब्रह्म [100.032]
विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः [100.032]
परमात्मा परः प्रोक्तः [100.032]
सर्वकारणकारणम् [100.032]
अनन्तशक्तिमीशेशं [100.033]
स्वप्रतिष्ठमनोपमम् [100.033]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [100.033]
भगवन्तं सनातनम् [100.033]
यत्र सर्वं यतः सर्वं [100.034]
यः सर्वं सर्वतश्च यः [100.034]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [100.034]
भगवन्तं सनातनम् [100.034]
सर्गादिकारणं यस्य [100.035]
स्वभावादेव शक्तयः [100.035]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [100.035]
भगवन्तं सनातनम् [100.035]
निर्धूतपुण्यपापा यं [100.036]
विशन्त्यव्ययमीश्वरम् [100.036]
योगिनस्तं प्रपश्यन्ति [100.036]
भगवन्तं सनातनम् [100.036]
तत्र योगवतः सम्यक् [100.037]
पुरुषस्य नरेश्वर [100.037]
यदुक्तं लक्षणं तन्मे [100.037]
गदतः श्रोतुमर्हसि [100.037]
ब्रह्मण्येव स्थितं चित्तं [100.038]
सर्वतः संनिवर्तितम् [100.038]
नान्यालम्बनसापेक्षं [100.038]
योगिनः सिद्धिकारकम् [100.038]
संस्थानमविकारेण [100.039]
चेतसो ब्रह्मसंस्थितौ [100.039]
निवात इव दीपस्य [100.039]
योगिनः सिद्धिलक्षणम् [100.039]
एवमेकाग्रचित्तस्य [100.040]
पुण्यापुण्यमशेषतः [100.040]
प्रयाति संक्षयमृते [100.040]
देहारम्भकरे नृप [100.040]
देहारम्भकरस्यापि [100.041]
कर्मणः संक्षयावहः [100.041]
यो योगः पृथिवीपाल [100.041]
शृणु तस्यापि लक्षणम् [100.041]
यत्तद्ब्रह्म परं प्रोक्तं [100.042]
विष्ण्वाख्यमजमव्ययम् [100.042]
चेतसः प्रलयस्तत्र [100.042]
योग इत्यभिधीयते [100.042]
योगसेवानिरोधेन [100.043]
प्रलीने तत्र चेतसि [100.043]
पुरुषः कारनाभावाद् [100.043]
भेदं नैवानुपश्यति [100.043]

परात्मनोर्मनुष्येन्द्र [100.044]
विभागो ज्ञानकल्पितः [100.044]
क्षये तस्यात्मपरयोर् [100.044]
विभागाभाग एव हि [100.044]
परमात्मात्मनोर्यो ऽयम् [100.045]
अविभागः परंतप [100.045]
स एव परमो योगः [100.045]
समासात्कथितस्तव [100.045]
यथा कमण्डलौ भिन्ने [100.046]
तत्तोयं सलिले गतम् [100.046]
व्रजत्यैक्यं तथैवैतद् [100.046]
उभयं कारणक्षयात् [100.046]
यथाग्निरग्नौ संक्षिप्तः [100.047]
समानत्वमनुव्रजेत् [100.047]
तदाख्यस्तन्मयो भूत्वा [100.047]
गृह्यते न विशेषतः [100.047]
एवं ब्रह्मात्मनोर्योगाद् [100.048]
अकत्वमुपपन्नयोः [100.048]
न भेदः कलशाकाश- [100.048]
नभसोरिव जायते [100.048]
प्रक्षीणाशेषकर्मा तु [100.049]
यदा ब्रह्ममयः पुमान् [100.049]
तदा स्वरूपमस्योक्तेर् [100.049]
गोचरे नोपपद्यते [100.049]
घटध्वंसे घटाकाशं [100.050]
न भिन्नं नभसो यथा [100.050]
ब्रह्मणा हेयविध्वंसे [100.050]
विष्णवाख्येन पुमांस्तथा [100.050]
भिन्ने दृतौ यथा वायुर् [100.051]
नैवान्यः सह वायुना [100.051]
क्षीणपुण्याघबन्धस्तु [100.051]
तथात्मा ब्रह्मणा सह [100.051]
ततः समस्तकल्याण- [100.052]
समस्तसुखसंपदाम् [100.052]
आह्लादमन्यमतुलं [100.052]
कमप्याप्नोति शाश्वतम् [100.052]
ब्रह्मस्वरूपस्य तदा ह्य् [100.053]
आत्मनो नित्यदैव सः [100.053]
व्युत्तानकाले राजेन्द्र [100.053]
आस्ते हेयतिरोहितः [100.053]
आदर्शस्य मलाभावाद् [100.054]
वैमल्यं काशते यथा [100.054]
ज्ञानाग्निदग्धहेयस्य [100.054]
सो ऽह्लादो ह्यात्मनस्तथा [100.054]
यथा न क्रियते ज्योत्स्ना [100.055]
मलप्रक्षालनादिना [100.055]
दोषप्रहाणं न ज्ञानम् [100.055]
आत्मनः क्रियते तथा [100.055]
यथोदुपानकरणात् [100.056]
क्रियते न जलाम्बरम् [100.056]
सदेव नीयते व्यक्तिम् [100.056]
असतः संभवः कुतः [100.056]
यथा हेयगणध्वंसाद् [100.057]
अवबोधादयो गुणाः [100.057]
प्रकाश्यन्ते न जन्यन्ते [100.057]
नित्या एवात्मनो हिते [100.057]
ज्ञानवैराग्यमैश्वर्यं [100.058]
धर्मश्च मनुजेश्वर [100.058]
आत्मनो ब्रह्मभूतस्य [100.058]
नित्यमेव चतुष्टयम् [100.058]
एतदद्वैतमाख्यातम् [100.059]
एष योगस्तवोदितः [100.059]
अयं विष्णुरिदं ब्रह्म [100.059]
तथैतत्सत्यमुत्तमम् [100.059]
पुनश्च श्रूयतामेष [100.060]
संक्षेपाद्गदतो मम [100.060]
नानाद्वैकत्वविज्ञान- [100.060]
स्वरूपमवनीपते [100.060]
आत्मा क्षेत्रज्ञसंज्ञो ऽयं [100.061]
संयुक्तः प्राकृतैर्गुणैः [100.061]
तैरेव विगतैः शुद्धः [100.061]
परमात्मा निगद्यते [100.061]
ध्येयं ब्रह्म पुमान्ध्याता [100.062]
उपायो ध्यानसंज्ञितः [100.062]
यस्त्वेतत्करणेष्वास्ते [100.062]
तद्वर्गे का विभागता [100.062]
संक्षेपादपि भूपाल [100.063]
संक्षेपनपरं शृणु [100.063]
पुत्राय यत्पिता ब्रूयात् [100.063]
स्वशिष्यायाथवा गुरुः [100.063]
न वासुदेवात्परमस्ति किंचिन् [100.064]
न वासुदेवाद्गदितं परं च [100.064]
सत्यं परं वासुदेवो ऽमितात्मा [100.064]
नमो नमो वासुदेवाय नित्यम् [100.064]

तस्मात्तमाराधय चिन्तयेशम् [100.065]
अभ्यर्चयानन्तमतन्द्रितात्मा [100.065]
संसारपारं परमीप्समानैर् [100.065]
आराधनीयो हरिरेक एव [100.065]
आराधितो ऽर्थान्धनकाङ्क्षकानां [100.066]
धर्मार्थिनां धर्ममशेषधर्मी [100.066]
ददाति कामांश्च मनोनिविष्टान् [100.066]
मोक्षार्थिनां मुक्तिद एव विष्णुः [100.066]
ममैतत्कथितं सम्यग् [101.001]
आत्मविद्याश्रितं मुने [101.001]
यत्त्वन्यच्छ्रोतुमिच्छामि [101.001]
तत्प्रसन्नो वदस्व मे [101.001]
येयं मुक्तिर्भगवता [101.002]
प्रोक्ता वर्णक्रमान्मम [101.002]
तत्रेच्छामि मुने श्रोतुं [101.002]
वर्णाद्वर्णोत्तरोच्छ्रयम् [101.002]
शूद्रो वैश्यत्वमभ्येति [101.003]
कथं वैश्यश्च भार्गव [101.003]
क्षत्रियत्वं द्विजश्रेष्ठ [101.003]
ब्राह्मणत्वं कथं ततः [101.003]
विप्रत्वान्मुक्तियोग्यत्वं [101.004]
यथा याति महामुने [101.004]
तदहं श्रोतुमिच्छामि [101.004]
त्वत्तो भार्गवनन्दन [101.004]
त्वद्युक्तो ऽयमनुप्रश्नः [101.005]
कुरुवर्य शृणुष्व तम् [101.005]
मयोच्यमानमखिलं [101.005]
वर्णानामुपकारकम् [101.005]
शूद्रधर्मानशेषेण [101.006]
कुर्वञ्शूद्रो यथाविधि [101.006]
वैश्यत्वमेति वैश्यश्च [101.006]
क्षत्रियत्वं स्वकर्मकृत् [101.006]
विप्रत्वं क्षत्रियः सम्यग् [101.007]
द्विजधर्मपरो नृप [101.007]
विप्रश्च मुक्तिलाभेन [101.007]
युज्यते सत्क्रियापरः [101.007]
सर्वेषामेव वर्णानां [101.008]
स्वधर्ममनुवर्तताम् [101.008]
सदोच्छ्रितिर्न्यूनकृतो [101.008]
हानिश्चोत्कृष्टकर्मणः [101.008]
तेषां च ब्राह्मणादीनां [101.009]
वर्णधर्माननुक्रमात् [101.009]
समुच्छ्रितिप्रदान्राजन् [101.009]
गदतो मे निशामय [101.009]
अनसूया दया क्षान्तिः [101.010]
शौचं मङ्गलमस्पृहा [101.010]
अकार्पण्यमनायासस् [101.010]
तथान्यः सार्ववर्णिकः [101.010]
अष्टावेते गुणाः पुंसां [101.011]
परत्रेह च भूतये [101.011]
भवन्ति कुरुशार्दूल [101.011]
पृथग्धर्मांश्च मे शृणु [101.011]
यज्ञाध्ययनदानानि [101.012]
ब्रह्मक्षत्रविशां नृप [101.012]
साधारणानि तेषां तु [101.012]
जीविकाकर्म कथ्यते [101.012]
याजनाध्यापनैर्विप्रस् [101.013]
तथा शस्तप्रतिग्रहैः [101.013]
भृत्यादिभरणं कुर्याद् [101.013]
यज्ञांश्च विभवे सति [101.013]
भृत्यादिभरणे नालं [101.014]
स्ववृत्त्या हि यदा द्विजः [101.014]
तदा जीवेत्समालम्ब्य [101.014]
वृत्तिं क्षत्रियवैश्ययोः [101.014]
संत्यजेत समस्तांस्तान् [101.015]
न कुर्याद्वृत्तिसंकरम् [101.015]
आपत्काले ऽपि विप्रस्य [101.015]
शूद्रकर्म न शस्यते [101.015]
प्रजानां पालनं सम्यग् [101.016]
विधिः प्रथमकल्पितः [101.016]
राजन्यस्य महीपाल [101.016]
शस्त्राजीवेन वा भृतिः [101.016]
तदुत्पन्नैर्धनैः कुर्यात् [101.017]
समस्ताः क्षत्रियक्रियाः [101.017]
तस्याप्यापदि वैश्यस्य [101.017]
या वृत्तिः सा विधीयते [101.017]
वाणिज्यं वैश्यजातस्य [101.018]
पशूनां पालनं कृषिः [101.018]
दद्याद्यजेच्च विधिवत् [101.018]
तदुत्पन्नधनेन सः [101.018]
द्विजातिजनशुश्रूषां [101.019]
क्रयविक्रयजैर्धनैः [101.019]
शूद्रो यजेत्पाकयज्ञैर् [101.019]
दद्यादिष्टानि चार्थिनाम् [101.019]

तस्मै शुश्रूषवे देयं [101.020]
जीर्णवस्त्रमुपानहौ [101.020]
छत्रादिकं तथा कुर्यात् [101.020]
सम्यग्धर्मोपपादनम् [101.020]
चतुर्णामपि वर्णानां [101.021]
धर्मस्ते कथितो मया [101.021]
शृणुष्व च महीपाल [101.021]
धर्ममाश्रमिणामतः [101.021]
कृतोपनयनः पूर्वं [101.022]
ब्रह्मचारी गुरोर्गृहे [101.022]
गुरुशुश्रूषणं कुर्याद् [101.022]
भैक्षान्नकृतभोजनः [101.022]
निवेद्य गुरवे भैक्षम् [101.023]
अत्तव्यं तदनुज्ञया [101.023]
गुरोर्भुक्तवतः पश्चान् [101.023]
नातिस्वादुमुदावता [101.023]
वह्निशुश्रूषणं क्रुयाद् [101.024]
वेदाहरणमेव च [101.024]
गुरोरर्थे सदा तोयं [101.024]
समिदाहरणं तथा [101.024]
पुष्पादीनां च कुर्वीत [101.025]
सुप्ते तस्मिञ्शयीत च [101.025]
शयने च समुत्तिष्ठेत् [101.025]
तं व्रजन्तमनुव्रजेत् [101.025]
आहूतश्च पठेत्तेन [101.026]
तन्मना नान्यतोमुखः [101.026]
व्रतानि चरता संयग् [101.026]
ग्राह्यो वेदो यतात्मना [101.026]
दण्डवत्प्लवनं स्नाने [101.026]
शस्तं नास्याङ्गशोधनम् [101.026]
अधीत्य वेदान्वेदौ वा [101.027]
वेदं वापि यथाक्रमम् [101.027]
अविप्लुतब्रह्मचर्यो [101.027]
गृहस्थाश्रममावसेत् [101.027]
यथेष्टां दक्षिणां दत्त्वा [101.028]
गुरवे कुरुनन्दन [101.028]
ततो ऽनुज्ञां समासाद्य [101.028]
गृहस्थाश्रममावसेत् [101.028]
तेनैवान्तं व्रजेत्प्राज्ञस् [101.029]
तच्छुश्रूषणतत्परः [101.029]
वानप्रस्थाश्रमं तस्माच् [101.029]
चतुर्थं वापि संश्रयेत् [101.029]
यथाक्रमं वा कुर्वीत [101.029]
विधिवद्दारसंग्रहम् [101.029]
ततस्त्वरोगिकुलजां [101.030]
तुल्यां पत्नीं समुद्वहेत् [101.030]
गृहस्थाश्रमवृत्त्यर्थम् [101.030]
अव्यङ्गां विधिना नृप [101.030]
आख्यातवर्णधर्मेण [101.031]
धनं लब्ध्वा महीपते [101.031]
कुर्वीत श्रद्धया युक्तो [101.031]
नित्यनैमित्तिकीः क्रियाः [101.031]
अभ्यागतातिथीन्बन्धून् [101.032]
भृत्यादीनातुरांस्तथा [101.032]
तोषयेच्छक्तितो ऽन्नेन [101.032]
वयांस्यन्त्यपशूनपि [101.032]
ऋतावुपगमश्चैव [101.033]
गृहस्थस्यापि शब्दितः [101.033]
धर्मो धर्मभृतां श्रेष्ठ [101.033]
यज्ञोच्छिष्टं च भोजनम् [101.033]
हव्येन प्रीणयेद्देवान् [101.034]
पितॄन्कव्येन शक्तितः [101.034]
मनुष्यानन्नपानेन [101.034]
स्वाध्यायेन र्षितर्पणम् [101.034]
कुर्याच्च प्रीणनं नित्यं [101.035]
भूतानां बलिकर्मणा [101.035]
प्रजापतिं सुतोत्पत्त्या [101.035]
हार्देन सकलं जनम् [101.035]
शुभेन कर्मणात्मानम् [101.036]
उपदेशेन चात्मजान् [101.036]
अनुजीविजनं वृत्या [101.036]
गृहस्थस्तोषयेत्सदा [101.036]
तथैवापरमानेभ्यः [101.037]
प्रदेयं गृहमेधिना [101.037]
अन्नं भिक्षार्थिनो ये च [101.037]
परिव्राड्ब्रह्मचारिणः [101.037]
एवं गृहाश्रमे देवाः [101.038]
पितरो मुनयस्तथा [101.038]
सर्वकामान्प्रयच्छन्ति [101.038]
मनुष्याश्च सुपूजिताः [101.038]
गृहस्थस्तु यदा पश्येद् [101.039]
वलीपलितमात्मनः [101.039]
अपत्यस्य तथापत्यं [101.039]
तदारण्यं समाश्रयेत् [101.039]

पितृदेवातिथीनां तु [101.040]
स्मृतं तत्रापि पूजनम् [101.040]
तथैवारण्यभोगश्च [101.040]
तपोभिश्चात्मकर्षणम् [101.040]
ब्रह्मचर्यं महीशय्या [101.041]
होमस्त्रिषवणाप्लुतिः [101.041]
मौनादिकरणं शस्तं [101.041]
जटावल्कलधारणम् [101.041]
ग्रीष्मे पञ्चतपोभिश्च [101.042]
वर्षास्वभ्रावकाशिकैः [101.042]
जलशय्या च हेमन्ते [101.042]
भाव्यं वननिकेतनैः [101.042]
इङ्गुदैरण्डतैलेन [101.043]
गात्राभ्यङ्गानि चेष्यते [101.043]
श्यामाकनीवारमयं [101.043]
फलमूलैश्च भोजनम् [101.043]
अप्रवेशस्तथा ग्रामे [101.044]
वानप्रस्थविधिः स्मृतः [101.044]
वानप्रस्थस्य ते प्रोक्तं [101.044]
धर्मलक्षणमादितः [101.044]
आश्रमणं त्वपरं भिक्षोः [101.045]
शृणुष्व गदतो मम [101.045]
ग्रामैकरात्रिर्वसतिर् [101.045]
नगरे पञ्चरात्रिका [101.045]
सर्वसङ्गपरित्यागः [101.046]
क्षान्तिरिन्द्रियसंयमः [101.046]
विकालभैक्षचरणम् [101.046]
अनारम्भस्तथा नृप [101.046]
आत्मज्ञानावबोधेच्छा [101.047]
ब्रह्मचर्यं समाधिना [101.057]
आत्मावलोकनं चैव [101.047]
भिक्षोः शस्तानि पार्थिव [101.047]
चतुर्थश्चैष कथितस् [101.048]
तव भिक्षोर्मयाश्रमः [101.048]
क्रमाद्विमुक्तिकामानां [101.048]
पुरुषाणामयं विधिः [101.048]
एवं तु वर्णधर्मेण [101.049]
तथा चाश्रमकर्मना [101.049]
निजेन संपूज्य हरिं [101.049]
सिद्धिमाप्नोति मानवः [101.049]
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च [101.050]
भिक्षुर्वैखानसस्तथा [101.050]
कुर्वन्तो निजकर्माणि [101.050]
विष्णुमेव यजन्ति ते [101.050]
यतो हि देवताः सर्वा [101.051]
ब्रह्माद्याः कुरुनन्दन [101.051]
अंशभूता जगद्धातुर् [101.051]
विष्णोरव्यक्तजन्मनः [101.051]
विश्वे देवा यतो विष्णुर् [101.052]
विष्णुः पितृगणो यतः [101.052]
देवा यज्ञभुजश्चेशो [101.052]
यतः पापहरो हरिः [101.052]
विश्वे भूतानि भूतानि [101.053]
यतो विष्णुस्तथर्षयः [101.053]
ततः सर्वाश्रमाणां हि [101.053]
पूज्य एको जनार्दनः [101.053]
सर्वेश्वरं सर्वमयं समस्त- [101.054]
संसारहेतुक्षयकारणेशम् [101.054]
वरं वरेण्यं वरदं वरिष्ठं [101.054]
विष्णुं क्रियावान्यजते मनुष्यः [101.054]
यस्योदरे जगदिदं परमाणुभूतं [101.055]
चन्द्रेन्द्ररुद्रमरुदश्विवसुप्रजेशैः [101.055]
सर्वैः समेतममितात्मतनोस्तमेकम् [101.055]
अभ्यर्च्य विष्णुमभिवाञ्छितमस्त्यलभ्यम् [101.055]
आराध्य यं भुवनभावनमच्युताख्यम् [101.056]
ऐश्वर्यमीप्सितमवाप पतिः सुराणाम् [101.056]
त्रैलोक्यसारममरार्चितपादपद्मम् [101.056]
एकं तमेव हरिमर्चयतार्चनीयम् [101.056]
यस्याङ्घ्रिपद्मगलिताम्भसि देव दैत्य- [101.057]
यक्षादिभिः सकलपापमपोह्य सिद्धिः [101.057]
संप्राप्यते मरणजन्मजरापहन्त्री [101.057]
विष्णोरजात्कथय को ऽभ्यधिकस्ततो ऽस्ति [101.057]
कमलजहरसूर्यचन्द्रशक्रैः [101.058]
सततमभिष्टुतमाद्यमीशितारम् [101.058]
सकलभुवनकार्यकारनेशं [101.058]
पुरुषतनुं प्रणतो ऽस्मि वासुदेवम् [101.058]
श्रुतं भगवतो रूपम् [102.001]
अद्वैते यत्त्वयोदितम् [102.001]
विष्णोर्भृगुकुलश्रेष्ठ [102.001]
यच्च द्वैते महात्मनः [102.001]
अविद्याभिन्नदृग्बुद्धिः [102.002]
पुरुषो मुनिपुङ्गव [102.002]
द्वैतभूते जगत्यस्मिन्न् [102.002]
अद्वैतं भावयेत्कथम् [102.002]

क्रोधलोभादयो दोषा [102.003]
ये मुक्तेः परिपन्थिनः [102.003]
विनिवृत्तिरूपा येन [102.003]
तेषां येन वदेह तम् [102.003]
सर्वेश्वरेश्वरेशस्य [102.004]
यच्च रूपं हरेः परम् [102.004]
तच्चाहं श्रोतुमिच्छामि [102.004]
त्वत्तो भृगुकुलोद्वह [102.004]
सम्यक्पृष्टमिदं भूप [102.005]
भवता गुह्यमुत्तमम् [102.005]
द्वैताद्वैतकथालाप- [102.005]
संबन्धादुपकारकम् [102.005]
पुरा धर्मगृहे जज्ञे [102.006]
चतुर्मूर्तिर्नरेश्वर [102.006]
देवदेवो जगद्धाता [102.006]
परमात्मा जनार्दनः [102.006]
जगतः पालनार्थाय [102.007]
दुर्वृत्तनिधनाय च [102.007]
स्वेच्छया भगवान्विष्णुः [102.007]
संभवत्येव भूतले [102.007]
स्वर्गे वापि भूलोके वा [102.008]
भुवर्लोके ऽथवा विभुः [102.008]
यत्र वा रोचते तत्र [102.008]
चिकीर्षुर्जगतो हितम् [102.008]
तुरीयांशेन धर्मस्य [102.009]
भगवान्भूतभावनः [102.009]
यदावतारं कृतवांस् [102.009]
तदा तच्चरितं शृणु [102.009]
नरो नारायणश्चैव [102.010]
हरिः कृष्णस्तथैव च [102.010]
विष्णोरंशांशका ह्येते [102.010]
चत्वारो धर्मसूनवः [102.010]
तेषां नारायणनरौ [102.011]
गन्धमादनपर्वते [102.011]
आत्मन्यात्मानमाधाय [102.011]
तेपते परमं तपः [102.011]
ध्यायमानावनौपम्यं [102.012]
स्वकारणमकारणम् [102.012]
वासुदेवमनिर्देश्यम् [102.012]
अप्रतर्क्यमजं परम् [102.012]
योगयुक्तौ महामौनम् [102.012]
आस्थितौ गुरुतेजसौ [102.012]
तयोस्तपःप्रभावेण [102.013]
न तताप दिवाकरः [102.013]
ववौ चाशङ्कितो वायुः [102.013]
सुखस्पर्शो ह्यसर्करः [102.013]
शिशिरो ऽभवदत्यर्थं [102.014]
ज्वलन्नपि विभावसुः [102.014]
सिंहव्याघ्रादयः सौम्याश् [102.014]
चेरुः सह मृगैर्गिरौ [102.014]
तयोर्गौरवभारार्ता [102.015]
पृथिवी पृथिवीपते [102.015]
चचाल भूधराश्चेलुश् [102.015]
चुक्षुभुश्च महाब्धयः [102.015]
देवाश्च स्वेषु धिष्ण्येषु [102.016]
निष्प्रभेषु हतप्रभाः [102.016]
बभूवुरवनीपाल [102.016]
परमं क्षोभमागताः [102.016]
देवराजस्ततः शक्रः [102.017]
संत्रस्तस्तपसस्तयोः [102.017]
युयोजाप्सरसः शुभ्रास् [102.017]
तयोर्विघ्नचिकीर्षया [102.017]
रम्भे तिलोत्तमे कुण्ठे [102.018]
घृताचि ललितावति [102.018]
उम्लोचे सुभ्रुप्रम्लोचे [102.018]
सौरभे ऽपि मदोद्धते [102.018]
अलम्बुषे मिश्रकेशि [102.019]
पुण्डरीके वरूथिनि [102.019]
विलोभनीयं बिभ्राणा [102.019]
वपुर्मन्मथबोधनम् [102.019]
गन्धमादनमासाद्य [102.019]
कुरुध्वं वचनं मम [102.019]
नरनारायणौ तत्र [102.020]
तपोदीक्षान्वितौ द्विजौ [102.020]
तप्येते धर्मतनयौ [102.020]
तपः परमदुश्चरम् [102.020]
तावस्माकं वरारोहाः [102.021]
कुर्वाणौ परमं तपः [102.021]
कर्मातिशयदुःखार्ति- [102.021]
प्रदावयतिनाशकौ [102.021]
तद्गच्छत न भीः कार्या [102.022]
भवतीभिरिदं वचः [102.022]
स्मरः सहायो भविता [102.022]
वसन्तश्च वराङ्गनाः [102.022]

रूपं च वः समालोक्य [102.023]
मदनोद्दीपनं परम् [102.023]
कन्दर्पवशमभ्येति [102.023]
विवशः को न मानवः [102.023]
इत्युक्ता देवराजेन [102.024]
मदनेन समं तदा [102.024]
जग्मुरप्सरसः सर्वा [102.024]
वसन्तश्च महीपते [102.024]
गन्धमादनमासाद्य [102.025]
पुंस्कोकिलकुलाकुलम् [102.025]
चकार माधवो रम्यं [102.025]
प्रोत्फुल्लवनपादपम् [102.025]
प्रववौ दक्षिणः सद्यो [102.026]
मलयानुगतो ऽनिलः [102.026]
भृङ्गमालारुतरवैर् [102.026]
रमणीयमभूद्वनम् [102.026]
गन्धश्च सुरभिः सद्यो [102.027]
वनराजिसमुद्भवः [102.027]
किंनरोरगयक्षाणां [102.027]
बभूव घ्राणतर्पणः [102.027]
वराङ्गनाश्च ताः सर्वा [102.028]
नरनारायणावृषी [102.028]
विलोभयितुमारब्धा [102.028]
वराङ्गललितैः स्मितैः [102.028]
जगुर्मनोहरं काश्चिन् [102.029]
ननृतुश्चात्र चापराः [102.029]
अवादयंस्तथैवान्या [102.029]
मनोहरतरं नृप [102.029]
हावैर्भावैः स्मितैस्त्रासैस् [102.030]
तथान्या वल्गुभाषितैः [102.030]
तयोः क्षोभाय तन्वङ्ग्यश् [102.030]
चक्रुरुद्यममङ्गनाः [102.030]
तथापि न तयोः कश्चिन् [102.031]
मनसः पृथिवीपते [102.031]
विकारो ऽभवदध्यात्म- [102.031]
पारसंप्राप्तचेतसोः [102.031]
निवातस्थौ यथा दीपाव् [102.032]
अकम्पौ नृप तिष्ठतः [102.032]
वासुदेवार्पणे स्वच्छे [102.032]
तथैव मनसी तयोः [102.032]
पूर्यमाणो ऽपि चाम्भोभिर् [102.033]
भुवमन्यां महोदधिः [102.033]
यथा न याति न ययौ [102.033]
तथा तन्मानसं क्वचित् [102.033]
सर्वभूतहितौ ब्रह्म [102.034]
वासुदेवमयं परम् [102.034]
मन्यमानौ न रागस्य [102.034]
द्वेषस्य च वशंगतौ [102.034]
स्मरो ऽपि न शशाकाथ [102.035]
प्रवेष्टुं हृदयं तयोः [102.035]
विद्यामयं दीपयुतम् [102.035]
अन्धकारमिवालयम् [102.035]
पुष्पोज्ज्वलांस्तरुवरान् [102.036]
वसन्तं दक्षिणानिलम् [102.036]
ताश्चैवाप्सरसः सर्वाः [102.036]
कन्दर्पं च महामुनी [102.036]
यच्चारब्धं तपस्ताभ्याम् [102.037]
आत्मानं गन्धमादनम् [102.037]
ददृशाते ऽखिलं रूपं [102.037]
ब्रह्मणः पुरुषर्षभ [102.037]
दाहाय नानलो वह्नेर् [102.038]
नापःक्लेदाय चाम्भसः [102.038]
तद्द्रव्यमेव तद्द्रव्य- [102.038]
विकाराय न वै यतः [102.038]
ततो विज्ञानविज्ञात- [102.039]
परब्रह्मस्वरूपयोः [102.039]
मधुकन्दर्पयोषित्सु [102.039]
विकारो नाभवत्तयोः [102.039]
ततो गुरुतरं यत्नं [102.040]
वसन्तमदनौ नृप [102.040]
चक्राते ताश्च तन्वङ्ग्यस् [102.040]
तत्क्षोभाय पुनः पुनः [102.040]
अथ नारायणो धैर्य- [102.041]
गाम्भीर्यौदार्यमानसः [102.041]
ऊरोरुत्पादयामास [102.041]
तां वरोरुबलां तदा [102.041]
त्रैलोक्यसुन्दरीरत्नम् [102.042]
अशेषमवनीपते [102.042]
गुणलाघवमभ्येति [102.042]
यस्याः संदर्शनादनु [102.042]
तां विलोक्य महीपाल [102.043]
चकम्पे माधवानिलम् [102.043]
वसन्तो विस्मयं यातः [102.043]
संयातः संस्मरं स्मरः [102.043]

रम्भातिलोत्तमाद्याश्च [102.044]
विलक्षा देवयोषितः [102.044]
न रेजुरवनीपाल [102.044]
तल्लक्षहृदयेक्षणाः [102.044]
ततः कामो वसन्तश्च [102.045]
पार्थिवाप्सरसश्च ताः [102.045]
प्रणम्य भगवन्तौ तौ [102.045]
तुष्टुवुर्मुनिसत्तमौ [102.045]
प्रसीदतु जगद्धाता [102.046]
यस्य देवस्य मायया [102.046]
मोहिताः स्म विजानीमो [102.046]
नान्तरं वन्द्यनिन्द्ययोः [102.046]
प्रसीदतु स नो देवो [102.047]
यस्य रूपमिदं द्विधा [102.047]
धाम भूतस्य लोकानाम् [102.047]
अनादेरत्र तिष्ठति [102.047]
नरनारायणौ देवौ [102.048]
शार्ङ्गचक्रायुधावुभौ [102.048]
आस्तां प्रसादसुमुखाव् [102.048]
अस्माकमपराधिनाम् [102.048]
निधानं सर्वविद्यानां [102.049]
सर्वपापेन्धनानलः [102.049]
नारायणो नो भगवान् [102.049]
सर्वपापं व्यपोहतु [102.049]
शार्ङ्गचक्रायुधः श्रीमान् [102.050]
आत्मज्ञानमयो ऽनघः [102.050]
नरः समस्तपापानि [102.050]
हत्वात्मा सर्वदेहिनाम् [102.050]
जटाकलापबन्धो ऽयम् [102.051]
अनयोरक्षयात्मनोः [102.051]
सौम्या च दृष्टिः पापानि [102.051]
हन्तु सर्वाणि नः शुभा [102.051]
प्रसीदतु नरो ऽस्माकं [102.052]
तथा नारायणो ऽव्ययः [102.052]
अपराधः कृतो ऽस्माभिर् [102.052]
ययोरव्यक्तजन्मनोः [102.052]
क्व मूर्तिरैश्वर्यगुणैर् [102.053]
युक्ता दिव्यैर्महात्मनोः [102.053]
क्व नः शरीरकाणीदृग् [102.053]
मिश्रकर्मचितानि वै [102.053]
तथाप्यविद्यादुष्टेन [102.054]
मनसा यः कृतो हि वाम् [102.054]
अस्माभिरपराधो ऽयं [102.054]
क्षम्यतां सुमहाद्युती [102.054]
शरणं च प्रपन्नानां [102.055]
तवास्मीति च वादिनाम् [102.055]
प्रसादं पितृहन्तृणाम् [102.055]
अपि कुर्वन्ति साधवः [102.055]
एष एव वरो ऽस्माकम् [102.056]
अविवेकाहृतो महान् [102.056]
त्रैलोक्यवन्द्यौ यन्नाथौ [102.056]
विलोभयितुमागताः [102.056]
प्रसीद देव विज्ञान- [102.057]
घनमूढदृशामपि [102.057]
भवन्ति सन्तः सततं [102.057]
सद्धर्मन्यवतारकाः [102.057]
दृष्ट्वैतन्नः समुत्पन्नं [102.058]
यथा स्त्रीरत्नमीदृशम् [102.058]
त्वयि नारायणोत्पन्ना [102.058]
श्रेष्ठा पारवती मतिः [102.058]
तेन सत्येन सत्यात्मन् [102.059]
परमात्मन्सनातनम् [102.059]
नारायण प्रसीदेति [102.059]
सर्वलोकपरायण [102.059]
प्रसन्नबुद्धे शान्तात्मन् [102.060]
प्रसन्नवदनेक्षण [102.060]
प्रसीद योगिनामीश [102.060]
नर सर्वगताच्युत [102.060]
नमस्यामो नरं देवं [102.061]
तथा नारायणं हरिम् [102.061]
नमो नराय नम्याय [102.061]
नमो नारायणाय च [102.061]
प्रसन्नानामनाथानाम् [102.062]
अपराधवतां प्रभुः [102.062]
शं करोतु नरो ऽस्माकं [102.062]
शं नारायण देहि नः [102.062]
एवमभ्यर्थितः स्तुत्या [102.063]
रागद्वेषादिवर्जितः [102.063]
प्राहेशः सर्वभूतानां [102.063]
साध्यो नारायणो नृप [102.063]
स्वागतं मधवे काम [102.064]
भवतो ऽप्सरसामपि [102.064]
यत्कार्यमागतानां व [102.064]
इहास्माभिस्तदुच्यताम् [102.064]

यूयं संसिद्धये नूनम् [102.065]
अस्माकं वलशत्रुणा [102.065]
संप्रेषितास्ततो ऽस्माकं [102.065]
नृत्तगेयादिदर्शितम् [102.065]
न वयं नृत्तगीतेन [102.066]
नाङ्गचेष्टादिभाषितैः [102.066]
लुभ्यामो विषतो मन्ये [102.066]
विषया दारुणात्मकाः [102.066]
शब्दादिसङ्गदुष्टानि [102.067]
यदा नाक्षाणि नः शुभाः [102.067]
तदा नृत्तादयो भावाः [102.067]
कथं लोभप्रदायिनः [102.067]
ते सिद्धाः स्म न वै साध्या [102.068]
भवतीनां स्मरस्य च [102.068]
माधवस्य च शक्रो ऽपि [102.068]
स्वास्थ्यं यात्वविशङ्कितः [102.068]
यो ऽसौ परस्मात्परमः [102.069]
पुरुषात्परमेश्वरः [102.069]
परमात्मा हृषीकेशः [102.069]
स्थावरस्य चरस्य च [102.069]
उत्पत्तिहेतुरन्ते च [102.070]
यस्मिन्सर्वं प्रलीयते [102.070]
स सर्ववासिदेवत्वाद् [102.070]
वासुदेवेत्युदाहृतः [102.070]
वयमंशांशकास्तस्य [102.071]
चतुर्व्यूहस्य मायिनः [102.071]
तदादेशितवर्त्मनो [102.071]
जगद्बोधाय देहिनः [102.071]
तं सर्वभूतं सर्वेशं [102.072]
सर्वत्र समदर्शिनः [102.072]
पश्यन्तः कुत्र रागादीन् [102.072]
करिष्यामो विभेदकान् [102.072]
वसन्ते मयि चेन्द्रे च [102.073]
भवतीषु तथा स्मरे [102.073]
यदा स एव विश्वात्मा [102.073]
तदा द्वेषादयः कथम् [102.073]
तन्मयान्यविभक्तानि [102.074]
यदा सर्वेषु जन्तुषु [102.074]
पृथिव्यापस्तथा तेजो [102.074]
वायुराकाशमेव च [102.074]
तथेन्द्रियाण्यहंकारो [102.075]
बुद्धिश्च न पृथग्यतः [102.075]
समदृष्टिर्यतः कुत्र [102.075]
रागद्वेषौ प्रवर्ततः [102.075]
आत्मा चायमभेदेन [102.076]
यतः सर्वेषु जन्तुषु [102.076]
सर्वेश्वरेश्वरो विष्णुः [102.076]
कुत्र रागादयस्ततः [102.076]
ब्रह्माणमिन्द्रमीशानम् [102.077]
आदित्यान्मरुतो ऽखिलान् [102.077]
विश्वेदेवानृषीन्साध्यान् [102.077]
वसून्पितृगणांस्तथा [102.077]
यक्षराक्षसभूतादीन् [102.078]
नागसर्पसरीसृपान् [102.078]
मनुष्यपक्षिगोरूप- [102.078]
गजसिंहजलेचरान् [102.078]
मक्षिकामशकादंशाञ् [102.079]
शलभानलसान्कृमीन् [102.079]
गुल्मवृक्षलतावल्लि- [102.079]
त्वक्सारतृणजातिजान् [102.079]
यच्च किंचिद्दृश्यं वा [102.080]
दृश्यं वा त्रिदशाङ्गनाः [102.080]
मन्यध्वं रूपमेकस्य [102.080]
तत्सर्वं परमात्मनः [102.080]
जानमानः कथं विष्णुम् [102.081]
आत्मानं परमं च यत् [102.081]
रागद्वेषौ तथा लोभं [102.081]
कः कुर्यादमराङ्गनाः [102.081]
सर्वभूतस्थिते विष्णौ [102.082]
सर्वगे सर्वधातरि [102.082]
निपात्यतां पृथग्भूते [102.082]
कुत्र रागादिको गणः [102.082]
एवमस्मासु युष्मासु [102.083]
सर्वभूतेषु चाबलाः [102.083]
तन्मयत्वैकभूतेषु [102.083]
रागाद्यवसरः कुतः [102.083]
सम्यग्दृष्टिरियं प्रोक्ता [102.084]
समस्तैक्यावलोकिनी [102.084]
पृथग्विज्ञानमत्रैव [102.084]
लोकसंव्यवहारवत् [102.084]
भूतेन्द्रियान्तःकरण- [102.085]
प्रधानपुरुषात्मकम् [102.085]
जगद्यदेतदखिलं [102.085]
तदा भेदः किमात्मकः [102.085]

भवन्ति लयमायान्ति [102.086]
समुद्रे सलिलोर्मयः [102.086]
न वारिभेदतो भिन्नास् [102.086]
तथैवैक्यादिदं जगत् [102.086]
यथाग्नेरर्चिषः पीताः [102.087]
पिङ्गलारुणधूसराः [102.087]
भवन्ति नाग्निभेदेन [102.087]
तथैतद्ब्रह्मणो जगत् [102.087]
भवतीभिश्च यत्क्षोभम् [102.088]
अस्माकं स पुरंदरः [102.088]
कारयत्यसदेतच्च [102.088]
विवेकाधारचेतसाम् [102.088]
भवत्यः स च देवेन्द्रो [102.089]
लोकाश्च ससुरासुराः [102.089]
समुद्राद्रिवनोपेता [102.089]
मद्देहान्तरगोचराः [102.089]
यथेयं चारुसर्वाङ्गी [102.090]
भवतीनां मयोरुतः [102.090]
दर्शिता दर्शयिष्यामि [102.090]
तथात्रैवाखिलं जगत् [102.090]
प्रयातु शक्रो मा गर्वम् [102.091]
इन्द्रत्वं कस्य सुस्थिरम् [102.091]
यूयं च मा स्मयं यात [102.091]
सन्ति रूपान्विताः स्त्रियः [102.091]
किं सुरूपं कुरूपं वा [102.092]
यदा भेदो न दृश्यते [102.092]
तारतम्यं सुरूपत्वे [102.092]
सततं भिन्नदर्शिनाम् [102.092]
भवतीनां स्मयं मत्वा [102.093]
रूपौदार्यगुणोद्भवम् [102.093]
मयेयं दर्शिता तन्वी [102.093]
ततस्तच्छममिच्छता [102.093]
यस्मान्मदूरोरुद्भूता [102.094]
इयमिन्दीवरेक्षणा [102.094]
उर्वशी नाम कल्याणी [102.094]
भविष्यति ततो ऽप्सराः [102.094]
तदियं देवराजाय [102.095]
नीयतां वरवर्णिनी [102.095]
भवत्यस्तेन चास्माकं [102.095]
प्रेषिताः प्रीतिमिच्छता [102.095]
वक्तव्यश्च सहस्राक्षो [102.096]
नास्माकं भोगकारणात् [102.096]
तपश्चर्या न चाप्राप्य- [102.096]
फलं प्राप्तुमभीप्सितम् [102.096]
सन्मार्गमस्य जगतो [102.097]
दर्शयिष्यन्करोम्यहम् [102.097]
तपो नरेण सहितो [102.097]
जगतः पालनोद्यतः [102.097]
यदि कश्चित्तवाबाधां [102.098]
करोति त्रिदशेश्वर [102.098]
तमहं वारयिष्यामि [102.098]
निर्वृतो भव वासव [102.098]
कर्तासि चेत्त्वमाबाधाम् [102.099]
अदुष्टस्येह कस्यचित् [102.099]
तवापि शास्तैतदहं [102.099]
प्रवर्तिष्याम्यसंशयम् [102.099]
एतज्ज्ञात्वा न संतापस् [102.100]
त्वया कार्यो हि मां प्रति [102.100]
उपकाराय जगताम् [102.100]
अवतीर्णो ऽस्मि वासव [102.100]
या चेयमुर्वशी मत्तः [102.101]
समुद्भूता पुरंदर [102.101]
त्रेताग्निहेतुभूतेयम् [102.101]
ऐलं प्राप्य भविष्यति [102.101]
इत्युक्ते ऽप्सरसः सर्वाः [103.001]
प्रणिपत्यातिविस्मिताः [103.001]
ऊचुर्नारायणं देवं [103.001]
तद्दर्शनकुतूहलाः [103.001]
उक्तो भगवता यो ऽयम् [103.002]
उपदेशो हितार्थिनाम् [103.002]
प्रोक्तः स सर्वो विज्ञातो [103.002]
माहात्म्यं विदितं च ते [103.002]
यत्त्वेतद्भवता प्रोक्तं [103.003]
प्रसन्नेनाव्ययात्मना [103.003]
दर्शितेयं विशालाक्षी [103.003]
दर्शयिष्यामि वो जगत् [103.003]
तन्नाथ सर्वभावेन [103.004]
प्रपन्नानां जगत्पते [103.004]
दर्शयात्मानमखिलं [103.004]
दर्शितेयं यथोर्वशी [103.004]
यदि देवापराद्धेषु [103.005]
नास्मासु कुपितं तव [103.005]
मनस्तज्जगतमीश [103.005]
दर्शयात्मानमात्मना [103.005]

पश्यतेहाखिलांल्लोकान् [103.006]
मम देहे सुराङ्गनाः [103.006]
मधुं मदनमात्मानं [103.006]
यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छथ [103.006]
इत्युक्त्वा भगवान्देवस् [103.007]
तदा नारायणो नृप [103.007]
उच्चैर्जहास स्वनवत् [103.007]
तत्राभूदखिलं जगत् [103.007]
ब्रह्मा प्रजापतिः शक्रः [103.008]
सह रुद्रैः पिनाकधृक् [103.008]
आदित्या वसवः साध्या [103.008]
विश्वेदेवा महर्षयः [103.008]
नासत्यदस्रावनिलाः [103.009]
सर्वे सर्वे तथाग्नयः [103.009]
यक्षगन्धर्वसिद्धाश्च [103.009]
पिशाचाः किंनरोरगाः [103.009]
समस्ताप्सरसो विद्याः [103.010]
साङ्गा वेदास्तदुक्तयः [103.010]
मनुष्याः पशवः कीटाः [103.010]
पक्षिणः पादपास्तथा [103.010]
सरीसृपाश्च ये सूक्ष्मा [103.011]
यच्चान्यज्जीवसंज्ञितम् [103.011]
समुद्राः सकलाः शैलाः [103.011]
सरितः काननानि च [103.011]
द्वीपान्यशेषाणि तथा [103.012]
नदाः सर्वसरांसि च [103.012]
नगरग्रामपूर्णा च [103.012]
मेदिनी मेदिनीपते [103.012]
देवाङ्गनाभिर्देवस्य [103.012]
देहे दृष्टं महात्मनः [103.012]
नक्षत्रग्रहताराभिः [103.013]
समवेतं नभस्तलम् [103.013]
ददृशुस्ताः सुचार्वङ्ग्यस् [103.013]
तस्यान्तर्विश्वरूपिणः [103.013]
नोर्ध्वं न तिर्यङ्नाधश्च [103.014]
यदान्तस्तस्य दृश्यते [103.014]
तमनन्तमनादिं च [103.014]
ततस्तास्तुष्टुवुः प्रभुम् [103.014]
मदनेन समं सर्वा [103.015]
मधुना च सुराङ्गनाः [103.015]
ससाध्वसा भक्तिमत्यः [103.015]
परं विस्मयमागताः [103.015]
पश्याम नादिं तव देव नान्तम् [103.016]
न मध्यमव्याकृतरूपपारम् [103.016]
परायणं त्वा जगतामनन्तम् [103.016]
नताः स्म नारायणमात्मभूतम् [103.016]
मही दिवं वायुजलाग्नयस्त्वं [103.017]
शब्दादिरूपश्च परापरात्मन् [103.017]
त्वत्तो भवत्यच्युत सर्वमेतद् [103.017]
अभेदरूपो ऽसि विभो त्वमेभिः [103.017]
द्रष्टासि रूपस्य रसस्य वेत्ता [103.018]
श्रोता च शब्दस्य हरे त्वमेकः [103.018]
स्प्रष्टा भवान्स्प्रशवतो ऽखिलस्य [103.018]
घ्रातासि गन्धस्य पृथक्शरीरी [103.018]
सुरेषु सर्वेषु न सो ऽस्ति कश्चिन् [103.019]
मनुष्यलोके च न सो ऽस्ति कश्चित् [103.019]
पश्वादिवर्गे च न सो ऽस्ति कश्चिद् [103.019]
यो नांशभूतस्तव देवदेव [103.019]
ब्रह्माद्युपेन्द्रप्रमुखानि सौम्येष्व् [103.020]
इन्द्राग्निरूपाणि च वीर्यवत्सु [103.020]
रुद्रान्तकादीनि च रौद्रवत्सु [103.020]
रूपेषु रूपाणि तवोत्तमानि [103.020]
समुद्ररूपं तव धैर्यवत्सु [103.021]
तेजस्विरूपेषु रविस्तथाग्निः [103.021]
क्षमाधनेषु क्षितिरूपमग्र्यं [103.021]
रूपं तवाग्र्यं बलवत्सु वायुः [103.021]
मनुष्यरूपं तव राजसेषु [103.022]
मूढेषु सर्वेश्वर पादपो ऽसि [103.022]
दर्पान्वितेष्वच्युत दानवस्त्वं [103.022]
सनत्सुजातश्च विवेकवत्सु [103.022]
रसस्वरूपेण जले स्थितो ऽसि [103.023]
गन्धस्वरूपो भवतो धरित्र्यम् [103.023]
दृश्यस्वरूपश्च हुताशने त्वं [103.023]
स्पर्शस्वरूपो भगवान्समीरे [103.023]
शब्दात्मकं ते नभसि स्वरूपं [103.024]
मन्तव्यरूपो मनसि प्रभो त्वम् [103.024]
बोधव्यरूपश्च विभो त्वमेकः [103.024]
सर्वत्र सर्वेश्वर सर्वभूतः [103.024]
पश्याम ते नाभिसरोजमध्ये [103.025]
ब्रह्माणमेतं च हरं भ्रुकूट्यम् [103.025]
तत्राश्विनौ कर्णगतौ समस्ताण् [103.025]
अवस्थितान्बाहुषु लोकपालान् [103.025]
घ्राणे ऽनिलं नेत्रगतौ रवीन्दू [103.026]
जिह्वा च ते नाथ सरस्वतीयम् [103.026]

पादौ धरित्रीं जठरं समस्तांल् [103.026]
लोकान्हृषीकेश विलोकयामः [103.026]
जङ्घे वियत्पादकराङ्गुलीषु [103.027]
पिशाचरक्षोरगसिद्धसङ्घान् [103.027]
पुंस्त्वे प्रजानां पतिरोष्ठयुग्मे [103.027]
प्रतिष्ठितास्ते क्रतवः समस्ताः [103.027]
सर्वेष्टयस्ते दशनेषु देव [103.028]
दंष्ट्रआसु विद्या भवतश्चतस्रः [103.028]
रोमस्वशेषास्तव देवसङ्घा [103.028]
विद्याधरा नाथ कराङ्घ्रिरेखाः [103.028]
साङ्घाः समस्तास्तव देव वेदाः [103.028]
समास्थिता बह्रुषु संधिभूताः [103.028]
वराहरूपं धरणीधृतस्ते [103.029]
नृसिंहरूपं च सटाकरालम् [103.029]
पश्याम ते वाजिशिरस्तथोच्चैस् [103.029]
त्रिविक्रमे यश्च तवाप्रमेयः [103.029]
अमी समुद्रास्तव देव देहे [103.030]
मेर्वादयः शैलवरास्तवामी [103.030]
इमाश्च गङ्गाप्रमुखाः स्रवत्यो [103.030]
द्वीपान्यशेषाणि वनानि चैव [103.030]
स्तुवन्ति चैते मुनयस्तवेश [103.031]
देहे स्थितास्त्वन्महिमानमग्र्यम् [103.031]
त्वामीशितारं जगतामनन्तम् [103.031]
यज्ञेशमर्चन्ति च यज्विनो ऽमी [103.031]
त्वत्तो न सौम्यं जगतीह किंचित् [103.032]
त्वत्तो न रौद्रं च समस्तमूर्ते [103.032]
त्वत्तो न शीतं न च केशवोष्णं [103.032]
सर्वस्वरूपातिशयी त्वमेकः [103.032]
प्रसीद सर्वेश्वर सर्वभूत [103.033]
सनातनात्मन्परमेश्वरेश [103.033]
त्वन्मायया मोहितमानसाभिर् [103.033]
यत्ते ऽपराद्धं तदिदं क्षमस्व [103.033]
किं वापराद्धं तव देव मूढैर् [103.034]
यन्मायया नो हृदयं तथापि [103.034]
पापावशं किं प्रणतार्तिहारिन् [103.034]
मनो हि नो विक्लवतामुपैति [103.034]
न ते ऽपराद्धं यदि वापराद्धम् [103.035]
अस्माभिरुन्मार्गविवर्तनीभिः [103.035]
तत्क्षम्यतां सृष्टिकरस्तवैव [103.035]
देवापराधं सृजतो विवेकान् [103.035]
नमो नमस्ते गोविन्द [103.036]
नारायण जनार्दन [103.036]
त्वन्नामस्मरणात्पापम् [103.036]
अशेषं नः प्रणश्यतु [103.036]
ततो ऽनन्त नमस्तुभ्यं [103.*(155)]
विश्वात्मन्विश्वभावन [103.*(155)]
त्वन्नामस्मरणात्पापम् [103.*(155)]
अशेषं नः प्रणश्यतु [103.*(155)]
नमो नमस्ते वैकुण्ठ [103.*(155)]
श्रीवत्साङ्काब्जलोचन [103.*(155)]
वरेण्य यज्ञपुरुष [103.*(155)]
प्रजापालक वामन [103.*(155)]
नमो ऽस्तु ते ऽब्जनाभाय [103.037]
प्रजापतिकृते हरे [103.037]
त्वन्नामस्मरणात्पापम् [103.037]
अशेषं नः प्रणश्यतु [103.037]
संसारार्णवपोताय [103.038]
नमस्तुभ्यमधोक्षज [103.038]
त्वन्नामस्मरणात्पापम् [103.038]
अशेषं नः प्रणश्यतु [103.038]
नमः परस्मै श्रीशाय [103.039]
वासुदेवाय वेधसे [103.039]
स्वेच्छया गुणभोक्तृत्वे [103.039]
सर्गान्तस्थितिकारिणे [103.039]
उपसंहार विश्वात्मन् [103.040]
रूपमेतत्समन्ततः [103.040]
वर्धमानं न नो द्रष्टुं [103.040]
समर्थं चक्षुरीश्वर [103.040]
प्रलयाग्निसहस्रस्य [103.041]
समा दीप्तिस्तवाच्युत [103.041]
प्रमाणेन दिशो भूमिर् [103.041]
गगनं च समावृतम् [103.041]
न विद्मः क्व नु वर्तामो [103.042]
भवान्नैवोपलक्ष्यते [103.042]
सर्वं जगदिहैकस्थं [103.042]
पिण्डितं लक्षयामहे [103.042]
किं वर्णयामो रूपं ते [103.043]
किं प्रमाणमिदं हरे [103.043]
माहात्म्यं किंतु ते देव [103.043]
जिह्वाया यन्न गोचरम् [103.043]
वक्त्राणामयुतेनापि [103.044]
बुद्धीनामयुतायुतैः [103.044]
गुणानां वर्णनं नाथ [103.044]
तव वक्तुं न शक्यते [103.044]

तदेतद्दर्शितं रूपं [103.045]
प्रसादः परमः कृतः [103.045]
छन्दतो जगतामीश [103.045]
तदेतदुपसंहर [103.045]
इत्येवं संस्तुतस्ताभिर् [103.046]
अप्सरोभिर्जनार्दनः [103.046]
दिव्यज्ञानोपपन्नानां [103.046]
तासां प्रत्यक्षमीश्वरः [103.046]
विवेश सर्वभूतानि [103.046]
स्वैरंशैर्भूतभावनः [103.046]
तं दृष्ट्वा सर्वभूतेषु [103.047]
लीयमानमधोक्षजम् [103.047]
विस्मयं परमं जग्मुः [103.047]
समस्ता देवयोषितः [103.047]
स च सर्वेश्वरः शैलान् [103.048]
पादपान्सागरान्भुवम् [103.048]
जलमग्निं तथा वायुम् [103.048]
आकाशं च विवेश ह [103.048]
काले दिक्ष्वथ सर्वात्मा [103.049]
मनुष्यात्मन्यथापि च [103.049]
आत्मरूपः स्थितः स्वेन [103.049]
महिम्ना भावयञ्जगत् [103.049]
देवदानवरक्षांसि [103.050]
यक्षविद्याधरोरगान् [103.050]
मनुष्यपशुकीटादीन् [103.050]
मृगपक्ष्यन्तरिक्षगान् [103.050]
ये ऽन्तरिक्षे तथा भूमौ [103.051]
दिवि ये ये जलाश्रयाः [103.051]
तान्प्रविश्य स विश्वात्मा [103.051]
पुनस्तद्रूपमास्थितः [103.051]
नरेण सार्धं यत्ताभिर् [103.051]
दृष्टपूर्वमरिंदम [103.051]
ताः परं विस्मयं गत्वा [103.052]
सर्वास्त्रिदशयोषितः [103.052]
प्रणेमुः साध्यसाः पाण्डु- [103.052]
वदना नृपसत्तम [103.052]
नारायणो ऽपि भगवान् [103.053]
आह तास्त्रिदशाङ्गनाः [103.053]
नीयतामुर्वशी भद्रा [103.053]
यत्रास्ते त्रिदशेश्वरः [103.053]
भवतीनां हितार्थाय [103.054]
सर्वभूतेष्वसाविति [103.054]
ज्ञानमुत्पादितं भूयो [103.054]
लयं भूतेषु कुर्वता [103.054]
तद्गच्छत समस्तो ऽयं [103.055]
भूतग्रामो मदंशकः [103.055]
अहमप्यात्मभूतस्य [103.055]
वासुदेवस्य योगिनः [103.055]
यस्मात्परतरं नास्ति [103.056]
यो ऽनन्तः परिपठ्यते [103.056]
तमजं सर्वभूतेशं [103.056]
जानीत परमं पदम् [103.056]
अहं भवत्यो देवाश्च [103.057]
मनुष्याः पशवश्च ये [103.057]
एतत्सर्वमनन्तस्य [103.057]
देवदेवस्य विस्तृतिः [103.058]
एतज्ज्ञात्वा समं सर्गं [103.058]
सदेवासुरमानुषम् [103.058]
सपश्वादिगणं चैव [103.058]
द्रष्टव्यं त्रिदशाङ्गनाः [103.058]
इत्युक्तस्तेन देवेन [103.059]
समस्तास्ताः सुरस्त्रियः [103.059]
प्रणम्य तौ समदनाः [103.059]
सवसन्ताश्च पार्थिव [103.059]
आदाय चोर्वशीं भूयो [103.060]
देवराजमुपागताः [103.060]
आचख्युश्च यथावृत्तं [103.060]
देवराजाय तत्तथा [103.060]
तथा त्वमपि राजेन्द्र [103.061]
सर्वभूतेषु केशवम् [103.061]
चिन्तयन्समतां गच्छ [103.061]
समतैव हि मुक्तये [103.061]
जानन्नेवमशेषेषु [103.062]
भूतेषु परमेश्वरम् [103.062]
वासुदेवं कथं दोषांल् [103.062]
लोभादीन्न प्रहास्यसि [103.062]
सर्वभूतानि गोविन्दाद् [103.063]
यदा नान्यानि भूपते [103.063]
तदा वैरादयो भावाः [103.063]
क्रियतां कुत्र पार्थिव [103.063]
इह पश्यञ्जगत्सर्वं [103.064]
वासुदेवात्मकं नृप [103.064]
एतदेव हि कृष्णेन [103.064]
रूपमाविष्कृतं तदा [103.064]

परमस्मादपि महद् [103.065]
रूपं यत्कथितं तव [103.065]
जन्मादिभावरहितं [103.065]
तद्विष्णोः परमं पदम् [103.065]
संक्षेपेण च भूपाल [103.066]
श्रूयतां यद्वदामि ते [103.066]
यन्मतौ पुरुषः कृत्वा [103.066]
परं निर्वाणमृच्छति [103.066]
सर्वं विष्णुः समस्तौ हि [103.067]
भावाभावौ च तन्मयौ [103.067]
सदसत्सर्वमीशेशो [103.067]
वासुदेवः परं पदम् [103.067]
भवजलधिगतानां द्वन्द्ववाताहतानां [103.068]
सुतदुहितृकलत्रत्राणभारार्दितानाम् [103.068]
विषमविषयतोये मज्जतामप्लवानां [103.068]
भवति शरणमेको विष्णुपोतो नराणाम् [103.068]
इत्युक्तं तव धर्मज्ञ [104.001]
विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् [104.001]
स्वरूपं च जगद्धातुर् [104.001]
आराधनविनिश्चयः [104.001]
आराधितात्फलं यच्च [104.002]
केशवात्प्राप्यते नरैः [104.002]
कथितश्च महाभाग [104.002]
दानानां विस्तराद्विधिः [104.002]
योगद्वैधं च कथितम् [104.003]
अद्वैतं द्वैतमेव च [104.003]
अद्वैतभावनोपायो [104.003]
विस्तराच्च तवोदितः [104.003]
संक्षेपविस्तराभ्यां च [104.004]
सर्वमेतत्तवोदितम् [104.004]
देवदेवस्य माहात्म्यं [104.004]
सर्वगस्याव्ययात्मनः [104.004]
स एष सर्वप्रवरः [104.005]
सर्वभूतश्च माधवः [104.005]
सर्वमत्र च सर्वस्मिन्न् [104.005]
एष एव प्रतिष्ठितः [104.005]
त्रियुगं पुण्डरीकाक्षम् [104.006]
अपवर्गमहाह्रदम् [104.006]
समुत्पत्य पराह्लादम् [104.006]
अनन्तं प्रतिपद्यते [104.006]
श्रुतमेतन्मया पूर्वं [104.007]
विस्तरेण त्वयोदितम् [104.007]
यत्त्वेतत्त्रियुगेत्युक्तं [104.007]
तस्य निर्वचनं वद [104.007]
चतुर्युगेन कालस्य [104.008]
परिसंख्या यदा द्विज [104.008]
त्रियुगेन तदा विष्णोः [104.008]
क्रियते किं विशेषणम् [104.008]
कृतं त्रेता द्वापरं च [104.009]
कलिश्चेति चतुर्युगम् [104.009]
यदा जगति विख्यातं [104.009]
तदा त्रियुगता कुतः [104.009]
साधु पृष्टो ऽस्मि भूपाल [104.010]
भवता त्रियुगाश्रितम् [104.010]
विशेषणमनन्तस्य [104.010]
गदतस्तन्निशामय [104.010]
काष्ठा पार्थिव विज्ञेया [104.011]
निमेषा दश पञ्च च [104.011]
काष्ठात्रिंशत्कला ज्ञेया [104.011]
मुहूर्तं तावतीः कलाः [104.011]
त्रिंशन्मुहूर्ता भूपाल [104.012]
तथाहोरात्रमुच्यते [104.012]
तत्संख्यातैरहोरात्रैर् [104.012]
मासः पार्थिवसत्तम [104.012]
अयनं दक्षिणं मासाः [104.013]
षण्मासाश्च तथोत्तरम् [104.013]
अयनद्वितयाख्यश्च [104.013]
कालः संवत्सरः स्मृतः [104.013]
दक्षिणं त्वयनं रात्रिर् [104.014]
देवानामुत्तरं दिनम् [104.014]
संवत्सरेण देवानाम् [104.014]
अहोरात्रमिहोच्यते [104.014]
शतत्रयेण वर्षाणां [104.015]
षष्ट्या च पृथिवीपते [104.015]
मनुष्यसंख्यया वर्षं [104.015]
देवानामपि गण्यते [104.015]
इति दिव्येन मानेन [104.016]
चतुर्युगविकल्पनाम् [104.016]
कथ्यमानां मया राजन् [104.016]
यथावच्छ्रोतुमर्हसि [104.016]
चत्वारि तु सहस्राणि [104.017]
वर्षाणां कृतमुच्यते [104.017]
तस्य तावच्छती संध्या [104.017]
संध्यांशश्च तथाविधः [104.017]

त्रेता त्रीणि सहस्राणि [104.018]
दिव्याब्दानां नरर्षभ [104.018]
तस्य तावच्छती संध्या [104.018]
संध्यांशश्च तथाविधः [104.018]
द्वापरं द्वे सहस्रे तु [104.019]
वर्षाणामभिधीयते [104.019]
तस्य तावच्छती संध्या [104.019]
संध्यांशश्च तथाविधः [104.019]
कलिः सहस्रमेकं तु [104.020]
दिव्याब्दानां नरर्षभ [104.020]
तस्य तावच्छती संध्या [104.020]
संध्यांशश्च तथाविधः [104.020]
कृतं नामयुगं पूर्वं [104.021]
यत्र धर्मः सनातनः [104.021]
कृतमेव च कर्तव्यं [104.021]
तस्मिन्काले नृपेप्सितम् [104.021]
न तत्र धर्माः सीदन्ति [104.022]
न च क्षीयन्ति वै प्रजाः [104.022]
ततः कृतयुगं नाम [104.022]
गुणतः प्रोच्यते युगम् [104.022]
देवदानवगन्धर्वा [104.023]
यक्षराक्षसपन्नगाः [104.023]
नासन्कृतयुगे राजन् [104.023]
न तदा क्रयविक्रयः [104.023]
न सामयजुरृग्वर्णाः [104.024]
क्रिया नासीच्च मानवी [104.024]
नाभिसंधाय च फलं [104.024]
कश्चिद्धर्मे प्रवर्तते [104.024]
न तस्मिन्युगसंसर्गे [104.025]
व्याधयो नेन्द्रियक्षयः [104.025]
नासूया नापि रुदितं [104.025]
न दर्पो नापि पैशुनम् [104.025]
न विग्रहः कुतस्तन्द्री [104.026]
न द्वेषो नापि दम्भनम् [104.026]
न भयं नापि संतापो [104.026]
न चेर्ष्या नापि मत्सरः [104.026]
ततः परमकं ब्रह्म [104.027]
या गतिर्योगिनां परा [104.027]
आत्मा च सर्वभूतानां [104.027]
शुक्लो नारायणस्तदा [104.027]
तस्मिन्नात्मनि लोकानां [104.028]
सर्वलोकमये ऽच्युते [104.028]
स्वेच्छया शौक्ल्यमापन्ने [104.028]
सर्वं भवति निर्मलम् [104.028]
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः [104.029]
शूद्राश्च कृतलक्षणाः [104.029]
कृते युगे भवन्तीह [104.029]
स्वकर्मनिरताः प्रजाः [104.029]
स्वमाश्रमं स्वमाचारं [104.030]
सम्यग्ज्ञानसमन्वितम् [104.030]
जगद्भवति राजेन्द्र [104.030]
सत्यप्रायं तपोरतम् [104.030]
एकवेदसमायुक्ता [104.031]
एकमन्त्रविधिक्रियाः [104.031]
पृथग्धर्मास्त्वेकवेदा [104.031]
धर्ममेकमनुव्रताः [104.031]
चतुराश्रमयुक्तेन [104.032]
कर्मणा कालयोगिना [104.032]
अकामफलसंयोगात् [104.032]
प्राप्नुवन्ति परां गतिम् [104.032]
आत्मयोगसमायुक्तो [104.033]
धर्मो ऽयं कृतलक्षणः [104.033]
कृते युगे चतुष्पादश् [104.033]
चतुर्वर्ण्यस्य शाश्वतः [104.033]
एतत्कृतयुगं नाम [104.034]
त्रैगुण्यपरिवर्जितम् [104.034]
त्रेतामपि निबोध त्वं [104.034]
यादृग्रूपं प्रवर्तते [104.034]
पादेन ह्रसते धर्मो [104.035]
रक्ततां याति चाच्युतः [104.035]
सत्यप्रवृत्ताश्च नराः [104.035]
क्रियाधर्मपरायणाः [104.035]
ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते [104.036]
धर्माश्च विविधाः क्रियाः [104.036]
त्रेतायां भावसंकल्पाः [104.036]
क्रियादानफलोदयाः [104.036]
प्रचरन्ति ततो वर्णास् [104.037]
तपोदानपरायणाः [104.037]
स्वकर्मस्थाः क्रियावन्तः [104.037]
समत्वाद्रजसान्विताः [104.037]
द्वापरे ऽपि युगे धर्मो [104.038]
द्विभागोनः प्रवर्तते [104.038]
विष्णुः पीतत्वमभ्येति [104.038]
चतुर्धा वेद एव च [104.038]

ततो ऽन्ये च चतुर्वेदास् [104.039]
त्रिवेदाश्च तथापरे [104.039]
द्विवेदाश्चैकवेदाश्च [104.039]
अनृचश्च तथापरे [104.039]
एवं शास्त्रेषु भिन्नेषु [104.040]
बहुधा नीयते क्रिया [104.040]
तपोदानप्रवृत्ता च [104.040]
राजसी भवति प्रजा [104.040]
अल्पायुषो नरा वेदः [104.041]
सुमहांश्चेति दुस्तरः [104.041]
करोति बहुधा वेदान् [104.041]
व्यासरूपी तदा हरिः [104.041]
सत्त्वस्य चाप्यविज्ञानात् [104.042]
सत्त्वे कश्चिद्व्यवस्थितः [104.042]
सत्त्वात्प्रच्यवमानानां [104.042]
व्याधयो बहवो ऽभवन् [104.042]
कामाश्चोपद्रवाश्चैव [104.043]
तदा दैवतकारिताः [104.043]
यैरर्द्यमानाः सुभृशं [104.043]
तपस्तप्यन्ति मानवाः [104.043]
धनकामाः स्वर्गकामा [104.044]
यज्ञांस्तन्वन्ति चापरे [104.044]
एवं द्वापरमासाद्य [104.044]
प्रजाः क्षीयन्त्यधर्मतः [104.044]
पादेनैकेन राजेन्द्र [104.045]
धर्मः कलियुगे ऽपि हि [104.045]
तामसं युगमासाद्य [104.045]
कृष्णो भवति केशवः [104.045]
व्रताचाराः प्रशाम्यन्ति [104.046]
धर्मयज्ञक्रियास्तथा [104.046]
ईतयो व्याधयस्तन्द्री [104.046]
दोषाः क्रोधादयस्तथा [104.046]
उपद्रवाश्च वर्धन्ते [104.046]
मनस्तापाश्च संगताः [104.046]
युगेष्वावर्तमानेषु [104.047]
लोको व्यावर्तते पुनः [104.047]
लोके क्षीणे क्षयं यान्ति [104.047]
भावा लोकप्रवर्तकाः [104.047]
युगद्वयकृतान्धर्मान् [104.047]
प्रार्थना न च कुर्वते [104.047]
एतत्कलियुगं भूप [104.048]
यत्र जातो ऽसि पार्थिव [104.048]
नात्रावतारं कुरुते [104.048]
कृष्णांशेन स्वरूपिणा [104.048]
कृतादिषु जगत्पाति [104.049]
दैत्येभ्यो रूपधृद्धरिः [104.049]
कलौ त्वन्यं समाविश्य [104.049]
पूर्वोत्पन्नं बिभर्ति तम् [104.049]
प्रत्यग्ररूपधृग्देवो [104.050]
दृश्यते न कलौ हरिः [104.050]
कृतादिष्वेव तेनैष [104.050]
त्रियुगः परिपठ्यते [104.050]
कलेरन्ते च संप्राप्ते [104.051]
कल्किनं ब्रह्मवादिनम् [104.051]
अनुप्रविश्य कुरुते [104.051]
वासुदेवो जगत्स्थितिम् [104.051]
पूर्वोत्पन्नेषु भूतेषु [104.052]
तेषु तेषु कलौ प्रभुः [104.052]
कृत्वा प्रवेशं कुरुते [104.052]
यदभिप्रेतमच्युतः [104.052]
स्वेच्छाशुक्ले जगच्छुक्लं [104.053]
रक्ते रक्तं च जायते [104.053]
पीते च पीततामस्मिन् [104.053]
कृष्णे चात्रासितं नृप [104.053]
एष एव जगद्देवो [104.054]
जगत्स्रष्टा जगद्गुरुः [104.054]
यद्रूप एव देवो ऽयं [104.054]
तद्रूपं जायते जगत् [104.054]
चतुर्युगं नः कथितं [105.001]
संक्षेपाद्भवताखिलम् [105.001]
कलिं विस्तरतो ब्रूहि [105.001]
यत्र जातो ऽस्मि भार्गव [105.001]
भगवत्यमले विष्णौ [105.002]
क्रीडया कृष्णतां गते [105.002]
किमाहाराः किमाचारा [105.002]
भविष्यन्ति प्रजास्तदा [105.002]
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः [105.003]
शूद्राश्च द्विज कीदृशाः [105.003]
भविष्यन्ति कलौ प्राप्ते [105.003]
तन्ममाचक्ष्व विस्तरात् [105.003]
तपः परं कृतयुगे [105.004]
त्रेतायां यज्ञ एव हि [105.004]
प्रधानं द्वापरे दानं [105.004]
सत्यमेव कलौ युगे [105.004]

कृते युगे मनःशुद्धिर् [105.005]
अस्त्येवायत्नतस्तपः [105.005]
तपो निष्पाद्यते भूप [105.005]
योगसंसाधनं परम् [105.005]
रागादिदोषदुष्टेन [105.006]
मनसा यत्तपो नृप [105.006]
क्रियते क्लेशनाशाय [105.006]
तत्तपो न विमुक्तये [105.006]
त्रेतायां तु क्रियायज्ञान् [105.007]
मनोयज्ञांस्ततो नराः [105.007]
वितन्वते स्थूलतरः [105.007]
पन्था धर्मस्य स प्रभो [105.007]
द्वापरे नातिविद्वत्ता [105.008]
यथा त्रेतायुगे ऽभवत् [105.008]
ततः स्थूलतरः पन्था [105.008]
दानात्मा क्रियते नरैः [105.008]
न विद्वत्ता न शुद्धार्थो [105.009]
न शुद्धिर्मनसः कलौ [105.009]
यतो ऽतः सत्यमेवैकम् [105.009]
एकान्तेनोपकारकम् [105.009]
यथा सत्यं तथा क्षान्तिर् [105.010]
अहिंसा च कलौ युगे [105.010]
परोपतापाद्विरतिर् [105.010]
नराणामुपकारिका [105.010]
तस्मिन्घोरे युगे प्राप्ते [105.011]
कृष्णे कृष्णत्वमागते [105.011]
यादृग्रूपं जगदिदं [105.011]
भवतीह शृणुष्व तत् [105.011]
राजानो ब्राह्मणा वैश्याः [105.012]
शूद्राश्च मनुजेश्वर [105.012]
व्याजधर्मपराश्चैव [105.012]
धर्मवैतंसिका जनाः [105.012]
सत्यं संक्षिप्यते लोके [105.013]
नरैः पण्डितमानिभिः [105.013]
सत्यहान्या ततस्तेषां [105.013]
स्वल्पमायुर्भविष्यति [105.013]
आयुषः प्रक्षयाद्विद्यां [105.014]
न शक्ष्यन्त्युपशिक्षितुम् [105.014]
विद्याहीनानबुद्धींस्तांल् [105.014]
लोभो ऽप्यभिभविष्यति [105.014]
लोभक्रोधपरा मूढाः [105.015]
कामवश्याश्च मानवाः [105.015]
बद्धवैरा भविष्यन्ति [105.015]
परस्परवधेप्सवः [105.015]
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः [105.016]
संकीर्यन्तः परस्परम् [105.016]
शूद्रतुल्या भविष्यन्ति [105.016]
तपःसत्यविनाकृताः [105.016]
अन्त्या मध्या भविष्यन्ति [105.017]
मध्याश्चान्तावसायिनः [105.017]
ईदृशो भविता लोकः [105.017]
कृष्णे कृष्णत्वमागते [105.017]
वस्त्राणां प्रवरा शाणी [105.018]
धान्यानां कोरदूषकः [105.018]
भार्यामित्राश्च पुरुषा [105.018]
भविष्यन्ति कलौ युगे [105.018]
मत्स्यामिषेण जीवन्तो [105.019]
दुहन्तश्चाप्यजाविकाः [105.019]
गोषु नष्टासु पुरुषा [105.019]
भविष्यन्ति तदा नृप [105.019]
सरित्तीरेषु कुद्दालैर् [105.020]
वापयिष्यन्ति चौषधीः [105.020]
ताश्चाप्यल्पफलास्तेषां [105.020]
भविष्यन्ति युगक्षये [105.020]
अनिष्क्रान्तास्तु संबन्धाः [105.021]
स्वगोत्रात्पुरुषर्षभ [105.021]
अनिष्क्रान्तानि श्राद्धानि [105.021]
भविष्यन्ति च गेहतः [105.021]
न व्रतानि चरिष्यन्ति [105.022]
ब्राह्मणा वेदनिन्दकाः [105.022]
न यक्ष्यन्ति न होष्यन्ति [105.022]
हेतुवादविकूलिनः [105.022]
प्रायशः कृपणानां च [105.023]
तथा बन्धिमतामपि [105.023]
विधवानां च वित्तानि [105.023]
हरिष्यन्ति बलान्विताः [105.023]
अन्यायोपात्तवित्तेषु [105.024]
करिष्यन्ति नराः स्पृहाम् [105.024]
वेश्यालावण्यभावेषु [105.024]
स्पृहां योषित्करिष्यति [105.024]
कन्यां न याचिता कश्चिन् [105.025]
न च कन्याप्रदो नरः [105.025]
कन्या वरश्च च्छन्देन [105.025]
गृहीष्यन्ति परस्परम् [105.025]

भार्या न पतिशुश्रूषां [105.026]
तदा काचित्करिष्यति [105.026]
नरा देवद्विजांस्त्यक्त्वा [105.026]
भविष्यन्त्यन्यतोमुखाः [105.026]
यज्ञभागभुजो देवा [105.027]
ये वेदपठिता द्विजाः [105.027]
ब्रह्माद्यास्तान्परित्यज्य [105.027]
नराः कालबलात्कृताः [105.027]
हेतुवादपरा देवान् [105.027]
करिष्यन्त्यपरांस्तदा [105.027]
ये यवान्ना जनपदा [105.028]
गोधूमान्नास्तथैव च [105.028]
तान्देशान्संश्रयिष्यन्ति [105.028]
नराः कलियुगे नृप [105.028]
न श्राद्धैश्च पितॄंश्चापि [105.029]
तर्पयिष्यन्ति मानवाः [105.029]
बहु मंस्यन्ति ते स्नानं [105.029]
नापि शौचपरा नराः [105.029]
न विष्णुभक्तिप्रवणं [105.030]
नराणां नृप मानसम् [105.030]
भविता तु युगे प्राप्ते [105.030]
कृष्णे कार्ष्ण्योपलक्षिते [105.030]
विनिन्दां प्रथमे पादे [105.031]
करिष्यन्ति हरेर्नराः [105.031]
युगान्ते तु हरेर्नाम [105.031]
नैव कश्चिद्गृहीष्यति [105.031]
धन्यास्ते पुरुषव्याघ्र [105.032]
पापाम्भोधावपापिनः [105.032]
ये नामापि कलौ विष्णोर् [105.032]
गृहीष्यन्त्यक्षयात्मनः [105.032]
ध्यायन्हरिं कृतयुगे [105.033]
त्रेताद्वापरयोर्यजन् [105.033]
यदाप्नोति कलौ नाम्ना [105.033]
तदेव परिकीर्तयन् [105.033]
हरिर्हरति पापानि [105.034]
नाम भक्त्या यदीरितम् [105.034]
वासुदेवेति न जनस् [105.034]
तदेवोच्चारयिष्यति [105.034]
बहुपाषण्डसंकीर्णे [105.035]
जगत्यस्मिन्कलौ युगे [105.035]
कृष्णायेति नमो ऽस्त्वत्र [105.035]
सुकृती यदि वक्ष्यति [105.035]
हेतुवादबलैर्मोहं [105.036]
कुहकैश्च जने तदा [105.036]
पाषण्डिनः करिष्यन्ति [105.036]
चातुराश्रम्यदूषकाः [105.036]
पाषण्डभूतमत्यर्थं [105.037]
जगदेतदसत्कृतम् [105.037]
भविष्यति तदा भूप [105.037]
वृथाप्रव्रजितोत्कटम् [105.037]
न तु द्विजातिशुश्रूषां [105.038]
न स्वधर्मानुपालनम् [105.038]
करिष्यन्ति तदा शूद्राः [105.038]
प्रव्रज्यालिङ्गिनो वृथा [105.038]
उत्कोचाः सौगताश्चैव [105.039]
महायानरतास्तथा [105.039]
भविष्यन्त्यथ पाषण्डाः [105.039]
कापिला भिक्षवस्तथा [105.039]
वृद्धाः श्रावकनिर्ग्रन्थाः [105.040]
सिद्धपुत्रास्तथापरे [105.040]
भविष्यन्ति दुरात्मानः [105.040]
शूद्राः कलियुगे नृप [105.040]
निःशौचा वक्रमतयः [105.041]
परपाकान्नभोजनाः [105.041]
भविष्यन्ति दुरात्मानः [105.041]
शूद्राः प्रव्रजितास्तदा [105.041]
एते चान्ये च बहवः [105.042]
पाषण्डाः पुरुषर्षभ [105.042]
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या [105.042]
भविष्यन्ति तथा परे [105.042]
राजशुल्कहराः क्षुद्रा [105.043]
गृहस्थपरिमोषकाः [105.043]
मुनिवेषाकृतिच्छन्ना [105.043]
वाणिज्यमुपजीविकाः [105.043]
न द्विजान्न कलौ देवान् [105.044]
पूजयिष्यन्ति मानवाः [105.044]
म्लेच्छभाषानिबन्धैस्तु [105.044]
हेतुवादैर्विकूलिताः [105.044]
एवं तेष्वतिदुष्टेषु [105.045]
विमार्गपथिवर्तिनः [105.045]
भविष्यन्त्यपरे दुष्टास् [105.045]
तेषां मार्गानुयायिनः [105.045]
असंस्कृतोक्तिवक्तारो [105.046]
वेदशास्त्रविनिन्दकाः [105.046]

जगदुन्मार्गकर्तारो [105.046]
भविष्यन्ति तदा नराः [105.046]
तच्छीलवर्तिभिर्भूप [105.047]
मनुष्यैः परिपूरिते [105.047]
जगत्यत्र तदा नृणां [105.047]
स्वल्पमायुर्भविष्यति [105.047]
परमायुश्च भविता [105.048]
तदा वर्षाणि षोडश [105.048]
ततः प्राणान्प्रहास्यन्ति [105.048]
कृष्णे कृष्णत्वमागते [105.048]
पञ्चमे वाथ षष्ठे वा [105.049]
वर्षे कन्या प्रसूयते [105.049]
सप्तवर्षाष्टवर्षा वा [105.049]
प्रजास्यन्ति नरास्तदा [105.049]
अल्पद्रव्या वृथालिङ्गा [105.050]
हिंसारतिपरायणाः [105.050]
हर्तारो न तु दातारो [105.050]
भविष्यन्ति कलौ नराः [105.050]
शुल्कादानपराः क्षुद्राः [105.051]
परपाकाशिनो द्विजाः [105.051]
वैश्यास्तथा तु राजानो [105.051]
न तु क्षत्रियवंशजाः [105.051]
शूद्रा भिक्षवता विप्राः [105.052]
शुश्रूषाविपणाश्रिताः [105.052]
भविष्यन्ति नृपश्रेष्ठ [105.052]
कृष्णे कृष्णत्वमागते [105.052]
न शिष्यो न गुरुः कश्चिन् [105.053]
न पुत्रो न पिता तथा [105.053]
न भार्या न पतिर्भूप [105.053]
भविता तत्र संकुले [105.053]
एतत्कालस्वरूपं ते [105.054]
शतानीक मयोदितम् [105.054]
विष्णुभक्तान्नरश्रेष्ठ [105.054]
न नरान्बाधते कलिः [105.054]
ये ऽहर्निशं जगद्धातुर् [105.055]
वासुदेवस्य कीर्तनम् [105.055]
कुर्वन्ति तान्नरव्याघ्र [105.055]
न कलिर्बाधते नरान् [105.055]
ये तन्मनस्कास्तिष्ठन्ति [105.056]
प्रयान्तः संस्थितास्तथा [105.056]
स्वपन्तश्च नरव्याघ्र [105.056]
तान्कलिर्न प्रबाधते [105.056]
सर्वत्र भगवान्विष्णुर् [105.057]
गोविन्दः केशवो हरिः [105.057]
यस्य भावो न तं भूप [105.057]
कदाचिद्बाधते कलिः [105.057]
न कलौ कलिचेष्टो ऽसौ [105.058]
मूढेषु न स मुह्यते [105.058]
भगवत्यच्युते नित्यं [105.058]
येन भावः समर्पितः [105.058]
कलिप्रभावो दुष्टोक्तिः [105.059]
पाषण्डानां तथोक्तयः [105.059]
न क्रामन्ते मनस्तस्य [105.059]
यस्य चेतसि केशवः [105.059]
कलौ कृतयुगं तस्य [105.060]
कलिस्तस्य कृते युगे [105.060]
यस्य चेतसि गोविन्दो [105.060]
हृदये यस्य नाच्युतः [105.060]
अनिष्ट्वापि महायज्ञैर् [105.061]
अकृत्वापि पितृस्वधाम् [105.061]
कृष्णमभ्यर्च्य यद्भक्त्या [105.061]
नैनं श्वोमरणं तपेत् [105.061]
यस्याग्रतस्तथा पृष्ठे [105.062]
गच्छतस्तिष्ठतो ऽपि वा [105.062]
गोविन्दे नियतं चेतः [105.062]
कृतकृत्यः सदैव सः [105.062]
एतद्विदित्वा भूपाल [105.063]
सर्वे सर्वेश्वरे हरौ [105.063]
तन्मना भव तच्चित्तस् [105.063]
तन्मना नावसीदति [105.063]
परमार्थमशेषस्य [105.064]
जगतः प्रभवाव्ययम् [105.064]
शरण्यं शरणं गच्छन् [105.064]
गोविन्दं नावसीदति [105.064]
कलिकल्मषकक्षाग्निं [105.065]
निर्वाणं पदमव्ययम् [105.065]
सर्वकारणमव्यक्तं [105.065]
विष्णुं ध्यायन्न सीदति [105.065]
यत्र सर्वमये ध्याते [105.066]
ध्येयमन्यन्न विद्यते [105.066]
यत्रार्चिते ऽर्चनीयश्च [105.066]
जायते तं नमाम्यहम् [105.066]
जगत्स्रष्टारमिशेशम् [105.067]
अनादिं परतः परम् [105.067]

सर्वास्पदं सर्वभूतं [105.067]
गच्छन्सर्वात्मना हरिम् [105.067]
हरत्यघमशेषं यो [105.068]
हरिरित्यभिसंस्तुतः [105.068]
अशेषाघहरं विष्णुं [105.068]
हरिवर्णं हरिं नमः [105.068]
यत्कीर्तनादघः शुद्धः [105.069]
स्मृते यत्राशुचिः सुचिः [105.069]
तमात्मनि स्थितं भूप [105.069]
पुण्डरीकेक्षणं नमः [105.069]
अपवित्रः पवित्रो वा [105.070]
सर्वावस्थगतो ऽपि वा [105.070]
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं [105.070]
स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः [105.070]
यद्यप्युपहतः पापैर् [105.071]
यदि वात्यन्तदुष्कृतैः [105.071]
तथापि संस्मरन्विष्णुं [105.071]
स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः [105.071]
कलावत्रातिदोषाढ्ये [105.072]
विषयासक्तमानसः [105.072]
कृत्वापि पापं गोविन्दं [105.072]
ध्यायन्पापैर्विमुच्यते [105.072]
तद्ध्यानं यत्र गोविन्दः [105.073]
सा कथा यत्र केशवः [105.073]
तत्कर्म यत्तदर्थीयं [105.073]
किमन्यैर्बहुभाषितैः [105.073]
नैतत्पिता तनूजाय [105.074]
न शिष्याय गुरुर्नृप [105.074]
परमार्थपदं ब्रूयाद् [105.074]
यदेतत्ते मयोदितम् [105.074]
संसारे भ्रमता लभ्यं [105.075]
पुत्रदारधनं वसु [105.075]
सुहृदश्च तथिवान्ये [105.075]
नोपदेशो नृपेदृशः [105.075]
किं पुत्रदारैर्वित्तैर्वा [105.076]
न मित्रे क्षेत्रबान्धवैः [105.076]
उपदेष्टा परो बन्धुर् [105.076]
ईदृशो यो विमुक्तये [105.076]
यो नैकाग्रमना विष्णाव् [105.077]
इति ज्ञात्वापि पार्थिव [105.077]
स नूनमच्युतस्यैव [105.077]
नानुग्राह्यो ऽत्र पापकृत् [105.077]
द्विविधो भूतसर्गो ऽयं [105.078]
दैव आसुर एव च [105.078]
विष्णुभक्तिपरो दैवो [105.078]
विपरीतस्तथासुरः [105.078]
उपदेशप्रदानेन [105.079]
संभूतित्रय आसुरः [105.079]
नैव विष्णुपरो भूप [105.079]
भवत्यक्षीणकल्मषः [105.079]
उपदेशेषु सो ऽत्यन्तं [105.080]
संरम्भी युक्तियोजितम् [105.080]
हेतुवादाश्रितो मूढो [105.080]
ददात्युत्तरमक्षयम् [105.080]
स्नातस्य देवकार्येषु [105.081]
तथापत्सु कथासु च [105.081]
आसुरस्यापि तन्मात्रा [105.081]
जायते नृपते मतिः [105.081]
इति मत्वातिसद्भावं [105.082]
रहस्यं परमीरितम् [105.082]
त्वयाच्युतान्मतिर्भूप [105.082]
नापनेया कथंचन [105.082]
अप्राप्य वाञ्छति रतिं [105.083]
सर्वदैव नृणां मनः [105.083]
इहैवाच्युतसंसर्गि [105.083]
यदि तत्किं प्रहीयते [105.083]
तदलं तव राज्येन [105.084]
बलकोशादिभिस्तथा [105.084]
चिन्तितैरच्युतश्चिन्त्यो [105.084]
यद्भावि न तदन्यथा [105.084]
एतत्पवित्रमारोग्यं [105.085]
धन्यं दुःस्वप्ननाशनम् [105.085]
सुखप्रीतिकरं नृणां [105.085]
पततां निर्वृतिप्रदम् [105.085]
येषां गृहेषु लिखितम् [105.086]
एतत्स्थास्यति नित्यदा [105.086]
न तद्गृहाणि दैवोत्था [105.086]
बाधिष्यन्ते ह्युपद्रवाः [105.086]
किं तीर्थैः किं प्रदानैर्वा [105.087]
किं यज्ञैः किमुपोषितैः [105.087]
अहन्यहन्येतदेव [105.087]
तन्मयत्वेन शृण्वतः [105.087]
य ददाति तिलप्रस्थं [105.088]
सुवर्णस्य च मासकम् [105.088]

शृणोति श्लोकमेकं च [105.088]
धर्मस्यास्य समं हि तत् [105.088]
अध्यायपारणं चास्य [105.089]
गोप्रदानाद् विशिष्यते [105.089]
शृण्वंश्चास्य दशाध्यायान् [105.089]
सद्यः पापैः प्रमुच्यते [105.089]
रात्र्या यदेनः कुरुते [105.090]
दिवसेन च मानवः [105.090]
श्रोतुं वाञ्छा समस्तं तत् [105.090]
पार्थिवस्य व्यपोहति [105.090]
कपिलानां शते दत्ते [105.091]
यद्भवेज्ज्येष्ठपुष्करे [105.091]
नरेन्द्र विष्णुधर्माणां [105.091]
तदावाप्नोति पारणे [105.091]
प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च [105.092]
धर्मं धर्मभृतां वर [105.092]
नास्त्यन्यद्विष्णुधमाणां [105.092]
सदृशं शास्त्रमुत्तमम् [105.092]
मैत्रीं करोति भूतेषु [105.093]
भक्तिमत्यन्तमच्युते [105.093]
श्रुत्वा धर्मानिमान्वेत्ति [105.093]
अभेदेनात्मनो जगत् [105.093]
पठन्ननुदिनं धर्मान् [105.094]
एताञ्शृण्वंस्तथापि वा [105.094]
भक्त्या मतिमतां श्रेष्ठ [105.094]
सर्वपापैः प्रमुच्यते [105.094]
नोपसर्गो न चानर्थो [105.095]
न चौराग्निभयं गृहे [105.095]
तस्मिन्भवति भूपाल [105.095]
यत्रैतत्पुस्तकं स्थितम् [105.095]
न गर्भहारिणी भीतिर् [105.096]
न च बालग्रहा गृहे [105.096]
यत्रैतद्भूपते तत्र [105.096]
न पिशाचादिकाद्भयम् [105.096]
शृण्वन्विप्रो वेदवित्स्यात् [105.097]
क्षत्रियः पृथिवीपतिः [105.097]
ऋद्धिं प्रयाति वैश्यश्च [105.097]
शूद्रश्चारोग्यमृच्छति [105.097]
यश्चैतान्नियतान्धर्मान् [105.098]
पठेच्छ्रद्धासमन्वितः [105.098]
विष्णौ मनः समावेश्य [105.098]
सर्वत्र समदर्शनः [105.098]
तस्य पापं तथा रोगान् [105.099]
दुःस्वप्नाद्याभिचारुकान् [105.099]
यच्चान्यद्दुरितं किंचित् [105.099]
तत्सर्वं हन्ति केशवः [105.099]
हेमन्ते य इमान्धर्माञ् [105.100]
शृणोति वसुधाधिप [105.100]
श्रद्धासमन्वितः सम्यक् [105.100]
सो ऽग्निष्टोमफलं लभेत् [105.100]
शिशिरे च नरव्याघ्र [105.101]
यः शृणोति यथाविधि [105.101]
पुण्डरीकस्य यज्ञस्य [105.101]
स प्राप्नोति फलं नरः [105.101]
मधुमाधवसंज्ञे तु [105.102]
यः शृणोति नरस्त्विमान् [105.102]
सो ऽश्वमेधक्रतोर्भूप [105.102]
प्राप्नोत्यविकलं फलम् [105.102]
शृण्वन्नेतान्निदाघे च [105.103]
धर्मान्धर्मभृतां वर [105.103]
वाजपेयस्य यज्ञस्य [105.103]
फलं प्राप्नोत्यसंशयम् [105.103]
वर्षासु चेमान्यो धर्मान् [105.104]
संशृण्वन्वसुधाधिप [105.104]
राजसूयक्रतोः पुण्यम् [105.104]
अखिलं समवाप्नुयात् [105.104]
शरत्काले च संशृण्वन् [105.105]
धर्मानेतान्नरर्षभ [105.105]
प्राप्नोति गोसवफलं [105.105]
सम्यक्श्रद्धासमन्वितः [105.105]
ऋतुष्वेतेष्वेतदेव [105.106]
पठतामपि पार्थिव [105.106]
फलं भवति दुष्टेषु [105.106]
ग्रहेष्वेते शुभप्रदाः [105.106]
कपिलानां शतस्योक्तं [105.107]
यत्फलं ज्येष्ठपुष्करे [105.107]
भूयो भूयस्तदाप्नोति [105.107]
पारणे पारणे गते [105.107]
भक्त्या पठति यश्चैतान् [105.108]
देवस्य पुरतो हरेः [105.108]
सो ऽर्चयत्यवनीपाल [105.108]
ज्ञानयज्ञेन केशवम् [105.108]
सर्वाबाधास्तथा पापम् [105.109]
अखिलं मनुजेश्वर [105.109]

विष्णुधर्मा व्यपोहन्ति [105.109]
संस्मृताः पठिताः श्रुताः [105.109]
एतत्ते सर्वमाख्यातं [105.110]
रहस्यं परमं हरेः [105.110]
नातः परतरं किंचिच् [105.110]
श्राव्यं श्रुतिसुखावहम् [105.110]
अत्रोक्तविधियुक्तस्य [105.111]
पुरुषस्य विपश्चितः [105.111]
न दुर्लभं नरव्याघ्र [105.111]
परमं ब्रह्म शाश्वतम् [105.111]